❀ श्रीदादूराम सत्यराम ❀

अथ श्रीदादूदयालजी की बाणी

जिसमें

॥ ज्ञान, भक्ति और बैराग ॥

अर्थात्

कालाडेरा का सुखदेवजी ने पठनार्थ लिखी

जेल प्रेस जयपुर

में

श्रीमान् सेठ युगलकिशोरजी बिडला

पिलाणी वाला के

सहायता से मुद्रित हुई।

सम्वत् १९७५

श्रीः

॥ जेल प्रेस जयपुर ॥

* श्री रामजी सत्य

॥ श्रीस्वामी दादूदयालजी सहाय ॥

अथ गुरुदेव को अङ्ग ।

प्रथम नमस्कारात्मक मङ्गल

दादू नमो नमो निरञ्जनं, नमस्कार गुरु देवतः
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू गैब मांहि गुरुदेव मिल्या, पाया हम परसाद
मस्तक मेरे कर धर्‌या, देष्या अगम अगाध २
दादू सतगुरु सहज मैं, किया बहु उपकार
निर्धन धनवन्त करिलिया, गुरु मिलिया दातार ३
दादू सतगुरु सौं सहजैं मिल्या, लिया कंठ लगाइ
दया भई दयाल की, तब दीपक दीया जगाइ ४
दादू देखु दयाल की, गुरू दिखाई बाट
ताला कूंची लाय करि, खोले सबै कपाट ५

सतगुरु सत्रथा ।

सतगुरु अञ्जन बाहि करि, नैंन पटल सब खोले
बहरे कांनौं सुणनैं लागे, गूंगे मुखसौं बोले ६
सतगुरु दाता जीव का, श्रवण सीस कर नैंन
तन मन सौंज संवारि सब, मुख रसनां अरु बैंन ७
राम नाम उपदेस करि, अगम गवन यहु सैंन
दादू सतगुरु सब दीया, आप मिलाये अैंन ८

सतगुरु कीया फेरि करि, मनका औरै रूप
दादू पंचौं पलटि करि, कैसे भये अनूप ९
साचा सतगुरु जे मिलै, सब साज संवारै
दादू नाव चढाय करि, ले पार उतारै १०
सतगुरु पसु माणस करै, मांणस थैं सिध सोइ
दादू सिध थैं देवता, देव निरंजन होइ ११
दादू काढ़ै काल मुख, अन्धै लोचन देइ
दादू ऐसा गुरु मिल्या, जीव ब्रह्म करि लेइ १२
दादू काढ़े काल मुख, श्रवणहु सबद सुणांय
दादू ऐसा गुरु मिल्या, मृतक लीये जिवाय १३
दादू काढ़े काल मुख, गूंगे लिये बुलाइ
दादू ऐसा गुरु मिल्या, सुख मैं रहे समाइ १४
दादू काढ़े काल मुख, मिहर दयाकरि आय
दादू ऐसा गुरु मिल्या, महिमां कही न जाय १५
सतगुरु काढ़े केस गहि, डूबत इहि संसार
दादू नाव चढ़ाय करि, कीये पैली पार १६
भव सागर मैं डूबतां, सतगुरु काढे आय
दादू खेवट गुरु मिल्या, लीये नाव चढाय १७
दादू उस गुरुदेव की, मैं बलिहारी जांउ
जहां आसण अमर अलेख था, ले राखे उस ठांउ १८

उपजण।

आत्म मांहै ऊपजै, दादू पंगुल ज्ञान
कृतम जाइ उलंघि करि, जहां निरंजन थान १९

आतम बोध बंझका बेटा, गुरु मुख उपजै आय
दादू पंगुल पंच बिन, जहां राम तहां जाय २०

सब्द ।

साचा सहजैं ले मिलै, सबद गुरूका ज्ञान
दादू हमकूं ले चल्या, जहां प्रीतम का अस्थान २१
दादू सब्द बिचारि करि, लागि रहैं मनलाय
ज्ञान गहै गुरुदेव का, दादू सहज समाय २२

दया बीनती ।

दादू कहै सतगुरु सबद सुणाइ करि, भावै जीव जगाइ
भावै अंतरि आप कहि, अपणै अङ्ग लगाइ २३
दादू वाहिर सारा देखिये, भीतरि कीया चूर
सतगुरु शब्दौं मारिया, जाण न पावै दूर २४
दादू सतगुरु मारे सबद सौं, निरषि निरषि निज ठोर
राम अकेला रहिगया, चित न आवै ओर २५
दादू हमकूं सुखभया, साध सबद गुरुज्ञान
सुध बुधि सोधी समझि करि, पाया पद निर्बाण २६

सतगुरु सबद बाण ।

दादू सबद बाण गुरु साधके, दूरि दिसंतर जाय
जिहि लागे सोऊ बरें, सूते लीये जगाइ २७
सतगुरु सबद मुखसौं कह्या, क्या नेड़ै क्या दूर
दादू शिष श्रवण हुं सुण्या, सुमरण लागा सूर २८

करणीं बिनां कथणी ।

सबद दूध घृत राम रस, मथि करि काढै कोय
दादू गुरु गोबिंद बिन, घट घट समझि न होय २९

सबद दूध घृत राम रस, कोई साध बिलोवण हार
दादू अमृत काढिले, गुरु मुख गहि बिचार ३०
घीव दूध मै रमिरह्या, व्यापक सबही ठोर
दादू बक्ता बहुत है, मथि काढैंते ओर ३१
कामधेन घट घीव है, दिन्न दिन दुरबल होय
गुरू ज्ञानन ऊपजै, मथि नही पाया सोय ३२
साचा समर्थ गुरु मिल्या, तिन तत्त दिया बताय
दादू मोटा महाबली, घट घृत मथि करि खाइ ३३
मथि करि दीपक कीजिए, सब घटि भया प्रकास
दादू दीश्रा हाथि करि, गया निरंजन पास ३४
दीवै दीवा कीजिए, गुरुमुख मारग जाई
दादू अपणें पीवका, दरसन देखै आइ ३५

प्रमारथी ।

दादू दीया है भला, दीया करौ सब कोय
घरमै धर्‍या न पाइय, जे करदीया न होय ३६
दादू दीये का गुण तेलहै, दीया मोटी बात
दीया जगमै चांदणा, दीया चालै साथ ३७

गुरु ।

निर्मल गुरु का ज्ञान गह, निर्मल भक्ति बिचार
निर्मल पाया प्रेम रस, छूटे सकल बिकार ३८
निर्मल तन मन आत्मां, निर्मल मनसा सार
निर्मल प्राणी पंच करि, दादू लंघे पार ३९
परा परी पासै रहै, कोई न जाणै ताहि
सतगुरु दीवा दिखाय करि, दादू रह्या ल्यौलाय ४०

शिष यज्ञासी ।

जिन हम सिरजे सो कहां, सतगुरु देहु दिखाय
दादू दिल अरवाह का, तहां मालिक ल्यौलाय ४१
मुझही मै मेरा धणी, पड़दा खोलि दिखाय
आत्म सौं परआत्मां, प्रगट आणि मिलाय ४२
भरि भरि प्याला प्रेमरस, आपणें हाथ पिलाइ
सतगुरु के सदके कीया, दादू बलि बलि जाइ ४३

गुरु ।

अवर भरिया दहि देसा, पंखी प्यासा जाइ
दादू गुर प्रसाद बिन, क्यूं जल पीवै आय ४४

बेपरवाही ।

मानसरोवर मांहि जल, प्यासा पीवै आइ
दादू दोस न दीजिये, घर घर कहण न जाय ४५

गुरु ।

दादू गुरु गरवा मिल्या, ताथैं सबगम होइ
लोहा पारस प्रसतां, सहज समानां सोइ ४६
दीन गरीबी गहि रह्या, गरवा गुरू गंभीर
सूखिम सीतल सुर्तिमति, सहज दीया गुरधीर ४७
सोधी दाता पलक मैं, तिरें तिरांवण जोग
दादू ऐसा परम गुरु, पाया किहि संजोग ४८
दादू सतगुरु ऐसा कीजियें, रामरस माता
पार उतारे पलक मै, दर्सन का दाता ४९
देवै किरका दरदका, टूटा जोड़ै तार
दादू सांधे सुर्ति कौं, सौ गुरु पीर हमार ५०

सतगुरु शब्द बाण ।

दादू घायल ह्वै रहे, सतगुरु के मारे
दादू अंग लगाइ करि, भवसागर तारे ५१

उपजण ।

दादू साचा गुरु मिल्या, साचा दिया दिखाइ
साचे कौं साचा मिल्या, साचा रह्या समाइ ५२
साचा सतगुरु सोधिले, साचे लीजी साध
साचा साहिब सोधि करि, दादू भक्ति अगाध ५३
सनमुख सतगुरु साधसौं, सांई सौं राता
दादू प्याला प्रेमका, महारस माता ५४
सांई सौं साचा रहै, सतगुरु सूं सूरा
साधौं सूं सनमुख रहै, सो दादू पूरा ५५
सतगुरु मिले त पाईये, भगति मुक्ति भण्डार
दादू सहजैं देखिये, साहिब का दीदार ५६
दादू सांई सतगुरु सेविये, भगति मुक्ति फल होइ
अमर अभय पद पाईये, काल न लागै कोय ५७

सतगुरु विमुख ज्ञान ।

यक लक्ष चन्दा आंणिघर, सूर्य कोटि मिलाय
दादू गुरु गोबिंद बिन, तौ भी तिमिर न जाय ५८
अनेक चंद उदै करै, असंख सूर प्रकास
येक निरंजन नाम बिन, दादू नहीं उजास ५९

उभय असमाव ।

दादू कदियहु आधा जाइगा, कदियहु बिसरै और
कदियहु सूखिम होयगा, कदियहु पावै ठौर ६०

दादू विखमदु हेला जीव कौं, सतगुर थैं आसान
जब दरवै तब पाईये, नेडा ही असथान ६१

गुरु ज्ञान ।

दादू नैन न देखै नैन कौं, अन्तर भी कुछ नाहिं
सतगुर दर्पन कर दिया, अरस परस मिलि माहिं ६२
घट घट राम रतन है, दादू लखै न कोय
सतगुर सबदौं पाईये, सहजैं हीं गमहोइ ६३
जबही कर दीपक दीया, तब सब सूझन लाग
यौं दादू गुर ज्ञान थैं, राम कहत् जन जाग ६४

प्रमारथी ।

दादू मन माला तहां फेरिये, जहां दिवस न परसे राति
तहां गुरू वानां दीया, सहजैं जपिये ताति ६५
दादू मन माला तहां फेरिये, जहां प्रीतम बैठे पास
आगम गुरु थैं गम भया, पाया नूर निवास ६६
दादू मन माला तहां फेरिये, जहां आपै एक अनंत
सहजैं सो सतगुर मिल्या, जुगि जुगि फाग बसंत ६७
दादू सतगुरु माला मन दीया, पवन सुरति सौं पोय
बिन हाथौं निसदिन जपै, प्रेम जाप यौं होय ६८
दादू मन फकीर मांहैं हूवा, भीतरि लीया भेख
सबद गहै गुरुदेव का, मांगै भीख अलेख ६९
दादू मन फकीर सतगुर कीया, कहि समझाया ज्ञान
निहचल आसण बैसिकरि, अकल पुरुष का ध्यान ७०
दादू मन फकीर जग थैं रह्या, सतगुरु लीया लाय
अहि निस लागा एक सौं, सहज सुनिरस खाइ ७१

दादू मन फकीर ऐसैं भया, सतगुरु के प्रसाद
जहांका था लागा तहां, छूटे बाद बिवाद ७२

मध्य।

ना घर रह्या न बनगया, नां कुछ कीया कलेस
दादू मनहीं मन मिल्या, सतगुरु के उपदेस ७३

भ्रम बिधून।

दादू यहु मसीत यहु देहुरा, सतगुरु दीया दिखाय
भीतरि सेवा बंदगी, बाहिर का हे जाय ७४

कस्तूरिया मृग।

दादू मंझे चेला मंझि गुर, मंझेई उपदेस
बाहिर ढूंढैं बावरे, जटा बधाय केस ७५

आत्मारथी।

मनका मस्तक मूंडिये, काम क्रोध के केस
दादू बिषै बिकार सब, सतगुरु के उपदेस ७६

भ्रम बिधून।

दादू पड़दा भ्रमका, रह्या सकल घट छाय
गुरु गोबिंद कृपा करै, तौ सहजैं ही मिटि जाइ ७७

सूछम मारग।

जिहि मति साधू उधरे, सो मत लीया सोधि
मनलै मारग मूलगहि, यहु सतगुरु का प्रमोध ७८
दादू सोई मारग मन गह्या, जिहि मारग मिलिये जाइ
बेद कुरानौं ना कह्या, सो गुर दीया दिखाइ ७९

बिचार।

दादू मन भवंग यहु बिष भर्या, निरबिष क्यूं हीं न होय
दादू मिल्या गुरु गारड़ी, निरबिष कीया सोय ८०

येता कीजै आप थैं, तन मन उन मन लाय
पंच समाधी राखिये, दूजा सहज सुभाय ८१
दादू जीव जंजालौं पड़िगया, उलझ्या नवमण सूत
कोइ यक सुलझै सावधान, गुरु बायक अवधूत ८२

गुरु मनका अङ्ग।

चंचल चहुं दिसि जात है, गुर बाइक सौं बंधि
दादू संगति साधकी, पारब्रह्म सौं संधि ८३
गुरु अंकुस मानै नहीं, उदमद माता अंध
दादू मन चेतै नहीं, काल न देखे फंध ८४
दादू मार्‍यां बिन मांनैं नहीं, यहु मन हरिकी आण
ज्ञान खडग गुरु देवका, ता संग सदा सुजाण ८५
जहां थैं मन उठि चलै, फेरि तहां ही राखि
तहां दादू लै लीन करि, साध कहैं गुरु साखि ८६
दादू मनहीं सौं मल उपजै, मनहीं सौं मल धोय
सीख चलौ गुरु साधकी, तों तूं निर्मल होय ८७
दादू कछब अपणें करिलिये, मन इंद्रिय निज ठौर
नाम निरंजन लागि रहु, प्राणी परहर और ८८

गुरु ज्ञान अङ्ग।

मनकै मतै सब कोई खेलै, गुरु मुख बिरला कोय
दादू मनकी मानै नहीं, सतगुर का सिख सोय ८९
सब जीऊं कौं मन ठगै, मनकौं बिरला कोय
दादू गुरके ज्ञान सौं, सांई सनमुख होय ९०
दादू एक सौं लै लीन हूणां, सबै सयांनप एह
सतगुरु साधू कहत हैं, परम तत्व जपि लेहु ९१

सतगुरु बिमुख ज्ञान अङ्ग ।

सतगुरु सब्द बिवेक बिन, संजम रह्या न जाय
दादू ज्ञान बिचार बिन, बिषै हला हल खाय ९२

गुरु सिष्य प्रबोध अङ्ग ।

सतगुरु सब्द उलंघि करि, जिनि कोई सिष जाय
दादू पग पग काल है, जहां जाय तहां खाय ९३
सतगुर बरजै सिष करै, क्यूं करि बंचै काल
दहदिसि देखत बहि गया, पाणी फोडी पाल ९४
दादू सतगुर कहै सु सिष करै, सब सिधि कारिज होय
अमर अभय पद पाइये, काल न लागै कोय ९५
दादू जे साहिब कौं भावै नहीं, सो हम थैं जिनि होय
सतगुर लाजै आपणां, साध न मांनैं कोय ९६
दादू हूं की ठाहर है कहो, तन की ठाहरतूं
री की ठाहर जी कहो, ज्ञान गुरू का यौं ९७

गुरज्ञान ।

दादू पंच सवादी पंचदिसि, पंचे पंचौं बाट
तबलग कह्या न कीजिये, गहि गुरू दिखाया घाट ९८
दादू पंचौं एक मत, पंचौं पूरचा साथ
पंचौं मिलि सनमुख भए, तब पंचौं गुरकी बात ९९

सतगुर बिमुख ज्ञान ।

दादू ताता लोहा तिणे सौं, क्यूं करि पकड़्या जाय
गहण गति सूझै नहीं, गुरु नहीं बूझै आय १००

गुरमुख कसौटी करता ।

दादू औगुण गुण करि मांनैं गुरके, सोई सिष्य सुजाण
सतगुर औगण क्यूं करै, समझै सोई सयांण १०१

सोनैं सेती बैर क्या, मांरै घणके घाय
दादू काटि कलंक सब; राखै कंठ लगाय १०२
पाणी मांहैं राखिये, कनक कलंक न जाय
दादू गुरु के ज्ञान सौं, ताइ अग्नि मैं बाहि १०३
दादू मांहैं मीठा हेत करि, ऊपरि कडवा राखि
सतगुर सिष्य कौं सीख दे, सब साधौं की साखि १०४

गुरुसिष्य परमोध अङ्ग ।

दादू कहै सिष्य भरोसै आपणैं, ह्वै बोली हुसियार
कहैगा सु बहैगा, हम पहली करै पुकार १०५
दादू सतगुर कहै सु कीजिये, जे तूं सिष्य सुजाण
जहां लाया तहां लागिरहु, बूझै कहा अजाण १०६
गुरु पहली मनसौं कहै, पीछै नैंन की सैंन
दादू सिष्य समझै नहीं, कहि समझावै बैंन १०७
कहैं लखै सो मांनवी, सैंन लखै सो साध
मनकी लखैसु देवता, दादू अगम अगाध १०८

कठोरता ।

दादू कहि कहि मेरी जीभ रही, सुनि सुनि तेरे कांन
सतगुर बपुरा क्या करै, जे चेला मूढ अजान १०९

गुरुसिष्य प्रमोध ।

दादू एक सबद सब कुछ कह्या, सतगुरु सिष समझाय
जहां लाया तहां लागै नहीं, फिरि फिरि बूझै आय ११०

अङ्ग सुभाव अपलट ।

ज्ञान लीया सब सीखि सुणिं, मनका मैल न जाइ
गुरू बिचारा क्या करै, सिष बिषै हला हल खाइ १११

सतगुरु की समझै नहीं, अपणैं उपजै नांहि
तौ दादू क्या कीजिये, बुरी बिथा मन मांहि ११२

अशात गुरु पारष ।

गुरु अपंग पग पंख बिन, सिष साखां का भार
दादू खेवट नाव बिन, क्यूं उतरैंगे पार ११३
दादू संसा जीवका, सिष साखां का साल
दून्यूं कूं भारी पड़ी, ह्वैगा कौंण हवाल ११४
अंधे अंधा मिलि चले, दादू बंधिक तार
कूप पड़े हम देखतां, अंधे अंधा लार ११५

पर परमोधा ।

सोधी नहीं सरीर की, ओरों कों उपदेस
दादू अचिरज देखिया, जांहिगे किस देस ११६
सोधी नहीं सरीर की, कहैं अगम की बात
जाण कहांवैं बापुड़े, आवध लीये हाथ ११७

सत असत गुरु पारष लक्षण ।

दादू माया मांहैं काढि करि, फिरि मायामैं दीन्ह
दोऊ जन समझै नहीं, एको काज न कीन ११८
दादू कहै सो गुरू किस कामका' गहि भ्रमावै आन
तत बतावै निर्मला, सो गुरु साध सुजान ११९
तूं मेरा हूं तेरा, गुरु सिष कीया मंत
दून्यूं भूले जात है, दादू बिसरया कंत १२०
दुहि दुहि पीवै ग्वाल गुरु, सिष है छेली गाइ
यहु औसर यौंही गया, दादू कहि समझाय १२१

सिष गोरू गुरु ग्वाल है, रख्या करि करि लेइ
दादू राखे जतन करि, आंणि धणी कूं देइ १२२
झूठे अंधे गुरु घणे, भ्रम दिढावै आय
दादू साचा गुर मिलै, जीव ब्रह्म ह्वै जाय १२३
झूठे अंधे गुरु घणे, बंधे बिषै बिकार
दादू साचा गुरु मिलै, सनमुख सिरजन हार १२४
झूठे अंधे गुरु घणें, भ्रम दिढावै काम
बंधे माया मोह सौं, दादू मुख सौं राम १२५
झूठे अंधे गुर घणें, भटकैं घर घर बार
कार्ज को सीझै नहीं, दादू माथै मार १२६

बे खरच बिश्वी अङ्ग।

भक्त कहावैं आप कौं, भक्ति न जांणैं भेव
स्वप्नै हीं समझै नहीं, कहां बसै गुरुदेव १२७

भ्रम विधूंस।

भ्रम कर्म जग बंधिया, पंडित दीया भुलाय
दादू सतगुर ना मिलै, मारग देय दिखाय १२८
दादू पंथ बतावैं पापका, भ्रम कर्म बेसास
निकट निरंजन जे रहै, क्यूं न बतावै तास १२९

बिचार को०।

दादू आपा उरझे उरझिया, दीसै सब संसार
आपा सुरझे सुरझिया, यहु गुरु ज्ञांन बिचार १३०

गुरुमुख कसौटी।

साधू का अंग निर्मला, तामैं मल न समाय
परम गुरू प्रगट कहै, तातैं दादू ताय १३१

स्मरण नाम चिंतामणी ।

राम नाम गुरु सबद सौं, रे मन पेलि भ्रम
निह कर्मी सौं मन मिल्या, दादू काटि कर्म १३२

सुक्ष्म मार्ग० ।

दादू बिन पांयन का पंथ है, क्यूं करि पहुंचे प्राण
बिकट घाट औघट खरे, मांहि सिखर असमान १३३
मन ताजी चेतन चढै, ल्यौकी करै लगाम
सबद गुरुका ताजणां, कोई प्रहुचै साध सुजाण १३४

स्मरण नाम पारष लक्षण ।

साधु स्मरण सौ कह्या, जिहिं स्मरण आपा भूल
दादू गहि गंभीर गुरु, चेतन आनंद मूल १३५

स्वारथी ममाथी० ।

आप सुवार्थ सब सगे, प्राण सनेही नांहि
प्राण सनेही राम है, कै साधू कलि मांहि १३६
सुखका साथी जगत सब, दुखका नांहीं कोइ
दुखका साथी सांईयां, दादू सतगुरु होय १३७
सगे हमारे साध हैं, सिरपर सिरजन हार
दादू सतगुरु सो सगा, दूजा धंध बिकार १३८

दया निर्वैता० ।

दादू कै दूजा नहीं, एकै आत्म राम
सतगुरु सिरपर साधु सब, प्रेम भक्ति बिश्राम १३९

उपजानि० ।

दादू सुध बुध आत्मां, सतगुरु परसै आय
दादू भृंगी कीट ज्यूं, देखतही ह्वै जाई १४०

दादू भृंगी कीट ज्यूं, सतगुरु सेती होय
आप सरीखे करि लीये, दूजा नांही कोय १४१
दादू कछब राखै दृष्टिमैं, कुंजों के मन मांहि
सतगुरु राखै आपणां, दूजा कोई नांहि १४२
बचौं के माता पिता, दूजा नांहीं कोय
दादू निपजै भावसौं, सतगुरु के घट होय १४३

बे परवाही० ।

एकै सबद अनंत सिष, जब सतगुरु बोलै
दादू जडे कपाट सब, दे कूंची खोलै १४४
तिनही कीया होय सब, सनमुख सिरजन हार
दादू करि करि को मरै, सिष साखा सिर भार १४५
सूरज सनमुख आरसी, पावक कीया प्रकास
दादू सांई साधु विचि, सहजैं निपजै दास १४६
दादू पंचौं ए परमोधले, इनहीं कों उपदेस
यहु मन अपणां हाथ करि, तो चेला सब देस १४७

सतगुरु समुख विमुख ज्ञान० ।

अमर भये गुरु ज्ञान सों, केते इहिं कलि मांहि
दादू गुरुके ज्ञान विन, केते मरि मरि जांहि १४८
ओषध खाइ न पछि रहै, विषम व्याधि क्यौं जाय
दादू रोगी बावरा, दोस बैद कों लाय १४९
बैद बिथा कह देखि करि, रोगी रहै रिसाय
मन माहै लीयें रहै, दादू व्याधि न जाय १५०
दादू बैद बिचारा क्या करै, रोगी रहै न साच
खाटां मीठा चरपरा, मांगैं मेरा बाच १५१

गुरु०।

दुर्लभ दर्सन साधुका, दुर्लभ गुरु उपदेस
दुर्लभ करिबा कठिन है, दुर्लभ परस अलेख १५२
अबिचल मंत्र, अमर मंत्र, अखय मंत्र, अभय मंत्र,
राम मंत्र, निजसार। सजीवन मंत्र, सबीरज मंत्र, सुंदर मंत्र,
सिरोमणि मंत्र, निर्मल मंत्र, निराकार। अलख मंत्र,
अकल मंत्र, अगाध मंत्र, अपार मंत्र, अनंत मंत्र राया।
नूर मंत्र, तेज मंत्र, जोति मंत्र, प्रकास मंत्र,
परम मंत्र पाया। उपदेस दिष्या १५३
दादू सबही गुरु कीये, पसु पंक्षी बन राय
तीन लोक गुण पंचसों, सबहीं मांहि खुदाय १५४
जे पहली सतगुरु कह्या, सो नैंन हु देख्या आय
अरस्परस मिलि एक रस, दादू रहे समाय १५५

इति गुरुदेव को अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग १ ॥

॥ अथ स्मरण को अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामम पारंगतः १
एकै अक्षर पीवका, सोई सत्य करि जांणि
राम नाम सत गुरु कह्या, दादू सो प्रमाणि २
पहिली श्रवण दुतीय रसन, तृतीय हिरदै गाय
चतुर्थी चेतन भया, तब रोम रोम ल्योलाय ३

मन प्रमोध ।

दादू नीका नाम है, तीनलोक ततसार
राति दिवस रटबो करी, रे मन इहै बिचार ४

स्म० ।

दादू नीका नाम हैं, सो तूं हिरदै राखि
पाखंड परपंच दूरि करि, सुणि साधुजन की साखि ५
दादू नीका नाम है, आप कहै समझाइ
और आरंभ सब छाड़दे, राम नांम ल्योलाय ६
दादू नीका नांम है, हरि हिरदै न बिसारि
मूर्त्तिं मनमाहै बसै, सासैं सास संभारि ७
सासैं सास संभाळतां, इक दिन मिल है आय
स्मरण पैंडा सहज का, सतगुरु दिया बताय ८
राम भजन का सोच क्या, करतां होइ सु होय
दादू राम संभालिये, फिरि बूझिये न कोय ९

स्मरण नाम चितामणी० ।

राम तुम्हारे नाम बिन, जे मुख निकसै और
तौ इस अपराधी जीव कौं, तीन लोक कित ठौर १०

छिन छिन राम संभालतां, जे जीव जायत जाय
आत्म के आधार कौं, नांहीं आंन उपाय ११

स्मरण महिमा नाम महात्म० ।

एक महूर्त मन रहै, नांम निरंजन पास
दादू तब ही देखतां, सकल कर्मका नास १२
सहजै हीं सब होयगा, गुण इंद्रिय का नास
दादू राम संभालतां, कटे कर्म के पास १३

स्मरण चिंतामणी ।

एक राम के नाम बिन, जीवकी जलणि न जाय
दादू केते पचि मूये, करि करि बहुत उपाय १४

स्म० ।

एक रामकी टेक गहि, दूजा सहज सुभाय
राम नाम छाडै नहीं, दूजा आवै जाय १५

स्मरण नाम अगाधता० ।

दादू राम अगाध है, पर मिति नांहीं पार
अबरण बरण न जाणिये, दादू नाम अधार १६
दादू राम अगाध है, अबिगति लखै न कोय
निर्गुण सगुण का कहै, नाम बिलंबन होय १७
दादू राम अगाध है, बे हद लष्या न जाय
आदि अंत्य नहीं जांणिये, नाम निरंतर गाय १८
दादू राम अगाध है, अकल अगोचर एक
दादू नाम बिलंबिये, साधु कहै अनेक १९

स्म० ।

दादू एके अलैक राम है, संमर्थ सांई सोय
मैदे के पकवांन सब, खातां होयसु होय २०

स्मरण अगाधता० ।

सर्गुण निर्गुण ह्वै रहै, जैसा है तैसा लीन
हरि स्मरण ल्यो लाइये, का जाणौं का कौन २१

स्म० ।

दादू सिरजन हार के, केते नाम अनंत
चित आवै सो लीजीये, यौं साधु सुमरैं संत २२
दादू जिन प्राण पिंड हमकौं दीया, अंतर सेवैं ताहि
जे आवै औसांण सिर, सोई नाम सबाहि २३

स्मरण नाम चिंतामणी० ।

दादू ऐसा कौंण अभागिया, कछू दिढावै और
नाम बिनां पग धरणकौं, कहो कहां है ठौर २४

स्मरण नाम महिमां महात्म० ।

दादू निमख न न्यारा कीजिये, अंतर थैं उर नाम
कोटि पतित पांवन भये, केवल कहतां राम २५

मन परमोध० ।

दादू जेतैं अब जाएपा नहीं, राम नाम निज सार
फिरि पीछैं पछितायगा, रे मन मूढ गवांर २६
दादू राम संभालिले, जबलग सुखी सरीर
फिरि पीछैं पछितायगा, जब तन मन धरै न धीर २७
दुःख दरिया संसार है, सुखका सागर राम
सुख सागर चलि जाइये, दादू तजि बे कांम २८
दादू दरिया यहु संसार है, तामैं राम नाम निज नाव
दादू ढील न कीजिये, यहु ओसर यहु डाव २९

स्मरण नाम निरसंसै० ।

मेरै संसा को नही, जीवण मरण का राम
स्वप्नैही जिन बीसरौ, मुख हिरदै हरि नाम ३०

स्मरण नाम विरह० ।

दादू दूखिया तबलगै, जबलग नाम न लेह
तबही पावन परम सुख, मेरी जीवन यह ३१

स्मरण नाम पारिप लक्षन० ।

कछू न कहावै आपकौं, सांई कूं सेवै
दादू दूजा छाडि सब, नाम निज लेवै ३२

स्मरण नाम निसंसै० ।

जे चित चहुंटै रामसौं, स्मरणं मन लागै
दादू आत्म जीवका, संसा सब भागै ३३

स्मरण नाम चिंतामणी० ।

दादू पीव का नाम ले, तौ मिटै सिरसाल
घडी महूरत चालणा, कैसी आवै काल्हि ३४
दादू ओसर जीवतैं, कह्या न केवल राम
अंत काल हम कहैंगे, जम बैरी सौं काम ३५
दादू ऐसे महिगे मोलका, एक सास जे जाय
चोदह लोक समान सो, कांहे रेत मिलाय
सोई सास सुजाण नर, सांई सेती लाय
करि साटा सिरजन हार सौं, ज्यू महिगे मोलि विकाय ३६
जतन करै नहीं जीवका, तन मन पवनां फेर
दादू महिगे मोलका, द्वैदो वटी यक सेर ३७

स्म० ।

दादू रावत राजा रामका, कदे न बिसारी नाम
आतमराम संभालिये, तोसू बस काया गांम ३८

स्मरण नामचिताम० ।

दादू अहनिस सदा सरिर मैं, हरि चिंतत दिन जाय
प्रेम मगन लै लीन मन, अंतर गती ल्योलाय
निमख एक न्यारा नही, तन मन मंझि समाय
एक अंग लागा रहै, ताकूं काल न खाय ३९
दादू पिंजर पिंड सरीर का, सुवटा सहज समाय
रमता सेती रमरहै, बिमल बिमल जस गाय
अबेनासी सों एक ह्वै, निमख न इत उत जाय
बहुत बिलाई क्या करै, जे हरि हरि सब्द सुणाय ४०

स्म० ।

दादू जहां रहूं तहां राम सों, भावै कंदल जाय
भावै गिरपर्बत रहूं, भावै गृह बसाय
भावै जाय जल हर रहूं, भावै सीस नवाय
जहां तहां हरि नाम सौं, हिरदैं हेत लगाय ४१

मन परमोध० ।

दादू राम कहें सब रहत है, नख सिख सकल सरीर
राम कहें विन जात है, समझी मनवा बीर ४२
दादू राम कहे सब रहत है, लाहा मूल सहेत
राम कहें बिन जात है, मूर्ख मनवा चेत ४३
दादू राम कहें सब रहत हैं, आदि अंतलूं सोय
राम कहे विन जात है, यहु मन बहुरि न होय ४४

दादू राम कहें सब रहत है, जीव ब्रह्म की लार
राम कहें बिन जातहै, रे मन हो हुसियार ४५

परमारथी० ।

दादू हरि भजि साफिल जिवणां, पर उपकार समाय
दादू मरणा तहां भला, जहां पसु पक्षी खाय ४६

स्म० ।

दादू राम सब्द मुखले रहै, पीछैं लागा जाय
मनसा बाचा कर्मनां, तिहिं तत सहज समाय ४७
दादू रचि मचि लागे नाम सौं, राते माते होय
देखैंगे दीदार कौं, सुख पावैंगे सोय ४८

स्मरण नाम चिंतामणी० ।

दादू सांई सेवैं सब भले, बुरा न कहिये कोय
सारौं मांहै सो बुरा, जिस घट नाम न होय ४९
दादू जीयरा राम बिन, दुखिया इहिं संसार
उपजै बिनसै खपि मरै, सुख दुःख बारंबार ५०
राम नाम रुचि ऊपजै, लेवै हित चित लाय
दादू सोई जीयरा, काहे जमपुर जाय ५१
दादू नीकी बरियां आपकरि, राम जपि लीन्हां
आत्म साधन सोधि करि, कार्ज भल कीन्हां ५२
दादू अगम वस्तु पानै पडी, राखी मंझि छिपाय
छिन छिन सोई संभालिये, मतिवै बीसर जाय ५३

स्मरण नाम महिमा महात्म० ।

दादू उज्जल निर्मला, हरि रंग राता होय
काहे दादू पचि मरै, पाणी सेती धोय ५४

दादू राम नाम जलं कृत्वा, स्नानं सदा जितः
तन मन आत्म निर्मलं, पंच भूषा पंगतः ५५
दादू उत्तम इंद्रिय निग्रहं, मुच्यते माया मनः
परम पुरुष पुरातनं, चिंतंते सदा तनः ५६
दादू सब जग बिष भस्या, निर्बिष बिरला कोय
सोई निर्बिष होइगा, जाकै नाम निरंजन होय ५७
दादू निर्बिष नामसौं, तन मन सहजैं होइ
राम निरोगा करैगा, दूजा नांही कोय ५८
ब्रह्म भक्ति मन उपजै, तब माया भक्ति बिलाय
दादू निर्मल मल गया, ज्यूं रवि तिमिर न साय ५९

मनहरि भावरि० ।

दादू बिषै विकारसौं, जबलग मन राता
तबलग चित न आवई, त्रिभवन पति दाता ६०
दादू काजांणौं कब होयगा, हरि स्मरण इक तार
काजांणौं कब छाडि है, यहु मन बिषै बिकार ६१
है सो स्मरण होता नहीं, नहीं सु कीजै काम
दादू यहु तन यौं गया, क्यूं करि पाइए राम ६२

स्मरण नाम महिमा महात्म० ।

दादू राम नाम निज मोहनी, जिन मोहे करतार
सुरनर संकर मुनि जना, ब्रह्मा सृष्टि विचार ६३
दादू राम नाम निज औषदी, काटै कोटि विकार
विषम व्याधि थैं ऊबरै, काया कंचन सार ६४
दादू निर्बिकार निज नामले, जीवन यहै उपाय
दादू कृत्म कालहै, ताकै निकटि न जाय ६५

स्म० ।

मन पवनां गहि सुर्तिसौं, दादू पावै स्वाद
स्मरण मांहे सुख घणां, छाडि देहु बकवाद ६६
नाम सपीडा लीजिये, प्रेम भक्ति गुण गाय
दादू स्मरण प्रीतिसूं; हेत सहित ल्योलाय ६७
प्राण कमल मुख राम कहि, मन पवना मुख राम
दादू सुर्ति मुख राम कहि, ब्रह्म सुनि निज ठाम ६८
कहतां सुणतां राम कहि, लेतां देतां राम
खाता पीतां राम कहि, आत्म कमल विश्राम ६९
ज्यूं जल पैसै दूधमैं, त्यूं पाणीमै लूण
अैसैं आत्म रांमसौं, मन हठ साधै कोण ७०
दादू राम नाम मै पैसि करि, राम नाम ल्योलाय
यहु इकंत तृय लोक मैं, अनंत काहे कौं जाय ७१

मधि० ।

ना घर भला न बन भला, जहां नही निज नाम
दादू उनमन मन रहै, भलात सोई ठाम ७२

स्मरण नाम महिमां महात्म ।

निर्गुणं नामं मई हिरदै, भाव प्रवर ततं
भ्रमं कर्मं कलि बिषं, माया मोहं कंपितं
काल जालं सो चितं, भयानक जम किंकरं
हरिषं मुदितं सतगुरुं, दादू अविगति दर्सनं ७३
दादू सब सुख सुर्ग पयाल के, तोलि तराजु बाहि
हरि सुख एक पलक का, ता सम कह्या न जाय ७४

स्मरण नाम पारिष लछन० ।

दादू राम नाम सब को कहै, कहिबे बहुत बिबेक
एक अनेकौं फिरि मिले, एक समाना एक ७५

दादू अपणी अपणी हदमैं, सबकौ लेवै नाम
जे लागे बेहदसों, तिनकी मैं बलिजाम ७६

स्मरण नाम अगाध० ।

कूंण तटंपर दीजिये, दूजा नाही कोय
राम सरीपा राम है, सुमर्यां ही सुख होय ७७
अपणी जाणैं आपगति, और न जाणै कोय
स्मरि स्मरि रस पीजिये, दादू आनंद होय ७८

करणी विनां कथणी ।

दादू सबही बेद पुरान पढि, नेट नाम निर्धार
सब कुछ इनही मांहि है, क्या करिये विस्तार ७९

नाम अगाध० ।

पढि पढि थाके पंडिता, किन हूंन पाया पार
कथि कथि थाके मुनिजनां, दादू नाम अधार ८०
निगम ही अगम विचारिये, तऊ पार न पावै
ताथैं सेवक क्या करै, स्मरण ल्योलावै ८१

कथनी विनां करणी० ।

दादू अलफ एक अल्लाह का, जे पढि जांणै कोय
कुरान कतेबां इल्म सब, पढि करि पूरा होय ८२

स्मरण नाम पारिष लक्षन० ।

नाम लीया तब जाणिये, जे तन मन रहै समाय
आदि अंति मधि एक रस, कबहूं भूलि न जाय ८३

विरह पतिव्रत० ।

दादू एकै दसा अनन्यन्यकी, दूजी दिसा न जाय
आपा भूलै आन सब, एकै रहै समाय ८४

स्मरण नाम बीनती० ।

दादू पीवै एक रस, बिसरि जाय सब ओर
अबिगति यहु गति कीजिये, मन राषो इंहि ठोर ८५
आतम चेतन कीजिये, प्रेम रस पीवै
दादू भूलै देह गुण, असैं जन जीवै ८६

स्मरण नाम अगाध० ।

कहि कहि केते थाके दादू, सुणि सुणि कह क्या लेय
लूण मिलै गाळि पाणीयां, ता सनि चित यों देय ८७

स्म० ।

दादू हरिरस पीवतां, रती बिलंब न लाय
बारं बार संभालिये, मति वै बीसरि जाय ८८

स्मरण नाम विरह० ।

दादू जागत स्वप्नां है गया, चिंतामणि जब जाय
तब ही साचा होत है, आदि अंति उरलय ८९
नाम न आवै तब दुखी, आवै सुख संतोष
दादू सेवक रामका, दूजा हरष न सोक ९०
मिलैत सब सुख पाइये, बिछुरें बहु दुख होय
दादू सुख दुख रामका, दूजा नांही कोय ९१
दादू हरिका नाम जळ, मैं मीन ता मांहि
संग सदा आनंद करै, बिछरतहीं मरि जाहि ९२
दादू राम बिसारि करि, जीवै किहिं आधार
ज्यूं चातृग जळ बुंदको, करै पुकार पुकार ९३
हम जीवैं इहिं आसरै, स्मरण के आधार
दादू छिटकै हाथ थैं, तो हमकौं वार न पार ९४

स्मरण पतिव्रत निहकाम० ।

दादू नाम निमति रामहि भजै, भक्ति निमति भजे सोय
सेवा निमति सांई भजै, सदा सजीवन होय ९५

नाम संपूरणता० ।

दादू राम रसांयण नितचवै, हरि है हीरा साथ
सोधन मेरे सांईयां, अलख खजीना हाथ ९६
दादू आनंद आत्मां, अबिनांसी के साथ
प्रांणनाथ हिरदै बसै, तो सकल पदार्थ हाथ ९७
संगही लागा सब फिरै, राम नाम के साथ
चिंतामणी हिरदै बसै, तो सकल पसारे हाथ ९८
हिरदै राम रहै जाजनकै, ताकौ ऊरा कोण कहै
अठसिधि नवनिधि ताकै आगै, सनमुख सदा रहै ९९
बंदत तीन्यू लोक बापुरा, कैसें दर्स लहै
नाम निसाण सकल जग ऊपरि, दादू देषत है १००
दादू सबजग नीधनां, धनंवता नहीं कोय
सो धनवंता जाणिये, जाके राम पदार्थ होय १०१

पुरुष प्रकासीक० ।

दादू भाव तहां छिपाइये, साचन छानां होय
सेष रसातल गगनधू, प्रगट कहिये सोय १०२
दादू कहांथा नारद मुनिजनां, कहां भक्त प्रह्लाद
प्रगट तीन्यू लोक मैं, सकल पुकारे साध १०३
दादू कहां सिव बैठा ध्यान धरि, कहां कबीरा नाम
सो क्यूं छानां होयगा, जेरु कहैगा राम १०४

दादू कहां लीन सुख देवथा, कहां पीपा रैदास
दादू साचा क्यूं छिपै, सकल लोक प्रकास १०५
दादू कहांथा गोरख भरथरी, अनंत सिधों का मंत
प्रगट गोपीचंद है, दत्त कहैं सब संत १०६
अगम अगोचर राखिये, करि करि कोटि जतन
दादू छांनां क्यूं रहै, जिस घट राम रतन १०७
दादू स्वर्ग पयाल मैं, साचा लेवै नांम
सकल लोक सिर देखिये, प्रगट सब हीं ठांम १०८

स्मरणलाविरस० ।

स्मरण का संसारह्या, पछितावा मन मांहि
दादू मीठा रामरस, सगला पीया नांहि १०९
दादू जेसा नावथा, तैसा लीया नांहि
हौंस रही यहु जीव मैं, पछितावा मन मांहि ११०

स्मरण नाम चिंता० ।

दादू सिर करवत बहै, राम हृदैंथी जाय
मांहि कलेजा काटिए, काल दसूं दिस खाय १११
दादू सिर करवत बहै, बिसरै आत्म राम
मांहि कलेजा काटिये, जीव नही बिश्राम ११२
दादू सिर करवत बहै, अंग परस नहीं होय
मांहि कलेजा काटिये, यहु बिथा न जाणै कोय ११३
दादू सिर करवत बहै, नैनहु निरखै नांहि
मांहि कलेजा काटिये, साल रह्या मन मांहि ११४
जेता पाप सब जग करै, तेता नाम बिसारैं होइ
दादू राम संभालिये, तो ऐता डारै धोय ११५

दादू जबही राम विसारियें, तबही मोटी मार
खंड खंड करि नांखिये, बीज पडै तिंहिंवार ११६
दादू जबही राम बिसारिये, तबहीं झंपै काल
सिर ऊपर करवतबहै, आय पडै जम-जाल ११७
दादू जबही राम बिसारिये, तबही कंध बिणास
पग पग परलै पिंड पडै, प्राणी जाय निरास ११८
दादू जबही राम विसारिये, तबही हांनां होय
प्राण पिंड सरबस गया, सुखी न देख्या कोय ११९

नाम संपूरणता० ।

साहिबजी के नाममा, बिरहा पीड पुकार
ताला बेली रोवणां, दादू है दीदार १२०
साहिबजी के नाममां, भाव भक्ति बेसास
लै समाधि लागा रहै, दादू सांई पास १२१
साहिबजी के नाममां, मति बुधि ज्ञान बिचार
प्रेम प्रीति सनेह सुख, दादू जोति अपार १२२
साहिबजी के नाममा, सबकुछ भरे भंडार
नूर तेज अनंत है, दादू सिरजनहार १२३
जिस में सबकुछ सो लीया, निरंजन का नाम
दादू हिरदै राखिये, मैं बलिहारी जाम १२४

इति साखी ॥ २७६ ॥ अङ्ग २ ॥

॥ अथ बिरह को अङ्ग ३ ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः
वंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारगतः १
रति वंति आरति करै, राम सनेही आव
दादू ओसर अब मिलै, यहु विरहनिका भाव २
पीव पुकारै बिरहनी, निस दिन रहै उदास
राम राम दादू कहै, तालाबेली प्यास ३
मन चित चात्रग ज्यूं रटै, पीव पीव लागी प्यास
दादू दर्सन कारनै, पुरवहु मेरी आस ४
सब्द तुम्हारा उजला, चिरिया क्यूं कारी
तुहीं तुहीं निस दिन करौं, विरहा की जारी ५
बिरहनि दुख का सनिका हैं, जानत है जगदीस
दादू निस दिन वहि रहै, बिरहा करवत सीस ६

विरह विलाप० ।

बिरहनि रोवै राति दिन, झूरै मनही मांहि
दादू औसर चलिगया, प्रीत्म पाए नांहि ७

विरह ।

विरहनि कुरलै कुंज ज्यूं, निस दिन तलपत जाय
राम सनेही कारणै, रोवत रैनि विहाय ८
पासैं बैठा सब सुणैं, हमकौं जवाब न देय
दादू तेरे सिरचढै, जीव हमारा लेय ९

वि० विलाप० ।

सबकौ सुखिया देखिये, दुखिया नांहीं कोय
दुखिया दादूदास है, ऐन परस नहीं होय १०

साहिब मुख बोलै नहीं, सेवक फिरै उदास
यहु बेदन जीयमैं रहै, दुखिया दादूदास ११
पीव बिन पल पल जुग भया, कठिन दिवस क्यूं जाय
दादू दुखिया राम बिन, काल रूप सब खाय १२
दादू इस संसार मैं, मुझसा दुखी न कोय
पीव मिलन कै कारणैं, मैं जल भरिया रोय
नां वहु मिलै न मै सुखी, कहु क्यूं जीवन होय
जिनि मुझकौं घायल कीया, मेरी दारू सोय १३
दर्सन कारण बिरहनी, बैरागनि होवै
दादू बिरह विवोगनी, हरि मार्ग जोवै १४

बि० उपदेस० ।

अति गति आतुर मिलण कूं, जैसैं जलबिन मीन
सो देखै दीदार कौं, दादू आत्म लीन १५

बिन बिछोह० ।

राम बिछोही बिरहनी, फिरि मिलन न पावै
दादू तलपै मीन ज्यू, तुझ दया न आवै १६
दादू जबलग सुर्ति सिमटै नहीं, मन निहचल नहीं होय
तबलग पीव परसै नही, बडी बिपति यो मोहि १७

बिरह ।

ज्यूं अमली कै चित अमल है, सूरेके संग्राम
निर्धन कै चित धन बसै, यूं दादूकै राम १८
ज्यूं चातृग कै चित जल बसै, ज्यू पाणी बिन मीन
जैसैं चंद चकोर है, ऐसैं दादू हरिसौं कीन १९
ज्यूं कुंजरकै मन बन बसै, अनिल पंक्ष आकास

यूं दादूका मन रामसूं, ज्यूं बैरागी बन खंड बास २०
भवरा लुबधी बासका, मोह्या नाद कुरंग
यों दादूका मन रामसौं, ज्यूं दीपक जोति पतंग २१
श्रवना राते नादसों, नैना राते रूप
जिभ्या राती स्वादसौं, त्यूं दादू एक अनूप २२

बिरह उपदेस० ।

देह पियारी जीवकौं, निस दिन सेवा मांहि
दादू जीवण मरणलौं, कबहूं छीडै नांहि २३
देह पियारी जीवकों, जीव पियारा देह
दादू हरिरस पाइय, जे अैसा होय सनेह २४

बि० ।

दादू हरदम मांहि दिवांन, सेज हमारी पीव है
देषोंसो सुबहान, ए इश्क हमारा जीव है २५
दादू हरदम मांहि दिवान, कहूं दरूनै दरदसों
दरद दरूनैं जाय, जब देषों दीदारकौं २६

बिरह बीनती० ।

दादू दरोंनैं दरद वंद, यहु दिल दरद न जाय
हम दुखिया दीदार के, मिहरवान दिखलाय २७
मूए पीड पुकारतां, बैद न मिलाया आय
दादू थोडी वातथी, जे टुक दरस दिखाय २८
दादू मैं भिखारी मंगता, दर्सन देहु दयाल
तुम्ह दाता दुख भंजता, मेरी करहु संभाल २९

छिन बिछोह० ।

क्या जीयेमैं जीवणां, बिन दर्सन बेहाल
दादू सोई जीवणां, प्रगट प्रसन लाल ३०

इहे जग जीवन सो भला, जबलग हिरदै राम
राम विनां जे जीवना, सो दादू बे काम ३१

वि० वीनती० ।

दादू कहु दीदार की, सांई सेती बात .
कब हरि दर्सन देहुगे, यहु ओसर चलि जात ३२
बिथा तुम्हारे दर्सकी, मोहि व्यापै दिन रात
दुखी न कीजै दीनकूं, दर्सन दीजै तात ३३

वि० ।

दादू इस हियडे ए साल, पीव विन क्यूं हीन जायसी
जब देखों मेरा लाल, तब रोम रोम सुख आयसी ३४

वि० वीनती० ।

तूं है तैसा प्रकास करि, अपणां आप दिखाय
दादू कौं दीदार दे, बलिजांऊ बिलंबन लाय ३५

वि० ।

दादू पीवजी देषै मुझकौं, हों भी देखों पीव,
हों देषों देखत मिलै, तौ सुख पावै जीव ३६

वि० कसोटी० ।

दादू कहे तन मन तुम्ह परिवारणैं, करि दीज कै बार
जे ऐसी बिधि पाइये, तो लीजै सिरजनहार ३७

वि० पतिव्रत० ।

दीन दुनी सदकै करौं, टूक देखण दे दीदार
तन मन भी छिन छिन करौं, भिस्त दो जग भी वार ३८

वि० कसोटी० ।

दादू हम दुखिया दीदार के, तूं दिल थैं दूर न होइ
भावै हमकौं जालिदे, हूंणां हो सो होय ३९

बि० पतिव्रत ।

दादू कहै जे कुछ दीया हमकों, सो सब तुम्ह ही लेहु
तुम्ह विन मन मांनैं नहीं, दरस आपणां देहु ४०
दूजा कुछ मांगै नहीं, हमकौं दे दीदार
तूं है तबलग एक टक, दादू के दिलदार ४१

बि० वीनती० ।

दादू कहै तूं है तूं है तैसी भगति दे, तूं है तैसा प्रेम
तूं है तैसी सुर्ति दे, तूं है तैसा क्षेम ४२

बि० कसोटी० ।

दादू कहै सदिकै करौं सरीरकूं, बेर बेर बहु भंत
भाव भगति हित प्रेमल्यो, खरापियारा कंत ४३

बि० ।

दादू दर्सन कीरली, हमकों बहुत अपार
क्या जांणों कबहीं मिलैं, मेरा प्राण अधार ४४

बि० वीनती० ।

दादू कारण कंतके, खरा दुखी बेहाल
मीरा मेरा महरकरि, दे दर्सन दरहाल ४५
तालाबेली प्यास बिन, क्यूं रस पीया जाय
विरहा दर्सन दरद सौं, हमकौं देहु खुदाय ४६
तालाबेली पीड़सों, विराहा प्रेम पियास
दरसन सेती दीजिये, बिलसै दादूदास ४७
दादू कहै हमकों अपणां आपदे, इसक महबति दरद
सेज सुहाग सुख प्रेमरस, मिलि खेलैंला प्रद ४८

वि० उपदेस० ।

प्रेम भक्ति माता रहै, तालाबेली अंग
सदा सपीड़ा मन रहै, राम रमै उनसंग ४९

वि० वीनती० ।

प्रेम मगन रस पाइये, भगति हेत रुचि भाव
विरह विलास निज नाम सौं, देव दयाकरि आव ५०
गई दसा सब वाहुडै, जे तुम प्रगटहु आय
दादू ऊजड सब बसै, दर्सन देहु दिखाय ५१
हम कसिर्ये क्या होयगा, बिडद तुम्हारा जाय
पीछैंही पछिताहुगे, ताथैं प्रगटहु आय ५२

छिन बिछोह० ।

मीयां मैंडा आव घर, वांढी वतां लोय
दुखंडे मुहिडे गये, मरां विछोहैं रोय ५३

वि० पतिब्रत० ।

है सो निधि नही पाइये, नही सुहै भरपूरि
दादू मन मांनै नही, ताथैं मरिये झूरि ५४

बिरही विरह लक्षन पारिष० ।

जिस घट इसक अल्लाहका, तिस घट लोहीं न मास
दादू जियरेजक नहीं, ससकै सासैं सास ५५
रती रब न बीसरे, मरैं संभालि संभालि
दादू सौदाइ रहै, आसिक अलह नालि ५६
दादू आसिकरबदा, सिर भी देवे लाहि
अलह कारण आपकों, साडे अंदर भाहि ५७

बि० कसौटी० ।

भोरैं भोरैं तन करै, वंडे कर कुरवांण
मिठा कौड़ा नां लगै, दादू तो हूं साण ५८

बिरही बिरह लक्षन० ।

जबलग सीस न सौंपिये, तबलग इसक न होय
आसिक मरणै नां डरै, पीया पीयाला सोय ५९

बि० पतिव्रत० ।

तैडी नोई सभु, जेडीये दीदार के
उजल हंदी अभु, पसांई दोपाण के ६०
बिचौंस भोडूरि कारि, अंदर बीयान पाय
दादू रताहि कदा, मनमह बातिलाय ६१

बि० उपदेस०

इसक महबति मस्त मन, तालिब दरदीदार
दोसत दिल हरदम हजूर, यादगार हुसियार ६२

बि० बिरह लक्षन० ।

दादू आसिक एक अल्लाहके, फारिक दुनियां दीन
तारिक इस औजूद थैं, दादू पाक अकीन ६३

बि० पञ्जास उपदेस० ।

आसिकां रह कबज करदां, दिल वंजां रफतंद
अलह आले नूर दीदम, दिलह दादू बंद ६४

शब्द ।

दादू इसक अवाजसौं, ऐसैं कहै न कोय
दरद महबति पाइये, साहिब हासिल होय ६५

बि० दी बिरह लछन० ।

दादू कहां आसिक अलाह के, मारे अपणें हाथ
कहां आलम ओजूदसों, कहैं जबांकी बात ६६
दादू इशक अलाहका, जे कबहूं प्रगटै आय
तन मन दिल अरवाहका, सब पडदा जालि जाय ६७

बि० यह्नाम उपदेस० ।

अरवा हे सिजदा कुनंद, वजुद रा चिकार
दादू नूर दादनी, आसिकां दीदार ६८

बि० ज्ञान आग्नि० ।

बिरह अग्नि तन जालिये, ज्ञान अगनि दौं लाय
दादू नख सिख प्रजलै, तब राम बुझावै आय ६९
बिरह अग्नि मैं आलिबा, दरसन कैं तांई
दादू आतुर रोइबा, दूजा कुछ नांहीं ७०

बि० पतिव्रतउप० ।

साहिब सूं कुछ बल नहीं, जिनि हट साधै कोय
दादू पीड पुकारिये, रोतां होय सु होय ७१
ज्ञान ध्यान सब छाडिदे, जप तप साधन जोग
दादू बिरहाले रहै, छाड़ सकल रस भोग ७२
जहां बिरहा तहां और क्या, सुधि बुध नाठे ज्ञान
लोक वेद मार्ग तजे, दादू एकै ध्यांन ७३

बिरही बिरह लछन० ।

बिरही जन जीवै नहीं, जे कोटि कहै समझाय
दादू गहिला ह्वै रहै, कै तलफि तलफि मरिजाय ७४
दादू तलफै पीडसौं, विरही जन तेरा
ससकै सांई कारणैं, मिलि साहिब मेरा ७५

दादू बिरही पीडसौं, पड्या पुकारैं मीत
राम बिनां जीवै नहीं, पीव मिलन की चीत ७६
पड्या पुकारै पीडसौं, दादू बिरही जन
राम सनेही चित बसै, और न भावै मन ७७
जिस घट बिरहा रामका, उस नींद न आवै
दादू तलफै बिरहणी, उस पीड़ जगावै ७८
सारा सूरा नींद भरि, सब कोई सोवै
दादू घायल दरद वंद, जागै अरु रोवै ७९
पीड पुरांणी नां पडै, जे अंतर वेध्या होय
दादू जीवण मरणलौं, पड्या पुकारै सोय ८०
जे कबहूं बिरहनि मरै, तौ सुर्ति बिरहनी होय
दादू पीव पीव जीवतां, मुवां भी टेरै सोय ८१
दादू अपणी पीड़ पुकारिय, पीड़ पराई नांहि
पीड पुकारै सो भला, जाकै कर कलेजे मांहि ८२

वि० बिरहला० ।

ज्यूं जीवत मृतक कारणैं, गत करि नांखै आप
यों दादू कारण रामके, बिरही करै बिलाप ८३
दादू तलफि तलफि बिरहणि मरै, करि करि बहुत बिलाप
बिरह अग्निमैं जलीगई, पीवन पूछै बात ८४
दादू कहां जांऊ कौंणपै पुकारूं, पीवन पुछै बात
पीव बिन चैनन आवई, क्यूं मरों दिन राति ८५
दादू बिरह बिवोगन सहिसकौं, मोपै सह्यान जाय
कोई कहो मेरे पीवकौं, दरस दिखावै आय ८६
दादू बिरह बिवोगन सहिसकौं, निस दिन सालै मोहि
कोई कहौ मेरे पीवकौं, कब मुख देखो तोहि ८७

दादू बिरह बिवोगन सहिसकौं, तन मन धरै न धीर
कोई कहौ मेरे पीवकूं, मेटै मेरी पीर ८८
दादू लाइक हम नहीं, हरिके दर्सन जोग
बिन देखे मरिजांहिगे, पीवके बिरह बिवोग ८९

बि० पतिव्रत ।

दादू सुष सांई सों, और सबैही दुख
देखों दरसन पीवका, तिसही लागै सुख ९०
चंदन सीतल चंद्रमां, जल सीतल सब कोय
दादू बिरही रामका, इनसौं कदे न होय ९१

बिरही बिरह लछन ।

दादू घाइल दरद बंद, अंतर करै पुकार
सांई सुणैं सब लौकमै, दादू यहु अधिकार ९२
दादू जागै जगत गुरु, जग सगला सोवै
बिरही जागै पीडसौं, जे घायल होवै ९३

बि० ज्ञानआग्नि० ।

बिरह अग्निका दागदे, जीवत मृतक गोर
दादू पहली घर कीया, आदि हमारी ठौर ९४

बिपंति पतिव्रत० ।

दादू देखे का अचिरज नहीं, अण देखे का होय
देखे ऊपर दिल नहीं, अण देखे कूं रोय ९५
पहली आगम बिरहका, पीछै प्रीति प्रकास
प्रेम मगन लैलीन मन, तहां मीलनकी आस ९६
बिरह बिवोगी मन भला, सांई का बैराग
सहज संतोषी पाइये, दादू मोटे भाग ९७

दादू तृषाबिना तन प्रीति न ऊपजै, सीतल निकटि जल धरिया
जनम लगे जीव पुण गन पीवै, निर्मल दहदिसि भरिया ९८
दादू क्षुध्याबिना तन प्रीति न ऊपजै, छहु बिधि भोजन नेरा
जनम लगै जीव रती न चाखै, पाक पूरबहु तेरा ९९
दादू तप्त विनां तन प्रीति न ऊपजै, संगही सीतल छाया
जनम लगै जीव जाणैं नाही, तरवर तृभवन राया १००
दादू चोटविनां तन प्रीति न ऊपजै, ओषधि अंग रहंत
जन्म लगै जीव पलक न परसै, बूटी अमर अनंत १०१
दादू चोट न लागी बिरहकी, पीड न ऊपजी आय
जागि न रोवै धाहदे, सोवत गई विहाय १०२
दादू पीड न ऊपजी, नां हमकरी पुकार
तार्थें साहिब नां मिल्या, दादू बीती वार १०३
अंदर पीड न ऊभरै, बाहरि करै पुकार
दादू सो क्यूं करि लहै, साहब का दीदार १०४
दादू मनही माहे झूरणां, रोवैं मनही मांहि
मनहीं माहे धाहदे, दादू बाहरि नांहि १०५
बिनहीं नैंनहुं रोवणां, बिन मुख पीड पुकारि
बिनहीं हाथूं पीटणां, दादू बारं वार १०६
प्रीति न उपजै बिरह बिन, प्रेम भक्ति क्यूं होय
सब झूठी दादू भाव बिन, कोटि करैजे कोय १०७
दादू वातूं बिरह न ऊपजै, वातों प्रीति न होय
वातौं प्रेम न पाइए, जिनि रू पतिजे कोय १०८

वि० उपदेस० ।

दादू तो पीव पाइए, कुसमल है सो जाय
निर्मल मन करि आरसी, मूरति मांहि लखाय १०९

दादू तो पीव पाइए, करि मंझे बिलाप
सुणिहै कबहूं चितधरि, परगट होवै आप १११
दादू तो पीव पाइए, करि सांईकी सेव
काया माहैं लखायसी, घटही भीतरि देव ११२
दादू तो पीव पाइए, भावै प्रीति लगाव
सहजैं हरी बुलाइए, मोहन मंदिरआन ११३

बि० उपजनि० ।

दादू जाकै जैसी पीडहै, सो तैसी करै पुकार
को सूक्ष्म को सहज मैं, को मृतक तिहिं बार ११४

वि० विरह लक्षन० ।

दरद हि बूझै दरद वंद; जाकै दिल होवै
क्या जाणैं दादू दरदकी, नींद भरि सोवै ११५

कथीनी विनां करणी० ।

दादू अक्षर प्रेमका, कोई पढैगा एक
दादू पुस्तक प्रेम बिन, केते पढै अनेक ११६
दादू पाती प्रेमकी, बिरला बांचै कोय
वेद पुराण पुस्तक पढै, प्रेम बिना क्या होय ११७

विरह बांन० ।

दादू कर बिन सर बिन कमांण बिन, मारै खैंचिक सीस
लागी चोट सरीरमै, नखसिख सालै सीस ११८
दादू भलका मारै भेदसूं, सालै मंझि प्राण
मारण हारा जाणिहै, कै जिहिं लागै बाण ११९
दादू सो सर हमकूं मारिले, जिहिंसर मिलिये जाय
निसदिन मार्ग देखिये, कबहूं लागै आय १२०

दादू मारे प्रेमसूं, बेधे साधु सुजाण
मारण हारकों मिलें, दादू विरही बाण १२१
जिहिंलागी सो जागिहै, बेध्या करै पुकार
दादू पिंजर पीडहै, सालै बारं बार १२२
बिरही ससकै पीडसूं, ज्यूं घाइल रणमांहि
प्रीतम मारे बाणभरि, दादू जीवै नांहि १२३
दादू बिरह जगावै दरदकों, दरद जगावै जीव
जीव जगावै सुर्तिकूं, पंच पुकारै पीव १२४
सहजैं मनसा मनसधै, सहजैं पवना सोय
सहजैं पचूं थिरभए, जैं चोट बिरह की होय १२५
मारण हारा रहिगया, जिहिं लागी सो नांहि
कबहूं सो दिन होगा, यहु मेरे मन मांहि १२६
प्रीतम मारे प्रेमसूं, तिनकूं क्या मारे
दादू जारे बिरह के, तिनकूं क्या जारे १२७

छिन।विछोह०।

दादू पडदा पलकका, एता अंतर होय
दादू बिरही राम बिन, क्यूं करि जीवै सोय १२८

बिरही विरह लछन०।

काया मांहे क्यों रह्या, बिनदेषे दीदार
दादू बिरही बावरा, मरै नहीं तिहिं बार १२९
बिन देषे जीवै नहीं, बिरह का सहिनाण
दादू जीवै जबलगै, तबलग बिरहन जाण १३०

बिरहीं विनती०।

रोम रोम रस प्यासहै, दादू करहि पुकार

राम घटा दल उमंगि करि, बरसहु सिरजनहार १३१

।विरही वि० लक्षन० ।

प्रीति जु मेरे पीवकी, पैठी पिंजर मांहि
रोम रोम पीव पीव करै, दादू दूसर नांहि १३२
सबघट श्रवनां सुर्तिसों, सबघट रसनां बैन
सबघट नैनां ह्वै रहै, दादू बिरहा ऐन १३३

वि० विलाप० ।

राति दिवस का रोवणां, पहर पलक का नांहि
रोवत रोवत मिलिगया, दादू साहिब मांहि १३४
दादू नैन हमारे बावरे, रोवै नही दिनराति
सांइ संग न जागही, पीव क्यूं पूछै वात १३५
दादू नैनहु नीर न आइया, क्या जाणैं ए रोय
तैसैंही करि रोईए, साहिब नैनहु जोय १३६
दादू नैन हमारे ढीवहै, नाले नीर न जांहि
सूके सरांस हे तबै, करंक भए गलि मांहि १३७

विरही विरह लक्षन० ।

दादू बिरह प्रेमकीं लहरिमै, यहु मन पंगुल होय
राम नाम मै गलिगया, बूझै बिरला कोय १३८

विरह ज्ञान अग्नि० ।

दादू बिरह अग्नि मैं जलिगए. मनके मैल विकार
दादू विरही पीवका, देखैगा दीदार १३९
बिरह अग्नि मैं जलिगए, मनके बिखै बिकार
ताथैं पंगुल ह्वै रह्या, दादू दरदी दार १४०
जब बिरहा आया दरद सों, तब मीठा लागा राम

कांया लागी कालहै, कडवे लागे काम १४१

बिरह बान० ।

जब राम अकेला राहिगया, तन मन गया बिलाय
दादू बिरही तब सुखी, जब दर्स परस मिलि जाय १४२

बिरही बिरह लच० ।

जब राम अकेला रही गया, तन मन गया विलाय
दादू बिरही तब सुखी, जब दरस परस मिलि जाइ १४३
जे हम छाडै रामकूं, तौ राम न छाडै
दादू अमली अमल थैं, मन क्यूं करि काढै १४४
बिरहा पारस जब मिलै, तब बिरहणि बिरहा होय
दादू परसै बिरहणीं, पींव पीव टेरै सोय १४५
आसिक मासूक कै गया, इसक कहावै सोय
दादू उस मासूक का, अलह आसिक होय १४६
राम बिरहणी ह्वै रह्या, बिरहणि ह्वै गई राम
दादू बिरहा बापुरा, ऐसे करि गया काम १४७
बिरह बिचारा लेगया, दादू हमकूं आय
जहां अगम अगोचर रामथा, तहां बिरह बिनांको जाय १४८
बिरहा बपुरा आइ करि, सोवत जगावै जीव
दादू अंग लगाइ करि, ले पहंचावै पीव १४९
बिरहा मेरा मीत है, बिरहा बैरी नांहि
बिरहै कूं बैरी कहै, सो दादू किस मांहि १५०
दादू इसक अलह की जाति है, इसक अलह का अंग
इसक अलह औजूद है, इसक अलह का रंग १५१

साधक महिमा महात्म० ।

दादू प्रीतम के पग परसिय, मुझि देखण का चाव
तहां ले सीस नवाइये, जहां धरेथे पाव १५२

वि० पतिव्रत० ।

दादू बाट बिरह की सोधि करि, पंथ प्रेमका लेहु
लैकै मार्ग जाइए, दूसर पाव न देहु १५३
विरहा बेगा भक्ति सहज मैं, आगैं पीछैं जाय
थोडे मांहे बहुत है, दादू रहु ल्योलाय १५४

वि० बान० ।

विरहा वेगा ले मिलै, तालाबेली पीर
दादू मन घाइल भया, सालै सकल सरीर १५५

विर० विनती० ।

आज्ञा अपरंपार की, बसि अंबर भरतार
हरे पटंबर पहरी करि, धरती करै सिंगार १५६
बसुधा सब फूलै फलै, पृथिवि अनंत अपार
गगन गरजि जलथल भरे, दादू जय जय कार १५७
दादू काला मुहकरि काल का, सांई सदा सुकाल
मेघ तुम्हारे घर घणां, बरसहु दीन दयाल १५८

इति अङ्ग साखी० ॥ ४३१ ॥

॥ अथ प्रचाको अङ्ग ॥

—*—

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू निरंतर पीव पाइया, तहा पक्षी उनमन जाय
सप्तौं मंडल भेदिया, अष्टैं रह्या समाय २
दादू निरंतर पीव पाइया, तहां निगम न पहुंचै बेद
तेज सरूपी पीव बसै, कोई बिरला जाणै भेद ३
दादू निरंतर पीव पाइया, तीन लोक भरपूर
सब सेजों सांई बसै, लोक बतावैं दूर ४
दादू निरंतर पीव पाइया, तहां आनंद बारह मास
हंससौं परमहंस खेलै, तहां सेवक स्वामी पास ५
दादू रंग भरि खेलौं पीव सौं, तहां बाजै बैन रसाल
अकल पाटपर बैठा स्वामी, प्रेम पीलावै लाल ६
दादू रंगभरि खेलौं पीव सौं, सती दीनदयाल
निस बासुर नहीं तहां बसै, मानसरोवर पाल ७
दादू रंग भरि खेलूं पीव सौं, तहां कबहू न होइ विवोग
आदि पुरुष अंतर मिल्या, कुछ पुरबले संजोग ८
दादू रंगभरि खेलौं पीव सौं, तहां बारह मास बसंत
सेवक सदा अनंद है, जुग जुग देषों कंत ९
दादू काया अंतर पाइयां, निरंतर निरधार
सहजैं आप लखाइया, ऐसा समर्थ सार १०
दादू काया अंतर पाइया, तृकुटी केरे तीर
सहजैं आप लखाइया, व्याप्या सकल सरीर ११

दादू काया अंतर पाइया, अनहद बेन बजाय
सहजैं आप लखाइया, सुन्य मंडल मैं जाय १२
दादू काया अंतर पाइया, सब देवन का देव
सहजैं आप लखाइया, अैसा अलख अभेव १३
दादू भवर कमल रस बेधिया, सुख सरवर रस पीव
तहां हंसा मोती चुनैं, पीव देखें सुख जीव १४
दादू भवर कमल रस बेधिया, गहे चरण कर हेत
पीवजी प्रसन्न ही भया, रोम रोम सब स्वेत १५
दादू भवर कमल रस बेधिया, अनत न भरमैं जाय
तहां बास बिलंबिया, मगन भया रस खाय १६
दादू भवर कमल रस बेधिया, गहीजु पीवकी वोट
तहां दिल भवरा रहै, कौंण करै सर खोट १७

प्रचय यज्ञासु उपदेस०।

दादू खोजि तहां पीव पाइये, सब्द ऊपनैं पास
तहां एक एकांत है, तहां जोति प्रकास १८
दादू खोजि तहां पीव पाइये, जहां चन्द न ऊगै सूर
निरंतर निरधार है, तेज रह्या भरपूर १९
दादू खोजि तहां पीव पाइए, जहां बिन जिह्वा गुणगाय
आदि पुरुष अलेख है, सहजैं रह्या समाय २०
दादू खोजि तहां पीव पाइये, जहां अजरा अमर उमंग
जरा मरण भय भाजसी, राखै अपणै संग २१
दादू गाफिल छोवतैं, मंझें रब निहारि
मंझेंई पीव पाणजौं, मंझेंई विचारि २२
दादू गाफिल छोवतैं, आहे मंझि अलाह

पिरी पांण जौ पांण सैं, लहै सभोई साव २३
दादू गाफिल छोवतैं, आहे मंझि मुकाम
दरगह मैं दीवान तत्व, पसे न बैटो पाण २४
दादू गाफिल छोवतैं, अंदर पिरी पसु
तखत रवांणी बिचिमैं, पेरे तिन्ही बसु २५

परचै० ।

हरि चिंतामणि चिंततां, चिंता चित की जाय
चिंतामणि चित मैं मिल्या, तहां दादू रह्या लुभाय २६
अपने नैनहुं आप कौं, जब आतम देखै
तहां दादू प्रआत्मा, ताहि कूं पेखै २७
दादू बिन रसनां जहां बोलिये, तहा अंतरजामी आय
बिन श्रवणों सांई सुणै, जे कुछ कीजे जाय २८

प० यज्ञास उपदेस० ।

ज्ञान लहरि जहां थै ऊठै, बाणी का प्रकास
अनुभव जहां थैं ऊपजै, सब्दैं कीया निवास २९
सो धर सदा बिचार का, तहां निरंजन बास
तहां तूं दादू पोजि ले, ब्रह्म जीवके पास ३०
जहां तन मन का मूल है, ऊपजै ऊंकार
अनहद सेझा सब्दका, आतम करै विचार ३१
भाव भक्तिलै ऊपजै, सो ठाहर निज सार
तहां दादू निधि पाइये, निरंतर निरधार ३२
एक ठौर सूझै सदा, निकटि निरंतर ठाम
तहा निरंजन पूरिले, अजरा वरतिंहिं नाम ३३
साधू जन क्रीड़ा करै, सदा सुखी तिंहिं गाम

चलु दादू उस ठोर की, मै बलिहारी जाम २४
दादू पसु पिरंन के, पेही मंझि कलूब
बेठो आहे बिचमैं, पाण जो मह बूब ३४
नैनहुं वाला न्निखि करि, दादू घाले हाथ
तबही पावै राम धन, निकटि निरंजन नाथ ३५
नैंनहुं विन सूझै नहीं, भूला कतहुं जाय
दादू धन पावै नहीं, आया मूल गमाय ३६

परचैलै लक्षन सह० ज० ।

जहां आत्म तहां राम है, सकल रह्या भरपूर
अंतर गति ल्योलाइ रहु, दादू सेवकसूर ३७

परचै यज्ञासन उपदेश० ।

पहली लोचन दीजिये, पीछैं ब्रह्म दिषाय
दादू सूझै सार सब, सुख मैं रहै समाय ३८
आंधी के आनंद हूवा, नैनहु सूझन लाग
दर्सन देखै पीव का, दादू मोटे भाग ३९

उभै असमात्र० ।

दादू मिही महल वारी कहै, गाम न ठाम न नाम
तासू मन लागा रहै, मैं वलिहारी जाम ४०
दादू खेल्या चाहै प्रेम रस, आलम अंग लगाय
दूजें कूं ठाहर नहीं, पुहप न गंध समाय ४१
नाहीं ह्वै करि नाम ले, कुछ न कहाइरे
साहिब जीकी सेझ पारि, दादू जाइरे ४२
जहा राम तहां मै नहीं, मै तहा नाहीं राम
दादू महल वारीकहै, ह्वै कूं नाहीं ठाम ४३

मै नाहीं तहां मैं गया, एकै दूसर नांहि
नांही कूं ठाहर घणी, दादू निज घर मांहि ४४
मैं नांही तहां मैं गया, आगैं एक अलाव
दादू ऐसी बंदिगी, दूजा नांही आव ४५
दादू आपा जब लगै, तबलग दूजा होय
जब यहु आपा मिटिगया, तब दूजा नांहीं कोय ४६
दादू है कूंभै घणां, नांहीं कूं कुछ नाहि
दादू नाहीं होइ रहु, अपणैं साहिब मांहि ४७

प्रचेय।

दादू तीन सुंन्य आकारकी, चौथी निर्गुण नाम
सहज सुंन्य मै रमिरह्या, जहां तहां सब ठांम ४८
पांच तत्व के पांच है, आठ तत्व के आठ
आठ तत्व का एक है, तहां निरंजन हाट ४९
दादू जहां मन माया ब्रह्म था, गुंण इंद्रिय आकार
तहां मन बिरचै सबनि थैं, रचिरहु सिरजन हार ५०
काया सुन्य पंचका बासा, आत्म सुन्य प्रांण प्रकासा
परम सुन्य ब्रह्म सौं मेला, आगैं दादू आप अकेला ५१
जहां थैं सब ऊपजै, चंद सूर आकास
पाणी पवन पावक कीये, धरती का प्रकास
काल कर्म जीव ऊपजै, माया मन घट सास
तहां रहिता रमिता राम है, सहज सुन्य सब पास ५२
सहज सुन्य सब ठौर है, सब घट सबही मांहि
तहां निरंजन रमिरह्या, कोइ गुण व्यापै नांहि ५३
दादू तिस सरवर के तीर, सो हंसा मोती चुणैं

पीवै नीझर नीर, सोहै, हंसा सो सुणै ५४
दादू तिस सरवर के तीर, जप तप संजम कीजिये
तहां सनमुख सिरजन हार, प्रेम पिलावै पीजिये ५५
दादू तिस सरवर के तीर, संगी सबै सुहांवणें
तहां बिन कर बाजै बेंन, जिह्वा हीणें गावणें ५६
दादू तिस सरवर के तीर, चरन कमल चित लाइया
तहां आदि निरंजन पीव, भाग हमारे आइया ५७
दादू सहज सरोवर आत्मा, हंसा करैं कलोल
सुख सागर सु भर भस्या, मुक्ता हलमन मोल ५८
दादू हरि सरवर पूरण सबै, जिततित पाणीं पीव
जहां तहां जल अंचतां, गई तृखा सुख जीव ५९
सुख सागर सु भर भस्या, उज्जल निर्मल नीर
प्यास बिनां पीवै नहीं, दादू सागर तीर ६०
सुन्य सरोवर हंस मन, मोती आप अनंत
दादू चुगि चुगि चंचभरि, यों जन जीवै संत ६१
सुन्य सरोवर मीन मन, नीर निरंजन देव
दादू यह रस बिलसिये, ऐसा अलख अभेव ६२
सुन्य सरोवर मन भवर, तहां कमल करतार
दादू परमल पीजिये, सनमुख सिरजन हार ६३
सुन्य सरोवर सहजका, तहां मरजीवा मन
दादू चुणि चुणि लेइगा, भीतर राम रतन ६४
दादू मांझि सरोवर बिमल जल, हंसा केलि करांहि
मुक्ता हल मुक्ता चुगै, तिंहिं हंसा डर नांहि ६५
अखंड सरोवर अथघ जल, हंसा सरवर न्हांहि

निरभै पाया आपघर, अब उडि अनत न जांहि ६६

दादू दरिया प्रेमका, तामैं झूलै दोय
इक आत्म परआत्मा, एक मेक रस होय ६७

दादू हिण दारियाव, मांणिक मंझेंही
डुबी डेई पाण मैं, डिठो हंझेई ६८

पर आत्म सौं आत्मा, ज्यूं हंस सरोवर मांहि
मिलि मिलि खेलै पीवसौं, दादू दूसर नांहि ६९

दादू सरवर सहज का, तामैं प्रेम तरंग
तहां मन झूलै आत्मा, अपणे सांई संग ७०

दादू देखौं निज पीवकौं, दूसर देखौं नांहि
सबै दिसासो सोधिकरि, पाया घटही मांहि ७१

दादू देखौं निज पीवकौं, और न देखौं कोय
पूरा देखूं पीवकौं, वाहर भीतर सोय ७२

दादू देखूं निज पीवकौं, देखतही दुख जाय
हूंतौ देखूं पीवकौं, सबमैं रह्या समाय ७३

दादू देखूं निज पीवकौं, सोई देखण जोग
प्रगट देखूं पीवकौं, कहा बतावै लोग ७४

प्रच यज्ञास उपदेस॰ ।

दादू देखु दयालकौं, सकल रह्या भरपूर
रोम रोम मैं रमि रह्या, तूं जिन जानै दूर ७५

दादू देखु दयालकूं, वाहर भीतर सोय
सब दिसि देखौ पीवकूं, दूसर नांही कोय ७६

दादू देखु दयालकौं, सनमुख सांई सार
जीधर देखूं नैन भरि, तीधर सिरजन हार ७७

दादू देखु दयालकूं, रोकि रह्या सब ठौर
घट घट मेरा सांईया, तू जिन जानै और ७८

उभै असमाव अंग०।

तनमन नांही मै नहीं, नहीं माया नहीं जीव
दादू एकै देखिये, दह दिस मेरा पीव ७९

पति पहिचान०।

दादू पाणी मांहै पैसिकरि, देखै दृष्टि उघारि
जला बिंब सब भरि रह्या, ऐसा ब्रह्म विचारि ८०

परचै पतिव्रत०।

सदा लीन आनद मै, सहज रूप सब ठौर
दादू देखै एककूं, दूजा नांहीं ओर ८१
दादू जहां तहां साथी संग है, मेरै सदा अनंद
नैन बैन हिरदै रहै, पूरण परमानंद ८२
जागत जगपति देखिये, पूरण परमानंद
सोवत भी सांई मिलै, दादू अति आनंद ८३

प्रत्यय०।

दादू दहदिस दीपक तेजके, बिन बाती बिन तेल
चहुंदिस सूर्ज देखिये, दादू अद्भुत खेल ८४
सूर्ज कोटि प्रकास है, रोम रोम की लार
दादू जोति जगदीस की, अंत न आवे पार ८५
ज्यू रवि एक अकास है, ऐसे सकल भरपूर
दादू तेज अनंत है, अलै आलै नूर ८६
सूर्ज नही तहां सूर्ज देखे, चंद नहीं तहां चंदा
तारे नही तहां झिलमिल देख्या, दादू अत्ति आनंदा ८७

बादल नहीं तहां बरखत देख्या, शब्द नहीं गरजंदा
बीज नहीं तहां चमकत देख्या, दादू परमानंदा ८८

आत्म बलीतर० ।

दादू जोति चमकै झिलिमिलै, तेज पुंज प्रकास
अमृत झरै रस पीजिये, अमर बेलि आकास ८९

प्रचय० ।

दादू अविनाशी अंग तेज का, अैसा तत्व अनूप
सो हम देख्या नैंन भरि, सुंदर सहज सरूप ९०
परम तेज प्रगट भया, तहां मन रह्या समाय
दादू खेलै पीवसौं, नहीं आवै नहीं जाय ९१
निराधार निज देखिये, नैनहुं लागा बंद
तहां मन खेलै पीव सौं, दादू सदा अनंद ९२

आत्म बेल्लीतर० ।

अैसा एक अनूप फल, बीज बाकुला नांहि
मीठा निर्मल एक रस, दादू नैनहुं मांहि ९३

प्र० ।

हीरे हीरे तेज के, सो निरखै तृय लोय
कोई इक देखै संतजन, और न देखै कोय ९४
नैन हमारे नूरमां, तहां रहे ल्यौलाय
दादू उस दीदार कूं, निसदिन निरखत जाय ९५
नैनहुं आगै देखिये, आत्म अंतर सोय
तेज पुंज सब भरिरह्या, झिलमिल झिलमिल होइ ९६
अनहद बाजे बाजियें, अमरापुर बास
जोति सरूपी जगमगै, को निरखै निज दास ९७

परम तेज तहां मन रहै, परम नूर निज देखै
परम जोति तहां आत्म खेलै, दादू जीवन लेखै ९८
जरै सु जोति सरूप है, जरै सु तेज अनंत
जरै सु झिलिमिलि नूर है, जरै सु पुंज रहंत ९९

पति पहिचांन० ।

दादू अलख अलाह का, कहु कैसा है नूर
दादू बेहद हद नहीं, सकल रह्या भरपूर १००
वारपार नही नूर का, दादू तेज अनंत
कीमति नहीं करतार की, असा है भगवंत १०१
निसँध नूर अपार है, तेज पुंज सब मांहि
दादू जोति अनंत है, आगो पीछो नांहि १०२
खंड खंड निज न भया, इकलस एकै नूर
ज्यूं था त्यूंही तेजहै, जोति रही भरपूर १०३
परम तेज प्रकास है, परम नूर निवास
परम जोति आनंद मै, हंसा दादू दास १०४

प्र० ।

नूर सरीषा नूरहै, तेज सरीषा तेज
जोति सरीषी जोति है, दादू खेलै सेज १०५
तेज पुंजकी सुंदरी, तेज पुंजका कंत
तेज पुंजकी सेजपर, दादू बन्या बसंत १०६
पुहप प्रेम बरषै सदा, हरिजन खेलै फाग
असा कौतिग देखिया, दादू मोटे भाग १०७

रमका० ।

अमृत धारा देखिये, पारब्रह्म बरषंत

तेज पुंज झिलिमिलि झरै, को साधकजन पीवंत १०८
रसहीं मैं रस बरखि है, धारा कोटि अनंत
तहां मन निहचल राखिये, दादू सदा बसंत १०९
घन बादल बिन बरषि है, नीझर निर्मल धार
दादू भीजै आतमा को, साधु पीवण हार ११०
ऐसा अचिरज देखिया, बिन बादल बरषै मेह
तहां चित चातृग ह्वै रह्या, दादू अधिक सनेह १११
महारस मीठा पीजिये, अविगति अलख अनंत
दादू निर्मल देखिये, सहजैं सदा झरंत ११२

करता कामधेनु० ।

कामधेनु दुहि पीजिये, अकल अनूपम एक
दादू पीवै प्रेमसूं, निर्मल धार अनेक ११३
कामधेनु दुहि पीजिये, ताकूं लखै न कोय
दादू पीवै प्याससूं, महारस मीठा सोय ११४
कामधेनु दुहि पीजिये, अलख रूप आनंद
दादू पीवै हेतसौं, सुख मन लागा बंद ११५
कामधेनु दुहि पीजिये, अगम अगोचर जाइ
दादू पीवै प्रीतसूं, तेज पुंजकी गाय ११६
कामधेनु करतार है, अमृत सरवै सोय
दादू बछरा दूधकौं, पीवै तो सुख होय ११७
ऐसी एकै गाइ है, दूझै बारह मास
सो सदा हमारे संग है, दादू आतम पास ११८

प्रचय आत्म बेलीतर० ।

तरवर साखा मूल बिन, धरती पर नांहीं

अविचल अमर अनंत फल, सो दादू खांहीं ११९
तरवर साखा मूल बिन, धर अंबर न्यारा
अविनासी आनंद फल, दादू का प्यारा १२०
तरवर साखा मूल बिन, रज बीर्ज रहिता
अजरा अमर अतीत फल, सो दादू गहिता १२१
तरवर साखा मूल बिन, उतपति परलय नांहि
रहिता रमिता राम फल, दादू नैनहुं मांहि १२२
प्राण तरवर सुर्ति जड़, ब्रह्म भूमिता मांहि
रस पीवै फूलै फलै, दादू सूकै नांहि १२३

प्र० यज्ञासु उपदेश ।

ब्रह्म सुन्य तहा क्या रहै, आत्म के अस्थांन
काया अस्थल क्या बसै, सतगुरु कहै सुजान १२४
काया के अस्थल रहै, मन राजा पंच प्रधांन
पचीस प्रकीरत तीनगुण, आपा गर्व गुमान १२५
आत्म के अस्थांन है, ज्ञान ध्यान विस्वास
सहज सील संतोष सत, भाव भक्ति निधि पास १२६
ब्रह्म सुन्य तहां ब्रह्म है, निरंजन निरकार
नूर तेज तहां जोति है, दादू देखण हार १२७
मोजूद खबरं माबूद खबर, अरवाह खबर ओजूद
मुकामे च चीजस्त, दांदनि सजुद १२८
औजूद मुकामे अस्त, न फंस गालिब
किबर काबिज गुमामनी येस्त,
दुई दरोग हिरस हुजत, नाम नेकी नेस्त १२९
अरवाह मुकामे अस्त, इसक इबादत बंदगी

इगांनां इखलास, मिहर महबति खैरखूबी, नामनेकीपास १३०
आबूइ मुकामे हस्त, इके नूर खूब खूबां
दीदगी हैरान, अजब चीजि खुरदनी, प्याले मस्तांन १३१
हैवांन आलम गुमराह गाफिल, अवलि सरियत पंद
हला लहरा मनेकी बदी, दुरिस्त दानिशमन्द १३२
कुल फारिके तरक दुनीयां, हरो जहर दम याद
अलह आले इसक आसिक, दरूनैं फिरियाद १३३
आब आतस अरस कुरसी, सुरते सु विहान
सिर रसिफतां करद बूदं, मारफत मुकांम १३४
हक हासिल नूर दीदसे, करारे मकसूद
दीदार दरिया अरवाह आमंद, मौजूद मौजूद १३५
चहार मंजल बयान गुफतं, दस्त करदां बूद
पीरा सुगीदां खबर करदां, राहे माबूद १३६
पहली प्राण पसू नर कीजै, साच झूठ संसार
नीति अनीति भला बुरा, सुभ असुभ निरधार १३७
सब्र तजि देखि विचारि करि, मेरा नाहीं कोय
अनदिन राता रामसूं, भाव भक्ति रत होय १३८
अंबर धरती सूरससि, सांई सब लेलाकै अंग
जस कीरति करूणां करै, तन मन लागा रंग १३९
परम तेज तहां मन गया, नैनहुं देख्या आय
सुख संतोष पाया घणां, जोति है जोति समाय १४०
अरथ च्यारि अस्थांन का, गुरु सिष कह्या समझाय
मार्ग निरजन हारका, भागबड सो जाय १४१
आरवाह सिजदा कुनंद, औजूदरा चिकार

दादू नूर दादनी, आसिकां दीदार १४२
आसिकां रह कबज करदा, दिल वंजार फतंद
अलह आले नूर दीदम, दिलह दादू बंद १४३
आसिकां मस्तात आलम, खुरदनी दीदार
चंद रह चिकार दादू, यार मां दिल दार १४४

म० ।

दादू दया दयालकी, सो क्यूं छांनी होय
प्रेम पुलकि मुलकत रहै, सदा सुहागनि सोय १४५
दादू विगसि विगसि दर्सन करै, पुलकि पुलकि रसपांन
मगन गलित माता रहै, अरस परस मिलि प्राण १४६
दादू देखि देखि स्मरण करै, देखि देखि लै लीन
देखि देखि तन मन विलै, देखि देखि चित दीह्न १४७
दादू निरखि निरखि निज नांमले, निरखि निरखि रस पीव
निरखि निरखि पीवकों मिलै, निरखि निरखि सुखजीव १४८

ग० स्मारण नांग पारिप लक्षन०

तन सूं स्मरण सब करैं, आत्म स्मरण एक
आत्म आगै एक रस, दादू बडा बिबेक १४९
दादू मांठी के मुकाम का, सब को जाणै जाय
एक आध अरवाह का, बिरला आपै आय १५०

गचय ।

दादू जबलग अस्थल देहका, तबलग मब व्यापै
निर्भय अमथल आत्मां, आगै रस आपै १५१
जब नांहीं सुर्ति सरीरकी, बिसरै सब संसार
आत्म न जाणैं आपकूं, तब एक रह्या निरधार १५२

प्र० स्मरण नाम पारिष लच्छन० ।

तन सूं स्मरण कीजिये, जबलग तन नीका
आत्म स्मरण ऊपजै, तब लागै फीका
आगैं आपैं आपहै, तहां क्या जीवका १५३
चर्म दृष्टी देखै बहुत करि, आत्म दृष्टी एक
ब्रह्म दृष्टि परचै भया, तब दादू बैठा देख १५४
एई नैनां देहके, एई आत्म होय
एई नैनां ब्रह्म के, दादू पलटे होय १५५
घट परचै सब घट लखै, प्राण परचै प्राण
ब्रह्म परचै पाइए, दादू है हैरांन १५६

सूक्ष्म सौंज अरचा बंदगी० ।

दादू जल पाषाण ज्यूं, सेवै सब संसार
दादू पाणी लोंण ज्यूं, कोई बिरला पूजणहार १५७

स्मरन नाम पारिष लच्छन० ।

अलख नाम अंतर कहै, सब घट हरि हरि होय
दादू पांणी लूण ज्यूं, नाम कही जै सोय १५८

लै लच्छन सहज० ।

छाडै सुर्ति सरीरकूं, तेज पुंज मैं आय
दादू ऐसैं मिलि रहै, ज्यूं जल जलहि समाय १५९

स्म० नाम पारिष लच्छन० ।

सुर्ति रूप सरीरका, पीवके परसैं होय
दादू तनमन एक रस, स्मरण कहिये सोय १६०
राम कहत रामहि रह्या, आप बिसरजन होय
मन पवनां पंचों बिलै, दादू स्मरण सोय १६१

जहां आत्म राम संभालीये, तहां दूजा नांही और
देही आगैं अगम है, दादू सुक्षमम ठोर १६२

सूक्ष्म सूत्र अंचा बंदगी०।

तनमन बिलैयों कीजिये, ज्यूं पाणीमैं लूण
जीव ब्रह्म एकै भया, तब दूजा कहिये कूण १६३
तनमन बिलैयों कीजिये, ज्यू घृत लागै घाम
आत्म कमल जहां बंदगी, तहां दादू प्रगट राम १६४

स्म० नांम पारिष लच्छन० ।

कोमल कमल तहां पैसि करि, जहां न देखै कोय
मन थिर स्मरण कीजिये, तब दादू दरसन होय १६५
नख सिख सब स्मरण करैं, ऐसा कहिये जाय
अंतर बिगसै आत्मां, तब दादू प्रगटै आय १६६
अंतर गति हरि हरि करैं, तब मुखकी हाजति नांही
सहजै धुनि लागी रहैं, दादू मनहीं मांहि १६७
दादू सहजैं स्मरण होत है, रोम रोम रमि रांम
चित चहुट्या चित्तसूं, यौं लीजै हरि नाम १६८
दादू सुमरण सहज का, दीहां आप अनंत
अरस परस उस एकसूं, खेलै सदा बसंत १६९
दादू शब्द अनाहद हम सुण्यां, नष सिष सकल सरीर
सब घट हरि हरि होतहै, सहजैं ही मन थीर १७०
हुंण दिल लग्गा हिक्कसों, मैकों एहा ताति
दादू कम खुदाइ दे, बेठाडी हैं राति १७१
दादू माला सब आकार की, को साधु सुमरै रांम
करणी गरतैं क्या कीया, ऐसा तेरा नाम १७२

सब घट मुख रसनां करैं, रटैं एका नांम
दादू पीवै राम रस, अगम अगोचर ठांम १७३
दादू मन चित आस्थिर कीजिये, तो नखसिख स्मरण होय
श्रवण नेत्र मुख नासिका, पंचू पूरे सोय १७४

साधु महिमां महात्म० ।

राम जपै रुचि साधु कूं, साधु जपै रुचि राम
दादू दून्यूं एकटग, यहु आरंभ यहु काम १७५
आत्म आसण रामका, तहां बसै भगवान
दादू दून्यूं परसपर, हरि आत्मका थान १७६
जहां राम तहां संत जन, जहां साधु तहां राम
दादू दून्यूं एकठे, अरस परस विश्रांम १७७
दादू हरि साधु यौं पाइये, अविगति के आराध
साधु संगति हरि मिलै, हरि संगति थैं साध १७८
दादू राम नाम सूं मिलिरहै, मनके छाडि विकार
तो दिलहीं मांहैं देखिये, दुन्यूंका दीदार १७९
साधु समाना राममैं, राम रह्या भरपूर
दादू दून्यूं एकरस, क्यूं करि कीजे दूर १८०
दादू सेवक सांईका भया, तब सेवक का सब कोय
सेवक सांई कौं मिल्या, तब सांई सरीषा होय १८१
मिसरी मांहैं मेलिकरि, मोलि विकानां बंस
यौं दादू महगा भया, पारब्रह्म मिलि हंस १८२
मीठे मांहैं राखिये, सो काहे न मीठा होय
दादू मीठा हाथले, रस पीवै सब कोय १८३

संगति कुसंगति० ।

मीठे सौं मीठा भया, खारे सौं खारा
दादू ऐसा जीवहै, यहु रंग हमारा १८४

साध महिमा महात्म० ।

मीठैं मीठे करिलीये, मीठा मांहैं बाहि
दादू मीठा ह्वै रह्या, मीठे मांहि समाय १८५
राम बिना किस कामका, नहीं कोडीका जीव
साईं सरीषा ह्वै गया, दादू परसें पीव १८६

पारिख अपारिख० ।

हीरा कोडी नांलहै, मूर्ख हाथ गवांर
पाया पारिख जौं हरी, दादू मोल अपार १८७
अंधे हीरा परखिया, कीया कोडी मोल
दादू साधु जौंहरी, हीरे मोल न तोल १८८

साधु महिमा महात्म० ।

मीरां कीया मिहर सौं, परदे थैं ला प्रद
राखि लीया दीदार मैं, दादू भूला दरद १८९

प्र० ।

दादू नैंन बिन देखिबा, अंग बिन पेखिबारसन
बिन बोलिबा ब्रह्म सेती, श्रवण बिन सुणिबा
चरण बिन चालिबा, चित बिन चितवा सहज एती १९०

पतिव्रत० ।

दादू देख्या एक मन, सो मन सबहीं मांहि
तिहिं मन सौं मन मांनिया, दूजा भावै नांहि १९१

पुरुष प्रकाशीक० ।

दादू जिस घट दीपक राम का, तिहिं घट तिमिर न होय
उस उजियारे जोतिकै, सब जग देखै सोय ११२

पतिव्रत० ।

दादू दिल अरवाह का, सो अपणां इमान
सोईस्पाबत राखिये, जहां देखै रहि मान ११३
अलाह आप ईमांन है, दादू के दिल मांहि
सोई स्पाबत राखियें, दादू कोई नांहि ११४

प्र० अध्यात्म० ।

प्राण पवन ज्यूं पतला, काया करै कमाय
दादू सब संसारमै, क्यूं हीं गह्या न जाय ११५
नूर तेज ज्यूं जोति है, प्राण पिंड यों होय
दृष्टि मुष्टि आवै नहीं, साहिब के बसि सोय ११६
काया सूक्ष्म करि मिलै, ऐसा कोइ एक
दादू आत्म ले मिलै, ऐसे बहुत अनेक ११७

सुंदरि सुहाग० ।

आडा आतम तन धरै, आप रहै ता मांहि
आपण खेलै आप सूं, जीवन सेती नांहि ११८

अध्यात्म० ।

दादू अनुभव थैं आनंद भया, पाया निर्भैनांउ
निहचल निर्मल निरबांण पद, अगम अगोचर ठाम ११९
दादू अनुभव बाणी अगम कीं, लेगई संगि लगाय
अगह गहै अकह कहै, अभेद भेद लहाय २००
जे कुछ वेद कुरांण थैं, अगम अगोचर बात ।

सो अनुभव साचा कहै, यहु दादू अकह कहात १०१
दादू जबघट अनुभव ऊपजै, तब कीया कर्म का नास
भै भ्रम भागे सवै, पूरण ब्रह्म प्रकास १०२
दादू अनुभव काटै रोगकूं, अनहद ऊपजै आय
सेझे का जल निर्मला, पीवै रुचि ल्योलाय १०३
दादू बाणी ब्रह्मकी, अनुभव घट प्रकास
राम अकेला रहिगया, शब्द निरंजन पास १०४
जे कबहूं समझै आत्मा, तो दृढ गहि राखै मूल
दादू सेझा राम रस, अमृत काया कूल १०५

प्र० पञ्चास उपदेस० ।

दादू मुझही मांहैं मै रहूं, मै मेरा घरवार
मुझही मांहै मै बसों, आप कहै करतार १०६
दादू मैंही मेरा अरसमै, मैहीं मेरा थान
मैहीं मेरी ठोरमै, आप कहै रहिमान १०७
दादू मैही मेरे आसिरे, मै मेरे आधार
मेरे तकिये मैंहूं, कहै सिरजनहार १०८
दादू मैही मेरी जाति मै, मैहीं मेरा अंग
मैही मेरा जीवमै, आप कहै परसंग १०९
दादू सबै दिसो सासारिखा, सबै दिसा मुख वैंन
सबै दिसा श्रवनूं सुनैं, सबै दिसा कर नैंन ११०
सबै दिसा पग सीसहै, सबै दिसा मन चैन
सबै दिसा सनमुख रहै, सबै दिसा अंग अैन १११
बिन श्रवणहु सब कुछ सुणै, बिन नैनहुं सब देखै
बिन रसना मुख सब कुछ बोलै, यहु दादू अचिरज पेखै ११२

सब अंग सबही ठोर सब, सर्वंगी सब सार
कहै गहै देखै सुणैं, दादू सब दीदार ११३
कहै सब ठोर, गहै सब ठोर, रहै सब ठोर, जोति प्रवानैं
नैन सब ठौर, बैन सब ठौर, अैन सब ठौर, सोइ भल जानै
सीस सब ठौर, श्रवन सब ठौर, चरन सब ठौर, कोई पहुमानैं
अंग सब ठौर, संग सब ठौर, सबै सब ठौर, दादू ध्यानै ११४
तेज ही कहणां, तेज ही गहणां, तेज ही रहणां सारे
तेजही बैनां, तेजही नैना, तेजही अैन हमारे
तेजही मेला, तेजही खेला, तेज अकेला, तेजहि तेज संवारे
तेजही लेवै, तेजही देवै, तेजही खेवै, तेजही दादू तारे ११५
नूरही का धर, नूरही का घर, नूरही का बर मेरा
नूरही मेला, नूरही खेला, नूर अकेला, नूरही मंझि बसेरा
नूरही का अंग, नूरही का संग, नूरही का रंग तेरा
नूरही राता, नूरही माता, नूरही खाता दादू तेरा ११६

सूक्ष्मसोंज अरचा बंदगी ।

दादू नूरी दिल अरवाहका, तहां बसै माबूदं
तहां बंदेकी बंदगी, जहां रहै मोजूदं
दादू नूरी दिल अरवाहका, तहां खालिक भरपूरं
आले नूर अल्लाहका, खिजमति गार हजूरं ११७
दादू नूरी दिल अरवाहका, तहां देख्या करतारं
तहां सेवक सेवा करै, अनंत कला रविसारं ११८
दादू नूरी दिल अरवाहका, तहां निरंजन बासं
तहां जन तेरा एक पग, तेज पुंज प्रकासं ११९
दादू तेज कमल दिल नूरका, तहां राम रहिमानं

तहां करि सेवा बंदगी, जे तूं चतुर सयानं १२०
तहां हजूरी बंदगी, नूरी दिलमैं होय
तहां दादू सिजदा करै, जहां न देखै कोय १२१
दादू देही मांहैं दोइ दिल, इक खाकी इक नूर
खाकी दिल सूझै नहीं, नूरी मंझि हजूर १२२
दादू हौद हजूरी, दिलही भीतरि, गुसल हमारा सारं
वजू साज अलह के आगै, तहां निमाज गुजारं १२३
दादू काया मसीति करि, पंच जमाती, मनही मुलांइ मामं
आप अलेख इलाही आगै, तहां सिजदा करै सलामं १२४
दादू सब तन सबी कहै करीमं, ऐसा करिले जापं
रोजा एक दूरि कर दूजा, कलमा आपै आपं १२५
अठपहर अलह के आगै, इकटग रहबा ध्यानं
आपै आप अरस कें ऊपर, जहां रहै रहिमानं १२६
अठपहर इबादती, जीवण मरण निबाहि
साहिबदर सेबै खडा, दादू छांडि न जाय १२७

साधुमहिमा महात्म ० ।

अठपहर अरस मैं, उभोई आहे
दादू पसे तिनके, अला गाल्हाए १२८
अठपहर अरस मै, वैठा पिरी पसंनि
दादू पसे तिनके, जे दीदार लहंनि १२९
अठपहर अरस मैं, जिन्ही रूह रहंनि
दादू पसे तिनके, गुझ्यूंगाल्ही कंनि १३०
अठपहर अरस मैं, लुडंदा आहीन
दादू पसे तिनके, असां खबरि डीह १३१

अठेपहर अरसके, वंजीजे गाहीन
दादू पसे तिनके, के तेही आहीन १३२

रस० ।

प्रेम पियाला नूरका, आसिक भरि दीया
दादू दिल दीदारमैं, मतिवाल कीया १३३
इसक सलोंनां आसिकां, दरगह थैं दीया
दरद महबति प्रेम रस, प्याला भरि पीया
दादू दिल दीदार दे, मतिवाला कीया
जहां अरस इलाही आपथा, अपनां करिलीया १३४
दादू प्याला नूरदा, आसिक अरस पीवंनि
अठेपहर अलाहदा, मुहदिठे जीवंनि १३५
आसिक अमली साधु सब, अलख दरीबै जाय
साहिब दर दीदारमैं, सब मिलि बैठे आय
राते माते प्रेम रस, भरि भरि देय खुदाय
मस्तांन मालिक करिलीये, दादू रहे ल्यौलाय १३६

लांबि० ।

दादू भक्ति निरंजन रामकी, अबचल अबिनासी
सदा सजीवन आत्मा, सहजैं प्रकासी १३७
दादू जैसा राम अपारहै, तैसी भक्ति अगाध
इन दून्यूंकी मिति नहीं, सकल पुकारैं साधु १३८
दादू जैसा अलगति रामहै, तैसी भक्ति अलेख
इन दून्यूंकी मिति नहीं, सहंस मुखा कहि सेष १३९
दादू जैसा निर्गुण रामहै, तैसी भक्ति निरंजन जांणि
इन दून्यूंकी मिति नहीं, संत कहै प्रमाण १४०

दादू जैसा पूरा रामहै, तैसी पूर्ण भक्ति समान
इन दून्यूंकी मिति नही, दादू नांही आन १४१
दादू जबलग रामहै, तबलग सेवक होय
अखंडित सेवा एकरस, दादू सेवक सोय १४२
दादू जैसा रामहै, तैसी सेवा जाणि
पावैगा तब करैगा, दादू सो परवाणि १४३
दादू सांई सरीषा स्मरण कीजै, सांई सरीषा गावै
सांई सरीषी सेवा कीजै, तब सेवक सुख पावै १४४

प्रनैय करुणां बीनती० ।

दादू सेवक सेवा करि डरै, हमथैं कछू न होय
तूं है तैसी बंदगी, करि नहीं जाणै कोय १४५
दादू जे साहिब मानै नहीं, तऊ न छाडों सेव
इहिं अवलंबन जीजिये, साहिब अलख अभेव १४६

सूक्ष्म सोज अरचा बदगी० ।

आदि अंत्य आगे रहै, एक अनूपम देव
निराकार निज निर्मला, कोई न जांणैं भेव
अबिनासी अपरंपरा, वार पार नहीं छेव
सो तूं दादू देखिले, उर अंतर करि सेव १४७
दादू भीतर पैसि करि, घटके जडे कपाट
सांई की सेवा करै, दादू अविगत घाट १४८
घट प्रचय सेवा करै, प्रतक्ष देखै देव
अबिनासी दर्सन करै, दादू पूरी सेव १४९

भ्रम विधूमण० ।

पुजण हारे पासहै, देही मांहै देव

दादू ताकूं छाडि करि, बाहर मांडी सेव १५०

दादू रमता रामसूं, खेलै अंतर मांहि
उलठि समानां आप मैं, सो सुख कतहूं नांहि १५१

प्रगट खेलै पीवसूं, अगम अगोचर ठाम
एक पलक का देखणां, जीवण मरण का नाम १५२

सूक्ष्म सोंज अरचा बंदगी० ।

दादू आत्म मांहै राम है, पूजा ताकी होय
सेवा बंदन आरती, साधु करैं सब कोय १५३

प्रचय सेवा आरती, प्रचय भोग लगाय
दादू उस प्रसाद की, महिमां कही न जाय १५४

मांहि निरंजन देव है, मांहैं सेवा होय
मांहै उतारै आरती, दादू सेवक सोय १५५

दादू मांहै कीजै आरती, मांहैं पूजा होय
मांहै सतगुरु सेविए, बूझै विरला कोय १५६

संत उतारै आरती, तनमन मंगल चार
दादू बलि बलि वारणै, तुमपरि सिरजन हार १५७

दादू अविचल आरती, युग युग देहु अनंत
सदा अखंडित एक रस, सकल उतारै संत १५८

प्रचय सोंज० ।

सत्य राम, आत्मां वैष्णव, सुबुधि भूमि, संतोष थान, मूलमंत्र, मनमाला, गुरुतिलक, सत्यसंजम, सीलसुच्या, ध्यान धोवती, काया कलस, प्रेम जल, मनसा मंदिर, निरंजन देव, आत्मां पाती, पुहप प्रीति, चेतनां चंदन, नवधा नांम, भावपूजा, मतिपात्र, सहज समर्पण, सब्द घंटा,

आनंद आरती, दया प्रसाद, अनन्य एकादसी, तीर्थ सतसंग,
दान उपदेस, व्रत स्मरण, खटगुण ज्ञान, अजपा जाप,
अनुभव आचार, मरजादा राम, फल दर्शन, अभ्य अंतर,
सदा निरंतर, सत्य सोंज दादू बरतते,
आत्मा उपदेस, अंतरगति पूजा १५९

प० ।

पीव सों खेलों प्रेमरस, तो जीये रैजक होय
दादू पावै सेज सुख, पडदा नांही कोय १६०

सूक्ष्म सोंज० ।

सेवक विसरै आपकों, सेवा बिसर न जाय
दादू पूछै रामकूं, सो तत्व कहि समझाय १६१
ज्यूं रसिया रस पीवतां, आपा भूलै ओर
यों दादू रहिगया एकरस, पीवत पीवत ठौर १६२
जहां सेवक तहां साहिब बैठा, सेवक सेवा मांहि
दादू सांई सब करै, कोई जाणै नांहि १६३

साधुमहिमा महात्म० ।

दादू सेवक सांई बसिकीया, सोंप्या सब परवार
तब साहिब सेवाकरै, सेवक के दरबार १६४

सूक्ष्म सोंज० ।

तेज पुंज कों बिलसणां, मिलि खेलै इकठाम
भरि भरि पीवै रामरस, सेवा इसका नाम १६५

प० ।

अरस परस मिलिये, तब सुख आनंद होय
होयं तन मन मंगल चहुदिस भए, दादू देखै सोय १६६

प० सुंदरि सुहाग० ।

मस्तक मेरे पावधरि, मंदिर मांहैं आव
सईयां सोवै सेज़परि, दादू चंपै पाव १६७
एचारखौं पद पिलंग के, सांई की सुख सेज
दादू इनपर बैसि करि, सांई सेती हेज १६८
प्रेम लहरकी पालकी, आत्म बैसै आय
दादू खेलै पीवसौं, यहु सुख कह्या न जाय १६९

सूक्ष्म सोंज० ।

दादू देव निरंजन पूजिये, पाती पंच चढाय
तन मन चंदन चर्चिये, सेवा सुर्ति लगाय १७०

अपाविधुन० ।

भक्ति भक्ति सब को कहै, भक्ति न जानै कोय
दादू भक्ति भगवंतकी, देह निरंतर होय १७१
देही मांहै देवहै, सब गुन थैं न्यारा
सकल निरंतर भरिरह्या, दादू का प्यारा १७२

सूक्ष्म सोंज० ।

जीव पियारे रामकों, पाती पंच चढाय
तन मन मनसा सोंपि सब, दादू बिलंब न लाय १७३

अध्यात्म० ।

सब्द सुर्ति लैसां निचित, तन मन मनसा मांहि
मति बुधि पंचू आतमां, दादू अनत न जांहि
दादू तन मन पवनां पंचगहि, ले राखै निज ठौर
जहां अकेला आपहै, दूजा नांहीं और १७४
दादू यहु मन सुर्ति समेटि करि, पंच अपूठे आणि

निकटि निरंजन लागिरहु, संगि सनेहीं जाणि १७५
मन चित मनसा आत्मां, सहज सुर्ति ता मांहि
दादू पंचूं पूरि ले जहां, धरती अंबर नांहि १७६
दादू भीगे प्रेमरस, मन पंचूका साथ
मगन भये रसमैं रहे, तब सनमुख त्रिभवन नाथ १७७

अध्यात्म० ।

दादू सब्दैं सब्द समाइले, पर आतम सौं प्राण
यहु मन मनसूं बंधिले, चितैं चित सुजान
दादू सहजैं सहजि समाइले, ज्ञानैं बंध्या ज्ञान
सुत्रैं सुत्र समाइले, ध्यानैं बंध्या ध्यान १७८
दादू दृष्टैं दृष्टि समाइले, सुर्तैं सुर्ति समाय
समझे समझि समाइले, लैमों लैले लाय १७९
दादू भावै भाव समाइले, भक्तैं भक्ति समान
प्रेमैं प्रेम समाइले, प्रीतैं प्रीति रसपान १८०
दादू सुर्तैं सुर्त्ति समा रहु, अरु बैनहुं सूं बैन
मनहीं सूं मन लाइरहु, अरु नैंनहु सौं नैंन १८१
जहां राम तहां मनगया, मन तहां नैना जाय
जहां नैना तहां आत्मां, दादू सहज समाय १८२

मुक्ति० ।

प्राण न खेलै प्राणसूं, मन न खेलै मन
सब्द न खेलै सब्दसूं, दादू राम रतन १८३
चित न खेलै चितसूं, बैंन न खेलै बैंन
नैंन न खेलै नैंनसूं, दादू प्रगट ऐन १८४
पाक न खेलै पाकसूं, सार न खेलै सार
खूब न खेलै खूबसौं, दादू अंग अपार १८५

नूरन खेलै नूरसूं, तेजन खेलै तेज
जोतिन खेलै जोतिसूं, दादू येकै सेज १८६

सूक्ष्मसोंज० ।

दादू पंचपदार्थ मन रतन, पवना माणिक होय
आत्म हीरा सुर्तिसों, मनसा मोती पोय
अजब अनूप महारहै, सोई सरीपा सोय
दादू आत्म रामगलि, जहान देखै कोय १८७

प्र० ।

दादू पंचों संगिले आए आकासा
आसण अमर अलेखका, निर्गुण निजबासा
प्राण पवन मन मगनहै, संगि सदा निवासा
प्रचा प्रम दयालसों, सहजैं सुखदासा १८८
दादू प्राण पवन मन मणिबसै, त्रीकुटी केरेसंधि
पंचों इद्रिय पीवसों, ले चरणों बंधि १८९
प्राण हमारा पीवसूं, यों लागा सहिये
पुंहपवास घृत दूध मैं, अबकासों कहिये
पांहन लोहविच बासुदेव, ऐसैं मिलरहिये
दादू दीनदयालसूं संगही सुख लहिये १९०
दादू ऐसा बडा अगाधहै, सूक्ष्म जैसा अंग
पुहपवास थैं पतला, सो सदा हमारे संग १९१
दादू जब दिल मिली दयालसूं, तब अंतर कुछनांहि
ज्यूं पाला पाणीकूं मिल्या, त्यूं हरिजन हरि मांहि १९[२]
दादू जब दिल मिली दयालसूं, तब सब पडदा दूरि
ऐसैं मिलिएकै भया, बहु दीपक पावक पूरि १९३

दादू जब दिल मिली दयालसूं, तब अंतर नांहि रेख
नानांविधि बहु भूशनां, कनक कसोटी एक १९४
दादू जब दिल मिली दयालसूं, तब पलकन पडदाकोय
डाल मूल फल बीजमै, सब मिलि एकै होय १९५
फल पाका बेलीतजी, छिटकाया मुख मांहि
साई अपनां करिलीया, सो फिरिऊगै नांहि १९६
दादू काया कटोरा दूधमन, प्रेम प्रीति सौं पाय
हरि साहिब इहिं बिधि अंचवै, तो बेगा बारनलाव १९७
टगाटगी जीवण मरण, ब्रह्म बराबरि होय
प्रगट खेलै पीवसुं, दादू विरला कोय १९८
दादू निवरा नांरहै, ब्रह्म सरीषा होय
लै समाधि रस पीजिये, दादू जबलग दोइ १९९
बेखुद खबरि हुसियार बासिद, खुद खबरिपै माल
बेकी मति मस्तान गलितान, नूर प्याले प्याल २००
दादू माता प्रेमका, रसमैं रह्या समाय
अंतन आवै जब लगै, तबलग पींवता जाय २०१
पीया तेता सुख भया, बाकी बहु बैराग
ऐसैं जन थाकै नहीं, दादू उनमन लाग २०२
दादू हरि रस पीवतां, कवहूं अरुचि न होय
पीवत प्यासा नित नवा, पीवण हारा सोय २०३
दादू जैसे श्रवनां दोइहैं, ऐसे हूंहि अपार
राम कथा रस पीजिये, दादू बारंबार २०४
दादू जैसे नैनां दोइहै, ऐसे हूंहि अनंत
दादू चंद चकोर ज्यूं, रसपीवै भगवंत २०५

ज्यूं रसनां मुख एकहै, अैसे हूहि अनेक
तौ रसपीवै सेस ज्यूं, यौंमुख मीठा एक २०६
ज्यूं घट आतम एकहै, अैसे हूंहि असंख
भरि भरि राखै राम रस, दादू एकैअंक २०७
ज्यूं ज्यूं पीवै राम रस, त्यूं त्यूं बढै पियास
अैसा कोई एकहै, बिरला दादू दास २०८
राता माता रामका, मतवाला मैमंत
दादू पीवत क्यूं रहै, जेजुग जांहि अनंत २०९
दादू निर्मल जोति जल, बरषे बारह मास
तिहिं रस राता प्राणियां, माता प्रेम पियास २१०
रोम रोम रस पीजिये, एती रस नां होय
दादू प्यासा प्रेमका, योंविन तृप्तिन होय २११
तनगृह छाड़ै लाज पति, जब रस माता होय
जबलग दादू सावधान, कदेन छाडैकोय २१२
आंगण एक कलालके, मतिवाला रस मांहि
दादू देख्या नैन भरि, ताकै दुबधा नांहि २१३
पीवत चेतन जब लगै, तबलग लेवै आय
जब माता दादू प्रेमरस, तब काहेकूं जाय २१४
दादू अंतर आत्मां, पीवै हरि जल नीर
सौंज सकल जल ऊधरै, निर्मल होइ सरीर २१५

सा॰वि॰ ।

दादू मीठा राम रस, एक घूंटकरि जाम
पुंणगन पीछैं क्यूं रहै, सब हिरदै मांहि समाम २१६
चिडी चंचभरि लेगई, नीर न घटि नहीं जाय

ऐसा बासण नां कीया, सब दरिया मांहि समाय २१७
दादू अमली रामका, रसबिन रह्या न जाय
पलक एक पावै नहीं, तो तबही तलफि मरिजाय २१८

प० पतिव्रत० ।

दादू राता रामका, पीवै प्रेम अघाय
मतिवाला दीदार का, मांगै मुक्ति बलाय २१९

साखि को अंग० ।

उज्जल भवरा हरिकमल, रसरुचि बारह मास
पीवै निर्लवासनां, सो दादू निज दास २२०

रसको० ।

नैनहुं सों रस पीजिये, दादू सुर्ति सहेत
तनमन मंगल होतहै, हरिसौं लागा हेत २२१

साखि० ।

पीवै पीलावै रामरस, माताहै हुसियार
दादू रस पीवैखणां, औरोंकूं उपकार २२२

रस० ।

नानां विधि पीया रामरस, केती भांति अनेक
दादू बहुत विवेकसूं, आत्मा अविगत्त एक २२३
परचय कापै प्रेमरस, जे कोई पीवै
मतवाला माता रहै, यौं दादू जीवै २२४
परचय कापै प्रेमरस, पीवै हितचित लाइ
मनसा बाचा कर्मना, दादू काल न खाय २२५
परचय पीवै रामरस, युग युग अस्थिर होय
दादू अविचल आत्मां, काल न लागै कोय २२६

प्रचय पीवै रामरस, सो अविनासी अंग
कालमीच लागै नही, दादू सांई संग २२७
प्रचय पीवैं रामरस, सुखमैं रहै समाय
मनसा वाचा कर्मना, दादू काल न खाय २२८
प्रचय पीवै रामरस, राता सिरजनहार
दादू कुछ व्यापै नहीं, ते छुटे संसार २२९
अमृत भोजन रामरस, काहे न विलसै खाय
काल विचारा क्या करै, रमि रमि राम समाय २३०

मनीवन० ।

दादू जीव अजाविष काल है, छेली जाया सोय
जब कुछ वस नहीं कालका, तब मीनीका मुख होय २३१
मनलारूकै पक्षहै, उनमन चढै अकास
पगरह पूरे साच के, रापि रह्या हरि पास २३२
तनमन वृक्ष बूंवल का, कांटे लागे मूल
दादू माखण ह्वै गया, काहूका अस्थूल २३३
दादू संखा सब्द है, सुनहांसुना मारि
मन मींडक सो मारियं, संका सर्प निवारि २३४
दादू गांझी ज्ञान है, भंजन हैं सब लोक
राम दूधबभरि रह्या, ऐसा अमृत पोप २३५
दादू झूठा जीव है, गढिया गोबिंद बैन
मनसा मूंगी पक्षसूं, सूर्य सरीपे नैन २३६
सांई दीया दत घणां, तिसका वार न पार
दादू पाया रामधन, भाव भक्ति दीदार २३७

इति प्रचाको अंग संपूर्ण ॥ अंग ४ ॥ साषी ७६६ ॥

॥ अथ जरणाको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्व साधावा, प्रणामं पारंगतः १
को साधू राखै रामधन, गुरु बायक बचन बिचार
गहिला दादू क्यूं रहै, मर्कट हाथ गवांर २
जिन खोवै दादू रामधन, हृदै राखि जिन जाय
रतन जतन करि राखिये, चिंतामनि चितलाय ३
दादू मनही मांहे समझि करि, मनहीं मांहि समाय
मनही मांहे राखिये, बाहिर कहन जणाये ४
दादू समझि समाइ रहु, बाहिर कहि न जणाय
दादू अद्भुत देखिया, तहा तांको आवे जाय ५
कहि कहि का दिखलाइये, सांई सब जाणे
दादू प्रगट का कहै, कुछ समझि सयाने ६
दादू मनही मांहैं ऊपजै, मनही मांहि समाय
मनही मांहैं राखिये, बाहिर कहिन जनाय ७
लै बिचार लागा रहै, दादू जरता जाय
कबहूं पेट न आफरै, भावै तेता खाय ८
सोई सेवक सबजरै, जेती उपजै आय
कहि न जनावै औरकूं, दादू मांहि समाय ९
सोई सेवक सबजरै, जेता रस पीया
दादू गूझ गंभीरका, प्रकास न कीया १०
सोई सेवक सबजरै, जे अलख लखावा
दादू राखै रामधन, जेता कुछ पावा ११

सोई सेवक सबजरै, प्रेमरस खेला
दादू सो सुख कस कहूं, जहां आप अकेला १२
सोई सेवक सबजरै, जेता घट प्रकास
दादू सेवक सब लखै, कहिन जणांवै दास १३
अजर जरै रस नां झरै, घट मांहि समावै
दादू सेवक सो भला, जे कहिन जनांवै १४
अजर जरै रस नां झरै, घट अपणां नां भरिलेय
दादू सेवक सो भला, जरै जांण न देय १५
अजर जरै रस नां झरै, जेता सब पीवै
दादू सेवक सो भला, राखै रस जीवै १६
अजर जरै रस नां झरै, पीवत थाकै नांहि
दादू सेवक सो भला, भरि राखै घट मांहि १७
जरणां जोगी युग युग जीवै, झरणां मरि मरि जाय
दादू जोगी गुरुमुखी, सहजैं रहै समाय १८
जरणां जोगी जगि रहै, झरणां प्रलय होय
दादू जोगी गुरुमुखी, सहज समानां सोय १९
जरणां जोगी थिर रहै, झरणां घट फूटै
दादू जोगी गुरुमुखी, काल थै छूटै २०
जरणां जोगी जगपती, अविनासी अवधूत
दादू जोगी गुरुमुखी, निरंजन का पूत २१
जरैसु नाथ निरंजन बाबा, जरैसु अलख अभेव
जरैसु जोगी सबकी जीवनि, जरैसु जगमै देव २२
जरै आप उपावणहारा, जरैसु जगपति सांई
जरैसु अलख अनूप है, जरैसु मरणां नांही २३

जरैसु अविचल राम है, जरैसु अमर अलेख
जरैसु अविगति आप है, जरैसु जगमैं एक २४
जरैसु अविगति आप है, जरैसु अपरंपार
जरैसु अगम अगाध है, जरैसु सिरजनहार २५
दादू जरैसु निज निरकार है, जरैसु निज निरधार
जरैसु निज निर्गुणमई, जरैसु निज तत सार २६
जरैसु पूर्णब्रह्म है, जरैसु पूर्णहार
जरैसु पूर्ण परम गुरु, जरैसु प्राण हमार २७
दादू जरैसु जोति सरूपहै, जरैसु तेज अनंत
जरैसु झिलिमिलि नूर है, जरैसु पुंज रहंत २८
दादू जरैसु परम प्रकास है, जरैसु परम उजास
जरैसु परम उदीत है, जरैसु परम विलास २९
जरैसु परम पगार है, जरैसु परम विगास
जरैसु परम प्रभास है, जरैसु परम निवास ३०
दादू एक बोल भूले हरी, सु कोई न जाणे प्राण
औगुण मन आणै नहीं, और सब जाणैं हरिजाण ३१
दादू तुम्ह जीवों के औगुन तजे, सुकारण कोण अगाध
मेरी जरणां देखि करि, मतको सीखै साध ३२
पवनां पाणी सब पिया, धरती अरु आकास
चंद सूर पावक मिले, पंचू एकै ग्रास
चवदह तीन्यूं लोक सब, ठूंगे सासैं सासु
दादू साधू सब जरैं, सतगुर के बेसास ३३

इति जरणांको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग ५ ॥ साखी ७६६ ॥

॥ अथ हैरांनकौ अङ्ग ॥

—*—

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणांमं पारंगतः १
रतन एक बहु पारिषु, सब मिलि करै विचार
गूंगे गहिले बावरे, दादू वार न पार २
केते पारिख जौंहरी, पंडित ज्ञाता ध्यान
जांण्या जाइन जाणिये, का कहि कथिये ज्ञान ३
केते पारिख पचिमूये, कीमति कही न जाय
दादू सब हैरान है, गूंगे का गुडखाय ४
सबही ज्ञानी पंडिता, सुरनर रहे उरझाय
दादू गति गोबिंदकी, क्यूंही लखी न जाय ५
जैसा है तैसा नाम तुह्मारा, ज्यूं है त्यूं कहिसांई
तूं आपै जाणै आपकों, तहां मेरा गम नाही ६
केते पारिख अंतन पावै, अगम अगोचर मांही
दादू कीमति कोई न जाणैं, क्षीर नीरकी नांई ७

सूक्ष्मसोंज अरचाबंदगी० ।

जीव ब्रह्म सेवा करै, ब्रह्म बराबरि होय
दादू जाणैं ब्रह्मकों, ब्रह्म सरीषा सोय ८

है० ।

वारपारको नां लैहै, कीमति लेखा नांहि
दादू एकै नूरहै, तेज पुंज सब मांहि ९

पीव पीछाणन० ।

हस्त पाव नही सीस मुख, श्रवण नेत्र कहूं कैसा

दादू सब देखै सुणैं, कहै गहै है ऐसा १०

है० ।

पाया पाया सब कहैं, केतक देहु देखाय
कीमति किनहूं नां कही, दादू रहु ल्योलाय ११
अपनां भंजन भरिलीया, उहां उताही जाणि
अपणी अपणी सब कहै, दादू बिडद बखांणि १२
पार न देवै आपणां, गोप गूझ मनमांहि
दादू कोई नां लहै, केते आवैं जांहि १३
गूंगेका गुड़ का कहूं, मन जाणत है खाय
त्यूं राम रसायण पीवतां, सो सुख कह्या न जाय १४
दादू एक जीभ केता कहूं, पूर्णब्रह्म अगाध
बेद कतेबा मिति नहीं, थकित भए सब साधु १५
दादू मेरा एक मुख, कीरति अनंत अपार
गुण केते पर मिति नहीं, रहे विचारि विचारि
सकल सिरोमणि नाम है, तूं है तैसा नांहि
दादू कोई नां लहै, केते आवै जांहि १६
दादू केते कहिगए, अंतन आवै ओर
हमहूं कहते जातहै, केते कहसी होर १७
दादू मै काजाणो का कहूं, उस वलियेकी बात
क्या जानूं क्यूंही रहै, मोपै लख्या न जात १८
दादू केते चलिगए, थके बहुत सुजाण
वातो नाम न निकले, दादू सब हैरान २१
नां कहीं दिठानां सुण्या, नां कोई आखण हार
नां कोई उथौंथी फिरया, नां उरवार न पार २०

पतिपहिचान० ।

नहीं मृतक नहीं जीवता, नहीं आवै नहीं जाय
नहीं सूता नहीं जागता, नहीं भूखा नहीं खाय २१

है० ।

न ताहां चुप न बोलणा, मैता नांही कोय
दादू आपा पर नही, न ताहां एक न दोय २२
एक कहूं तो दोइ है, दोय कहू तो एक
यों दादू हैरान है, ज्यूंहै त्यूंही देख २३
देखि दिवाने ह्वैगये, दादू खरे सयांन
वार पारको नां लहै, दादू है हैरांन २४

पतिव्रत निहकाम० ।

दादू करण हार जे कुछकीया, सोई हूं करिजाणि
जे तूं चतुरसयानां जानराय, तौ याही प्रमाणि २५
दादू जिन मोहन बाजीरची, सो तुह्म पूछो जाय
अनेक एक थैं क्यूं कीये, साहिब कहि समझाय २६

इति अङ्ग ६ ॥ साषी ८२६ ।

॥ अथ लयको अङ्ग, लयलक्षन सहज ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगत १
दादू लयलागी तब जाणिये, जे कबहूं छूटि न जाय
जीवत यों लागीरहै, मूवा मंझि समाय २
दादू जे नर प्राणी लैगता, सोई गत ह्वैजाय

जेनर प्राणी लैरता, सो सहजैं रहै समाय ३
सब तजि गुण आकार के, निहचल मन ल्योलाय
आत्म चेतन प्रेमरस, दादू रह समाय ४
तनमन पवनां पंचगहि, निरंजन ल्योलाय
जहां आतम तहां परआत्मां, दादू सहज समाय ५
अर्थ अनूपम आपहै, और अनर्थ भाई
दादू ऐसि जाणिकरि, तासूं ल्योलाई ६
ज्ञान भगति मन मूलगहि, सहज प्रेम ल्योलाय
दादू सब आरंभ तजि, जिन काहू संगजाय ७

अध्यात्म० ।

दादू जोग समाधि सुख सुर्तिसूं, सहजैं सहजैं आव
मुक्ता द्वारा महलका, इहै भगति का भाव ८

आगम संसकार० ।

पहिली था सो अबभया, अबसो आगैं होय
दादू तीन्यू ठौरकी, बूझै बिरला कोय ९

अध्यात्म० ।

दादू सहज सुन्य मन राखिये, इन दून्यू के मांहि
लै समाधि रस पीजिये, तहां काल भय नांहि १०

सूक्ष्ममारग० ।

किंहि मार्ग है आइया, किंहि मार्ग है जाय
दादू कोई नां लहै, केते करैं उपाय ११
सुन्यहि मार्ग आइया, सुन्यहि मार्ग जाय
चेतन पैंडा सुर्तिका, दादू रहू ल्योलाय १२
दादू पारब्रह्म पैंडा दीया, सहज सुर्ति लै सार

मनका मार्ग मांहिघर, संगी सिरजनहार १३

लै० ।

राम कहै जिस ज्ञानसों, अमृत रस पीवै
दादू दूजा छाडि सब, लय लागी जीवै १४
राम रसांयण पीवतां, जीव ब्रह्म ह्वै जाय
दादू आत्म रामसूं, सदा रहै ल्योलाय १५

रस० ।

सुर्ति समाय सनमुख रहै, युग युग जनपूरा
दादू प्यासा प्रेमका, रस पीवै सूरा १६

अध्यात्म० ।

दादू जहां जगत गुरु रहत है, तहां जे सुर्ति समाय
तो इनही नैनहु उलटिकरि, को तिग देखै आय १७
अख्यूं पमण के पिरी, भिरे उलथूं मंझि
जितो बठो मांपिरी, निहारी दो हंझ १८
दादू उलटि अपूठा आपमैं, अंतर सोधि सुजाण
सो ढिग तेरी बावरे, तजिबा हरिकी बाण १९
सुर्ति अपूठी फेरिकरि, आत्म मांहैं आणि
लागि रहै गुरुदेवसों, दादू सोई सयाण २०

सूक्ष्मसोंज अरचा बंदगी० ।

दादू अंतर गति ल्योलाइ रहुं, सदा सुर्ति सों गाय
यहु मन नाचै मगन ह्वै, भावै ताल बजाय २१
दादू गावै सुर्तिसों, बाणी बाजै ताल
यहु मन नाचै प्रेमसों, आगैं दीनदयाल २२

विरक्तता० ।

दादू सब बातनिकी एकहै, दुनियां तैं दिल दूरि
सांई सेती संगकरि, सहज सुर्ति लय पूरि २३

अध्यात्म० ।

दादू एक सुर्तिसूं सबरहै, पंचूं उनमन लाग
यहु अनुभव उपदेस यहु, यहु परम जोग बैराग २४
दादू सहजैं सुर्ति समाइले, पारब्रह्म के अंग
अरस परस मिलि एकहै, सनमुख रहिबा संग २५

लै० ।

सुर्ति सदा सनमुख रहै, जहां तहां लयलीन
सहज रूप स्मरण करै, निहकर्मी दादू दीन २६
सुर्ति सदा स्याबति रहै, तिनके मोटे भाग
दादू पीवै रामरस, रहै निरंजन लाग २७

सूक्ष्मसोंज० ।

दादू सेवा सुर्तिसूं, प्रेम प्रीति सों लाय
जाहां अविनासी देवहै, तहां सुर्ति विनां को जाय २८

बीनती० ।

ज्यूं वे ब्रत गगन थैं टूटै, कहां धरणि कहां ठाम
लागी सुर्ति अंग थैं छूटैं, सो कत जीवै राम २९

अध्यात्म० ।

सहज जोग सुख मै रहै, दादू निर्गुण जाण
गंगा उलटी फेरिकरि, जमुना मांहै आंणि ३०

लै० ।

परआत्म सों आतमां, ज्यूं जल जलहि समान
तनमन पाणी लूण ज्यूं, पावै पद निर्वाण ३१

मनही सों मन सेविये, ज्यूं जल उदक समाय
आत्म चेतन प्रेमरस, दादू रहू ल्योलाय ३२
यों मन तजै सरीरकों, ज्यूं जागत सोइजाय
दादू बिसरै देखतां, सहज सदा ल्योलाय ३३
जिहिं आसण पहली प्राणथा, तिहि आशण ल्योलाय
जे कुछ था सोई भया, कछू न ब्यापै आय ३४
तनमन अपणां हाथकरि, ताही सों ल्योलाय
दादू निगुर्ण रामसूं, ज्यूं जल जलहि समाय ३५

उपजाति० ।

एक मना लागारहै, अंति मिलैगा सोय
दादू जाकै मनबसै, ताकूं दर्सन होय ३६
दादू निबहै त्यूं चलै, धीरै धीरज मांहि
परसैगा पीव एकदिन, दादू थाकै नांहि ३७

लै० ।

जब मन मृतक ह्वै रहै, इंद्रिय बल भागा
कायाके सब गुण तजै, निरंजन लागा
आदि अंत्य मध्य एक रस, टूटै नहीं धागा
दादू एकै रहिगया, तब जाणी जागा ३८
जबलग सेवक तनधरै, तबलग दूसर आंहि
एकमेक ह्वै मिलिरहै, तौ रस पीवण थैं जाय
ए दून्यूं ऐसी कहैं, कीजै कोण उपाय
नामैं एक न दूसरा, दादू रहु ल्योलाय ३९

इति अङ्ग ७ ॥ साषी ८६६ ॥

॥ अथ निहकर्मी पतिब्रताको अङ्ग ॥

———*———

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १
एक तुह्मारे आसिरे, दादू इँहिंबेसास
राम भरोसा तो रहै, नहीं करणी की आस २
रहणी राजस ऊपजै, करणी आपा होय
सब थैं दादू निर्मला, स्मरण लागा सोय ३
दादू मन अपणां लय लीन करि, करणी सब जंजाळ
दादू सहजै निर्मला, आपा मेटि संभाल ४
दादू सिद्धि हमारे सांईया, करामाति करतार
रिद्धि हमारै रामहै, आगम अलख अपार ५
गोविंद गुसाई तुह्मे अह्मचा गुरु, तुम्हे अम्हचा ज्ञान
तुम्हे अम्ह चा देव, तुम्हे अम्ह चा ध्यान ६
तुम्हे अम्ह ची पूजा, तुम्हे अम्ह ची पाती
तुम्ह अम्ह चा तीर्थ, तुम्हे अम्ह चा जाती ७
तुम्हे अम्ह चा नाद, तुम्हें अम्ह चा भेद
तुम्हे अम्ह चा पुराण, तुम्हे अम्ह चा वेद ८
तुम्हे अम्ह ची जुगति, तुम्हे अम्ह चा जोग
तुम्हे अम्ह चा बैराग, तुम्हे अम्ह चा भोग ९
तुम्हे अम्ह ची जीवन, तुम्हे अम्ह चा जप
तुम्हे अम्ह चा साधन, तुम्हें अम्ह चा तप १०
तुम्हे अम्ह चा सील, तुम्हे अम्ह चा संतोख
तुम्हे अम्ह ची मुक्ति, तुम्हे अम्ह चा मोक्ष ११

तुम्हे अम्ह चा सिव, तुम्हे अम्ह ची सक्ति
तुम्हे अम्ह चा आगम, तुम्हे अम्ह ची उक्ति १२
तूं सति तूं अविगति, तूं अपरंपार
तूं निराकार, तुम्हे अम्ह चा नांम
दादू चा बिश्रांम, देहू देहू अवलंबन राम १३
दादू राम कहूं ते जोडिबा, राम कहूं ते साखि
राम कहूं ते गाइबा, राम कहूं ते राखि १४
दादू कुल हमारै केशवा, सगात सिरजनहार
जाति हमारी जगत गुरु, परमेश्वर परवार १५
दादू एक सगा संसार मैं, जिन हम सिरजे सोय
मनसा वाचा क्रमनां, और न दूजा कोय १६

नाम निरसंसै० ।

सांई सनमुख जीवतां, मरतां सनमुख होय
दादू जीवण मरणका, सोच करै जिन कोय १७

पति० ।

साहिब मिल्या तब सब मिले, भेटैं भेटा होय
साहिब रह्यात सब रहे, नहींत नांहि कोय १८
साहिब रहितां सब रहे, साहिब जातां जाय
दादू साहिब राखिये, दूजा सहज सुभाय १९
सब सुख मेरे सांईयां, मंगल अति आनंद
दादू सज्जन सब मिले, जब भेटे प्रमानंद २०
दादू रीझै रामपर, अंतन रीझै मन
मीठा भावै एकरस, दादू सोई जन २१
दादू मेरे हिरदै हरिबसै, दूजा नांही और

कहो कहां धौं राखिये, नहीं आनकूं ठौर २२
दादू नारायण नैनां बसै, मनही मोहन राइ
हिरदा मांहैं हरि वसै, आत्म एक समाय २३
दादू तनमन मेरा पीवसूं, एकसेज सुख सोय
गहिला लोग न जाणहीं, पचि पचि आपा खोय २४
दादू एक हमारे उरवसै, दूजा मेल्या दूरि
दूजा देखत जाइगा, एक रह्या भरपूरि २५
दादू निहचल का निहचल रहै, चंचल का चलिजाय
दादू चंचल छाडि सब, निहचल सौं ल्योलाय २६
मन चित मनसा पलक मैं, सांई दूर न होय
निहकामी न्रिखै सदा, दादू जीवनि सोय २७

कथणीं विनां करणीं० ।

जहां नाम तहां नीति चाहिये, सदा रामका राज
निर्विकार तनमन भया, दादू सीझे काज २८

सुंदरि विलाप० ।

जिसकी खूबी खूब सब, सोई खूब संभारि
दादू सुंदरि खूवसौं, नखसिख साज संवारि २९
दादू पंच अभूषण पीवकरि, सोलह सबही ठाम
सुंदरि यहु सिंगार करि, लै लै पीवका नाम ३०
यहु व्रत सुंदरि लेरहै, तौ सदा सुहागनि होय
दादू भावै पीवकौं, ता सम और न कोय ३१

मनहरि भावरि० ।

साहिब जीका भावता, कोई करै कलि मांहि
मनसा वाचा क्रमना, दादू घट घट नांहि ३२

पतिनिहकाम० ।

आज्ञा मांहे बैसै ऊठै, आज्ञा आवै जाय
आज्ञा मांहैं लेवै देवै, आज्ञा पहिरै खाय
आज्ञा मांहे बाहिर भीतरि, आज्ञा रहै समाय
आज्ञा मांहं तनमन राखै, दादू रहै ल्योलाय ३३
पतिव्रता गृह आपहौ, करै खसम की सेव
ज्यूं राखै त्यूंही रहै, आज्ञा कारी टेव ३४

सुंदरि विलाप० ।

दादू नीच ऊंच कुल सुंदरी, सेवा सारी होय
सोई सुहागनि कीजिये, रूप न पीजै धोय ३५

पति० ।

दादू जब तनमन सौंप्या रामकूं, ता सनिका विभचार
सहज सील संतोख सत, प्रेम भक्ति लै सार ३६

सुंदर विलाप० ।

पर पुरुषा सब परहरै, सुंदरि देखै जागि
अपणां पीव पिछांणि करि, दादू रहिये लागि ३७
आंन पुरुष हूं बहनडी, परम पुरुष भरतार
हूं अबला समझूं नहीं, तूं जाणैं करतार ३८

पति० ।

जिसका तिसकों दीजिए, सांई सनमुख आय
दादू नखसिख सोंपिया, जिन यहू बंधा जाय ३९
सारा दिल सांई सों राखै, दादू सोई सयान
जे दिल बंटै आपणां, सो सब मूढ अयान ४०

विरक्तता० ।

दादू सारों सो दिल तोरिकारि, सांई सों जोरै
सांई सेती जोडिकारि, काहेकूं तोरै ४१

आनलगानि विभचार० ।

साहिब देवै राखणां, सेवक दिलचोरै
दादू सब धन साहका, भूला मन थोरै ४२

पति० ।

दादू मनसा बाचा कर्मनां, अंतर आवै एक
ताकूं प्रत्यक्ष रामजी, बातैं और अनेक ४३
दादू मनसा वाचा कर्मनां, हिरदै हरिका भाव
अलख पुरुष आगैं खडा, ताकै तृभवन राव ४४
दादू मनसा बाचा कर्मनां, हरिजीसुं हितहोय
साहिब सनमुख संगहै, आदि निरंजन सोय ४५
दादू मनसा बाचा कर्मनां, आतुर कारणि राम
समर्थ सांई सबकरै, प्रगट पूरै काम ४६
नारि पुरुषा देखिकारि, पुरुषा नारी होय
दादू सेवक रामका, सीलवंत है सोय ४७

आन लगनि० ।

पर पुरुषा रत बांझणी, जाणैं जे फल होय
जन्म बिगोवै आपणां, दादू निरफल सोय ४८
दादू तजि भरतारकों, पर पुरुषा रत होय
ऐसी सेवा सबकरि, राम न जानै सोय ४९

पति० ।

दादू नारी सेवक तबलगै, जबलग सांई पास
दादू परसै आनकों, ताकी कैसी आस ५०

आनलगानि बिभचार० ।

दादू नारी पुरुषकों, जाणैं जे बसिहोय
पीवकी सेवा नां करै, कांमणगारी सोय ५१

करुण० ।

कीया मनका भांवता, मेटी आज्ञा कार
क्या ले मुख दिखलाइए, दादू उस भरतार ५२

आनलगानि बिभचार अंग० ।

करामाति कलंक है, जाकै हिरदै एक
अति आनंद बिभचारनी, जाकै खसम अनेक ५३
दादू पतिव्रता कै एकहै, बिभचारणि कै दोय
पतिव्रता बिभचारणी, मेला क्यूं करि होय ५४
पतिव्रता कै एकहै, दूजा नांही आन
बिभचारणि कै दोइहै, परघर एक समान ५५

सुंदरि सुहाग० ।

दादू पुरुष हमारा एकहै, हम नारी बहु अङ्ग
जे जे जैसी ताहिसूं, खेलै तिसही संग ५६

पति० ।

दादू रहिता राखिये, बहता देइ बहाय
बहते संग न जाइए, रहितेसूं ल्योलाय ५७
जिन बांझै काहू कर्मसूं, दूजै आरंभ जाय
दादू एकै मूलगहि, दूजा देइ बहाय ५८
वावैं देखि न दाहिणैं, तनमन सनमुख राखि
दादू निर्मल ततगहि, सत्य सब्द यहु साखि ५९
दादू दूजा नैन न देखिये, श्रवण हुं सुनैं न जाय
जिभ्या आंनन बोलिये, अंग न और सुहाय

चरणहुं अनत न जाइये, सब उलटा मांहि समाय
उलटि अपूठा आपमैं, दादू रहु ल्योलाय ६०
दादू दूजै अंतर होतहै, जिन आनै मन मांहि
तहाले मनकौं राखिये, जहां कुछ दूजा नांहि ६१

भ्रम विधूनण० ।

भ्रम तिमिर भाजै नही, रे जीव आन उपाय
दादू दीपक साजिले, सहजैं ही मिटिजाय ६२
दादू सो बेदन नही बावरे, आनकीये जे जाय
सबदुख भंजन सांईया, ताहीसूं ल्योलाय ६३
दादू औखध मूली कुछ नहीं, एसब झूठीबात
जे औखधहीं जीविये, तौ काहेकों मरिजात ६४

पति० ।

मूलगहै सो निहचल बैठा, सुखमैं रहै समाय
डाल पान भ्रमत फिरै, बेदूं दीया बहाय ६५
सौ धका सुनहां कूं देवै, घरबाहरि काढै
दादू सेवक रामका, दरबार न छाडै ६६
साहिबका दर छाडिकरि, सेवक कही न जाय
दादू बैठा मूलगहि, डालूं फिरै बलाय ६७
दादू जबलग मूल न सींचिए, तबलग हर्या न होय
सैवा निरफल सबगई, फिरि पछितानां सोय ६८
दादू सींचे मूलके, सब सींच्या बिसतार
दादू सींचे मूलबिन, बादि गई बेगारि ६९
सब आया उस एकमैं, डाल पान फल फूल
दादू पीछैं क्या रह्या, जबनिज पकड्या मूल ७०

खेतन निपजै बीजबिन, जल सींचे क्या होय
सब निरफल दादू रामबिन, जानत है सब कोय ७१
दादू जब मुख मांहे मेल्हिये, तब सबही तृपता होय
मुखबिन मेलै आनदिस, तृपति न मानैं कोय ७२
जब देव निरंजन पूजिये, तब सब आया उस मांहि
डाल पान फल फूल सब, दादू न्यारा नांहि ७३
दादू टीका रामकूं, दूसर दीजै नांहि
ज्ञान ध्यान तप भेख पख, सब आए उस मांहि ७४
साधू राखै रामकूं, संसारी माया
संसारी पालवगहै, मूल साधू पाया ७५

आनलग निभचार०।

दादू जे कुछ कीजिये, अबिगति बिन आराध
कहिबा सुनिबा देखिबा, करिबा सब अपराध ७६
सब चतुराई देखिये, जे कुछ कीजै आन
दादू आपा सौंपि सब, पीवकों लेहु पिछान ७७

पातै०।

दादू दूजा कुछ नहीं, एक सत्यकरि जाणि
दादू दूजा का करै, जिन एक लीया पहिचाणि ७८
दादू कोई बांछैं मुकति फल, कोई अमरापुर वास
कोई वांछै परमगति, दादू राम मिलणकी आस ७९

विरह बीनती०।

तुम्ह हरि हिरदै हेतसूं, प्रगटहु परमानंद
दादू देखै नैनभरि, तबकेता होइ अनंद ८०

पति० ।

प्रेम पियाला रामरस , हमकों भावैएहै
रिधि सिधि मांगैं मु फल, चाहै तिनकों देहै ८१
कोटि वरस क्या जीवणां, अमर भए क्या होय
प्रेम भक्ति रस रामबिन, क्या जीवन दादू सोय ८२
कछू न कीजे कामनां, अगुण निर्गुण होय
पलटि जीवथैं ब्रह्मगति, सब मिलि मानै मोहि
घट अजरा वर होइ रहै, बंधन नांहीं कोय
मुक्ता चौरासी मिटै, दादू संसै सोय ८३

लांबिरस० ।

निकटि निरंजन लागिरहु, जबलग अलख अभेव
दादू पीवै रामरस, निहकामी निज सेव ८४

परचै पतिव्रत० ।

सालोक संगति रहै, सामीप सनमुख सोय
सारूप सारीखा भया, साजो जएकै होइ ८५
रामरसिक बांछै नहीं, परम पदाथ चार
अठसिधि नौनिधि का करै, राता सिरजन हार ८६

आनलगनि बिभचार० ।

स्वारथ सेवा कीजिये, ताथैं भला न होय
दादू उसरबाहि करि, कोठा भरै न कोय ८७
सुतवित मागै वावरै, साहिब सौनिधि मेलि
दादू वै निरफल गए, जैसैं नागर बेलि ८८
फल कारण सेवा करै, जाचै तृभवन राव
दादू सो सेवक नहीं, खेलै अपणां डाव ८९
सहकामी सेवाकरै, मांगै सुगध गंवार

दादू ऐसे बहुत है, फलकें भूंचन हार ९०
तनमन ले लागा रहै, राता सिरजन हार
दादू कुछ मागै नहीं, तें बिरला संसार ९१

स्मरण नाम महिमा महात्म० ।

दादू कहै सांई कों संभालतां, कोटि विघ्न टलिजाहि
राई मान बसंदरा, केते काठ जलांहि ९२

करतूतिकर्म० ।

कर्मैं कर्म काटै नहीं, कर्मैं कर्म न जाय
कर्मैं कर्म छूटै नहीं, कर्मैं कर्म बंधाय ९३

इति निहकर्मी पतिव्रताको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग ८ ॥ साषी ६६८ ॥

॥ अथ चिंतामणीको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजन, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारगतः १
दादू जे साहिबकुं भावै नहीं, सोहमथैं जिन होय
सतगुरु लाजै आपणां, साधन मांनै कोय २
दादू जै साहिवकौं भावै नहीं, सो सब परहरि प्राण
मनसा बाचा कर्मना, जेतू चतुर सुजांण ३
दादू जे साहिबकौं भावै नहीं, सो जीव न कीजीरे
परहरि बिखै बिकार सब, अंमृत रस पीजीरे ४
दादू जे साहिबकौं भावै नहीं, सो बाट न बूझीरे
सांई सूं सनमुख रहीं, इसमन सों झूझीरे ५
दादू अचेत न होइए, चेतन सों चितलाय

मनवा सूता नींदभरि, सांई संग जगाय ६
दादू अचेत न होइये, चेतनसूं करि चित
ए अनहद जहाथैं ऊपजै, खोजो तहांहीं नित ७
दादू जन कुछ चेत करि, सौदा लीजी सार
निखर कमाई न छूटणां, अपणें जीव बिचारि ८

म० नाम चिंतामणी० ।

दादू करि सांईकी चाकरी, ए हरि नाम न छोडि
जाणांहै उस देसकों, प्रीति पियासूं जोडि ९

चिता० ।

आपापर सब दूरकरि, रामनाम रसलागि
दादू औसर जात है, जागि सकै तो जागि १०
बार बार यहु तन नहीं, नर नारायण देह
दादू बहुर न पाईये, जनम अमोलिक एह ११

बिर्क्तता० ।

एका एकी रामसों, कै साधूका संग
दादू अनत न जाइए, ओर काल का अंग १२
दादू तनमन के गुण छाडि सब, जब होइ न न्यारा
अपने नैनहु देखिये, प्रगट पीव प्यारा १३

स्म० नाम चिंतामणी० ।

दादू झांती पाये पसुपिरी; अंदर सो आहै
होणी पाणें बिचमैं, मिहर न लाहे १४
दादू झांती पाए पसुपिरी, हाणे लाइम बेर
साथसभोई हलियों, पोइ पसंदो केर १५

इति चिंतामणीको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग ६ ॥ साषी ॥

॥ अथ मनको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू यहु मन बरजी बावरे, घटमै राखी घेरि
मन हस्ती माता बहै, अंकुस देद फेरि २
हस्ती छूटा मन फिरै, क्यूंही बंध्या न जाय
बहुत महावत पचिगए, दादू कुछ न बसाय ३
थोरैं थोरैं हटाकिए, रहेगा ल्यौलाय
जब लागा उन मनसौं, तब मन कही न जाय ४
आडा देदे रामकों, दादू राखै मन
साखी दे अस्थिर करै, सोई साधू जन ५
सोई सूर जे मनगहै, निमख न चलणें देय
जबही दादू पगभरै, तबही पाकडि लेय ६
जेती लहरि समंदकी, ते ते मनहि मनोर्थ मारि
बैसै सब संतोष करि, गहि आत्म एक विचारि ७
दादू जे मुख मांहिं बोलतां, श्रवणहु सुणतां आय
नैनहु मांहैं देखता, सो अंतर उरझाय ८
दादू चुंबक देखिकारि, लोहा लागै आय
यों मन गुणईदिय एकसूं, दादू लीजे लाय ९
मनका आसण जे जीव जाणै, ते ठोर ठोर सब सूझै
पंचूं आणि एक घरराखै, तब अगम निगम सब बूझै
बैठ सदा एक रस पीवै, निर्वैरी कत झूझै
आत्म राम मिलै जब दादू, तब अंग न लागै दूजे १०

जबलग यहु मन थिरनहीं, तबलग परस न होय
दादू मनवा थिर भया, सहज मिलैगा सोय ११
दादू विन अवलंबन क्यूं रहै, मन चंचल चलिजाय
अस्थिर मन वातोरहै, स्मरण सेतीलाय १२
मन अस्थिर करि लीजै नाम, दादू कहै तहांही राम १३
हरि स्मरण सों हेतकरि, तब मन निहचल होय
दादू बेध्या प्रेमरस, बीख न चालै सोय १४
जब अंतर उरझ्या एकसों, तब थाके सकल उपाय
दादू निहचल थिरभया, तब चलि कहीं न जाय १५
दादू कऊवा बोहिथ बैसिकरि, मंझि समंदां जाय
उडि उडि थाका देखितव, निहचल बैठा आय १६
यहु मन कागद की गुडी, उडि चढी आकास
दादू भीगे प्रेमजल, तब आइ रहै हमपास
दादू खीला गारिका, निहचल थिर न रहाय
दादू पग नहीं साचके, भ्रमै दहदिस जाय १७
तब सुख आंनद आत्मां, जे मन थिर मेरा होय
दादू निहचल रामसों, जे करि जांणैं कोय १८
मन निर्मल थिर होत है, रामनाम आनंद
दादू दर्सन पाइए, पूर्ण परमानंद ११

विषय विरक्त

दादू यों फूटेथैं साराभया, संधे संधि मिलाय
बाहुडि विषै न भूंचिये, तौ कबहूं फूटि न जाय २०
यहु मन भूला सो गली, नरक जांणके घाट
अबमन अविगत नाथसों, गुरु दिखाई बाट २१

दादू मन सुध स्याबति आपणां, निहचल होवै हाथ
तो इहांही आनंद है, सदा निरंजन साथ २२
जब मन लागै रामसौं, तब अनंत काहे कौं जाय
दादू पाणी लूणज्यूं, ऐसैं रहै समाय २३

करु० ।

सौ कुछू हमथैं नां भया, जापरि रीझै राम
दादू इस संसारमैं, हम आये बेकाम २४
क्या मुहले हसि बोलिये, दादू दीजे रोय
जन्म अमोलिक आपणां, चले अक्यार्थ खोय २५
जा कारण जग जीजिये, सो पद हिरदै नांहि
दादू हरिकी भक्तिबिन, धृक जीवन कलिमांहि २६
कीया मनका भावता, मेटी आग्याकार
क्याले मुख दिखलाईये, दादू उस भर्तार २७
इंद्रिय स्वार्थ सब कीया, मन मांगै सोदीन
जा कारण जग सिरजिया, सो दादू कछू न कीन २८
कीयाथा इस कामकूं, सेवा कारण साज
दादू भूला बंदगी, सस्या न एको काज २९

मनपरमोध० ।

बादिहि जनम गवांइया, कीये बहुत बिकार
यहु मन अस्थिर नां भया, जहां दादू निजसार ३०

बिषिया अतृपति० ।

दादू जिनि बिष पीवै बावरे, दिन दिन बाढै रोग
देखतही मरिजाइगा, तजि बिषिया रस भोग ३१

मनहारि भावरि० ।

दादू सब कुछ बिलसतां, खातां पीतां होय
दादू मनका भावता, कहि समझावे कोय ३२
दादू मनका भावता, मेरी कहै बलाय
साच रामका भावता, दादू कहै सुणि आय ३३
ए सब मनका भावता, जे कुछ कीजै आन
मनगहि राखै एकसों, दादू साध सुजाण ३४
जे कुछ भावै रामकूं, से तत्व कहि समझाय
दादू मनका भावता, सबको कहै बणाय ३५

चानक उपदेस० ।

पैडैं पग चालै नहीं, होइरह्या गलियार
रामरथ निबहै नहीं, खैबेकूं हुसियार ३६

परपरमोध० ।

दादू का परमोधै आनकों, आपण बहिया जात
ओरूं कूँ अमृत कहै, आपणहीं विष खात ३७

मन० ।

दादू पंचोंका मुख मूलहै, मुखका मनवां होय
यहु मन राखै जतन करि, साधु कहावै सोय ३८
दादू जबलग मनके दोइगुण, तबलग निपना नांहि
दोइगुण मनके मिटिगए, तब निपना मिलि मांहि ३९
काचा पाका जबलगै, तबलग अंतर होय
काचा पाका दूरि करि, दादू एकै सोय ४०

मधिनिरपष० ।

सहज रूप मनका भया, जब द्वैद्वै मिटी तरंग

ताता सीळा सम भया, दादू एकै अंग ४१

मन०।

दादू बहु रूपी मन जबलगैं, तबलग माया रंग
जब मन लागा रामसों, तब दादू एकै अंग ४२
हीरा मन परि राखिये, तब दूजा चढै न रंग
दादू यों मन थिरभया, अविनासी के संग ४३
सुख दुख सवझांईपडै, तबगल काचा मन
दादू कुछ व्यापै नहीं, तब मन भया रतन ४४
पाका मन डोलै नही, निहचल रहै समाय
काचा मन दहदिसि फिरै, चंचल चहुदिस जाय ४५

विरक्तता०।

सीप सुधारस ले रहै, पीवै न खारा नीर
मांहैं मोती नीपजै, दादू बंद सरीर ४६

मन०।

दादू मन पंगुल भया, सब गुण गये विलाय
है काया नव जौबनी, मन बूढा ह्वैजाय ४७

जाचको०।

मन इंद्रिय आंधा कीया, घटमैं लहरि उठाय
सांई सतगुरु छोडि करि, देखि दिवानां जाय ४८
दादू कहै राम विना मन रंकहै, जाचै तीन्यूं लोक
जब मन लागा रामसूं, तब भागे दालिद्र दोष ४९
इंद्रिय के आधीन मन, जीव जंत सब जाचै
तिणे तिणे कै आगैं दादू, तूहूं लोक फिरि नांचै ५०
इंद्रिय अपणैं बसिकरैं, सो काहे जाचण जाय

दादू अस्थिर आत्मा. आसण बैसै आय ५१
मन मनसा दून्यूं मिले, तब जीवकीया भांड
पंचूं का फेर्या फिरै, माया नचावै रांड ५२
नकटी आगै नकटा नांचै, नकटी ताल बजावै
नकटी आगैं नकटा गावै, नकटी नकटा भावै ५३

आनलगनविभचार० ।

पंचों इंद्रिय भूतहै, मनवा खेत्र पाल
मनसा देवी पूजिये, दादू तीन्यूं काल ५४
जीवत लूटै जगत सब, मृतक लूटै देव
दादू कहां पुकारिये, करि करि मूएमेव ५५
अग्नि धूम ज्यूं नीकलै, देखत सबै बिलाय
त्यूं मन बिछडा रामसूं, दहदिसि बीपरि जाय ५६
घरछाडे जबका गया, मन बहुरि न आया
दादू अग्नि के धूम ज्यूं, षुरखोज न पाया ५७
सब काहूंके होतहै, तन मन पसरै जाय
ऐसा कोई एक है, उलटा मांहि समाय ५८
क्यूं करि उलटा आणिये, पसरि गया मन फेरि
दादू डोरी सहजकी, यो आणैं घर घेरि ६९
दादू साध-सब्दसूं मिलिरहै, मन राखै बिलमाय
साध सब्द बिन क्यूं रहै, तबही बीषर जाय ६०
एक निरंजन नामसूं, साधू संगति मांहिं
दादू मन बिलमाइए, दूजा कोई नांहि ६१
तनमैं मन आवै नहीं, निसदिन बाहरि जाय
दादू मेरा जीव दुखी, रहै नही ल्योलाय ६२

तनमैं मन आवै नहीं, चंचल चहुदिस जाय
दादू मेरा जीव दुखी, रहै न राम समाय ६३
कोटि जतन करि करि मूये, यहु मन दहदिसि जाय
राम नाम रोक्यां रहै, नाही आन उपाय ६४
यहु मन बहु बकबाद सूं, बाइभूतहो जाय
दादू बहुत न बोलिये, सहजैं रहै समाय ६५

स्मरणनाम चिंतामणी० ।

भूला भोंदु फेरिमन, मूर्ख मुगध गमार
स्मरि सनेहीं आपणां, आत्मका आधार ६६
मन मांणिक मूर्ख राषिरे, जण जण हाथ न देहु
दादू पारिख जोंहरी, राम साधु दोइ लेहु ६७

मन० ।

मन मृघा मारै सदा, ताका मीठा मांस
दादू खाबेकूं हिल्या, ताथै आन उदास ६८

मनपरमोध० ।

कह्या हमारा मानि मन, पापी परहरि काम
बिषिया का संग छाडिदे, दादू कहिरे रांम ७९
केता कहि समझाइया, मानै नही निलज्ज
मूर्ख मन समझै नहीं, कीये काज अकज्ज ७०

साच० ।

मनही मंजन कीजिये दादू दर्पण देह
मांहैं मूर्ति देखिये, इहिं औसर करिलेय ७१

आनलगानिविभचार० ।

तबहि कारा होत है, हरि बिन चितवत आन

क्या कहिये समझै नहीं, दादू सिषवत ज्ञान ७२

सचा ।

दादू पाणी धोवै बावरे, मनका मैल न जाय
मन निर्मल तब होइगा, जब हरिके गुणगाय ७३
दादू ध्यान धरैं का होत है, जे मन नहीं निर्मल होय
तौ बग सबही ऊधरै, जे इँहिं बिधि सीझै कोय ७४
दादू ध्यान धरैं का होत है, जे मनका मैल न जाय
बग मीनी का ध्यान धरि, पसू बिचारे खाय ७५
दादू काले थैं धोला भया, दिल दरिया मैं धोय
मालिक सेती मिलिरह्या, सहजैं निर्मल होय ७६
दादू जिसका दरपण उजला, सो दर्सन देखै मांहि
जिसकी मैली आरसी, सो मुख देखै नांहि ७७
दादू निर्मल सुद्ध मन, हरि रंग राता होय
दादू कंचन करिलीया, काच कहै नहीं कोय ७८
यहु मन अपणां थिर नहीं, करि नही जाणैं कोय
दादू निर्मल देवकी, सेवा क्यूँ करि होय ८९
दादू यहु मन तीन्यूं लोक मैं, अरस परस सव होय
देही की रक्ष्या करै, हमजिन भीटै कोय ८०
दादू देह जतन करि राखिये, मन राख्या नहीं जाइ
उतम मध्यम वासनां, भला बुरा सब खाइ ८१
दादू हाडौं मुख भरया, चामरह्या लपटाय
मांहैं जिह्वा मांसकी, ताही सेती खाय ८२
नउं दुवारे नरक के, निसि दिन बहै बलाय
सुचि कहांलौं कीजिये, राम सम्मारि गुण गाय ८३

प्राणी तन मन मिलिरह्या, इंद्रिय सकल विकार
दादू ब्रह्मा सुद्रघर, कहा रहै आचार ८४
दादू जीवै पलक मैं, मरतां कलप विहाय
दादू यहु मन मसकरा, जिनि कोई पतीयाय ८५
दादू मूवा मन हम जीवत देख्या, जैसै मड़हट भूत
मूवा पीछैं उठि उठि लागै, ऐसा मेरा पूत ८६
निहचल करतां युगगए, चंचल तवही होय
दादू पसरै पलकमैं, यहु मन मारै मोहि ८७
दादू यहु मन मींडका, जल सौं जीवै सोय
दादू यहु मन रिंदहै, जिनरु पती जै कोय ८८
मांहैं सूक्ष्म होरहै, बाहरि पसरै अंग
पवन लागि पोढा भया, काला नाग भवंग ९९

आगै विश्राम० ।

स्वप्ना तब लग देखिये, जब लग चंचल होय
जब निहचल लागा नाम सौं, तब स्वप्ना नांही कोय ९०
जागत जहां जहां मन रहै, सोवत तहां तहां जाय
दादू जेजे मन बसै, सोई सोई देखै आय ९१
दादू जेजे चित बसै, सोई सोई आवै चीत
बाहरि भीतरि देखिये, जाही सेती प्रीति ९२
सावण हरिया देखिये, मन चित ध्यान लगाय
दादू केते जुग गये, तोभी हरचा न जाय ९३
जीसकी सुर्ति जहां रहै, तिसका तहां विश्राम
भावै माया मोह मैं, भावै आत्मराम ९४
जहां मन राखै जीवतां, मरतां तिसघर जाय

दादू नाना प्राण का, जहां पहली ग्ह्या समाय ९५
जहां सुर्ति तहां जीव है, जहां नांही तहां नांहि
गुग निर्गुण जहां राखिये, दादू घर बन मांहि ९६
जहां सुर्ति तहां जीव है, आदि अंत्य अस्थान
माया ब्रह्म जहां राखिये, दादू तहां विश्राम ९७
जहां सुर्ति तहां जीव है, जीवण मरण जिस ठोर
विख अमृत जहां राखिये, दादू नांहीं ओर ९८
जहां सुर्ति तहां जीव है, जहां जाणे तहां जाय
गम अगम जहां राखिये, दादू तहां समाय ९९
मन मनसा का भाव है, अंत्य फलैगा सोय
जब दादू बाणिकबण्यां, तब आसै आसण होय १००
जपतप कर्णी करिगया, स्वर्ग पहुंते जाय
दादू मनकी वासनां, नरक पडे फिरि आय १०१
पाका काचा ह्वैगया, जीत्या हारै डाव
अंत्यकाल गाफिल भया, दादू फिसले पाव १०२
दादू यहु मन पंगुल पंचदित, सब काहूका होय
दादू उतरि आकास थैं, धरती आया सोय १०३
ऐसा कोई एकमन, मरैसु जीवै नांहि
दादू ऐसे बहुत हैं, फिरिआवै कलिमांहि १०४
देखा देखी सबचले, पार न पहुंच्या जाय
दादू आसण पहलिकै, फिरि फिरि बैटे आय १०५

जगमनाविपरीत १

बरतणिएकै भांति सब, दादू संत असंत
भिन्न भाव अंतर घणां, मनमा तहां गछंत १०६

मन० ।

दादू यहु मन मारै मो मिनां, यहु मन मारै पीर
यहु मन मारै साधुका, यहु मन मारै मीर १०७
दादू मन मारे मुनियर मुये, सुरनर कीये सिंघार
ब्रह्मा विष्ण महेस सब, राखै सिरजनहार १०८
मन बाहे मुनियर बडे, ब्रह्मा विष्ण महेस
सिध साधिक जोगी जती, दादू देस बदेस १०९

मनमुषीमान० ।

पूजा मांन बडाईया, आदर मांगे मन
राम गहे सब परहरै, सोई साधूजन ११०
जहां जहां आदर पाइए, तहां तंहां जीव जाय
विन आदर दीजै रामरस, छाडि हलाहल खाय १११

करणी विना कथणी० ।

करणी किरका को नहीं, कथणी अनंत अपार
दादू यों क्यूं पाइए, रे मन मूढ गंवार ११२

जायामाय मोहनी० ।

दादू मन मृतक भया, इंद्रिय अपनै हाथ
तौ भी कदे न कीजिये, कनक कामनी साथ ११३

मन० ।

अब मन निर्भय घर नही, भैमै बैठा आय
निर्भय संगथै वीछुट्या, तब कायर ह्वै जाय ११४
जब मन मृतक ह्वैरहै, इंद्रिय बल भागा
काया के सब गुण तजे, निरंजन लागा
आदि अंत्य मध्य एक रस, टूटै नही धागा

दादू एकै रहिगया, तब जांणी जागा ११५

दादू मनके सीस मुख, हस्त पावहै जीव
श्रवण नेत्र रसनां रटै, दादू पाया पीव ११६

जहांके नवाये सब नवै, सोई सिरकरि जाणि
जहांके बुलाये बोलिये, सोई मुख प्रमाणि
जहाके सुणांए सब सुणै, सोई श्रवण सयाण
जहांके दिखाये देखिये, सोई नैन सुजाण ११७

दादू मनही माया ऊपजै, मनही माया जाय
मनही राता रामसौं, मनही रह्या समाय ११८

दादू मनही मरणां ऊपजै, मनही मरणां खाय
मन अविनासी ह्वैरह्या, साहिब सौं ल्योलाय ११९

मनहीं सनमुख नूरहै, मनही सनमुख तेज
मनहीं सनमुख जोतिहै, मनहीं सनमुख सेज १२०

मनही सौं मन थिरभया, मनही सूं मनलाय
मनहीं सौं मन मिलिरह्या, दादू अनत न जाय १२१

इति अङ्ग १० ॥ साखी ११०४ ॥

॥ अथ सुक्ष्म जन्मको अङ्ग ॥

*

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरदेवतः
बंदनं सर्ब साधवा, प्रणामं पारंगतः १

दादू चोरासी लख जीवकी, परकीरति घट मांहि
अनेक जन्म दिनके करै, कोई जाणैं नांहि २

दादू जेते गुण व्यापै जीवकों, तेतेही अवतार

आवा गवन यहु दूरकरि, समर्थ सिरजन हार ३
सबगुण सबही जीवके, दादू व्यापै आय
घटमांहै जांमै मरै, कोई न जाणै ताहि ४
जीव जन्म जाणै नही, पलक पलक मै होय
चोरासी लख भोगवै, दादू लखै न कोय ५
अनेक रूप दिनके करै, यहु मन आवै जाय
आवागमन जब मिटै, तब दादू रहै समाय ६
निसवासुर यहु मनचलै, सूक्ष्म जीव संघार
दादू मनथिर कीजिय, आतम लेहु उवारि ७
कबहूं पावक कबहूं पाणी, धर अंबर गुण वाय
कबहूं कुंजर कबहूं कीडी, नरपसुवा ह्वै जाय ८

करणी विनां कथणी० ।

सूकर स्वान सियाल सिंघ, सर्प रहै घटमांहिं
कुंजर कीडी जीवसब, पांडे जांणैं नांहि ९

इति सूक्ष्मजन्मको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग ११ ॥ साषी १११३ ॥

॥ अथ मायाको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १
साहिब है पर हम नहीं, सब जग आवै जाय
दादू स्वप्ना देखिये, जागत गया बिलाय २
दादू मायाका सुख पंचादिन, गरब्या कहा गवार
स्वप्नै पायो राजधन, जात न लागै वार ३

दादू स्वप्नें सूता प्राणिया, कीये भोग बिलास
जागत झूठा ह्वैगया, ताकी कैसी आस ४
मायाका सुख मनकरै, सेज्या सुंदरि पास
अंत्यकालि आया गया, दादू होय उदास ५
जे नांहीं सो देखिये, सूता स्वप्नें मांहि
दादू झूठा ह्वैगया, जागै तौ कुछ नाहि ६
दादू यहु सब माया मृगजल, झूठा झिलिमिलि होय
दादू चिलका देखिकरि, सत्यकरि जानां सोय ७
झूठा झिलिमिलि मृगजल, पाणीं करिलीया
दादू जग प्यासा मरै, पसु प्राणी पीया ८

पति पहिचांनन० ।

छलावा छलि जाइगा, स्वप्नां बाजी सोय
दादू देखि न भूलिये, यहु निज रूप न होय ९

माया ।

स्वप्नें सबकुछ देखिये, जागै तौ कुछ नांहि
ऐसा यहु संसार है, समझि देखि मनमांहि १०
दादू जे कुछ स्वप्ने देखिये, तैसा यहु संसार
ऐसा आपा जाणिये, फूल्यौ कहा गवार ११
दादू जतन जतन करि राखिये, दिढगहि आत्म मूल
दूजा दृष्टि न देखिये, सबहीं सैं बल फूल १२
दादू नैनहुं भरि नही देखिये, सब माया का रूप
तहांले नैनां राखिये, जहां है तत्व अनूप १३
दादू हस्ती है वरधन देखिकरि, फूल्यौ अंग न माय
भेरि दमामां एकदिन, सबही छाडें जाय १४

अविहृडको० ।

दादू माया बिहडै देखतां, काया संग न जाय
कृत्म बिहडै बावरे, अजरा वर ल्योलाय १५

माया ।

दादू मायाका बल देखिकरि, आया अति अहंकार
अंध भया सूझै नहीं, का करिहै सिरजनहार १६

विरक्तता० ।

मन मनसा माया रति, पंचतत्व प्रकास
चवदह तीन्यूंलोक सब, दादू होहु उदास १७

माया ।

माया देखै मन षुसी, हिरदै होइ विगास
दादू यहु गती जीवकी, औतन पूगै आस १८

विरक्तता० ।

मनकी मूठि न मांडिये, मायाके नीसांण
पीछैहीं पछिताहुगे, दादू खूटेबाण १९

सिसनस्वाद० ।

कुछ खातां कुछ खेलता, कुछ सोवत दिनजाय
कुछ विखया रस विलसतां, दादू गए बिलाय २०

संगति कुसंगति० ।

मांखण मन पांहण भया, माया रस पीया
पांहण मन मांखण भया, रामरस लीया २१
दादू मायासूं मन बीगड्या, ज्यूं कांजी करि दुध
है कोई संसार मैं, मनकरि देवै सुध २२
गंदीसूं गंदा भया, यों गंदा सब कोय

दादू लागै खूबसों, तौ खूब सरीषा होय २३
दादू मायासों मन रतभया, विषैरस माता
दादू साचा छाडिकरि, झूठै रंग राता २४
मायाके संग जे गए, ते बहुरि न आए
दादू माया डाकणीं, इनकेते खाए २५

माया।

दादू माया मोट विकारकी, कोई न सकई डारि
बहि बहि मूए बापुरे, गये बहुत पचि हारि २६
दादू रूप राग गुण अणसरे, जहां माया तहां जाय
विद्या अक्षर पंडिता, तहां रेह घरछाय २७
साधन कोई पगभरै, कबहूं राजदुवार
दादू उलटा आंपमैं, बैठा ब्रह्म विचार २८

आपैविश्रांम०।

दादू अपणे अपणे घरगयें, आपा अंग विचार
सहकामी माया मिलै, निहकामी ब्रह्म संभार २९

माया।

दादू माया मगनजु ह्वैरहै, हमसे जीव अपार
माया मांहै ले रही, वूडे कालीधार ३०

सिसनस्वाद०।

दादू विषैके कारण रूप रातेरहैं, नैन नां पाकयौं कीहभाई
वदीकी बात सुणत सारादिन, श्रवण नां पाकयौं कीहजाई ३१
स्वादके कारणै लुबधि लागीरहै, जिह्वा नां पाकयौ कीहखाई
भोगके कारण भूख लागीरहै, अंग नां पाकयौं कीहलाई ३२

मन।

दादू नगरी चैन तब, जब इकराजी होय

दोय राजी दुख दुंदमैं, सुखी न बैसै कोय ३३
इकराजी आनंद है, नगरी निहचल वास
राजा परजा सुखबसै, दादू जोति प्रकास ३४

सिसनस्वाद० ।

जैसे कुंजर कामरस, आप बंधाणा आय
ऐसैं दादू हमभये, क्यूंकरि निकस्या जाय ३५
जैसैं मर्कट जीभरस, आप बंधाणां अंध
ऐसैं दादू हमभये, क्यूंकरि छूटै फंध ३६
ज्यूंसूवा सुख कारणैं, बंध्या मूर्ख मांहि
ऐसैं दादू हमभये, क्यूंहीं निकसै नांहि ३७
जैसैं अंध अज्ञान गृह, बंध्या मूर्ख स्वादि
ऐसैं दादू हमभये, जनम गंमाया बादि ३८

माया मोहनी० ।

दादू बूडिरह्या रे वापुरे, माया ग्रिहके कूप
मोह्या कनकरु कामणीं, नाना विधके रूप ३९

सिसनस्वाद० ।

दादू स्वाद लागि संसार सब, देखत प्रलै जाय
इँद्रिय स्वार्थ साचतजि, सबै बधांणे आय ४०
बिखसुख मांहै रमिरहै, माया हित चितलाय
सोई संतजन ऊबरैं, स्वाद छांडि गुणगाय ४१

विरक्तता० ।

दादू जन्म गया सब देखतां, झूठीके संगलागि
साचे प्रीतमकौं मिलै, भागि सकैतो भागि ४२

आसक्ततामोह० ।

दादू झूठी काया झूठघर, झूठा यहु परिवार

झूठी माया देखिकरि, फूल्यो कहा गवार ४३

विरक्तता० ।

दादू झूठा संसार, झूठा परिवार, झूठा घरबार,
झूठा नर नारि, तहां मन मानै, झूठा कुल जाति
झूठा पित मात, झूठा बंध भ्रात, झूठा तनगात,
सत्य करि जानैं, झूठा सब धंध, झूठा सब फंध
झूठा सब अंध, झूठा जाचंध, कहां मधु छानैं
दादू भागि झूठ सब त्यागि, जागिरे जागि देखि दिवाने ४४

आसक्तता० ।

दादू झूठे तनकै कारणैं, कीये बहुत बिकार
ग्रिहदारा धन संपदा, पूत कुटंब परिवार ४५
ताकारण हति आतमा, झूठ कपट अहंकार
सो माटी मिलि जाइगा, विसरथा सिरजनहार ४६

विरक्तता अंङ्ग० ।

दादू गतं गृहं गतं धनं, गतं दारासुत जोबनं
गतं माता गतं पिता, गतं बंधू सज्जनं
गतं आपा गतं परह, गतं संसार कत रंजनं
भजसि भजसि रे मन, परब्रह्म निरंजनं ४७

आसक्तता मोह० ।

जीवो मांहैं जीव रहै, ऐसा माया मोह
सांई सूधा सबगया, दादू नहीं अंदोह ४८

विरक्तता अंग० ।

दादू माया मगहर खेत खर, सदगति कदे न होय
जेबचैं ते देवता, राम सारीषे सोय ४९
कालर खेत न नीपजै, जे बाहै सोवार

दादू हानां बीजका, क्या पचिमरै गंवार ५०

दादू इस संसारसौं, निमख न कीजैनेह
जांमण मरण आवटणां, छिन छिन दाझै देह ५१

आसक्तता मोह० ।

दादू मोह संसारकूं, विहरै तनमन प्राण
दादू छूटै ज्ञान करि, को साधू संत सुजाण ५२

माया ।

मन हस्ती माया हस्तनी, सघन बन संसार
तामै निर्भै ह्वैरह्या, दादू मुगध गवार ५३

काम० ।

दादू काम कठिन घट चोरहै, घरफोडै दिनराति
सोवत साह न जागई, तत्त बस्त ले जात ५४

दादू काम कठिन घट चोरहै, मूसै भरै भंडार
सौवतही ले जाइगा, चेतन पहरे चारि ५४

ज्यूं घुण लागै काठकों, लोहां लागै कांट
कामकीया घट जाजरा, दादू बारह बाट ५५

करतूति कर्म० ।

राह गिलै ज्यूं चंदकों, गहण गिलै जब सूर
कर्म गिलै यों जीवकों, नखसिष लागै पूर ५६

दादू चंद गिलै जब राहकों, गहण गिलै जब सूर
जीव गिलै जब कर्मकों, राम रह्या भरपूर ५७

कर्म कुहाडा अंग बन, काटत बारंबारि
अपने हाथू आपकों, काटत है संसार ५८

स्वकीमित्रसत्रुता० ।

आपै मारै आपकों, यहु जीव विचारा

साहिब शृखण हारहै, सो हेतु हमारा
आपै मारै आपकौं, आप आपकों खाइ
आपै अपणां कालहै, दादू कहि समझाय ५९

करतूति कर्म०।

दादू मरिबेकी सब ऊपजै, जीबेकी कुछ नांहि
जीबेकी जांणैं नहीं, मरिबेकी मन मांहि ६०
बध्या बहुत बिकारसूं, सरब पापका मूल
ढाहै सब आकारकों, दादू यहु अस्थूल ६१

काम अंग।

दादू यहु तो दोजग देखिये, काम क्रोध अहंकार
राति दिवस जर्बौ करै, आपा अग्नी बिकार ६२
बिषै हलाहल खाइकरि, सब जग मरि मरि जाय
दादू मुहरा नाम ले, रिदै राखो ल्योलाय ६३
जैती बिषिया बिलसिये, तेती हत्या होय
प्रत्यक्ष माणस मारिये, सकल सिरोमणि सोय ६४
बिषिया का रस मदभया, नरनारी का मास
माया माते मदपीया, कीया जन्मका नास
दादू भावै साकत भगत है, बिषै हलाहल खाय
तहां जन तेरा रामजी, स्वप्नैं कदे न जाय ६५
दादू खाडा बूजी भक्तिहै, लोह खाडामांहि
परगट पडा इतबसै, तहां संत काहेकों जांहि ६६

माया।

सांपण एक सब जीवकों, आगै पीछै खाय
दादू कहि उपकार करि, कोई जन ऊबरि जाय ६७

दादू खाए सांपणी, क्यूंकरि जीवै लोग
राममंत्र जन गारडी, जीवै इंहि संजोग ६८
दादू माया कारण जगरै, पीवके कारण कोय
देखो ज्यूं जग प्रजलै, निमख न न्यारा होय ६९

नारीमाया मोहनी० ।

काळ कनक अरु कामनी, परहरि इनका संग
दादू सबजग जलिमूवा, ज्यूं दीपक जोति पतंग ७०
दादू जहां कनक अरु कामनी, तहां जीव पतंगे जांहि
आगि अनंत सूझै नहीं, जरि जरि मूए मांहि ७१

चितकपटीकौ० ।

घट मांहै माया घणी, बाहरि त्यागी होय
फाटी कंथा पहरिकरी, चिहन करै सबकोय ७२
काया राखे बंददै, मन दहदिसि खेलै
दादू कनक अरु कामनी, माया नहीं मेलै ७३
दादू मनसौं मीठि मुख सौं खारी, माया त्यागी कहैं बाजारी ७४

माया ।

दादू माया मंदर मीचका, तामै पैठा धाय
अंध भया सूझै नही, साधु कहै समझाय ७५

विरक्तता० ।

दादू केते जलि मूये, इस जोगीकी आगि
दादू दूरै बंचिये, जोगीके संग लागि ७६

माया० ।

ज्यूं जलमैणी मछली, तैसा यहु संसार
माया माते जीव सब, दादू मरत न वार ७७

दादू माया फोडे नैन दोय, राम न सूझै काल
साधु पुकारे मेरचढि, देखि अग्निकी झाल ७८

जायामाया मोहनी०।

बिनां भवंगम हम डसे, विन जल डुबेजाय
विनही पावक ज्यूं जले, दादू कुछ न बसाय ७९

विषयाअतृपति०।

दादू अमृत रूपी आपहै, और सबै बिषझाल
राखण हारा रामहै, दादू दूजा काल ८०

जगभुलांवनि अंग०।

बाजी चिहर रचाइ करि, रह्या अपरछन होय
माया पटपड दादीया, तांथैं लखै न कोय ८१
दादू बाहे देखतां, ढिगही ढोरी लाय
पीव पीव करते सबगए, आपा देन दिखाय ८२
मै चाहूं सो न मिलै, साहिबका दीदार
दादू बाजी बहुत है, नाना रंग अपार ८३
हमचांहै सो ना मिलै, और बहुतेरा आहि
दादू मन मानै नहीं, केता आवै जाइ ८४
बाजी मोहे जीव सब, हमकों भुरकी बाहि
दादू कैसी करिगया, आपण रह्या छिपाय ८५
दादू सांई सत्यहै, दूजा भ्रम बिकार
नाम निरंजन निर्मला, दूजा घोरअंधार ८६
दादू सो धन लीजिये, जे तुम्हसेती होय
मायाके बांधे केईमुए, पूरापड्या न कोय ८७
दादू कहै जे हम छाडै हाथ थैं, सो तुम्ह लीया पसारि

जे हम लेवै प्रीतिसूं, सो तुम्ह दीया डारि ८८

आसक्तता० मोहः ।

दादू हीरा पगसूं ठेलिकरि, कंकर कों करलीन्ह
पारब्रह्मकों छाडि करि, जीवन सोंहित कीन्ह ८९
दादू सबको बणिजै खार खल, हीरा कोई न लेइ
हीरा लेगा जोंहरी, जो मांगै सो देय ९०

माया ।

दडी दोट ज्यूं मारिए, तृहूलोक मैं फेरि
धूपहुचै संतोखहै, दादू चढिबामेरि ९१
अनिलपक्ष आकास कूँ, माया मेर उलंघि
दादू उलटे पंथ चढि, जाइ विलंबे अंग ९२
दादू माया आगै जीव सब, ठाढे रहै करजोडि
जिन सिरजे जल बूंदसूं, तासूं बैठे तोडि ९३
दादू सुरनर मुनियर बसिकीये, ब्रह्मा बिष्णु महेस
सकल लोकके सिरखडी, साधूके पगहेठ ९४
दादू माया दासी संतकी, साकतकी सिरताज
साकत सेती भांडणी, संतौं सेती लाज ९५
दादू च्यारि पदार्थ मुक्ति बापुरी, अठसिधि नवनिध चेरी
माया दासी ताकै आगै, जहां भक्ति निरंजन तेरी ९६
दादू कहै ज्यूं आवै त्यूं जाइ विचारी, विलसी वितडी नै माथैमारी
दादू माया सब गहिले कीये, चौरासी लषजीव
ताका चेरी क्या करै, जे रंग राते पीव ९८

विरक्तता० ।

दादू माया बैरणि जीवकी, जिनको लावै प्रीति

माया देखे नरक करि, यहु संतन की रीति ९९

माया० ।

माया मत चक्र चालि करि, चंचल कीये जीव
माया माते मदपीया, दादू बिसर्या पीव १००

आनन्दगति विभचार० ।

जणे जणे की रामकी, घर घरकी नारी
पतिव्रता नही पीवकी, सौं माथै मारी १०१
जण जणके उठि पीछे लागै, घर घर भ्रमत डोलै
ताथैं दादू खाइ तमाचे, मांदल दुहु मुख बोलै १०२

विरक्तता अंग ।

दादू जे नर कामणि परहरैं, ते छूटे गर्भवास
दादू ऊंधे मुख नहीं, रहै निरंजन पास १०३
रोक न राखै झूठ न भाखै, दादू खरचै खाय
नदी पूरपर वाह ज्यूं, माया आवै जाय १०४
रादिका सिरजन हारका, केता आवै जाय
दादू धन संचै नही, बैठा खुलावे खाय १०५

माया० ।

जोगणि ह्वै जोगी गहे, सोफणि ह्वै करि सेख
भक्तणि ह्वै भगता गहे, करि करि नाना भेष १०६
बुधि बिवेक बल हराणि, तृयतन ताप उपावनि
अंग अग्नि प्रजालिनी, जीव घरबार नचांवनि १०७
नाना विधि के रूपधरि, सब बंधे भामनि
जग बिटंब प्रलय कीये, हरिनाम भुलांवनि १०८
बाजीगरकी पूतली, ज्यूं मर्कट मोह्या

दादू माया रामकी, सब जगत विगोया १०९

तिसन स्वाद० ।

मोरा मोरी देखीकरि, नाचै पक्ष पसार

यों दादू घर आंगणैं, हम नाचे कैवार ११०

माया० ।

दादू जिह घट ब्रह्म न प्रगटै, तहां माया मंगल गाय

दादू जागै जोतिजब, तब माया भ्रम बिलाय १११

दादू दीपक देहका, माया प्रगट होय

चौरासी लख पाक्षिया, तहां परै सब कोय ११२

पुरुष प्रकाशीक० ।

यहु घट दीपक साधुका, ब्रह्म जोति प्रकाश

दादू पक्षी संतजन, तहां परैं निजदास ११३

पतिपहिचांनन० ।

दादू जोति चमकै तिरवरे, दीपक देखै लोय

चंद सूरका चांदणां, पगार छलावा होय ११४

जायामाया मोहनी० ।

दादू मन मृतक भया, इंद्रिय अपणैं हाथ

तोभी कदेन कीजिये, कनक कामणी साथ ११५

विषिया विरक्तता० ।

जाणै बूझै जीव सब, तृया पुरुष का अंग

आया पर भूला नहीं, दादू कैसा संग ११६

मायाके घट साजिहै, तृया पुरुष धरि नाम

दून्यूं सुदरि खेलै दादू, राखिलेहु बलि जाम ११७

बहण बीर करि देखिये, नारी अरु भर्तार

प्रमेसुर के पटके, दादू सब परवार ११८
परघर परहरि आपणी, सब एकै उनहार
पसु प्राणी समझै नहीं, दादू मुगध गँवार ११९
पुरुष पलटि बेटा भया, नारि माता होय
दादू को समझै नहीं, बडा अचंभा मोहि १२०
माता नारी पुरुषकी, पुरुष नारिका पूत
दादू ज्ञान बिचारि करि, छाडि गये अवधूत १२१

अध्यात्म० ।

दादू मायाका जल पीवतां, व्याधी होइ विकार
सेझ का जल पीवतां, प्राण सुषी सुधसार १२२

बिषिया अतृपति० ।

जीव गहिला जीव बावला, जीव दिवानां होय
दादू अमृत छाडिकरि, बिष पीवै सब कोय १२३

माया० ।

माया मैली गुणमई, धरि धरि उंज्जल नाम
दादू मोहै सबनिकौं, सुरनर सबही ठाम १२४

बिषिया अतृपति० ।

बिषका अमृत नाम धरि, सब कोई खावै
दादू खारा नां कहै, यहु अचिरज आवै १२५
दादू जे बिषजारै खा करि, जिन मुखमैं मेलै
आदि अंत्य प्रलय गये, जे बिषिसौं खेलै १२६
जिनबिष खाया ते मुए, क्या मेरा तेरा
आगि पराई आपणी, सब करै निबेरा १२७
दादू कहै जिन बिषपीवै बावरे, दिन दिन बाढै रोग

देखतही मरिजाइगा, तजि बिषिया रस भोग १२८
अपणां पराया खाइ बिष, देखतहीं मरिजाय
दादू को जीवै नहीं, इहिं भोरैं जिनि खाय १२९

माया।

ब्रह्म सरीषा होइकरि, मायासूं खेलै
दादू दिन दिन देखतां, अपणैं गुण मेलै १३०

बिषियाअतृपति०।

दादू ब्रह्मा बिष्णु महेसलौं, सुरनर उरझाया
विषका अमृत नाम धरि, सब किनहीं खाया १३१

माया०।

माया मारै लातसूं, हरिकूं घालै हाथ
संग तजै सब झूठका, गहै साचका साथ १३२
दादू घरके मारे बनके मारे, मारे स्वर्ग पयाल
सूक्ष्म मोटा गूंथिकरि, मांड्या मायाजाल १३३

बिषियाअतृपति०।

मूये सरीषे ह्वैरहे, जीवणकी क्या आस
दादू राम बिसारि करि, बांछै भोग बिलास १३४
दादू ऊभासारंगबैठा बिचारं, संभारं जागत सूता
तीनिभव तत जाल बिडारण, तहां जाइगा पूता १३५

कृतमकरता०।

माया रूपी रामकूं, सबकोई धावै
अलख आदि अनादि है, सो दादू गावै १३६
ब्रह्मका बेद विष्णुकी मूर्ति, पूजै सब संसारा
महादेवकी सेवा लागे, कहां है सिरजन हारा १३७

माया का ठाकुर कीया, माया की महि माय
ऐसे देव अनंत करि, सब जग पूजण जाय १३८
माया बैठी रामह्वै, कहै मैही मोहन राय
ब्रह्मा बिष्णु महेसलूं, जोनी आवै जाय १३९
माया बैठी रामह्वै, ताकूं लषै न कोय
सबजग माने सत्यकरि, बडा अचंभा मोहि १४०
अंजन कीया निरंजनां, गुण निर्गुण जानैं
धर्‍या दिखावै अधर करि, कैसे मन मांनै १४१
निरंजन की बात कहै, आवै अंजन मांहि
दादू मन मानैं नहीं, स्वर्ग रसातल जांहि १४२
कामधेनु कै पटंतरै, करै काठकी गाइ
दादू दूध दूझै नहीं, मूर्ख देइ बहाय १४३
चिंतामणि कंकर कीया, मांगै कछू न देय
दादू कंकर डारिदे, चिंतामणि करलेय १४४
पारस कीया पषांण का, कंचन कदे न होय
दादू आतम राम बिन, भूलिपड्या सब कोय १४५
सूर्ज फटक पषांण का, तासूं तिमिर न जाय
साचा सूरज प्रगटै, दादू तिमर नसाय १४६
मूर्ति घडी पषांणकी, कीया सिरजनहार
दादू साच सूझै नहीं, यों डूबा संसार १४७
पुरुष बिदेस कामनि कीया, उसही कै उनहार
कारजको सीझै नहीं, दादू माथै मार १४८
कागद का माणस कीया, छत्रपती सिरमोर
राजपाट साधै नहीं, दादू परहरि और १४९

सकल भवन भानै घडै, चतुर चलावण हार
दादू सो सूझै नहीं, जिसका वार न पार १५०

कर्तासाक्षीभूत० ।

दादू पहली आप उपाइकरि, न्यारा पद् निर्बाण
ब्रह्मा विष्णु महेस मिलि, बांधया सकल बंधाण १५१

कुरमकर्ता० ।

नाम नीति अनीति सब, पहली बांधे बंध
पसू न जाणैं पारधी, दादू रोपे फंध १५२
दादू बांधे बेद विधि, भ्रम कर्म उरझाय
मरजादा मांहैं रहै, स्मरण कीया न जाय १५३

माया० ।

दादू माया मीठा बोलणीं, नइ नइ लागै पाय
दादू पैसै पैटमैं, काटि कलेजा खाय १५४

कामीनर० ।

नारी नागणि जे डसे, ते नर मुये निदान
दादू को जीवै नहीं, पूछौ सबै सयान १५५
नारी नागणि एकसी, बाघणि बडी बलाय
दादू जे नर रतभये, तिनका सर्वस खाय १५६

विषिया विरक्तता० ।

दादू नारी नैन न देखिये, मुखसौं नाम न लेय
कांनों कामणि जिनि सुणैं, यहु मन जाण न देय १५७

कामी० ।

सुंदर खाये सांपणी, केते इंहि कलिमांहि
आदि अंत्य इन सब डसे, दादू चैते नांहि १५८

दादू पैसै पटमैं, नारी नागणि होय
दादू प्राणी सब डसे, काढि न सकै कोय १५९

जायामाय मोहनी० ।

माया सांपणि सब डसे, कनक कामनी होय
ब्रह्मा बिष्णु महेसलौं, दादू बंचै न कोय १६०

माया० ।

माया मारे जीव सब, खंड खंड करि खाय
दादू घटका नास करि, रोवै जग पतियाय १६१
बाबा बावा कहि गिलै, भाई कहि कहि षाय
पूत पूत कहि पीगई, पुरुषा जिनि पतियाय १६२
ब्रह्मा बिष्णु महेस की, नारी माता होय
दादू खाये जीव सब, जिनरु पतीजै कोय १६३
माया बहुरूपी नटणीं नाचै, सुरनर मुनिकों मोहै
ब्रह्मा बिष्णु महादेव बाहे, दादू बपुरा कोहै १६४
माया पासी हाथले, बैठी गोपि छिपाय
जेको धीजै प्राणिया, ताहीं के गलबाहि १६५

कामीनर० ।

पुरुषा पासी हाथकरि, कामणिके गलबाहि
कामणि कटारी करगहै, मारि पुरुषकों खाय १६६
नारी बैरणि पुरष की, पुरुषा बैरी नारि
अंतिकाल दून्यूं मुये, दादू देखि बिचारि १६७
दादू नारि पुरुषकों लेमुई, पुरुषा नारी साथ
दादू दून्यूं पचिगए, कछु न आया हाथ १६८
नारी पीवै पुरुषकों, पुरुष नारिकों खाय

दादू गुरुके ज्ञान विन, दून्यूं गए बिलाय १६९
भवरा लुबधी बासका, कमल बंधानां आइ
दिन दस माहै देखतां, दून्यूं गए बिलाय १७०

इति अङ्ग १२ ॥ साखी १२८३ ॥

॥ अथ साचको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १

अदयाहिंसा० ।

दादू दया जीहौं कै दिल नहीं, बहुरि कहावै साधु
जे मुख उनका देखिये, तो लागै बहु अपराध २
दादू मिहर महबती मन नहीं, दिलके बज्र कठोर
काले काफ़रते कहिये, मोमिन मालिक और ३
कोई काहू जीव की, करै आत्मां घात
साच कहूं संसा नहीं, सौं प्राणी दोजग जात ४
दादू नाहर सिंघ सियाल सब, केते मूसलमान
मांस खाइ मोमिन भये, बडे मीयेका ज्ञान ५
दादू मांस अहारी जे नरा, ते नर सिंघ सियाल
बग मंजार सुनहा सहीं, एता प्रत्यक्ष काल ६
दादू मूई मार माणस घणें, ते प्रत्यक्ष जम काल
मिहर दया नही सिंघ दिल, कूकर काग सियाल ७
मांस अहारी मद पीवै, विषै विकारी सोय
दादू आत्म राम विन, दया कहां थी होय ८

दादू लंगर लोग लोभसों लागे, बोलै सदा उनहुंकी भीर
जोर जुलम बीचि बट पारै, आदि अंत्य उनहीं सों सीर ९
तनमन मारि रहै मांई सों, तिनकूं देखि करै तानीर
ए बडी बूझि हांथै पाई, ऐसी कजा अवलीया पीर १०
बेमिहर गुमराह गाफिल, गोस्त षुरदनी
बेदिल बदकार आलम, हयात मुरदनी ११

साच।

छली करी बालि करि घाइ करी, मारै जिंहिं तिहिं फेरी
दादू ताहि न धीजिये, पराणें संगी पतेरी १२

अदयाहिंसा०।

दादू दुनियांसू दिल बंधिकरि, बैठे दीन गमाय
नेकी नांम विसारि करि, करद कमाया खाय १३
दादू गल काटै कलमां भरै, अया विचारा दीन
पंचूं बखत निवाज गुजारै, स्याबति नहीं अकीन १४
दुनियांके पीछैं पड्या, दौड्या दौड्या जाय
दादू जिन पैदा कीया, ता साहिबकूं छिटकाय १५
कुफर जके मन मैं, मीया मुसलमान
दादू पयाझगमैं, विसारे रहिमान १६
आपसकौं मारै नही, परकूं मारण जाय
दादू आपा मारे विनां, कैसैं मिलै खुदाय १७
भीतरि दूंदर भरि रहे, तिनकौं मारै नांहि
साहिब की अरवाह कौं, ताकूं मारण जांहि १८
दादू मूयेकौं क्या मारिये, मींया मुई मार
आपसकूं मारै नही, औरौंकौं हुसियार १९

साच० ।

जिसका था तिसका हूवा, तौ काहे का दोस
दादू बंदा बंदगी, मीयां ना करि रोस २०
सेवक सिरजन हारका, साहिब का बंदा
दादू सेवा बंदगी, दूजा क्या धंधा २१
सो काफर जो बोलै काफ, दिल अपणा नही राखै साफ
सांईकूं पहिचानै नांही, कुड़ कपट सब उनहीं मांही २२
सांईका फुर मांन न मानैं, कहां पीव ऐसैं करि जानै
मन अपनै मैं समझत नांहीं, निरखत चलै आपणीं छांहीं २३
जोरकरैं मसकीन संतावै, दिल उनकीमैं दरद न आवै
सांई सेती नांही नेह, गर्व करै अति अपनी देह २४
इन बातन क्यूं पाइए पीव, परधनउ परिराखै जीव
जोरजुलमकरि कुटंबसेंखाय, सो काफर दोजगमैं जाय २५

अदयाहिंसा० ।

दादू जाकौं मारण जाइए, सोई फिरि मारै
जाकौं तारण जाइए, सोई फिरि तारै २६
दादू न फस नामसौं मारिए, गोस मालदे पंद
दुई है सो दूरकरि, तब घटमैं आनंद २७

साच० ।

मुसलमानजु राखै मान, सांईका मानै फुरमान
सारौं कूं सुखदाई होय, मुसलमान करि जानौं सोय २८
दादू मुसलमान मिहरगहि रहै, सबकूं सुख किसही नहीदहै
मूवा न खाइ जीवत नही मारै, करै बंदगी राह संवारै २९
सो मोमिन मनमैं करि जाणि, सत्य सबूरी बैसै आणि

चलै साच संवारै बाट, तिन कूं खुले भिस्त के पाट ३०
सो मोमिन मोम दिल होइ, सांई कों पहिचानैं सोय
जो रन करै हराम न खाइ, सो मोमिन भिस्तमैं जाय ३१
जो हम नहीं गुजारते, तुम्हकों क्या भाई
सीर नहीं कुछ बंदगी, कहु क्यूं फुरमाई ३२
अपणें अमलों छूटिये, काहू के नाहीं
सोई पीड़ पुकारसी, जा दूखै मांहीं ३३
कोई खाइ अघाइ करि, भूखे क्यूं भरिये
खूटा पूंगी आनकी, आपण क्यूं मरिये ३४
फूटी नाव समंदमैं, सब बूडण लागे
अपणां अपणां जीव ले, सब कोई भागे ३५
दादू सिर सिर लागी आपणै, कहु कोंण बुझावै
अपणां अपणां साचदे, सांई कों भावै ३६

स्म० नाम चिनानी ।

साचा नाम अलाहका, सोई सत्य करि जाणि
निहचल करिले बंदगी, दादू सो परवांणि ३७
आवट कूटा होतहै, औसर बीता जाय
दादू करिले बंदगी, राखण हार खुदाय ३८
इस कलिकेते ह्वैगये, हिंदू मुसलमान
दादू साची बंदगी, झूठा सब अभिमान ३९

कथणी विनांकरणी ।

पोथी अपणां पिंडकरि, हरिजस मांहै लेख
पंड़ित अपणां प्राणकरि, दादू कथहु अलेख ४०

दादू काया हमारी कतेब बोलिये, लिखि राखूं रहिमान
मन हमारा मुलां बोलिये, सुरता है सु बिहांन ४१
दादू काया महलमै निमाज गुजारू, तहां और न आवणपावै
मन मणके करि तसबी फेरौं, तब साहिब के मनभावै ४२
दादू दिल दरियामै गुमल हमारा, ऊजुकरि चितलांऊं
साहिब आगैं करौं बंदगी, बेर बेर बलिजांऊं ४३
दादू पंचों संग संभालों सांई, तन मन तो सुखपांऊ
प्रेम पियाला पीवजी देवै, कलमां एलै लांऊं ४४
सोभा कारण सब करै, रोजा बंगनिवाज
मूवान एकै आहिसूं, जे तुझ साहिब सेती काज ४५
दादू हरोज हजूरी होइ रहु, काहे करै कलाप
मुलां तहां पुकारिये, जहां अरस इलाहि आप ४६
हरदम हाजिर होणां बाबा, जब लग जीवै बंदा
दादू दिल सांईसुस्पावति, पंच बखत क्या धंधा ४७
दादू हिंदू मार्ग कहै हमारा, तुरक कहै रह मेरी
कहां पंथहै कहो अलखका, तुम्ह तौ ऐसी हेरी ४८
दादू दुई दरोग लोग कूं भावै, सांई साच पियारा
कोंण पंथ हम चलै कहोधू, साधो करौ बिचारा ४९
खंड खंड करि ब्रह्मकूं, पाखि पाखि लीया बांटि
दादू पूर्णब्रह्म तजि, बंधे भ्रमकी गांठि ५०
जीवत दीसै रोगिया, कहै मूंवां पीछैं जाय
दादू दुहके पाठमैं, ऐसी दारू लाय ५१
सो दारू किस कामकी, जाथैं दरद न जाय
दादू काटै रोगकूं, सो दारू लै लाय ५२

चानक उपदेश० ।

एक सेरका ठामडा, क्यूंही भऱ्या न जाय
भूख न भागी जीवकी, दादू केता खाय ५३
पसु वाकी नांई भरि भरि खाइ, व्याधि घणेरी बधती जाय
पश्रुवाकी नांई करै अहार, दादू बाढै रोग अपार ५४
राम रसांयन भरि भरि पीवै, दादू जोगी जुग जुग जीवै ५५
दादू चारै चितदीया, चिंतामणी को भूलि
जन्म अमोलिक जातहै, बैठे मांझीं फूलि ५६
भरि अघौडी भावठी, बैठा पेठ फुलाय
दादू सूकर स्वान ज्यूं, ज्यूं आवै त्यूं खाय ५७

सिसन स्वाद० ।

दादू खाटा मीठा खाइकरि, स्वाद चित दीया
इनमैं जीव बिलंबिया, हरिनाम न लीया ५८
भक्ति न जांणै रामकी, इंद्रियका आधीन
दादू बंध्या स्वादसौं, ताथैं नाम न लीन ५९

साच ।

दादू अपना नीका राखीये, मैं मेरा दीया बहाय
तुझ अपणे सेती काजहै, मै मेरा भावैती धरिजाय ६०
दादू जे हम जाएपां एककरि, तौ काहे लोक रिसाय
मेरा था सो मैं लीया, लोगूका क्या जाय ६१

कारणीविना कथणी० ।

दादू है है पदकीये, साखी भी है च्यार
हमकूं अनुभव ऊपजी, हम ज्ञानी संसार ६२
दादू सुणि सुणि प्रचे ज्ञानके, साखी सब्दी होय

तबही आपा ऊपजे, हमसा और न कोय ६३
दादू सो उगजी किस कामकी, जे जण जण करै कलेस
साखी सुणि समझै साधुकी, ज्यूं रसना रस सेस ६४
दादू पद जोडै साखी कहै, बिषै न छाडै जीव
पाणी घालि बिलोइये, तो क्यूं करि निकसै घीव ६५
दादू पद जोडै का पाइये, साखी कहैं का होय
सत्य सिरोमणि सांइया, तत्व न चीह्नां सोय ६६
कहिबे सुणिबे मनषुसी, करिबा औरै खेल
बातों तिमिर न भाजई, दीवा बाती तेल ६७
दादू करिबे वाले हम नहीं, कहिबेकूं हम सूर
कहिबा हमथे निकट है, करिबा हमथैं दूर ६८
दादू कहैं कहैं का होतहै, कहैं न सीझै काम
कहैं कहैं का पाइए, जबलग हृदै न आवै राम ६९

चोंपाबिन चोंपय चरचा०।

दादू सुरता घर नही, बक्ता बकैसुबादि
बक्ता सुरता एकरस, कथा कहावै आदि ७०
बक्ता सुरता घर नहीं, कहै सुणैको राम
दादू यहु मन थिर नहीं, बादि बकै बे काम ७१

विचार०।

अंतर सुरझै समझि करि, फिरि न अरुझै जाय
बाहरि सुरझै देखतां, बहुरि अरूझे आय ७२

सतिअसति गुरुपारिखलछन०।

आत्म लावैं आपसूं, साहिब सेति नांहि
दादू को निपजै नही, तून्यूं निरफळ जाहि ७३

तूं मुझ हो मोटाकरै, हौं तुझै बडाई मान
साईंकूं समझै नही, दादू झूठा ज्ञान ७२

कस्तूरियामृगः ।

सदा समीपरहै संग सनमुख, दादू लखैन गुझ
स्वप्नैंहीं समझै नही, क्यूं करि लहै अवूझ ७३

वेषःचाविनती० ।

दादू सेवक नाम बुलाइये, सेवा स्वप्नैं नाहीं
नाम धरायें का भया, जे एक नही मनमांहि ७४
नांम धरावै दासका, दासा तनथै दूर
दादू कारिज क्यूं सरै, हरिसूं नहीं हजूर ७५
भक्ति न होवै भक्तविन, दासातण विनदास
विन सेवा सेवक नहीं, दादू झूठी आस ७६
दादू राम भक्ति भावै नहीं, अपणी भक्तिका भाव
राम भक्ति मुखसौं कहै, खेलै अपणां डाव ७७
भक्ति निराली रहिगई, हम भूलिपडे बनमांहि
भक्ति निरंजन रामकी, दादू पावै नांहि ७८
सो दिसा कत हूं रही, जिहिं दिस पहुचे साधु
मै तैं मूरख गहि रहे, लोभ बडाई बाद ७९
दादू राम विसारि करि, कीये बहु अपराध
लाजों मरै संत सब, नाम हमारा साधु ८०

करणीविनां कथणी० ।

मनसाके पकवान सूं, क्यूं पेट भरावै
ज्यूं कहिये त्यूं कीजिये, तबही बनिआवै ८१

दादू मिश्री मिश्री कीजिये, मुख मीठा नांही
मीठा तबहीं होइगा, छिटकावै मांही ८२
दादू बातूंही पहुचे नहीं, घर दूर पयानां
मार्ग पंथी उठिचलै, दादू सोई सयानां ८३
दादू वातों सब कुछ कीजिये, अंति कछू नहीं देखै
मनसा वाचा कर्मनां, तब लागै लेखै ८४

समकिसुजांनता०।

दादू कासों कहि समझाइये, सबको चतुर सुजांन
कीडी कुंजर आदिदे, नांहि न कोई अजान ८५

करणीविनां कथनी०।

दादू सूकर स्वान सियाल सिंघ, सर्प रहै घटमांहि
कुंजर कीडी जीव सब, पांडे जाणैं नांहि ८६
दादू सूंनां घट सोधी नहीं, पंडित ब्रह्मा पूत
आगम निगम सब कथैं, घरमैं नाचै भूत ८७
पढै न पावै परमगति, पढै न लंघै पार
पढें न पहुंचे प्राणियां, दादू पीड़ पुकार ८८
दादू काजी कजा न जाणई, कागद हाथ कतेब
पढतां पढतां दिनगये, भीतर नहीं भेद ८९
मसि कागदके आसिरे, क्यूं छूटै संसार
राम विनां छूटै नहीं, दादू भ्रम विकार ९०
दादू निबरे नामविन, झूठा कथैं गियान
बैठे सिरषाली करै, पंडित बेद पुराण ९१
दादू केते पुस्तक पढि मुए, पंडित बेद पुराण
केते ब्रह्मा कथिगए, नांहि न राम समान ९२

दादू सब हम देख्या सोधिकारि, वेद कुरानो माहि
जहां निरंजन पाइए, सो देस दूर इत नांहि १३
कागद काले करि मुये, केते वेद पुराण
एकै अक्षर पीवका, दादू पढै सुजान १४
दादू कहतां कहतां दिनगए, सुणतां सुणतां जाय
दादू ऐसा को नहीं, कहिसुणि राम समाय ९५

मध्यानिरपख।

सोनि गहैते वावरे, बोलैं खरे अयांन
सहजैं राते रामसूं, दादू सोई सयान १६

करुणां०।

कहतां सुणतां दिनगए, ह्वै कछू न आवा
दादू हरिकी भक्ति विन, प्राणी पछितावा ९७

सजन दुरजन०।

दादू कथणी और कुछ, करणी करैं कुछ ओर
तिनथैं मेरा जीव डरै, जिनकै ठिक न ठौर ९८
अंतर गति औरै कुछ, मुखरसनां कुछ ओर
दादू करणी और कुछ, तिनकूं नांही ठोर ९९

मनपरमोध०।

दादू राम मिलनकी कहतहै, करत कुछ ओर
ऐसैं पीव क्यूं पाइये, समझि मनबोर १००

वेषरचाविसनी०।

दादू बगनी भंगा खाइकारि, मतिवाले मांझी
पैका नांही गांठडी, पातिसाही खांजी १०१

दादू टोटा दालदी, लाखोंका व्योपार
पैका नांही गांठडी, सिरे साहूकार १०२

मध्यनिपख०।

दादू ए सब किसके पंथमैं, धरति अरु असमान
पाणी पवन दिन रातिका, चंद सूर रहिमान १०३
दादू ब्रह्मा विष्णु महेसका, कौंण पंथ गुरुदेव
सांई सिरजन हारतूं, कहिये अलख अभेव १०४
दादू महमद किसके दीनमैं, जबराइल किसराह
इनके मुरसद पीरकी, कहिये एक अलाह १०५
दादू ए सब किसके ह्वैरहे, यहु मेरे मन मांहि
अलख इलाही जगत गुरु, दूजा कोई नांहि १०६

पतिव्रतविभचार०।

दादू औरैंहीं औलातकै, थींयांसेद वियांनि
सो तूं मीया नां घुरै, जो मीयां मीयंनि १०७

असत्यगुरु पारिष लछन०।

आई रोजी ज्यूं गई, साहिबका दीदार
गहिला लोगां कारणैं, देखै नहीं गवांर १०८

पतिव्रतनिह्कांम०।

दादू सोई सेवक रामका, जिसै न दूजी चींत
दूजाको भावै नही, एक पियारा मीत १०९

भ्रम विधूंसन०।

अपणी अपणी जातिसों, सबको बैसै पांति
दादू सेवक रामका, ताकै नहीं भिरांति ११०
चोर अन्याई मसकरा, सब मिलि बैसै पांति

दादू सेवक रामका, तिनसूं करै भिरंति १११
दादू सुप बजायें क्यूं टलै, घरमैं बडी बलाय
काल झाल इम जीवका, बातन सो क्यूं जाय ११२
सांपगया सहि नाणकौं, सब मिलि मारै लोक
दादू असा देखियें, कुलका डगरा फोक ११३
दादू दून्यूं भ्रनैह, हिंदू तुरक गवांर
जे दुहुंवाथैं रहत हैं, सो गहि तत्व बिचार ११४
अपणां अपणा करिलीया, भंजन मांहैं बाहि
दादू एकै कूराजल, मनका भ्रम उठाय ११५
दादू पांणीके बहु नांमधरि, नाना बिधिकी जाति
बोलण हारा कौंणहै, कहो धौ कहां समात ११६
दादू जब पूर्णब्रह्म बिचारिये, तब सकल आत्मा एक
कायाके गुण देखिये, तौ नानां बरण अनेक ११७

अमिटपाप प्रचंड० ।

दादू भाव भक्ति उपजै नहीं, साहिब का प्रसंग
बिषै बिकार छूटै नहीं, सो कैसा सतसंग ११८
दादू बासण बिषै बिकारके, तिनकौं आदर मान
संगी सिरजन हारके, तिनसौं गर्व गुमान ११९

अज्ञसुभाव अपलट० ।

अंधेकौं दीपक दीया, तौभी तिमर न जाय
सोधी नहीं सरीरकी, ता सन का समझाय १२०

सुगुनां निगुनां कृतघनी० ।

दादू कहिये कुछ उपगारकौं, मानै ओगुण दोष
अंधे कूप बताइया, सत्य न मांनैं लोक १२१

कृत्मकर्ता० ।

दादू जिन कंकर पथर सेविया, सो अपणां मूल गमाय
अलख देव अंतर बसैं, क्या दूजी जगह जाय १२२
दादू पथर पीवै धोइकरि, पथर पूजै प्राण
अंत्य काल पथर भए, बहु बूडे इंाहिज्ञान १२३
कंकर बांध्या गांठडी, हरिके बेतास
अंत्य काल हरि जोंहरी, दादू सून कपास १२४

संस्कार आगम० ।

पहली पूजें ढुढसी, अबभी ढूढसबाणि
आगै ढूढस होइगा, दादू सत्यकरि जाणि १२५

अगट पापमचंड० ।

दादू पैंडै पापकै, कदे न दीजै पाव
जिंहिं पैंडे मैरा पीव मिलै, तिहिं पैंडैका चाव १२६
दादू सुकृत मार्ग चालतां, बुरा न कबहूं होय
अमृत खातां प्राणीयां, मूवा न सुणीए कोय १२७

भ्रगनिधुमन० ।

दादू कुछ नांही का नाम क्या, जे धरिए सो झूठ
सुरनर मुनिजन बंधीया, लोका आवट कूट १२८
दादू कुछ नांही का नाम धरि, भ्रम्या सब संसार
साच झूठ समझै नहीं, नां कुंछ कीया बिचार १२९

कसतूरीया मृग० ।

दादू केई दोडे द्वारिका, केई कासी जांहि
केई मुथरा कूं चले, साहिब घटही मांहि १३०
ऊपरि आलंम सबकै, साधूजन घटमांहि

दादू एता अंतरा, ताथैं बणती नांहि १३१
दादू सबथे एकके, सो एक न जानां
जणे जणेका होइगया, यहु जगत दिवानां १३२

साचा ।

दादू झूठा साचा करिलीया, बिष अमृत जाना
दुखकों सुख सबको कहै, असा जगत दिवानां १३३
सूधा मार्ग साचका, साचा होइ सुजाय
झूठा कोई नां चलै, दादू दिया दिखाय १३४
साहिब सों साचा नहीं, यहु मन झूठा होय
दादू झूठे बहुतहैं, साचा बिरला कोय १३५
दादू साचा अंग न ठेलिये, साहिब मानैं नांहि
साचा सिरपरि राखिये, मिलि रहिये ता मांहि १३६
दादू साचे साहिबकों मिलै, साचे मार्ग जाय
साचे सों साचा भया, तब साचे लीये बुलाये १३७
दादू साचा साहिब सेविये, साची सेवा होय
साचा दर्सन पाइये, साचा सेवक सोय १३८
जे कोठेलै साचकौं, तौ साचा रहै समाय
कोडी बरक्यूं दीजिये, रतन अमोलिक जाय १३९
झूठा प्रगट साचा छांनै, तिनकी दादू रामन मानैं १४०
दादू पाखंड पीव न पाइये, जे अंतर साच न होय
ऊपरि थैं क्यूंहीं रहो, भीतर के मल धोय १४१
दादू साचेका साहिब धणी, समर्थ सिरजन हार
पाषड की यहु पृथमी, परपंचका संसार १४२
साच अमर युग युग रहै, दादू बिरला कोय

झूठ बहुत संसारमैं, उतपति प्रलय होय १४३
दादू झूठा बदलिये, साच न बदल्या जाय
साचा सिरपरि राखिए, साधु कहै समझाय १४४
साच न सूझै जबलगैं, तबलग लोचन अंध
दादू मुक्ता छाडिकरि, गलमैं घाल्या फंध १४५
साच न सूझै जबलगै, तबलग लोचन नांहि
दादू निरबंध छाडिकर, बंध्या द्वैपख मांहि १४६
एक साचसूं गहगही, जीवण मरण निबाहि
दादू दुखिया राम बिन, भावै तीधर जाहि १४७

कामीनर० ।

छानै छानै कीजिये, चोडै प्रगट होय
दादू पैसि पयालमैं, बुरा करै जिनि कोय १४८

अदयाहिंसा अङ्ग ।

अणकीया लागै नहीं, कीया लागै आय
साहिबकै दरन्यावहै, जे कुछ राम रजाय १४९

आत्माअर्थी ।

सोई जन साधू सिधसो, सोई सतवादी सूर
सोई मुनियर दादू बडे, सनमुख रहण हजूर १५०
दादू सोई जन साच सो सती, सोई साधिक सूजांण
सोई ज्ञानी सोई पंडिता, जे रते भगवान १५१
दादू सोई जोगी सोई जंगमां, सोई सोफी सोई सेख
सोई संन्यासी से वडे, दादू एक अलेख १५२
दादू सोई काजी सोई मुलां, सोई मोमिन मुसलमान
सोई सयानैं सब भले, जे रते रहिमान १५३

दादू राम नामकों बणिजण बैठे, ताथैं मांड्या हाट
सांईसों सोदा करैं, दादू खोलि कपाट १५५

सज्जनदुर्ज० ।

विचि के सिरि खाली करैं, पूरे सुख संतोष
दादू सुध बुध आतमा, ताहि न दीजै दोष १५६
सुध बुध सो सुख पाइए, के साध विवेकी होय
दादू ए विचि के बुरे, दाधेरींगे सोय १५७
दादू जिनि कोई हरि नाममैं, हमको हानां बाहि
ताथैं तुम्हथैं डरतहूं, क्यूं ही टलै बलाय १५८

परमार्थी० ।

जे हम छाडे रामकों, तौ कोन गहैगा
दादू हम नहीं ऊचरै, तो कोन कहैगा १५९

कामीनर० ।

एक राम छाडै नहीं, छाडैं सकल विकार
दूजा सहजैं होइ सब, दादू का मत सार १६०
जे तूं चाहै रामकों, तो एक मना आराध
दादू दूजा दूरि करि, मन इंद्रिय करि साध १६१

बिरक्तता० ।

कबीर बिचारा कहि गया, बहुत भांति समझाय
दादू दुनयां बावरी, ताके संग न जाय १६२

सूक्षिममार्ग० ।

पांवहिगे उस ठौरकों, लंघैगे यहु घाट
दादू क्या कहि बोलिये, अजहूं बिचिहीं बाट १६३

साच० ।

साचा राता साचसों, झूठा राता झूठ

दादू न्याव निबेरिये, सब साधकूंपूछ १६४

सज्जन दुर्जन०।

दादू जे पहुंचे ते कहिगए, तिनकी एकै बात
सबै सयानें एकमत, उनकी एकै जात १६५

दादू जे पहुंचेते पूछिए, तिनकी एकै बात
सब साधूका एकमत, ए बिच के बारह बाट १६६

सबै सयाने कहिगए, पहुंचेका घर एक
दादू मार्ग माहिके, तिनकी वात अनेक १६७

सूरज साक्षी भूतहै, साच करै परकाम
चोर डरै चोरी करै, रैंणि तिमिर का नाम १६८

चोर न भावै चांदणां, जिनि उजियारा होय
सूतेका सब धनहरों, मुझै न देखै कोय १६९

संस्कार अङ्ग०।

घट घट दादू कहि समझावै, जैसा करै सु तैसा पावै

इति अङ्ग १३ साषी १४५४ ॥

॥ अथ भेषको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १

पतिव्रत्त निहकाम०।

दादू बूडे ज्ञान सब, चतुराई जालिजाय
अंजन मंजन फूंकिदे, रहो राम ल्योलाय २

इन्द्रियाऽर्थी भेष०।

ज्ञानी पंडित बहुत्त है, दाता सूर अनेक

दादू भेष अनंत हैं, लागि रह्या सो एक ३

पतिव्रतं निष्काम० ।

राम बिना सब फीके लागै, करणी कथा गियांन
सकल अबिरथा कोटि करि, दादू योग धियान ४

इंद्रियार्थी भेष० ।

कोग कलस अवाहका, ऊपर चित्र अनेक
क्या कीजे दादू बस्तु बिन, ऐसे नानां भेष ५
बाहरि दादू भेषबिन, भीतरि बस्तु अगाध
सो ले हिरदै राखिये, दादू सनमुख साधु ६
दादू भांडा भरि धरि बस्तुसौं ज्यूं महिंगे मोल बिकाय
खाली भांडा बस्तुबिन, कोडी बदलै जाय ७
दादू कनक कलस बिषसौं भरया, सो किस आवै काम
सोधन कूटा चामका, जामैं अमृत राम ८
दादू देखै बस्तुकौं, बासण देखै नांहि
दादू भीतर भरि धरया, सो मेरे मन मांहि ९
दादू जे तूं समकै तौ कहौं, साचा एक अलेख
डाल पान तजि मूलगहि, क्या दिखलावै भेष १०
दादू सब दिखलावै आपकौं, नानां भेष बनाय
जहां आपा मेटण हरि भजन, तिहिं दिस कोई न जाय ११
दादू भेष बहुत संसारमैं ,हरिजन बिरला कोय
हरिजन राता रामसौं, दादू एकै होय १२
हीरे रीझै जौहरी, खलरीकै संसार
स्वांगि साधु यहु अंतरा, दादू सत्य बिचार १३
स्वांगि साधु बहु अंतरा, जेता धरणि अकास

साधू राता रामसौं, त्यागि जगत की आस १४

दादू स्वांगी सब संसार है, साधू विरला कोय
जैसैं चंदन बावना, बन बन कहीं न होय १५

दादू स्वांगी सब संसार है, साधू कोई एक
हीरा दूर दिसंतरां, कंकर ओर अनेक १६

दादू स्वांगी सब संसार है, साधू सोधि सुजाण
पारस परदे सूं भया, दादू बहुत पखाण १७

दादू स्वांगी सब संसार है, साधु समंदपार
अनल पक्षि कहां पाइए, पक्षी कोटि हजार १८

दादू चंदन बन नहीं, सूरनके दल नांहि
सकल समंद हीरा नहीं, त्यूं साधू जगमांहि १९

जे सांई का ह्वैरहै, तौ सांई तिसका होय
दादू दूजी बात सब, भेष न पावै कोय २०

दादू स्वांग सगाई कुछ नहीं, राम सगाई साच
दादू नाता नामका, दूजै अंग न राच २१

दादू एकै आत्मां, साहिबहै सब मांहि
साहिबके नातै मिलै, भेष पंथकै नांहि २२

दादू माला तिलक सौं कुछ नहीं, काहू सेती काम
अंतर मेरै एकहै, अहनिस उसका नाम २३

। अमिटपापप्रचंड० ।

भक्त भेष धरि मिथ्या बोलै, निंदा पर उपवाद
साचेकों झूठा कहैं, लागै बहु अपराध २४

दादू कबहूं कोई जिनि मिलै, भक्त भेषसौं जाइ
जीव जनमका नासहै, कहै अमृत बिषखाय २५

चितरपटी० ।

दादू पहूंचे पूतबटाउ ह्वैकरि, नट ज्यूं काछ्या भेष
खबरि न पाई खोजकी, हमकूं मिल्या अलेख २६
दाद माया कारण मूंड मुडायां, यहु तो जोग न होई
पारब्रह्म सों प्रचा नांहीं, कपट न सीझे कोई २७

आनलगनि बिभचार० ।

पीव न पावै बावरी, रचि रचि करै सिंगार
दादू फिरि फिरि जगतसों, करैगी बिभचार २८
प्रेम प्रीति सनेह बिन, सब झूठ सिंगार
दाद आत्म रत नहीं, क्यूं मानै भर्तार २९
दादू जग दिखलावै बावरी, खोड़स करै सिंगार
तहां न संवारै आपकूं, जहां भीतर भरतार ३०

इंद्रियाऽर्थीभेष० ।

सुध बुध जीव धिजाइकरि, माला संकल बाहि
दादू माया ज्ञानसूं, स्वामी बैठा खाय ३१
जोगी जंगम सेवड, बोध संन्यासी सेख
खट दर्सन दादू रामबिन, सबै कपटके भेष ३२
दादू सेख मसाइक अवलिया, पैकंबर सब पीर
दर्सन सों परसन नहीं, अजहूं बेली तीर ३३
दादू नानां भेष बनाइकरि, आपा देखि दिखाय
दादू दूजा दूरिकरि, साहिब सों ल्योलाय ३४
दादू देखा देखी लोक सब, केते आवैं जांहि
राम सनेहीं ना मिलै, जे निज देखै मांहि ३५
दादू सब देखै अस्थूलकूं, यहु ऐसा आकार

सूक्ष्म सहज न सूझई, निराकार निरधार ३६

षा रिषडपारष० ।

दादू बाहरिका सब देखिये, भीतर लख्या न जाय
बाहरि दिखावा लोकका, भीतर राम दिखाय ३७

दादू यहु परख सराफी ऊपिली, भीतरकी यहु नांहि
अतरकी जाणै नहीं, तायैं खोटा खांहि ३८

दादू झूठा राता झूठसूं, साचा राता साच
राता अंध नई, कहां कचन कहां काच ३९

इंद्रियाऽर्थीभेष० ।

दादू सचुबिन सांई ना मिलै, भावै भेष बणाय
भावै करवत उरध मुख, भावै तीर्थ जाय ४०

दादू साचा हरिका नाम है, सो लै हिरदै राखि
पाखंड परपंच दूरकरि, सब साधूंकी साखि ४१

आत्मनिर्द्वैत० ।

हिरदैकी हरि लेइगा, अंतरजामी राय
साच पियारा रामकौं, कोटिक करि दिखलाय ४२

दादू मुखकी ना गहै, हिरदैकी हरिलेय
अंतर सूधा एकसू, तौ बोल्या दोस न देय ४३

इंद्रियाऽर्थीभेष० ।

सब चतुराई देखिये, जे कुछ कीजै आन
मन गहि राखै एकसूं, दादू साधु सुजान ४४

आत्मांऽर्थीभेष० ।

सबद सुई सुर्ति धागा, काया कंथा लाय
दादू योगी युग युग पहरै, कबहूं फाटि न जाय ४५

ज्ञान गुरुका गूदडी, सब्द गुरूका भेष
अतीत हमारी आत्मां, दादू पंथ अलेख ४६
इसक अजब अबदालहै, दरद वंद दरवेस
दादू सिका सबुरहै, अकल पीर उपदेश

इति अंग १४ ॥ साषी १५०२ ॥

॥ अथ साधुको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १

साधु महिमां महात्म० ।

दादू निराकार मन सुर्तिसूं, प्रेम प्रीति सूं सेव
जे पूजै आकारकूं, तौ साधू प्रत्यक्ष देव २
दादू भोजन दीजै देहकूं, लीया मन बिश्राम
साधूके मुषमेंह्लिये, पाया आत्म राम ३
ज्यूं यहु काया जीवकी, त्यूं सांईके साधु
दादू सब संतोखिये, माहैं आप अगाध ४

सतसंगमहिमां महात्म० ।

साधू जन संसारमैं, भवजल बोहिथ अंग
दादू केते उद्धरे, जेते बैठे संग ५
साधू जन संसारमैं, सीतल चंदन बास
दादू केते उद्धरे, जे आये उन पास ६
साधू जन संसारमैं, हीरे जैसा होय
दादू केते ऊधरे, संगति आये सोय ७

साधू जन संसारमैं, पारस प्रगट गाय
दादू केते उद्धरे, जेते परसे आय ८
रूष बृक्ष बनराइ सब, चंदन पासैं होय
दादू बास लगाइ करि, कीये सुगंधे सोय ९
जहा अरंड अरु आक थे, तहां चंदन ऊगा मांहि
दादू चंदन करिलीये, आक कहै को नांहि १०
साधू नदी जल रामरस, तहां पखालै अंग
दादू निर्मल मल गया, साधू जनके संग ११

परमार्थी० ।

साधू बरखै रामरस, अमृत बाणी आय
दादू दर्सन देखतां, तृबिधि ताप तन जाय १२

साधु संग महिमां महात्म० ।

संसार विचारा जात है, बहिया लहरि तरंग
भेरै बैठा ऊबरै, सत साधू के संग १३
दादू नेडा परमपद, साधु संगति मांहि
दादू सहजैं पाइए, कहूं निर्फल नांहि १४
दादू नेडा परमपद, करि साधू का संग
दादू सहजैं पाइए, तन मन लागै रंग १५
दादू नेडा परमपद, साधू संगति होय
दादू सहजैं पाइए, स्यावति सनमुख सोय १६
दादू नेडा परमपद, साधू जन के साथ
दादू सहजैं पाइए, परम पदार्थ हाथ १७
साधु मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरिका भाव
दादू संगति साधु की, जब हरि करै पसाव १८

साधु मिलै तब ऊपजै, हिरदै हरिका हेत
दादू संगति साधकी, कृपा करै तब देत १९
साधु मिलै तब ऊपजै, प्रेम भक्ति रुचि होय
दादू संगति साधुकी, दयाकरि देवै सोय २०
साधु मिले तब ऊपजै, हिरदै हरिकी प्यास
दादू संगति साधुकी, अविगति पुरवै आस २१
साधु मिले तब हरि मिले, सब सुख आनंद मूर
दादू संगति साधुकी, राम रह्या भरपूर २२

चौपचरचा० ।

परम कथा उस एककी, दूजा नाही आन
दादू तन मन लाइकरि, सदा सुर्ति रसपान २३

साधु स्परस वीनती ।

प्रेम कथा हरिकी कहै, करै भक्ति ल्योलाय
पीवै पिलावै रामरस, सो जन मिलवो आय २४
दादू पीवै पिलावै रामरस, प्रेम भक्ति गुणगाय
नितप्रति कथा हरिकी करैं, हेत सहित ल्योलाय २५
आन कथा संसार की, हमहि सुनावै आय
तिसका मुख दादू कहै, दई न दिखाई ताहि २६

साधु स्परस वीनती ।

दादू मुख दिखलाई साधुका, जे तुम्हहीं मिलवै आइ
तुम्ह मांही अंतर करै, दई न दिखाई ताहि २७
जब दरवो तब दीजिए, तुम्हपै मांगों एहु
दिन प्रति दर्सन साधुका, प्रेम भक्ति दिढ देहु २८
साधुसपीडा मन करै, सतगुरु सब्द सुणाय

मीरा मेरा मिहरकरि, अंतर विरहनु पाय २९

सजन० ।

ज्यूं ज्यूं होवै त्यूं कहै, घटि बधि कहै न जाइ
दादू सो सुध आत्मां, साधू परसै आय ३०

सतसंगमहिमा महातम० ।

साहिब सौं सनमुख रहै, सतसंगति मैं आय
दादू साधू सब कहैं, सो निर्फल क्यूं जाय ३१
ब्रह्मगायात्रिय लोकमैं, साधू अस्थन पान
सुख मार्ग अमृत झरै, कत ढूंढै दादू आन ३२
दादू पाया प्रेमरस, साधू संगति मांहि
फिरि फिरि देखै लोक सब, यहु रस कतहू नांहि ३३
दादू जिस रसकौं मुनियर मरै, सुर नर करैं कलाप
सो रस सहजैं पाइए, साधू संगति आप ३४
संगति विन सीझै नहीं, कोटि करै जे कोय
दादू सतगुरु साधुबिन, कबहू सुद्ध न होय ३५
दादू नेडा दूरथैं, अबिगत का आराध
मनसा बाचा कर्मनां, दादू संगति साधु ३६
स्वर्ग न सीतल होइ मन, चंदन चंदन पास
सीतल संगति साधुकी, कीजै दादू दास ३७
दादू सीतल जल नहीं, हेम न सीतल होय
दादू सीतल संत जन, राम सनेहीं सोय ३८

साधु बेपरवाही० ।

दादू चंदन कदि कह्या, अपनां प्रेम प्रकास
दह दिस प्रगट ह्वैरह्या, सीतल गंध सुवास ३९

दादू पारस कदि कह्या, मुझथी कंचन होय
पारस प्रगट ह्वैरह्या, साच कहै सब कोय ४०

नर विम रूप० ।

तन नहीं भूला मन नहीं भूला, पंच न भूला प्राण
साध सब्द क्यूं भूलिये, रे मन मूढ अजाण ४१

साधु महिमा महात्म० ।

रतन पदार्थ माणिक मोती, हीरों का दरिया
चिंतामणि चित रामधन, घट अमृत भरिया
समर्थ सूरा साधुमो, मन मस्तक धरिया
दादू दर्सन देखतां, सब कारज सरिया ४२
धरती अंबर रातिदिन, रवि ससि नावै सीस
दादू बलि बलि वारणैं, जे स्मरैं जगदीस ४३
चंद सूर सिजदा करैं, नाम अलहका लेय
दादू जमी असमान सब, उनपांऊं सिरदेय ४४
जे जन राते रामसूं, तिनकी मैं बलिजांऊ
दादू उन परिवारणै, जे लागिरहे हरिनाम ४५

साधु पारिपलक्षन

जे जन हरीके रंग रंगे, सो रंग कदे न जाय
सदा सुरंगे संतजन, रंगमैं रहै समाय ४६
दादू राता रामका, अविनासी रंग मांहि
सब जग धोबी धो मरै, तो भी खूटै नांहि ४७
साहिब कीयासु क्यूं मिटै, सुंदर सोभा रंग
दादू धोवहि बावरे, दिन दिन होइ सुरंग ४८

साधु परमार्थं० ।

परमार्थ कौं सब कीया, आप स्वार्थ नांहि
परमेश्वर परमार्थी, कै साधु कलि मांहि ४९
पर उपकारी संत सब, आए इहि कलि मांहि
पीवै पिलावै रामरस, आप स्वार्थ नांहि ५०
पर उपकारी संतजन, साहिब जी तेरे
जाती देखी आतमा, राम कहि टेर ५१
चंदसूर पावक पवन, पाणीका मत सार
धरती अंबर राति दिन, तरवर फलैं अपार
छाजन भोजन परमार्थी, आत्म देव अधार
साधू सेवक रामके, दादू पर उपकार ५२

साधसाक्षीभूत० ।

जिसका तिसकूं दीजिये, सुकृत पर उपकार
दादू सेवक सो भला, सिर नहीं लेवै भार ५३
परमार्थ कूं राखिये, कीजै पर उपकार
दादू सेवक सो भला, निरंजन निरकार ५४
सेवा सुकृत सब गया, मैं मेरा मन मांहि
दादू आपा जब लगै, साहिब मानैं नांहि ५५

साधपारिष लक्षन० ।

साध सिरोमनि सोधिले, नदी पूरपरि आय
सजीवन सामां चढै, दूजा बहिया जाय ५६

सज्जन दुर्जन० ।

जिसके मस्तक मणिबसै, सो सकल सिरोमणि अंग
जिसके मस्तक मणि नहीं, ते बिष भरे भवंग ५७

साधुमहिमा महत्म० ।

दादू इस संसारमैं, एद्वै रतन अमोल
इक सांई अरु संत जन, इनका मोल न तोल ५८
दादू इस संसारमैं, एद्वै रहे लुकाय
रामसनेही साधु जन, और बहुतेरा आहि ५९

साधुपारष लक्षन० ।

जिसके हिरदै हरि बसै, सदा निरंतर नाम
दादू साचे साधुकी, मैं बलिहारी जाम ६०
साचा साधु दयालु घट, साहिबका प्यारा
राता माता रामरस, सो प्राण हमारा ६१

सज्जन विपरीति० ।

दादू फिरता चाक कुंभारका, यो दीसै संसार
साधु जन निहचल भये, जिनके राम अधार ६२

सतसंगमहिमा महात्म० ।

जलती बलती आतमा, साधु सरोवर जाय
पीवै पिलावै रामरस, सुखमैं रहै समाय ६३

कृतमकर्ता० ।

कांजी मांहैं भेलिकरि, पीवै सब संसार
करता केवल निर्मला, को साधु पीवण हार ६४

संगतिकुसंगति० ।

दादू असाधु मिलै अंतरपडै, भाव भक्ति रसजाय
साधु मिलै सुख ऊपजै, आनंद अंग न माय ६५
दादू साधु संगति पाइए, राम अमीफल होय
संसारी संगति पाइये, विष फल देवै सोय ६६

दादू सभा संतकी, सुमति ऊपजै आय
साकत की सभा बैसतां, ज्ञान कायाथैं जाय ६७

जगजन विपरीत० ।

दादू सब जगदीसै एकला, सेवक स्वामी दोय
जगत दुहागी रामबिन, साधु सुहागी सोय ६८
दादू साधु जन सुखिया भए, दुनियां कों बहु दंद
दुनी दुखी हम देखतां, साधुन सदा अनंद ६९
दादू देखत हम सुखी, सांईके संग लागि
योंसा सुखिया होयगा, जाके पूरे भाग ७०

रसअंग० ।

दादू मीठा पीवै रामरस, सोभी मीठा होय
सहजैं कडवा मिटिगया, दादू त्रिबिष सोय ७१

साधुपारिख लक्षन० ।

दादू अंतर एक अनंतसों, सदा निरंतर प्रीति
जिहि प्रांणी प्रीतम बसै, सो बैठा त्रिभवन जीति ७२

साधुमहिमां-महात्म० ।

दादू मैं दासी तिहिं दासकी, जिहि संग खेलै पीव
बहुत भांति करि वारणैं, तापरि दीजै जीव ७३

भ्रमविधूंसण० ।

दादू लीला राजा राम की, खेलैं सबही संत
आपा पर एकै भया, छूटी सबै भिरंत ७४

जगजन विपरीत० ।

दादू आंनद सदा अडोलसूं, राम सनेही साधु
प्रेमी प्रीतम कों मिलै, यहु सुख अगम अगाध ७५

पुरुषप्रकीसीक० ।

यहु घट दीपक साधु का, ब्रह्म जोति प्रकास
दादू पक्षी संतजन, तहां परै निज दास ७६
घरबन मांहैं राखिये, दीपक जोति जगाय
दादू प्राण पतंग सब, जहां दीपक तहां जाय ७७
घरबन मांहैं राखिये, दीपक जलता होय
दादू प्राण पतंग सब, जाइ मिले सब कोय ७८
घर बन मांहैं राखिये, दीपक प्रगट प्रकास
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिले उसपास ७९
घरबन मांहैं राखिये, दीपक जोति सहेत
दादू प्राण पतंग सब, आइ मिले उस हेत ८०
जिहिं घट प्रगट राम है, सो घट तज्या न जाय
नैनौं मांहैं राखिये, दादू आप नसाय ८१

साधु अविहड़० ।

दादू कबहू न विहडै सो भला, साधू दिढमत होय
दादू हीरा एकरस, बांधि गाठडी सोय ८२

साध पारिपलक्षन० ।

गरथ न बांधै गांठडी, नहीं नारी सो नेह
मन इंद्रिय अस्थिर करै, छाडि सकल गुण देह ८३
निराकार सौं मिलिरहै, अषंड भक्ति करि लेह
दादू क्यूं करि पाइए, उन चरनोंकी खेह ८४
साधु सदा संजम रहै, मैला कदे न होय
दादू पंक परसै नहीं, कर्म न लागे कोय ८५
साधू सदा संजम रहै, मैला कदे न होय

सुन्य सरोवर हंसला, दादू बिरला कोय ८६
साहिब का उणहार सब, सेवक मांहैं होय
दादू सेवक साधसों, दूजा नांही कोय ८७
जबलग नैंन न देखिये, साधु कहैते अंग
तबलग क्यूं करि मानिये, साहिब का प्रसंग ८८
दादू सोई जन साधु सिध सों, सोई सकल सिर मोर
जिंहिं के हिरदै हर बसै, दूजा नांही और ८९
दादू औगुण तजे गुणगहै, सोइ सिरोमणि साधु
गुण औगुण थैं रहित है, सो निज ब्रह्म अगाध ९०

जगत विपरीति० ।

दादू सिंधव फटक पषांण का, ऊपरि एकै रंग
पाणी मांहैं देखियें, न्यारा न्यारा अंग ९१
दादू सींधव के काया नहीं, नीर खीर प्रसंग
आपा फटक पषांण कै, मिलै न जलकै संग ९२
दादू सबजग फटक पषांण है, साधु सींधव होय
सींधव एकै होइ रह्या, पांणी पथर होय ९३

साधपरमार्थी० ।

साधु जन उस देसका, आया इंहि संसार
दादू उसको पूछिये, प्रीतम के समाचार ९४
समाचार सत्य पीवके, कोइ साधु कहैगा आइ
दादू सीतल आतमा, सुख मैं रहै समाय ९५
दादू दत दरबार का, कों साधू बांटै आय
तहां रामरस पाइए, जहां साधु तहां जाय ९६
साधु सब्द सुख बरषिहैं, सीतल होइ सरीर

दादू अंतर आत्मा, पीवै हरि जल नीर ९७

चोंपचारणा० ।

दादू सुरता सनेही रामका, सो मुझ मिलवो आंणि
तिसआगैं हरि गुण कथौं, सुणत न करई काणि ९८

साधु परमार्थी० ।

दादू सबही मृतक समान हैं, जीया तबही जाणि
दादू छांटा अमीका, को साधु बाहै आणि ९९
दादू सबही मृतक ह्वैरहे, जीवै कौण उपाइ
दादू अमृत रामरस, को साधु सींचैं आय १००
सबही मृतक मांहि हैं, क्यूं करि जीवैं सोय
दादू साधू प्रेमरस, आणि पिलावै कोइ १०१
सबही मृतक देखिये, किहिं विधि जीवैं जीव
साधू सुधारस आणिकरि, दादू बरषै पीव १०२
हरिजल बरखैं बाहिरा, सूकै काया खेत
दादू हरिया होयगा, सींचण हार सुचेत १०३

कुसंगतिका० ।

दादू राम न छाडिए, गहिला तजि संसार
साधू संगति सोधिले, कुसंगति संग निवार १०४
गंगा यमुनां सरस्वती, मिलैं जब सागर मांहि
खारा पाणी ह्वैगया, दादू मीठा नांहि १०५
दादू कुसंगति सब परहरी, मात पिता कुल कोय
सज्जन सनेही बंधवा, भावै आपा होय १०६
अज्ञान मूर्ख हितोकारी, सज्जनो समोरिपः
ज्ञात्वा तजंतिते, निरामई मनोजितः १०७

कुसंगति केते गए, तिनका नाम न ठाम
दादू ते क्यूं ऊधरैं, साधु नहीं जिस गाम १०८
भाव भक्तिका भंग करि, बटपारे मारहिं बाट
दादू द्वारा मुक्तिका, खोले जडै कपाट १०९

सतसंग महिमां महात्म० ।

साधु संगति अंतर पडै, तौ भाजैगा किसठौर
प्रेम भक्ति भावै नहीं, यहु मनका मत और ११०
दादू राम मिलण के कारणैं, जे तूं खरा उदास
साधू संगति सोधिले, राम उनहुं के पास १११

पुरुष प्रकासी० ।

ब्रह्मा संकर सेस मुनि, नारद ध्रू सुखदेव
सकल साधु दादू सही, जे लागे हरिसेव ११२
साधु कमल हरि बासनां, संत भवर संगआय
दादू परमल ले चले, मिले रामकों जाय ११३

साधुगज्जन० ।

दादू सहजैं मेला होइगा, हम तुम हरि के दास
अंतर गति तौ मिलिरहे, पुनि प्रगट प्रकास ११४

साधु महिमां महात्म० ।

दादू मम सिर मोटे भाग, साधुका दर्शन किया
कहाकरै जम काल, राम रसांइण भरि पिया ११

साधु समर्थता ।

दादू एता अबिगत आपथैं, साधूका अधिकार
चौरासी लष जीवका, तन मन फेरि संवार ११५
बिषका अमृत करिलीया, पावक कापाणी

बांका सूधा करिलीया, सो साधु बिनाणी ११६

दादू कुरा पूरा करिलीया, खारा मीठा होय

फूटा सारा करिलीया, साधु बिवेकी सोय ११७

बंध्या मुक्ता करिलीया, उरझ्या सुरझि समान

बैरी मींता करिलीया, दादू उत्तम ज्ञान ११८

झूठा साचा करिलीया, काचा कंचन सार

मैला निर्मल करिलीया, दादू ज्ञान बिचार ११९

अमिट पापप्रचंड० ।

काया कर्म लगाइ करि, तीर्थ धोवै आय

तीर्थ माहै कीजिये, सो कैसैं करिजाय १२०

दादू जहां तिरिये तहां डूबिये, मन मै मैला होय

जहां छूटै तहां बंधिये, कपट न सीझै कोय ११३

सतसंग महिमां महात्म० ।

दादू जबलग जीविये, स्मरण संगति साध

दादू साधू राम बिन, दूजा सब अपराध १२०

इति साधुको अंग संपूर्ण १५ ॥ साषी १६२५ ॥

॥ अथ मध्यको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजन, नमस्कार गुरुदेवत:

बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १

मध्यनियष० ।

दादू द्वैपक्ष रहिता सहज सो, सुख दुख एक समान

मरै न जीवै सहज सो, पूरा पद निर्वांन २

सुष दुख मन मानै नही, राम रंगराता
दादू दून्यूं छाडिसब, प्रेमरस माता ३
मति मोटी उस सधुकी, द्वैपक्ष रहित समान
दादू आपा मेटिकरि, सेवा करै सुजान ४
कछु न कहावै आपकों, काहूं संग न जाय
दादू निर्पक्ष ह्वैरहै, साहिब सों ल्योलाय ५
सुख दुख मन मांनैं नहीं, आपा परसम भाय
सो मन मन करि सेविए, सब-पूर्ण ल्योलाय ६
नां हम छाडै नां गहै, ऐसा ज्ञान बिचार
मध्य भाइ सेवै सदा, दादू मुक्ति द्वार ७
दादू आपा मेटैं मृतका, आपा धरे अकाम
दादू जहां जहां ह्वै नहीं, मध्य निरंत बास ८
दादू इस आकारथैं, दूजा सूक्ष्म लोक
ताथैं आगै ओर है, तहुंवा दुख न सोक ९
दादू हद छाडि बेहदमै, निर्भय त्रिपक्ष होय
लागिरहै उस एकसों, जहां न दूजा कोय १०
निराधार घर कीजिए, जहां नांही धरणि अकास
दादू निहचल मन रहै, निर्गुणके बेसास ११
अधर चाल कबीरकी, आसंघी नही जाय
दादू डाकै मृगज्यूं, उलटि पडै भुवि आय १२
दादू ए रहणि कबीरकी, कठिन बिखम यहु चाल
अधर एकसूं मिलिरह्या, जहां न झंपै काल १३
निरधार निज भक्ति करि, निराधार निज सार
निराधार निज नांमले, निराधार निकार

निराधार निज रामरस, को साधू पीवण हार
निराधार निर्मल रहै, दादू ज्ञान बिचार १४
जब निराधार मन रहिगया, आत्माके आनंद
दादू पीवै रामरस, भेटे परमानंद १५

मायां० ।

दुहबिचि राम अकेला आये, आंवण जांण देइ
जहां के तहां सब राखे, दादू पार पहूंते सेइ १६

मध्यानिर्पख० ।

चलु दादू तहां जाइए, मरै न जीवै कोइ
आवा गमन भयको नहीं, सदा एक रस होय १७
चलु दादू तहां जाइए, जहां चंद सूर नही जाइ
राति दिवसका गम नहीं, सहजैं रह्या समाय १८
चलु दादू तहां जाइए, माया मोह थैं दूर
सुख दुख को व्यापै नहीं, अविनासी घर पूर १९
चलु दादू तहां जाइये, जहां जम जोराको नांहि
काल मीच लागै नहीं, मिलि रहिए ता मांहि २०
एक देस हम देखिया तहां रुति, नहीं पलटै कोय
हम दादू उस देसके, जहां सदा एक रस होय २१
एक देस हम देखिया, जहां बस्ती ऊजड़ नांहि
हम दादू उस देसके, सहज रूप ता मांहि २२
एक देस हम देखिया, नहीं नेडै नहीं दूर
हम दादू उस देसके, रहे निरंतर पूर २३
एक देस हम देखिया, जहां निस दिन नांहीं घाम
हम दादू उस देसके, जहां निकटि निरंजन राम २४

बारह मासी नीपजै, तहां कीया प्रवेस
दादू सूका नां पडै, हम आए उस देस २५
जहां बेद कुरानका गम नहीं, तहां कीया प्रवेस
जहां कुछ अचिरज देखिया यहु कुछ औरै देस २६
काहे दादू घररहै, काहे बनखंड जाय
घर बन रहिता रामहै, ताही सों ल्योंलाय २७
दादू जिन प्राणी करि जाणियां, घर बन एक समान
घर मांहै बन ज्यूं रहै, सोई साधु सुजाण २८
दादू सब जग मांहैं एकला, देह निरंतर बास
दादू कारण रामके, घर बन मांहि उदास २९
घर बन मांहैं सुख नहीं, सुखहै सांई पास
दादू तासूं मन मिल्या, इनतैं भया उदास ३०
बैरागी बनमैं बसैं, घरबारी घर मांहि
राम निराला रहिगया, दादू इनमैं नांहि ३१

स्म० नामत्रिसंस० ।

दादू जीवण मरणका, मुझ पछितावा नांहि
मुझ पछितावा पीवका, रह्यां न नैंनहु मांहि ३२
स्वर्ग नरक संसै नहीं, जीवण मरण भय नांहि
राम बिमुख जे दिन गए, सो सालै मन मांहि ३३
स्वर्ग नरक सुख दुख तजे, जीवण मरण नसाय
दादू लोभी रामका, को आवै को जाय ३४

मध्यत्रिपक्ष० ।

दादू हिंदू तुरक न होइबा, साहिब सेती काम
षट दर्सनकै संग न जाइबा, त्रिपक्ष कहिबा राम ३५

षट दर्सन दून्यूं नही, निरालंब निजबाट
दादू एकै आसिरै, लंघै औघट घाट ३६
दादू नां हम हिंदू हूंहिगे, नां हम मुसलमान
खट दर्सनमैं हम नहीं, हम रत्ते रहिमान ३७
दादू अलह रामका, द्वैपक्ष थैं न्यारा
रहिता गुण आकारका, सो गुरू हमारा ३८

उभअममाव० ।

दादू मेरा तेरा बावरे, मै तैं की तजि बाणि
जिनि यहु सब कुछ सिरजिया, करिताहि का जाणि ३९

मध्य० ।

दादू करणी हिंदू तुरक की, अपणी अपणी ठौर
दुहि बिचि मारग साधुका, यहु संतौं की रहि और ४०
दादू हिंदू तुरकका, द्वैपक्ष पंथ निवारि
संगति साचे साधुकी, सांईं कौं संभारि ४१
दादू हिंदू लागे देहुरै, मुसलमान मसीति
हम लागे एक अलेखसूं, सदा निरंतर प्रीति ४२
न तहां हिंदू देहुरा, न तहां तुरक मसीति
दादू आपै आपहै, नहीं तहां रहि रीति ४३
दून्यूं हाथी ह्वैरहे, मिलि रस पीया न जाइ
दादू आपा मेटिकरि दून्यूं रहें समाय ४४
भय भीत भयानक ह्वैरहे, देख्या त्रिपक्ष अंग
दादू एकै ले रह्या, दूजा चढै न रंग ४५
जाणैं बूझै साचहै, सबको देखण धाय
चाल नहीं संसार की, दादू गह्या न जाय ४६

दादू पक्ष काहू के ना मिलै, त्रिपक्ष निर्मल नाम,
सांई सों सनमुख सदा, मुक्ता सबही ठाम ४७
दादू द्वैपक्ष दूरि करि, त्रिपक्ष निर्मल नाम,
आपा मेटै हरिभजै, ता की मैं बलि जाम ४८
दादू जबथैं हम त्रिपक्ष भए सबै रिसाने लोक,
सतगुरुके प्रसादथैं, मेरे हरष न सोक ४९
त्रिपक्ष ह्वैकरि पक्ष गहै, नरक पडैगा सोय
हम निरपक्ष लागे नामसूं, करता करै सु होय ५०

हरिभरोस० ।

दादू पक्ष काहूंकै ना मिलै, निह कामी त्रिपक्ष साधु
एक भरोसै रामकै, खेलै खेल अगाध ५१
दादू प्रक्षा पक्षी संसार सब, त्रिपक्ष बिरला कोय,
सोई त्रिपक्ष होइगा, जाकै नाम निरंजन होय ५२
अपणैं अपणैं पंथकी, सब को कहै बढाय
ताथैं दादू एकसूं, अंतर गति ल्यौ लाय ५३

सजीवनि० ।

दादू तजि संसार सब, रहै निराला होय
अबिनासी के आसिरै, काल न लागै कोय ५४

मछर ईरषा० ।

कलिजुग कूकर कलिमुहां, उठि उठि लागै धाय
दादू क्यूं करि छूटिये, कलिजुग बडी बलाय ५५

निंदा० ।

काला मुह संसार का, नीले कीये पाव
दादू तीन तलाकदे, भावै तो घर जाव ५६

दादू भाव हीण जे पृथमी, दया बिहूंणां देस
भक्ति नहीं भगवंत की, तहां कैसा प्रवेस ५७
जे बोलै तौ छुप कहै, चुप तौ कहै पुकार
दादू क्यूं करि छूटिए, अैसा है संसार ५८

म० ।

पंथि चलै ते प्राणिगां, तेता कुल व्योहार
त्रिपक्ष साधू सो सही, जिनकै एक अधार ५९
दादू पंथौं परिगए, बपुरे बारह बाट
इनके संगि न जाईए, उल्टा अविगत घाट ६०

आत्म विश्रांम० ।

दादू जागे कूं आया कहै, सूते कूं कहै जाइ
आवण जाणां झूठहै, जहांका तहां समाय ६१

इति अङ्ग १६ ॥ साषी १६८४ ॥

॥ अथ सारग्राहीको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः
वंदनं सर्व साधवा, प्रणांमं पारंगत १
दादू साधू गुणगहैं, औगुण तजै विकार
मांनसरोवर हंमज्यूं, छाडि नीर गहि सार २
हंस गियानी सो भला, अंतर राखै एक
बिषमै अमृत काढिले, दादू बडा बिवेक ३
पहिली न्यारा मनकरै, पीछैं सहजि सरीर
दादू हंस बिचारसूं, न्यारा कीया नीर ४

आपै आप प्रकासिया, निर्मल ज्ञान अनंत
खीर नीर न्यारा कीया, दादू भजि भगवंत ५
खीर नीरका संत जन, न्याव नवेरै आय
दादू साधू हंस बिन, भेलम भेलै जाय ६
दादू मन हंसा मोती चुणैं, कंकर दीया डारि
सतगुरु कहि समझाय, पाया भेद विचार ७
दादू हंस मोती चुगै, मानसरोवर जाय
बगुला छीलीरि बापुडा, चुणि चुणि मछली खाय ८
दादू हंस मोती चुगे, मानसरोवर न्हाइ
फिरि फिरि बैसैं बापुडा, काग करंका आय ९
दादू हंस परखियें, उतम करणी चाल
बगुला बैसैं ध्यान धरि, प्रतक्ष कहिये काल १०
उज्जल करणी हंसहै, मैली करणी काग
मध्यम करणी छाडि सब, दादू उत्तम भाग ११
दादू निर्मल करणी साधुकी, मैली सब संसार
मैली मध्यम ह्वैगए, निर्मल सिरजन हार १२
दादू करणीं ऊपरि जातिहै, दूजा सोचि निवारि
मैली मध्यम ह्वैगए, ऊज्जल ऊंच विचार १३
ऊज्जल करणी रामहै, दादू दूजा धंध
क्या कहिये समझै नहीं, चारू लोचन अंध १४
गऊ बछका ज्ञान गहि, दूध रहै ल्योलाय
सींग पूछ पग परहरै, अस्थन लागै धाय १५
दादू कांम गाइके दूधसूं, हाड चामसौं नांहि
इहिं बिध अमृत पीजियें, साधूके मुख मांहि १६

स्मरण नाम० ।

दादू काम धणीके नामसूं, लोगनसूं कुछ नांहि
लोगनमों मन ऊपिली. मनकी मनहीं मांहि १७
जाकै हिरदै जैसी होइगी, सो तैसी लेजाय
दादू तू निर्दोष रहु, नाम निरंतर गाइ १८
दादू साधू सबै करि देखणां, असाध न दीये कोय
जिंहिकै हिरदै हरि नहीं, तिहि तन टोटा होय १९
जब साधु संगति पाइए, तब डूंगर दूरि नसाय
दादू बोहिथ बैसि करि, डूडै निकटि न जाय २०
जब परमपदार्थ पाइए, तब कंकर दीया डारि
दादू साचा सो मिलै, तब कूडा काच निवारि २१
जब जीवनिमूरि पाइए, तब मरिबा कोंण बिसाय
दादू अमृत छाडि करि, कूंण हलाहल खाए २२
जब मांनसरोवर पाइए, तब छीलरकों छिटकाय
दादू हंसा हरि मिले, तब कागा गए बिलाय २३

उभय असमाव० ।

जहां दिनकर तहां निस नही, निस तहां दिनकरि नांहि
दादू एकै द्वैनहीं, साधुनके मत मांहि
एकै घोडै चढिचलै, दूजा कोतिल होय
दुहुं घोड़ै चढि बैसतां, पारि न पहूता कोय २५

इति अङ्ग १७ साखी १७०६ ॥

॥ अथ विचारकौ अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतः
वंदन सर्व साधवा, प्रणांमं पारंगतः १

ज्ञानपुचय० ।

दादू जलमैं गगन गगनमैं जलहै, पुनवै गगन निरालं
ब्रह्मजीव इंहिं बिधि रहै, ऐसा भेद विचारं २
ज्यूं दर्पनमैं मुख देखिये, पांणींमैं प्रति बिंब
ऐसैं आतम रांमहै, दादू सबही संग ३

साच ।

जब दर्पन मांहै देखिये, तब अपना सूझै आप
दर्पन बिन सूझै नहीं, दादू पुन्यरु पाप ४

ज्ञान प्रचय ।

जीये तेल तिलनमैं, जीये गंध फुलंनि
जीये मखण खीरमैं, ईये रबुरुहंनि ५
ईये रबुरुहनिमैं, जीयें रूहरगंनि
जीये उज्यारो सूरमै, ठंढो चंद्र बसंन ६
दादू जिन यहु दिल मंदिर कीया, दिल मंदिरमैं सोय
दिल मांहै दिलदार है, और न दूजा कोय ७
मीत तुह्मारा तुह्मकनैं, तुमहीं लेहु पिछाणि
दादू दूरि न देखिये, प्रति बिंब ज्यूं जाणि ८

विरक्त ।

दादू नाल कमल जल ऊपजै, क्यूं जुदा जल मांहि
चंद सहित चित प्रीतडी, यौं जल सेती नांहि ९

दादू एक बिचारसों, सबथैं न्यारा होय
मांहै हैं पर मन नहीं, सहज निरंजन सोय १०
दादू गुण निर्गुण मन मिलिरह्या, क्यूं बेगर ह्वैजाय
जहा मन नांहीं सो नही, जहां मन चेतन सो आहि ११

विचार० ।

दादू सबही व्याधिका, औषद एक बिचार
समझै थैं सुख पाइये, कोई कुछ कहो गवार १२
दादू इक निर्गुण इक गुणमई, सब घट ए है ज्ञान
काया का माया मिलै, आतम ब्रह्म समान १३
दादू कोटि अचारीन एक बिचारी, तऊ न सरभरि होय
आचारी सब जग भराया, विचारी बिरला कोय १४
दादू घटमै सुख आनंदहै, तब सब ठाहर होय
घटमै सुख आनंद बिन, सुखी न देख्या कोय १५

विरक्तता० ।

काया लोक अनत बस, घटमै भारी भीर
जहां जाइ तहां संगि सब, दरिया पैलीतीर १६
काया माया ह्वैरहीं, जोधा बहु बलवंत
दादू दूतर क्यूं तिरै, काया लोक अनंत १७
मोटी माया तजिगये, सूक्ष्म लीये जाय
दादू को छूटै नहीं, माया बडी बलाय १८
दादू सूक्ष्म मांहिले, तिनका कीजे त्याग
सब तजि राता रामसूं, दादू यहु बैराग १९
गुणा अतीत सो दर्सनी, आपा धरै उठाय
दादू निर्गुण रामगहि, डोरी लागा जाय २०

पिंड मुक्ति सबको करै, प्रांण मुक्ति नहीं होय
प्रांण मुक्ति सतगुरु करै, दादू बिरला कोय २१

शिष्यपश्नाम० ।

दादू षुध्या तृषा क्यूं भूलिये, सीत तप्त क्यूं जाय
क्यूं सब छूटै देह गुण, सतगुरु कहि समझाय २२
माहीथी मन काढिकरि, ले राखै निज ठौर
दादू भूलै देह गुण, बिसरि जाइ सब और २३
नाम भुलावे देह गुण, जीव दिसा सब जाय
दादू छाडै नामकूं, तौ फिरि लागै आय २४
दादू दिन दिन राता रामसूं, दिन दिन अधिक सनेह
दिन दिन पीवै रामरस, दिन दिन दर्पन देह २५
दादू दिन दिन भूलै देह गुण, दिन दिन इंद्रिय नास
दिनि दिन मन मनसा मरै, दिन दिन होइ प्रकास २६

समीवनि० ।

देह रहै संसारमैं, जीव रामके पास
दादू कुछ ब्यापै नहीं, काल झाल दुषत्रास २७
कायाकी संगति तजै, बैठा हरिपद मांहि
दादू निर्भय ह्वैरहै, कोई गुण ब्यापै नांहि २८
काया मांहै भयघणां, सब गुण ब्यापै आय
दादू निर्भय घरकीया, रहै नूरमैं जाय २९
खड्ग धार विख ना मरै, कोई गुण ब्यापै नांहि
रांम रहै ज्यूं जन रहै, काल झाल जलमांहि ३०

बिचार० ।

सहज बिचार सुखमैं रहै, दादू बडा बिबेक

मन इंद्रिय पसरे नहीं, अंतर राखै एक ३१
मन इंद्रिय पसरै नहीं, अहनिस एकै ध्यान
परउपकारी प्राणियां, दादू उत्तम ज्ञान ३२

उभय असमाव०।

दादू मै नाही तब नामक्या, कहा कहावै आप
साधौ कहो बिचारि करि, मेटहु तनकी ताप ३३

विचार०।

जब समझ्या तब सुरझिया, उलटि समानां सोय
कछू कहावै जबलगैं, तबलग समझ न होय ३४
जब समझ्या तब सुरझिया, गुरु मुख ज्ञान अलेख
उर्ध कमलमैं आरसी, फिरिकरि आपा देखि ३५
प्रेम भक्ति दिन दिन बधै, सोई ज्ञान बिचार
दादू आतम सोधिकरि, मथिकरि काढ्या सार ३६
दादू जिहिं बरियां, यहु मनकुउभया, सो कुछ कहु बिचार
काजी पंडित बावरे, क्या लिखि बंधे भार ३७
दादू जब यहु मनहीं मन मिल्या, तब कुछ पाया भेद
दादू ले करि लाइये, क्या पढि मरिये बेद ३८
पाणी पावक पावक पाणी, जाणै नही अजाण
आदि अंत्य बिचार करि, दादू जाण सुजाण ३९
सुख माहैं दुख बहुतहै, दुख माहैं सुख होय
दादू देखि बिचार करि, आदि अंत्य फल दोय ४०
मीठा खारा खारा मीठा, जाणै नही गंवार
आदि अंत्य गुण देखिकरि, दादू कीया बिचार ४१
कोमल कठिन कठिनहै कोमल, मूर्ख मरम न बूझै

आदि अंत्य बिचारि करि, दादू सब कुछ सूझै ४२.
पहिली प्राण बिचार करि, पीछै पग दीजै
आदि अंत्य गुण देखिकरि, दादू कुछ कीजै ४३
पहिली प्राण बिचारिकरि, पीछै चलिये साथ
आदि अंत्य गुण देखिकरि, दादू घाली हाथ ४४
पहिली प्राण बिचार करि, पीछै कुछ कहिये
आदि अंत्य गुण देखिकरि, दादू निज गहिये ४५
पहिली प्राण बिचार करि, पीछैं आनै जात
आदि अंत्त गुण देखिकरि, दादू रहे समाय ४६
जे मति पीछैं उपजै, सो मति पहिली होय
कबहू न होवै जीव दुखी, दादू सुखिया सोइ ४७
आदि अंत्य गाहन कीया, माया ब्रह्म बिचार
जहांका तहां लेदे धर्‌या, दादू देतन बार ४८

इति बिचारको अङ्ग संपूर्ण अङ्ग १८ ॥ साषी १७५७ ॥

॥ अथ बेसासको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरु देवतनः
बंदनं सर्व साधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू सहजैं सहजैं होइगा, जे कुछ रचिया राम
काहेकूं कलपै मरै, दुखी होत बे काम २
साँई कीयासु हैरह्या, जे कुछ करैसु होय
कर्ता करैसु होतहै, काहे कलपै कोइ ३
दादू कहै जेतैं कीयासु हैरह्या, जे तूं करैसु होय

करण करावण एकतूं, दूजा नाहीं कोय ४
दादू सोई हमारा सांईया, जे सबका पूर्णहार
दादू जीवण मरणका, जाकै हाथ बिचार ५
दादू स्वर्ग भवन पताल मध्य, आदि अंत्य सब सृष्टि
सिरज सबनकौं देतहै, सोई हमारा इष्ट ६
दादू करण हार करतापुरुष, हमकौं कैसी चींत
सब काहूंकी करतहै, सो दादू का मीत ७
दादू मनसा बांचा कर्मना, साहिबका बेशास
सेवक सिरजन हारका, करैं कौनकी आस ८
सुरमन आवै जीवकौं, अणकीया सब होय
दादू मार्ग महरका, बूझै बिरला कोय ९
दादू उदिमं औगुणकौं नहीं, जे करि जाणै कोय
उदिम मैं आंनदहै, जे सांई सेती होय १०
पूर्णहारा पूरिसी, जे चित रहिसी ठाम
अंतर थैं हरि उमंगसी, सकल निरंतर राम ११
पूरक पूरा पासि है, नांहीं दूरि गंवार
सब जानतहै बावरे, देबेकूं हुसियार १२
दादू चिंता रामकौं, समर्थ सब जाणै
दादू राम संभालि ले, चिंता जिनि आणै १३
दादू चिंता कीया कुछ नहीं, चिंता जीवको खाय
हूणाथा सो हैरह्या, जाणा है सो जाय १४

पोष प्रतिपाल रक्षिक०

दादू जिन पहुंचाया प्राणकौं, उदर उर्ध मुख खीर
जठर अग्निमें राखिया, कोमल काया सरीर

सो समर्थ संगहै, बिकट घाट घटभीर
सो सांईसू गह गहीं, जिन भूलै मन बीर १५
गोबिंदके गुन चीत करि, नैन वैन पग सीस
जिन मुष दीया कानकरि, प्राणनाथ जगदीस १६
तन मन सौंज संवारि सब, राखे बिसवा बीस
सो साहिब स्मरै नहीं, दादू भांति हदीस
दादू सो साहिब जिन बीसरै, जिन घट दीया जीव
गर्भ वासमैं राखिया, पालै पोषै पीव १७
दादू राजिक रिजक लीयें खडा, देवै हाथों हाथ
पूरक पूरा पासि है, सो सदा हमारे साथ १८
हिरदै राम संभालि ले, मन राखै बेसास
दादू समर्थ सांईयां, सबकी पूरै आस १९
दादू सांई सबन कूं, सेवकह्वै सुखदेय
अया मूढमति जीवकी, तौभी नाम न लेय २०
दादू सिरजन हारा सबनका, ऐसा है समर्थ
सोई सेवक ह्वैरह्या, जहां सकल पसारै हथ २१

समर्थ साक्षीत० ।

धन्य धन्य साहिबा तूं बडा, कौंण अनूपम रीति
सकल लोक सरि सांईयां, ह्वैकरि रह्या अतीत २२

पोषमति पालरक्षक० ।

दादू हूं बलिहारी सुर्तिकी, सबकी करै संभाल
कीड़ी कुंजर पलकमैं, कर्ताहै प्रतिपाल २३

बिसवास संतोष० ।

दादू छाजन भोजन सहजमैं, संईयां देइसु लेय

ताथैं अधिका और कुछ, सो तू कांइ करेइ २४
दादू टूका सहजका, संतोषी जन खाय
मृतक भोजन गुरु मुखी, काहे कलपै जाय २५
दादू भाडा देहका, तेता सहज बिचार
जेता हरि बिच अंतरा, तेता सबै निवारि २६
दादू जल दल रामका, हम लेवैं प्रसाद
संसार का समझै नहीं, अबिगति भाव अगाध २७
परमेस्वरके भावका, एक कणूका खाय
दादू जेता पापथा, भ्रम कर्म सब जाय २८
दादू कोण पकावै कोण पीसै, जहां तहां सीधाही दीसै २९
दादू जे कुछ षुसी षुदाइकी, होवैगा सोई
पचि पचि कोई जिनमरै, सुणि लीज्यो लोई ३०
दादू छूटि खुदाइ, कहीं को नांही, फिरिहों प्रिथ्वी सारी
दूजी दहणि दूरि करिवोरे, साधू सबद बिचारी ३१
दादू बिनां राम कही को नाहीं, फिरिहों देसबदेसा
दूजी दहणि दूरि करिबोरे, सुणयहु साधू संदेसा ३२

जीवत मृतक० ।

दादू सिदक सबूरी साचगहि, स्याबति राखि अकीन
साहिब सों दिल लाइरहु, मुरदाह्वै मसकीन ३३

बिसवास० ।

दादू अणबंछया टूका खातहै, मरमहि लागा मन
नाम निरंजन लेतहै, यों निर्मल साधू जन ३४
अणबंछया आगै पडै, पीछैं लेइ उठाय
दादू के सिर दोस यहु, जे कुछ राम रजाय ३५

अणबंछया आगैं पडै, खिस्या बिचारि र खाय
दादू फिरै न तोडता, तरवर ताकि न जाय ३६

कर्ता कसोटी० ।

मीठेका सब मीठा लागैं, भावै बिष भरिदेइ
दादू कड़वा ना कहैं. अमृत करि करि लेय ३७
बिपति भली हरिनामसौं, काया कसोटी दुख
राम बिनां किस कामका, दादू संपति सुख ३८

बिसवास संतोष० ।

दादू एक बेसास बिन, जीयरा डांवां डोल
निकट निधि दुखपाईए, चिंतामणी अमोल ३९
दादू बिन बेसास जीयरा, चंचल नाहीं ठौर
निहचै निहचल नां रहै, कछू औरकी और ४०
दादू हूणाथा सो ह्वैरह्या, जिन बाछैं सुख दुख
सुख मांगे दुख आइसी, पैं पीव न विसारी मुख ४१
दादू हूणाथा सो ह्वैरह्या, स्वर्ग न बांछी धाय
नरक कडेथी नां डरी, हूवांसो होसी आय ४२
दादू हूणाथा सो ह्वैरह्या जे कुछ कीया पीव
पल बधै न छिन घटै, ऐसी जाणी जीव ४३
दादू हूणाथा सो ह्वैरह्या, और न होवै आय
लेणाथा सो लेरहै, और न लीया जाय ४४
ज्यूं रचिया त्यूं होइगा, काहेकों सिरलेय
साहिब ऊपर राखिये, देखि तमसा एह ४५

पतिब्रत निहकाम० ।

ज्यूं जाणैं त्यूं राखियो, तुम्हासिरि ढाली राय

दूजाको देखौं नहीं, दादू अनत न जाय ४६
ज्यूं तुम्हभावै त्यूं खुसी, हमराजी उस बात
दादू के दिल सदकसो, भावै दिनकों रात ४७
दादू करणहार जे कुछ कीया, सो बुरा न कहणां जाय
सोई सेवक संतजन, रहिबा राम रजाय ४८

बेसास सतोष० ।

दादू कर्ता हमनहीं, कर्ता औरै कोय
कर्ता है सो करैगा, तूं जिनि कर्ता होय ४९

हरिभरोस० ।

कासी तजि मगहर गया, कबीर भरोसै राम
सैंदेही सांई मिल्या, दादू पूरे काम ५०

बेसास संतोष०

दादू रोजी रांमहै, राजिक रिजक हमार
दादू उस परसादसौं, पोख्या सब परिवार ५१
पंच सन्तोषे एकसों, मन मतिवाला मांहि
दादू भागी भूख सब, दूजा भावै नांहि ५२
दादू साहिब मेरे कापड़े, साहिब मेरा खाण
साहिब सिरका ताजहै, साहिब ही पिंड प्राण ५३
सांई सत सन्तोषदे, भाव भक्ति वेसास
शिदक सबूरी सांचदे, मांगै दादू दास ५४

इति बेसासको अङ्ग सपूर्ण ॥ अंग १६ ॥ साषी १'९६३ ॥

॥ अथ पीव पिछाणनको अंग ॥

दादू नमो नमो निरञ्जनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बन्दनं सर्व साधवा, प्रणामं पारङ्गतः १
सारोंके सिर देखिये, उसपर कोई नांहि
दादू ज्ञान बिचारकरि, सो राख्या मन मांहि २
सब लालों सिर लालहै, सब खूबां सिर खूब
सब पाकों सिर पाकहै, दादू का महबूब ३
परब्रह्म परापरं, सो मम देव निरञ्जनं
निराकारं निर्मलं, तस्य दादू बन्दनं ४
एक तत्व ताऊपर इतनीं, तीनलोक ब्रह्मण्डा
धरती गगन पवन अरु पाणी, सप्त दीप नव खण्डा
चन्द सूर चोरासी लख, दिन अरु रैणी रचिले सप्तसमन्दा
सवालाख मेरुगिर पर्बत, अठारभार तीर्थबरत ताऊपरमंडा
चवदह लोक रहै सब रचनां, दादू दास तास घरबन्दा ५
दादू जिनयहु एती करिधरी, थंभ बिन राखी
सो हमकों क्यूं बीसरै, सन्तजन साखी ६
दादू जिन प्राण पिण्ड हमकों दिया, अन्तर सेवैं ताहि
जे आवै औसाण सिर, सोईनाम संबाहि ७
दादू जिन मुझकों पैदा किया, मेरा साहिब सोय
मै बन्दा उस रामका, जिन सिरज्या सब कोय ८
दादू एक सगा संसारमैं, जिन हम सिरजे सोय
मनसा बाचा कर्मनां, और न दूजा कोय ९

पति पहचांन १

जे था कन्त कबीरका, सोई बर बरिहू

मनसा वाचा कर्मनां, मै और न करिहूं १०
दादू सबका साहिब एकहै, जाका प्रगट नाम
दादू सांई सोधिले, ताकी मैं बलि जाम ११
साचा सांई सोधिकरि, साचा राखी भाव
दादू साचा नामले, साचे मार्ग आव १२
जामै मरै सो जीव है, रमिता राम न होय
जामण मरण थैं रहितहैं, मेरा साहिब सोय १३
उठै न बैठै एकरस, जागै सोवै नांहि
मरै न जीवै जगत गुरु,सब उपजि खपै उस मांहि १४
ना वहु जामै ना मरै, ना आवै गर्भवास
दादू ऊंधे मुख नहीं, नरक कुण्ड दसमास १५
कृत्म नहीं सो ब्रह्महै, घटै बढै नहीं जाय
पूर्ण निहचल एकरस, जगत न नाचै आय १६
उपजै बिनसै गुणधरै,यहु मायाका रूप
दादू देखत थिर नहीं, खिण छांहीं खिण धूप १७
जे नाहीं सो ऊपजै, है सो उपजै नांहि
अलख आदि अनादिहै, उपजै माया मांहि १८
जे वहु कर्ता जीव था, संकट क्यूं आया
कर्मों के बसि क्यूं भया, क्यूं आप बंधाया
क्यूं सब योनि जगत मैं, घरबार नचाया
क्यूं यहु कर्ता जीवह्वै, परहाथ बिकायो १९
दादू कृत्म काल बसि, बंध्या गुण मांहीं
उपजै बिलसै देखतां, यहु कर्ता नांही २०
जाती नूर अल्लाह का, सफाती अरवाह

सफाती सिजदा करै, जाती बेपरवाह २१
दादू खण्ड खण्ड निज ना भया, इकलस एकैनूर
ज्यूं था त्यूंहीं तेजहै, जोति रहीं भरपूर २२
निरसंघ नूर अपारहै, तेजपुञ्ज सब मांहि
दादू जोति अनन्तहै, आगो पीछौ नांहि २३
वारपार नहीं नूरका, दादू तेज अनन्त
कीमत नहीं कर्तारकी, ऐसाहै भगवन्त २४
परम तेज प्रकासहै, परम नूर निवास
परम जोति आनन्दमैं, हंसा दादू दास २५
परम तेज परापरं, परम जोति परमेस्वरं
स्वयं ब्रह्म सदई सदा, दादू अविचल अस्थिरं २६
आदि अंत्य आगैरहै, एक अनूपम देव
निराकार निज निर्मला, कोय न जाणै भेव
अविनासी अपरपरा, वारपार नहीं छेव
सो तूं दादू देखिलै, उर अन्तर करिसेव २७
अविनासी साहिब सत्यहै, जे ऊपजै बिनसै नांहि
जेता कहिये काल मुख, सो साहिब किस मांहि २८
दादू सांई मेरा सत्यहै, निरञ्जन निराकार
दादू बिनसै देखतां, झूठा सब आकार २९
उरहीं अटकै नहीं, जहां राम तहां जाय
दादू पावै परमसुख, बिलसै वस्तु अघाय ३०
दादू उरैंहीं उरझे घणें, मूंए गल दे पास
अैन अङ्ग जहां आपथा, तहां गए निज दास ३१

जग भुलावनि०

सेवाका सुख प्रेम रस, सेज सुहागन देय

दादु बाहै दासकों, कहि दूजा सब लेय ३२

सुन्दरि विलाप०

परपुरुषा सब परहरै, सुन्दरि देखै जागि
अपणा पीव पिछाणि करि, दादू रहिए लागि ३३
आन पुरष हों बहनड़ी, परम पुरुष भरतार
हों अबला समझूं नहीं, तूं जाणैं कर्तार ३४

पति पहिचानन० ।

लोहा माटी मिलरह्या, दिन दिन काई खाय
दादू पारस रामबिन, कतहू गया बिलाय ३५
लोहा पारस परस करि, पलटै अपणां अङ्ग
दादू कंचन ह्वैरहै, अपणैं सांई संग ३६
दादू जिहिं परसे पलटे प्राणीयां, सोई निज करिलेह
लोहा कंचन ह्वैगया, पारसका गुण एह ३७

सचय जज्ञासु उपदेस० ।

दहदिस फिरैसु मनहै, आवै जाइ सुपवन
राखणहारा प्राणहै, देखण हार ब्रह्म ३८

इति पीवपिछाणनको अंग सपूर्ण ॥ अंग २० ॥ साषी १७६१ ॥

॥ अथ समर्थाइको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू कर्ता करै तु निमखमैं, कीडी कुंजर होय
कुंजर थैं कीडी करै, मेटि न सकै कोइ २

दादू कर्ता करैत निमखमैं, राई मेरु समान
मेरुकों राई करै, तौको मेटै फुरमान ३
दादू कर्ता करै तु निमखमैं, जलमांहै थल थाप
थलमांहैं जल हरिकरै, अैसा समर्थ आप ४
दादू कर्ता करै तु निमखमैं, ठाली भरै भंडार
भरिया गहि ठाली करै, अैसा सिरजन हार ५
दादू धरतीकूं अंबर करै, अंबर धरती होय
निस अंधियारि दिनकरै, दिनकों रजनी सोय ६
मृतक काढि मसाण थैं, कहु कौंण चलावै
अविगति गति नहीं जाणिये, जग आणि दिखावै ७
दादू गुप्त गुणण प्रगट करै, प्रगट गुप्त समाय
पलक मांहि भानैं घड़ै, ताकी लखी न जाय ८

पोष प्रतिपालरक्षक० ।

दादू सोई सहीं स्याबति हुवा, जा मस्तक करदेय ९
गरीब निवाजै देखतां, हरि अपनां करिलेय १०

सूक्ष्म मार्ग० ।

दादू सबहीं मार्ग सांईयां, आगै एक मुकाम
सोई सनमुख करिलीया, जांही सेती काम ११

पोष प्रतिपालरक्षक० ।

मीरा मुझसूं महरकरि, सिरपर दीया हाथ
दादू कलियुग क्या करै, सांई मेरा साथ १२

ईस्वर समर्थाई ।

दादू समर्थ सब बिधि सांईयां, ताकी मैं बलिजांउ
अंतर एक जु सो बसे, औरां चित न लांउ १३

सूक्ष्म मार्ग० ।

दादू मार्ग मिहरका, सुखी सहज सूं जाय
भवसागर थैं काटिकरि, अपणे लीय बुलाय १४

इश्वर समर्थाई० ।

दादू जे हम चितवै, सो कछू न होवै आय
सोई कर्ता सत्य, कुछ औरै करिजाय १५
एकौं लेइ बुलाइ करि, एकौं देइ पठाय
दादू अद्भुत साहिबी, क्यूं ही लखी न जाय १६
ज्यूं राखै त्यूं रहैंगे, अपणैं बल नांहीं
सबै तुम्हारे हाथ है, भाजि कत जांहीं १७
दादू डोरी हरिके हाथहै, गल मांहैं मेरे
बाजीगर का बांदरा, भावै तहां फेरे १८
ज्यूं राखै त्यूं रहैंगे, मेरा क्या सारा
हुकमी सेवक रामका, बंदा बेचारा १९
साहिब राखै तो रहै, काया मांहैं जीव
हुकमी बंदा उठिचलै, जबही बुलावै पीव २०

पतिपहिचान० ।

खंड खंड प्रकासहै, जहां तहां भरपूर
दादू कर्ता करि रह्या, अनहद बाजै तूर २१

इश्वर समर्थाई० ।

दादू दादू कहत हैं, आपै सबघट मांहि
अपणी रुचि आपै कहैं, दादू थैं कूछ नांहि २२
हम थैं हूवा न होइगा, ना हम करणे जोग
ज्यूं हरि भावै त्यूं करै, दादू कहै सब लोक २३

पतिव्रत निहकाम० ।

दादू दूजा क्यूं कहै, सिरपर साहिब एक
सो हमकों क्यूं बीसरै, जे युग जांहि अनेक २४

समर्थ साषीभूत० ।

आप अकेला सब करै, औरौं के सिर देय
दादू सोभा दास कूं, अपणा नाम न लेय २५
आप अकेला सब करै, घटमै लहरि उठाय
दादू सिरदे जीव कै, यों न्यारा ह्वैजाय २६

ईश्वर समर्थाई० ।

ज्यूं यहु समझै त्यूं कहो, यहु जीव अज्ञानी
जेती बाबा तैं कही, इन एक न मानी २७
दादू प्रचा मागै लोक सब, कहै हमकों कुछ दिखलाय
समर्थ मेरा सांईयां, ज्यूं समझै त्यू समझाय २८
दादू तनमन लाइकारि, सेवा दिढ करिलेइ
ऐसा समर्थ रामहै, जे मांगै सो देय २९

समर्थ साक्षीभूत० ।

समर्थ सो सेरी समझाइनैं, करि अण कर्ता होय
घट घट व्यापक पूर सब, रहै निरंतर सोय ३०
रहै नियारा सब करै, काहू लिप्त न होय
आदि अंत्य भाने घडै, ऐसा समर्थ सोय ३१

कर्तासाक्षीभूत० ।

सुरमनहीं सब कुछ करै, यों कलधरी बणाय
कोतगहारा ह्वैरह्या, सबकुछ होता जाय ३२
छिपै छिपै नहीं सब करै, गुण नहीं व्यापै कोय

दादू निहचल एकरस, सहजैं सबकु होय ३२
बिन गुण व्यापै सब कीया, समर्थ आपै आप
निराकार न्यारा रहै, दादू पुन्य न पाप ३३

ईश्वर समर्थाई० ।

समता के घर सहजमैं, दादू दुविधा नांहि
सांइ समर्थ सबकीया, समझि देखि मन मांहि ३४
है तौ रती नहीं तो नहीं, सब कुछ उतपत होय
दुग्वमैं हाजिर सब कीया, बूझे बिरला कोय ३५
नहीं तहां थैं सब कीया, आपै आप उपाय
निज तत न्यारा नां कीया, दूजा आवै जाय ३६
खालिक खेलै खेल करि, बूझै बिरला कोय
लै करि सुखिया नां भया, दे करि सुखिया होय ३७
देबेकी सब भूरहै, लेबेकी कुछ नांहि
सांई मेर सब कीया, समझि देखि मन मांहि ३८
दादू जे साहिब सिरजै नहीं, तो आपै क्यूं करि होय
जे आपैही ऊपजै, तौ मरिकरि जीवै कोइ ३९

करतूतिकर्म ।

कर्म फिरावै जीवकों, कर्मोकूं कर्तार
कर्तारकों कोई नहीं, दादू फेरन हार ४०

इति समर्थाइको अङ्ग संपूर्ण अंग २१ ॥ साषी १८३१ ॥

॥ अथ शब्दको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू सबदैं बंध्या सब रहै, सबदैंहीं सब जाय
सबदैंहीं सब ऊपजै, सबदैं सबै समाइ २
दादू सबदैंहीं सचु पाइए, सबदैंहीं संतोष
सबदैंहीं अस्थिर भया, सबदैं भागा सोक ३
दादू सबदैंहीं सूक्ष्म भया, सबदैं सहज समान
सबदैंहीं निर्गुण मिलै, सबदैं निर्मल ज्ञान ४
दादू सबदैंहीं मुक्ता भया, सबदैं समझै प्राण
सबदैंहीं सूझै सबै, सबदैं सुरझै जाण ५
दादू ऊँकार थैं ऊपजे, अरसप्ररस संजोग
अंकूर बीज द्वै पाप पुन्य, इहिबिधि जोगरु भोग ६
ऊँकार थैं ऊपजे, विनसै बहुत विकार
भाव भक्ति लै थिर रहै दादू आतम सार ७
पहिली कीया आपथैं, उतपति ऊँकार
ऊँकार थैं ऊपजे, पंचतत्त्व आकार
पंचतत्त्व थैं घटभया, बहुबिधि सब बिसतार
दादू घटथैं ऊपजे, मैं तैं बरण बिचार ८
एक सबद सब कुछ कीया, ऐसा समर्थ सोय
आगै पीछैं तौ करै, जे बलिहीणां होय ९
निरंजन निरकारहै, ऊँकार आकार
दादू सबरंग रूप सब, सब बिधि सब बिसतार १०

आदि सब्द ऊँकारहै, बोलै सब घट मांहि
दादू माया बिस्तरी, परमतत्व यहु नांहि ११
ईश्वर समर्थाई० ।
पैदा कीया घाटघड़ि, आपै आप उपाय
हिकमति हुनर कारीगरी, दादू लखी न जाय १२
जंत्र बजाया साजिकरि, कारीगर कर्तार
पंचूंकार सनांदहै, दादू बोलण हार १३
पंच उपनां सब्दथैं, सब्द पंचसूं होय
सांई मेरे सब कीया, बूझै बिरला कोय १४
दादू एक सब्द सूं ऊनवै, बरसण लागा आय
एक सब्दसों बीषरै, आप आपकों जाय १५
दादू साधु सब्दसों मिलि रहै, मनराषै बिलमाय
साधसब्द बिन क्यूं रहै, तबहीं बीषर जाय १६
दादू सब्दजेर सो मिलिरहै, एकरस पूरा
कायर भाजै जीवले, पग मांडै सूरा १७
सब्द बिचारै करणी करै, रामनाम निज हिरदै धरै
काया मांहै सोधै सार, दादू कहै लहैसो पार १८
दादू कोडि कोडि खरचिये, जे पैके सीझै काम
सब्दों कारज सिध भया, तो सुरमन दीजै राम १९
दादू राम हिरदै रस भेलिकरि, को साधु सब्द सुणाइ
जाणूं कर दीपक दीया, भ्रम तिमिर सब जाय २०
दादू बाणी प्रेमकी, कमल बिगासै होय
साध सब्द माताकहै, तिन सब्दों मोह्या मोहि २१
दादू हरिभुरकी बाणी साधूकी, सो परियो मेरे सीस

छूटै माया मोहथै, प्रेम भजन जगदीस २२
दादू भुरकी रामहै, सब्द कहै गुरु ज्ञान
तिन सब्दों मन मोहिया, उनमन लागा ध्यान २३
सब्दों मांहैं रामधन, जे कोई लेइ बिचारि
दादू इस संसारमैं, कबहूं न आवै हारि २४
दादू राम रसायन भरिधख्या, साधु न सब्द मझार
कोई पारिख पीवै प्रीतिसों, समझै सब्द बिचार २५
सब्द सरोवर सू भरभख्या, हरिजल निर्मल नीर
दादू पीवै प्रीतिसों, तिनके अखिल सरीर २६
सब्दों मांहैं रामरस, साधू भरि दीया
आदि अंत्य सब संतमिलि, यों दादू पीया २७

गुरुमुख कसौटी० ।

कारज को सीझै नही, मीठा बोलै बीर
दादू साचे सब्दबिन, कटै न तनकी पीर २८

सब्द० ।

सब्द बंधाणा साहकै, ताथैं दादू आया
दुनिया जीवी बापुरी, सुख दर्सन पाया २९
दादू गुण तजि निर्गुण बोलिये, तेता बोल अबोल
गुण गह आपा बोलिये, तेता कहिए बोल ३०
साचा सब्द कबीरका, मीठा लागै मोहि
दादू सुणतां परमसुख, केता आनंद होय ३१

इति सब्दको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग २२ ॥ साखी १५६२ ॥

॥ अथ जीवत मृतक को अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
धरती मत आकासका, चंद सूरका लेय
दादू पाणी पवनका, राम नाम कहिदेय २
दादू धरती ह्वैरहै, तजि कूड़ कपट अहंकार
सांई कारण सिरसहै, ताको प्रत्यक्ष सिरजनहार ३
जीवत माटी मिलिरहै, सांई सनमुख होय
दादू पहिली मरि रहै, पीछैं तौ सब कोय ४

दीन गरीबी० ।

आपा गर्व गुमान तजि, मद मछर अहंकार
गहै गरीबी बंदिगी, सेवा सिरजनहार ५
मद मछर आपा नहीं, कैसा गर्व गुमान
स्वप्नैंही समझै नहीं, दादू क्या अभिमान ६
झूठा गर्व गुमान तजि, तजि आपा अभिमान
दादू दीन गरीबह्वै, पाया पद निर्वान ७

जीवतक० ।

दादू भाव भक्ति दीनता अङ्ग, प्रेम प्रीती सदा तिंहिं संग ८
दादू राव रंक सब मरहिंगे, जीवै नांही कोय
सोई कहिए जीवता, जे मर जीवा होय ९
दादू मेरा वैरि मैं मूवा, मुझै न मारै कोय
मैहीं मुझकों मारतां, मैं मर जीवा होय १०

जाणा माया मोहनों० ।

वैरी मारे मरिगए, चित थैं विसरे नांहीं

दादू अजहूं साल है, समझि देखि मन मांहि ११

छमय अममा० ।

दादू तौ तूं पावै पीवकों, जीवत मृतक होय
आप गमाये पीव मिलै, जानत है सब कोय १२
दादू तौ तूं पावै पीवकों, आपा कछू न जाणि
आपा जिस थैं ऊपजै, सोई सहज पिछांणि १३
दादू तौ तूं पावै पीवकों, मै मेरा सब खोय
मैं मेरा सहजैं गया, तब निर्मल दर्सन होय १४
मैहीं मेरे पोट सिरि, मरिए ताके भारि
दादू गुर प्रसाद सूं, सिर थैं धरी उतारि १५
मेरे आगै मै खडा, ताथैं रह्या लुकाय
दादू प्रगट पीव है, जे यहु आपा जाय १६

सूक्ष्म मार्ग०

जीवत मृतक ह्वैकरि, मार्ग मांहैं आव
पहिली सीस उतारि करि, पीछै धरीए पाव १७
दादू मार्ग साधुका, खरादु हेला जाणि
जीवत मृतक ह्वैचलै, राम नाम नीसाणि १८
दादू मार्ग कठिनहै, जीवत चलै न कोय
सोई चलि है बापुरा, जे जीवत मृतक होय १९
मृतक होवै सो चलै, निरंजन की बाट
दादू पावै पीव कों, लंघै औघट घाट २०

जीवत मृतक० ।

दादू मृतक तबहीं जाणिए, जब गुण इंद्रिय नांहि
जब मन आपा मिटिगया, तब ब्रह्म समाना मांही २१

दादू जीवतही मरिजाइए, मरिमांहैं मिलिजाय
सांईका संग छाडि करि, कूंण सहै दुख आप २२

उभय असमाव० ।

दादू आपा कहा दिखाईए, जे कुछ आपा होय
यहु तौ जाता देखिये, रहिता चिह्नौं सोय २३
दादू आप छिपाइए, जहां न देखै कोय
पीव कौं देखि दिखाइए, त्यूं त्यूं आनंद होय २४

आपा निर्दोस० ।

दादू अंतरगति आपा नही, मुखसूं मै तैं होय
दादू दोस न दीजिये, यों मिलि खेलैं दोय २५

उभय असमाव० ।

जे जन आपा मेटि करि, रहे रांम ल्योलाय
दादू तबहीं देखतां, साहीब सो मिलिजाय २६

दीनगरीबी० ।

गरीब गरीबी गहिरह्या, मसकीनी मस कीन
दादू आपा मेटि करि, होइ रह्या लैलीन २७

भय असमाव ।

मै हौं मेरि जब लगै, तबलग विलमै खाय
मै नाही मेरि मिटै, तब दादू निकटि न जाय २८
दादू मना मनी सब लेरहे, मनी न मेटीजाय
मना मनी जब मिटिगई, तबहीं मिलै खुदाय २९
दादू मै मै जालिदे, मेरे लागौ आगि
मै मै मेरा दूरि करी, साहिब के संगि लागि ३०

मनमुखी मानि० ।

दादू खोई आपणी, लज्यां कुलकी कार
मान बड़ाई पतिगई, तब सनमुख सिरजनहार ३१

उभय असमाव० ।

दादू मै नाही तब एक है, मै आई तब दोय
मैं तैं पडदा मिटिगया, तब ज्यूंथा त्यूंही होय ३२

मचथ करुणा बीनती० ।

तूरसरीषा करि लिया, बंदौं का बंदा
दादू दूजा को नहीं, मुझ सरीषा गंदा ३३

जीवत मृतक० ।

दादू सीख्यूं प्रेम न पाइए, सीख्यूं प्रीति न होय
सीख्यूं दर्स न ऊपजै, जबलग आप न खोय ३४
कहिबा सुनिबा गतभया, आपा परका नास
दादू मैं तैं मिटिगया, पूर्णब्रह्म प्रकास ३५
दादू सांई कारण मासका, लोही पाणी होय
सूकै आटा अस्नत का, दादू पावै सोय ३६
तन मन मैदा पीसि करि, छाणी छाणी ल्यौलाय
यौं बिन दादू जीवका, कबहूं साल न जाय ३७
पीसै ऊपरि पीसिये, छाणे ऊपरि छाणि
तौ आतम कण ऊबरै, दादू ऐसी जाणि ३८
पहिली तन मन मारिये, इनका मरदै मान
दादू काढै जंत्रमैं, पीछैं सहज समान ३९
काटै ऊपरि काटिये, दाधै कूं दौंलाय
दादू नीर न सींचिये, तौ तरवर बधता जाय ४०

दादू सबकूं संकट एकदिन, काल गहैगा आय
जीवत मृतक ह्वैरहै, ताके निकटि न जांय ४१
दादू जीवत मृतक ह्वैरहे, सबको विरक्त होय
काढो काढो सब कहै, नाम न लेवै कोय ४२

जरना० ।

सारा गहिला ह्वैरहै, अंतरजामी जाणि
तौ छूटै संसार थैं, रस पीवै सारंग प्राणि ४३
गूंगा गहिला बावला, सांई कारण होय
दादू दिवानां ह्वैरहै, ताकूं लखै न कोय ४४

जीवत मृतक० ।

जीवत मृतक साधु की, बाणी का प्रकास
दादू मोहे रामजी, लीन भए सब दास ४५

उभय असमाव अंग ।

दादू आपा मेटि समाइरहु, दूजा धंधा बादि
दादू काहे पचि मरै, सहजैं स्मरण साधि ४६
दादू जे तूं मोटा मीरहै, सब जीवों में जीव
आपा देख न भूलिये, खरादु हेला पीव ४७
दादू आपा मेटै एकरस, मन अस्थिर लै लीन
अरस परस आनंद करै सदा सुखी सो दीन ४८

ईश्वर समर्थाई

नहीं तहा थैं सब किया, फिरि नांहीं ह्वैजाय
दादू नांहीं होइरहु, साहिब सूं ल्यौलाय ४९

स्मरण नाम निरसंसय० ।

हमहू सारा करिलीया, जीवत करणीसार

पीछैं संसाको नहीं, दादू अगम अपार ५०

मध्य निरपख०।

माटी मांहै ठौरकरि, माटी माटी मांहि
दादू समकरि राखिये, है पक्ष दुविध्या नांहि ५१

इति जीवत मृतक को अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग २३ ॥ साषी १६१३

॥ अथ सूरातनको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १

सूरसती साधनिरणैं०।

साचा सिरसूं खेलै है, यहु साधू जनका काम
दादू मरणां आसंघै, सोई कहैगा राम २
राम कहैते मरिकहै, जीवत कह्या न जान जाय
दादू ऐसैं राम कहि, सति सूर सम भय ३
जब दादू मरिबा गहै, तब लोगूं की क्या लाज
सती राम साचा कहै, सब तजि पतिसूं काज ४

सूरवीर कायर०।

दादू हम कायर कडुंवा करिरहे, सूर निराला होय
निकसि खडा मैदान मैं, ता सम और न कोय ५

सूरसती साधनिरनै०।

मडा न जीवै तौ संग जलै, जीवै तौ घर आणि
जीवण मरणां रामसूं, सोई सती करि जाणि ६
जन्मलगै बिभचारणी, नख सिख भरी कलंक

पलक एक सनमुख जली, दादू धोय अंक ७
स्वांग सतीका पहरि करि, करै कुठंवका सोच
बाहरि सूरा देखिये, दादू भीतर पोच ८
सती त सिरजनहार सौं, जल बिरहकी झाळ
नां वहु मरन जलिबूझै, ऐसैं संग दयाळ ९
दादू मुझहोते लखसिर, तौ लख देती वारि
सहमुझ दीया एकसिर, सोई सौंपै नारि १०
सती जली कोइला भई, मुये मडेकी लार
यों जे जलती राम सूं, सांचे संग भर्त्तार ११
मुये मडे सूं हेत क्या, जे जीवकी जाणे नांहि
हेत हरीसूं कीजिये, जे अंतरजामी मांहि १२

सूरवीर कायर० ।

सूरा चढि संग्रामकूं, पिछा पग क्यूं देय
साहिब लाजै भाजतां, धृक जीवन दादू तेंय १३
सेवक सूरा रामका, सोई कहैगा राम
दादू सूर सनमुख रहै, नहीं कायर का काम १४
कायर कामि न आवई, यहु सूरेका षेत
तन मन सूंपै रामकों, दादू सीस सहेत १५
जबलग लालच जीवका, तबलग निर्भय हूवा न जाय
काया माया मन तजै, तब चोड़ै रहै बजाय १६
दादू चोडैमैं आनंदहैं, नाम धरया रणजीत
साहिब अपणा करिलीया, अंतर गतिकी प्रीति १७
दादू जे तुझ काम करीमसूं, तौ चौहटै चढिकरि नाच
झूठाहै सो जायगा, निहचै रहसी साच १८

जीवत मृतक० ।

रांम कहैगा एककौ, जे जीवत मृतक होय
दादु ढूंढे पाईये, कोटे मध्ये कोय १९

सूरसती साधुनिर्नै० ।

सूरा पूरा संतजन, सांई कौं सेवै
दादू साहिब कारणैं, सिर अपणां देवै २०
सूरा झूझै खेतमैं, सांई सनमुख आय
सूरेकूं सांई मिलै, तब दादु काल न खाय २१
मरिबे ऊपर एकपग, कर्ता करैसु होय
दादू साहिब कारणैं, ताला बेली मोहि २२

हरिभरोस० ।

दादू अंग न खैंचिये, कहि समझाऊं तोहि
मोहि भरोसा रामका, बंका बाल न होय २३
बहुत गया थोडा रह्या, अब जीव सोच निवारि
दादू मरणा माडिरहु, साहिब के दरबारि २४

सूरवीर कायर० ।

जीऊंका संसा पड्या, कोका कौं तारै
दादू सोई सूरवा, जे आप उबारै २५
[illegible] निकसै संसारथैं, सांईकी दिस धाय
जे कबहूं दादू बाहुड़ै, तौ पीछैं मार्‍या जाय २६
दादु कोई पीछैं हेला जिनकरै, आगै हेला आव
आगैं एक अनूपहै, नहि पीछैंका भाव २७
पीछैंको पग नां भरै, आगैंकौं पगदेय
दादू यहु मत सूरका, अगम ठौरकौं लेय २८

आघा चलि पीछा फिरै, ताका मुहमैं दीठ
दादु देखै दोइदल, भागै दे करि पीठ २९
दादू मरणां माडिकरि, रहे नहीं ल्योलाय
कायर भाजै जीवलै, आरणि छाडैं जाय ३०

सूरवीर कायर० ।

सूरा होय सु मेरु उलंघै, सब गुण बध्या छूटै
दादू निर्भय ह्वैरहै, कायर तिणां न तूटै ३१

सूरसती साधनिरणैं० ।

सर्पके सिर काल कुंजर, बहु जोध मार्ग मांहि
कोटिमैं कोई एक ऐसा, मरण आसंघ जांहि ३२
दादू जब जागै तब मारिये, बैरी जीवके साल
मनसा डाइण काम रिपु, क्रोध महाबलि काल ३३
पंचचोर चित वत रही, माया मोह बीष झाल
चेतन पहरै आपणैं, कर गहि खडग संभालि ३४
काया कबज कमाण करि, सार सब्द करि तीर
दादू यहु सर सांधि करि, मारे मोटे मीर ३५
काया कठिन कमांण है, खांचैं बीरला कोय
मारै पंचू मृगला, दादू सूरा सोय ३६
जे हरि कोपिकरै इनउपरि, तौ कांम कटक दल जांहि कहां
लालच लोभ क्रोध कतभाजै, प्रगटरहे हरि जहां तहां ३७

जीवत मृतक० ।

तब साहिब कौं सिजदा कीया, जब सिरधरथा उतारि
यौं दादू जीवत मरै, हिरंस हवाकों मारि ३८

सूरातन० ।

दादू तन मन काम करिमके, आवै तो नीका

जिसका तिस कौं दीजिये, सोच क्या जीवका ३९
जे सिर सूप्या राम कौं, सो सिर भया सनाथ
दादू दे ऊरणभया, जिसका तिस के हाथ ४०
जिसका है तिसकूं चढै, दादू ऊरण होय
पहिली देवै सो भला, पीछै तौ सब कोय ४१
साईं तेरे नाम परि, सिर जीव करौं कुरबाण
तन मन तुम्हपर वारणैं, दादू पिंड प्राण ४२
अपणैं सांईका कारणैं, क्या क्या नही कीजै
दादू सब आरंभ तजी, अपणां सिर दीजै ४३
सिरकै साटै लीजिये, साहिबजी का नाम
खेलै सीस उतारि करि, दादू मैं बलिजाम ४४
खेलै सीस उतारि करि, अधर एक सौं आय
दादू पावै प्रेम रस, सुख मैं रहै समाय ४५
दादू मरणैंथी तूं मत डरै, सब जग मरता जोय
मिल करि मरणा रामसूं, तौ कलि अजरावर होय ४६
दादू मरणे थी तूं मति डरै, मरणां अंत्य नदांन
रे मन मरणां सिरजिया, कहिले केवल राम ४७
दादू मरणेथी तूं मती डरै, मरण पहूंच्या आय
रे मन मेरा राम कही, बेगा बार न लाय ४८
दादू मरणैंथी तूं मतडरै, मरणां आज कि काल्हि
मरणा मरणा क्या करै, बेगा राम संभालि ४९
दादू मरणा खूब है, निपट बुरा बिभचार
दादू पति कूं छाडि करि, आन भजै भरतार ५०
दादू तनतैं कहा डराइए, जे बिनासि जाइ पलबार

कायर हूवां न छूटिये, रे मन हौ हुसियार ५१
दादू मरणां खूबहै, मरिमांहैं मिलिजाय
साहिबका संग छाडि करि, कूंण सहै दुख आय ५२
दादू मांहे मनसों झूझकरि, ऐसा सूरा बीर
इंद्रिय अरु दल भानि सब, यों कलि हुवा कबीर ५३
साईं कारण सीसदे, तन मन सकल सरिर
दादू प्राणी पंचदे, यों हरि मिल्या कबीर ५४
सबै कसौटी सिरसहै, सेवक सांईं काज
दादू जीवन क्यूं तजै, भाजें हरिकों लाज ५५
सांईं कारण सब तजै, जनका ऐसा भाव
दादू राम न छाडिये, भावै तन मन जाव ५६

पतिव्रत निहकाम० ।

दादू सेवक सो भला, सेवै तन मन लाय
दादू साहिब छाडि करि, काहूं संग न जाय ५७
पतिव्रता पति पीवकों, सेवै दिन अरु रात
दादू पति कों छाडिकरि, काहूं संग न जात ५८

सूरातन० ।

दादू मरिबो एकजु बार, अमर जुकेडै मारिये
तौ तिरिये संसार, आत्म कारज सारियें ५९
दादू जे तूं प्यासा प्रेमका, तौ जीवण की क्या आस
सिरकैसाटै पाइये, भरि भरि पीवौ दास ६०

सूरबीर कायर० ।

मन मनसा जीते नही, पंच न जीते प्राण
दादू रिपजी ते नहीं, कहै हम सूर सुजाण ६१

मन मनसा मारै नहीं, काया मारण जांहि
दादू बांबी मारिये, सर्प मरै क्यूं मांहि ६२

सूरातन० ।

दादू पाखर पहरि करि, सब को झूझण जाय
अंग उघाडै सूरवां, चोट मुहें मुंहि खाय ६३
जब झूझै तब जाणिये, काछे खडैं क्या होय
चोट मुंहैं मुहि खाइगा, दादू सूरा सोय ६४
सूरा तन सहजै सदा, साच सेल्ह हथियार
साहिब कै बल झूझतां, केते कीये खुमार ६५
दादू जबलग जी लागै नही, प्रेम प्रीति के सेल
तब लग पीव क्यू पाईये, नहीं बाजीगरका खेल ६६
दादू जे तूं प्यासा प्रेमका, तौ किस कौं सतैं जीव
सिर के साटै लीजिये, जे तुझ प्यारा पीव ६७
दादू महा जोधा मोटा बली, सो सदा हमारी भीर
सब जग झूठा क्या करै, जहां तहां रणधीर ६८
दादू रहते पहते राम जन, तिनभी मांड्या झूझ
साचा मुह मोडै नही, अर्थ इतांही बूझ ६९

हरिभरोस० ।

दादू कांधै सबलकै, निरबाहैगा और
आसण अपणैं ले चल्या, दादू निहचल ठोर ७०

सूरातन० ।

दादू क्याबल कहां पतंगका, जलत न लागै बार
बलतौ हरि बलवंतका, जीवैं जिंहिं आधार ७१
राखणहारा राम है, सिर उपर मेरे

दादू केते पचिगए, बैरी बहुतेरे ७२

सूरातन बीनती० ।

दादू बलि तुम्हारे बापजी, गिणत नगणा राव
मीर मलक प्रधान पति, तुम्ह बिन सबहीं बाव ७३
दादू राखी रामपर, अपणी आप संबाहि
दूजाको देखों नहीं, ज्यूं जाणै त्यूं निरबाहि ७४
तुम्ह बिन दूजा को नहीं, हमकों राखण हार
जे तू राखै सांईया, तौ कोई न सकै मारि ७५
सब जग छाडै हाथ थैं, तुम्ह जिन छांडहु राम
नहीं कुछ कारज जगतसों, तुम्हहीं सेती काम ७६

सूरातन० ।

दादू जाते जीय थैं तौ डरौं, जे जीव मेरा होय
जिनि यहु जीव उपाईया, सार करैगा सोय ७७
दादू जिनकूं सांई पधरा, तिन बंका नांही कोय
सब जग रूठा क्या करै, राखण हारा सोय ७८
दादू साचा साहिब सिर ऊपरैं, तती न लागै वाव
चरण कमल की छाया रहै, कीया बहुत पसाव ७९

सूरातन बीनती० ।

दादू कहै जे तूं राखै सांईयां, तौ मार न सकै कोय
बाल न बंका करिसकै, जे जग बैरी होय ८०

सूरा० ।

दादू राखण हारा राखै, तिस कौं कोण मारै
उसै कौंण डबोवै, जिसै सांई तारै
कहै दादू सो कबहूं न हारै, जे जन सांई संभारै ८१

निर्भय बैठा राम जपि, कबहूं काल न खाय
जब दादू कुंजर चढै, तब सुन हांझ खिजाय ८२
कायर कूकर कोटि मिलि, भौंकै अरु भागै
दादू गरवा गुरु मुखी, हस्ती नहीं लागै ८३

॥ इति सूरातनको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग २४ ॥ साषी १६६५ ॥

॥ अथ कालको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
काल न सूझै अंधारा, मन चितवै बहु आस
दादू जीव जाणैं नहीं, कठिन काल की पास २
दादू काल हमारे कंध चढि, सदा बजावै तूर
काल हरण कर्ता पुरुष, क्यूं न संभालै सूर ३
जहां जहां दादू पग धरै, तहां काल का फंध
सिर ऊपर सांधे खड़ा, अजहूं न चेतै अंध ४
दादू काल ग्रासनका कहिये, काल रहित कहि सोय
काल रहित सुमरन सदा, बिना ग्रास न होय ५
दादू मरिए राम बिन, जीजै राम संभाल
अमृत पीवै आतमा, यों साधू बचै काल ६
दादू यहु घट काचा जल भरया, विनसत नांहीं बार
यहु घट फूटा जलगया, समझत नहीं गंवार ७
फूटी काया जाजरी, नव ठाहरि काणी
तामें दादू क्यूं रहै, जीव सरीषा पाणी ८

बालभरी इग खालका, झूठा गर्व गुमान
दादू विनसै देखतां, तिसका क्या अभीमान ९
दादू हम तौ मूये मांहि है, जीवण कारु भ्रम
झूठ का क्या गाखिबा, पाया मुझ मरम १०
यहु बन हरिया देखि करि, फूल्यौ फिरै गवार
दादू यहु मन मृगला, काल अहेडी लार ११
सबही दीसैं काल मुख, आपै गहि कर दीन
विनसै घट आकारका, दादू जे कुछ कीन १२
काल कीट तन काठकूं, जरा जनमकों खाय
दादू दिन दिन जीव का, आव घटंति जाय १३
काल ग्रासै जीव कों, पल पल सासैं सास
पग पग माहैं दिन घडी, दादू लखै न तास १४
पाव पलक की सुधि नहीं, साम सब्द क्या होय
कर मुख मांहे मेल्हतां, दादू लखै न कोय १५
दादू काया कारवी, देखत हीं चलि जाय
जब लग सास सरीर मैं, राम नाम ल्यौ लाय १६
दादू काया कारवी, मांहि भरोसा नांहि
आसण कुंजर सिर छत्र, विनसि जांही क्षण मांहिं १७
दादू काया कारवी, पडत न लागै बार
बोलण हारा महलमै, सोभी चालण हार १८
दादू काया कारवी, कदे न चालै संग
कोटि बरस जे जीवणां, तऊ होइला भंग १९
कहतां सुणता देखतां, लेतां देतां प्राण
दादू सो कतहू गया, माटी धरी मसाण २०

सींगी नाद न बाजही, कत गये सु जोगी
दादू रहते मढी मै, रसं भोगी २१
दादू जीयरा जाइगा, यहु तन मांटी होय
जे उपज्या सो बीनसिहै, अमर नहीं कलि कोय २२
दादू देही देखतां, सब किसही की जाय
जब लग सास सरीर मैं, गोविंद के गुणगाय २३
दादू देही पांहुणी, हंस बटाऊ मांहि
क्या जाणूं कब चालसी, मोहि भरोसा नांहि २४
दादू सबको पाहुंणा, दिवस चारि संसार
औसरि औसरि सब चले, हमभी इहै विचार २५

भेषर्दपंथ निषमता० ।

सबको बैठे पंथ सिर, रहे बटाऊ होय
जे आये ते जांहिगे, इस मार्ग सब कोय २६
बेगि बटाऊ पंथसिर, अब बिलंब न कीजै
दादू बैठा क्या करै, राम जपि लीजै २७
संझ्या चले उतावला, बटाऊ बन खंड मांहि
बरियां नांही ढीलकी, दादू बेगि घर जांहि २८
दादू करहे पलाण करि, को चेतन चढि जाय
मिलि साहिब दिन देखतां, सांझ पडै जिन आय २९
पंथ दुहेला दूरि घर, संगन साथी कोय
उस मार्ग हम जांहिगे, दादू क्यूं सुख सोय ३०
लंघण केलकु घणां, कपर चाटू दोह
अहलपांधी पंथ मैं, विहंदा आहीन ३१

काल चितावणी।

दादू हसतां रोवतां पाहुंणां, काहू छाडि न जाय
काल खड़ा सिर ऊपरै, आवण हारा आय ३२
दादू जीवा वैरी काल है, सो जीव न जाणैं
सब जग सूता नींदड़ी, इस ताणै वाणै ३३
दादू करणी कालकी, सब जग प्रलय होय
राम विमुख सब मरिगए, चेति न देखै कोय ३४
साहिब कूं सुमरै नहीं, बहुत उठावै भार
दादू करणी काल की, सब प्रलय संसार ३५
सूता काल जगाइ करि, सब पैसै मुख मांहि
दादू अचिरज देखिया, कोई चेतै नांहि ३६
सब जीव विसाहैं काल कूं, करि करि कोटी उपाय
साहिब कों समझै नहीं, यों प्रलय ह्वैजाय ३७
दादू कारण कालके, सकल संवारै आप
मीच विसाहै मरणकों, दादू सोग संताप ३८
दादू अमृत छाडि करि, विषै हलाहल खाय
जीव विसाहै कालकूं, मूढा मरि मरि जाय ३९
निर्मल नाम विसारि करि, दादू जीव जंजाल
नहीं तहां थैं करि लीया, मनसा मांहै काल ४०
सब जग छेली काल कसाई, करद लीये कंठ काटै
पंच तत्व की पंच पंखुरी, खंड खंड करि बांटै ४१
सब जग सूता नींदभरि, जागै नांहीं कोय
आगै पीछैं देखिये, प्रत्यक्ष प्रलय होय ४२
काल झाल मैं जग जलै, भाजि न सकै कोय

दादू सरणैं साचके, अभय अमर पद होय ४३

आदकालमांहि ।

ये सज्जन दुर्जन भये, अंतकाल की बार
दादू इनमै को नहीं, बिपति बटावण हार ४४
संगी सज्जन आपणां, साथी सिरजनहार
दादू दूजा को नहीं, इहि कलि इहि संसार ४५

काल बिनाणी ।

ए दिन बीते चलिगए, वै दिन आए धाए
रामनाम बिन जीवकूं, काल ग्रासै जाय ४६
जे उपज्या सो बिनसि है, जे दीसै सो जाय
दादू निर्गुण राम जपि, निहचल चित लगाय ४७
जे उपज्या सो बिनसिहै, कोई थिर न रहाय
दादू बारी आपणी, जे दीसै सो जाय ४८
दादू सबजग मरि मरि जातहै, अमर उपावण हार
रहिता रमिता राम है, बहिता सब संसार ४९

सजीवनी ।

दादू कोई थिर नहीं, यहु सब आवै जाय
अमर पुरुष आपै रहै, कै साधू ल्यौलाय ५०

कालचितावणी ।

यहु जग जाता देखकरि, दादू करी पुकार
घड़ी महूर्त चालणां, राखै सिरजनहार ५१
दादू बिखसुख मांहि खेलतां, काल पहूंच्या आय
उपजै बिनसै देखतां, यहु जग यों हीं जाय ५२
रामनाम बिन जीवजे, केते मुए अकाल

मीच बिनां जे मरतहै, तातैं दादू साल ५३

कठोरता०।

सर्प सिंघ हस्ती घणां, राकस भूत प्रेत
तिनवन मैं दादू पड्या, चेतै नहीं अचेत ५४
पूत पिता थै बीछुड्या, भूलिपड्या किस ठौर
मरै नहीं उर फाट करि, दादू बड्या कठौर ५५

कालचितावणी०।

जे दिन जाइसु बहुर न आवै, आव घटै तन छीजै
अंत्यकाल दिन आइ पहूंता, दादू ढील न कीजै ५६
दादू औसर चलिगया, बरियां गई बिहाय
कर छिटकै कहा पाइये, जन्म अमोलिक जाय ५७
दादू गाफिल ह्वैरह्या, गहिला हूवा गंवार
सो दिन चीति न आवई, सोवै पांव पसार ५८
दादू काल हमारा करगहै, दिन दिन खैंचत जाय
अजहूं जीव जागै नहीं, सोवत गई बिहाय ५९
सूना आवै सूना जाइ, सूना खेलै सूना खाय
सूना लेवै सूना देव, दादू सूना जाय ६०
दादू देखनहीं भगा, स्याम बर्ण थैं सेत
तनमन जोबन सब गया, अजहूं न हरिसूं हेत ६१
दादू झूठ के घर देखि करि, झूठे पूछै जाय
झूठ झूठा बोलते, रहे मसांणूं आय ६२
दादू प्राण पयाना करिगया, माटी धरी मसाण
जालण हारे देखि करि, चेतै नहीं अजाण ६३
दादू कई जाले कई जालिये, कई जालण जांहि

केई जालण की करै, दादू जीवण नांहि ६४
दादू केई गाडे केई गाडय, केई गाडण जाहि
केई गाडण की करै, दादू जीवण नांहि ६५
दादू कहै उठि रे प्राणी जागि जीव, अपणां सज्जन संभाल
गाफिल नींद न कीजिये, आइ पहूंता काल ६६
समर्थ का सरणां तजै, गहै आन की ओट
दादू बलिवंत कालकी, क्यूं करि बंचै चोट ६७

सजीवनि० ।

अविनासी के आसिरे, अजरावर की ओट
दादू सरणै साचकै, कदे न लागै चोट ६८
सब भागा मरण थैं, जहां जाइ तहां गोर
दादू स्वर्ग पयालमैं, कठिन कालका सोर ६९
दादू सब मुख मांहि कालकै, माड्या माया जाल
दादू गोर मसाण मैं, झंखै स्वर्ग पयाल ७०
दादू मडा मसांणका, केता करै डफांण
मृतक मुरदा गोरका, बहुत करै अभिमान
राजा राणा रावभै, मै खानों सिर खान
माया मोह पसारे एता, सब धरती असमान ७१
पंच तत्वका पूतला, यहु पिंड सवारा
मंदिर माटी मांसका, बिनसत नहीं बारा
हाड चांम का पींजरा, बिचि बोलण हारा
दादू तामै पैस करि, बहु कीया पसारा ७२
बहुत पसारा करि गया, कुछ हाथ न आया
दादू हरिकी भक्ति बिन, प्राणी पछि ताया ७३

माणस जल का बुद बुदा, पाणी का पोटा
दादू काया कोटमें, मै वासी मोटा ७४
बाहरि गढ निर्भय करे, जीवे के तांई
दादू माहें काल है, सो जाणै नांही ७५

चित कपटी० ।

दादू साचे मतै साहिब मिलै, कपट मिलैगा काल
साचे परम पाईए, कपट काया मैं साल ७६

काल चितावणी० ।

मनहीं मांही मीच है, सारैकै सर लाल
जे कुछ व्यापै राम विन, दादू सोई काल ७७
दादू जति लहरि विकार की, काल कमल में सोय
प्रेम लहरि सो पीवकी, भिन्न भिन्न यों होय ७८
दादू काल रूप मांहबसैं, कोई न जाणै ताहि
ए कूडी करणी कालहै, सब काहूंकू खाय ७९
दादू विख अमृत घटमै बसै, दोन्यूं एकै ठाम
माया विषै विकार सब, अमृत हरिका नाम ८०
दादू कहां सु महमद मीर था, सब नबियौं सिरताज
सोभी मरि माटी हूवा, अमर अलह का राज८१
केते मरि माटी हूए, बहुत बडे बलिवंत
दादू केते ह्वैगए, दानां देव अनंत८२
दादू धरती करते एक डग, दरिया करते फाल
हाकूं परबत फाडते, सो भी खाये काल ८३
दादू सब जग कंपै कालथैं, ब्रह्मा विष्णु महेश
सुर नर मुनिजन लोक सब, स्वर्ग रसातल सेष

चंद सूर धर पवन जल, ब्रह्मंड खंड परवेस
सो काल डरै करतार थैं, जय जय तुम्ह आदेस ८४
पवना पाणी धरती अंबर, बिनसै रवि ससि तारा
पंचतत्त्व सब माया बिनसै, मानष कहा बिचारा ८५
दादू बिनसै तेजके, माटीके किस मांहि
अमर उपावण हारहै, दूजा कोई नांहि ८६

इति तिरस्कृता

मनहीं माहै ह्वै मरै, जीवै मनहीं मांहि
साहिब साखी भूतहै, दादू दूषण नांहि ८७

अक्षर ईरस

हीरै मांणक मतक काल, ज्यूं कपि त्यूं करि दादू टाल ८८

इति कालको अंग संपूर्ण ॥ अंग २५ ॥ साखी २८३ ॥

॥ अथ सजीवनिको अंग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू जे तूं जागी गुरमुखी, तौ लेणा तत्त्व बिचार
गहि आवध गुर ज्ञानका, काल पुरुष कौं मारि २
नाद ब्यंद सौं घट भरै, सो जोगी जीवै
दादू काहे कौं मरै, रामरस पीवै ३
साधूजनकी बासनां, सब्द रहै संसार
दादू आतम ले मिलै, अमर उपावन हार ४
राम सरीष हैरहै, यहु नाही उणहार

दादू साधू अमर है, जिनसै सब संसार ५
जे कोई सेवै राम कूं, तौ राम सरीखा होय
दादू नाम कबीरजूं, साखी बोलै सोय ६
अरथ न आया सो गया, आया सो क्यूं जाय
दादू तन मन जीवतां, अपा ठौर लगाय ७

दया बीनती० ।

दादू कहै सब रंग तेरे तैं रंग, तुंहीं सब रंग मांहि
सब रंग तेरे तैं कीये, दूजा कोई नांहि ८

सजीवनि० ।

छूटै दंद तौ लागै बंद, लागै बंद तौ अमर कंद
अमर कंद, दादू आनंद ९
दादू कहां जम जोग भंजीये, कहां काल कौं दंड
कहां मीच कौं मारीये, कहां जरा सतखंड १०
अमर ठौर अबिनासी आसण, तहां निरंजन लागि रहे
दादू जोगी जुगि जुगि जीवै, काल ब्याल सब सहज गए ११
रोम रोम लय लाइ धुनि, ऐसैं सदा अखंड
दादू अविनासी मिलै, तौ जम कौं दीजै दंड १२
दादू जरा काल जामण मरण, जहां जहां जीव जाय
भक्ति परायण लीन मन ताकौं काल न खाय १३
मरणा भागा मरण थैं, दुखैं नाठा दुख
दादू भय सौं भयगया, सुखैं छूटा सुख १४

मुक्तिअमोक्ष० ।

जीवन मिलै सु जीवते, मुंये मिलै मरि जाय
दादू दून्यू देखि करि, जहां जाणैं तहां जाय १५

सजीवन० ।

दादू साधन सब कीया, जब उन मन लागा मन
दादू अस्थीर आतमां, यो जुग जुग जीवै जन १६
शहित सती लागि रहु, तौ कलि अजरावर होय
दादू देखि बिचारि करि, जुदा न जीवै कोय १७
जेती करणी कालकी, तेती प्रहरि प्राण
दादू आतम राम सूं, जेतुं खरा सुजाण १८
बिख अमृत घट मे बसै, बिरला जाणै कोय
जिन बिष खाया ते मूये, अमर अमी सों होय १९
दादू मरही मरिंह, जीवै नाही कोय
सांई कहिये जीवता, जे कलि अजरावर होय २०
दादू तजि संमार सब, रहै निराला होय
अविनासी कै आसिरै, काल न लागै कोय २१
जागहु लागहु रामसूं, रैणि विहाणी जाय
सुमरि सनेही आपणां, दादू काल न खाय २१
दादू जागहु लागहु रामसों, छाडहु बिषै विकार
पीवहु जीवहु राम रस, आतम साधन सार २२

स्मरण नाम निरसंसय ० ।

मरै त पावै पीव कौं, जीवै त बंचै काल
दादू निर्भय नाम ले, दून्यूं हाथ दयाल २४

करुना ० ।

दादू जाता देखिये, लाहा मूल गमाय
साहिब की गति अगम है, सो कुछ लखी न जाय २५

स्मरण नाम निरसंसय ० ।

दादू मरणै कों चल्या, मजीवन के साथ

दादू लाहा मूलसौं, दूंन्यूं आएं हाथ २६

सजीवन ०।

साहिब मिलैत जीविये, नहीं तो जीवै नांहि
भावै अनंत उपाइ करि, दादू मूंवा मांहि २७
सजीवन साधै नहीं, ताथैं मरि मरि जाय
दादू पीवै रामरस, सुख मैं रहै समाय २८
जे जन बेधे प्रीत सौं, सो जन सदा सजीव
उलटि समाना आप मै, अंतर नाहीं पीव २९
दिन दिन लहुडे हूंहि सब, कहै मोटा होता जाय
दादू दिन दिन ते बडे, जे रहै राम ल्यौलाय ३०
न जाणौं हांजी चुप गहि, मेटि अग्नि की झाल
सदा सजीवन स्मरिए, दादू बंचै काल ३१

मुक्ति अभाक्ष० ।

दादू जीबत छूटै देह गुण, जीवत मुक्ता होय
जीवत काटै कर्म सब, मुक्ति कहावै सोय ३२
जीवत जगपतिकूं मिले, जीवत आत्म राम
जीवत दर्सन देखिये, दादू मन विश्राम ३४
जीवत पाया प्रेम रस, जीवत पीया अघाय
जीवत पाया स्वाद सुख, दादू रहे समाय ३५
जीवत भागे भ्रम सब, छूटे कर्म अनेक
जीवत मुक्ति सदगति भये, दादू दर्सन एक ३६
जीवत मेला नां भया, जीवत प्रसन होय
जीवत जगपति नां मिले, दादू बूडे सोय ३७
जीवत दूतर नां तिरे, जीवत लंघे न पार

जीवत निर्भय नां भये, दादू ते संसार ३८
जीवत प्रगट नां भया, जीवत प्रचा नांहि
जीवत न पाया पीवकूं, बूडे भव जल मांहि ३९
जीवत पद पाया नहीं, जीवत मिले न जाय
जीवत जे छूटे नहीं, दादू गए विलाय ४०
दादू छूटै जीवतां, मूंवां छूटै नांहि
मूंवां पीछे छूटिए, तो सब आये उस मांहि ४१
दादू मूंवां पीछे मुक्ति बतावे, मूंवां पीछें मेळा
मूंवां पीछें अमर अभय पद, दादू भूले गहिला ४२
मूंवां पीछे वैकुंठ वासा, मूंवां स्वर्ग पठावै
मूंवां पीछे मुक्ति बतावै, दादू जग बोरावै ४३
मूंवां पीछे पद पहुंचावै, मूंवां पीछै तारै
मूंवां पीछें सदगति होवै, दादू जीवत मारै ४४
मूंवां पीछ भक्ति वतावै, मूंवां पीछै सेवा
मूंवां पीछें संजम राषै, दादू दोजग देवा ४५

सजीवन ०

दादू धरतीका साधन कीया, अंबर कूंण अभ्यास
रवि ससि किस आरंभथै, अमर भये निज दास ४६
साहिब मारे ते मुए, कोई जीवे नांहि
साहिब राखे ते रहे, दादू निज घर मांहि ४७
जे जन राखे रामजी, अपणे अंग लगाइ
दादू कुछ व्यापै नहीं, जे कोटि काल झखिजाय ४८

इति सजीवनको अंग संपूण ॥ अंग २६ साषी ॥ १३१ ॥

॥ अथ पारषकौ अंग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरदेवत:
बंदनं सर्बसाधवा, प्रणामं पारंगत: १
मन चित आत्म देखिये, लागा है किस ठोर
जहां लागा तैसा जाणिये, का दादू देखै और २

साधु पारष लक्षण० ।

दादू साधु परखिये, अंतर आत्म देख
मन माँहैं माया रहै, कै आपै आप अलेख ३

पारख अपारष० ।

दादू मनकी देखि करि, पीछै धरिये नाम
अंतर गतिकी जे लखै, तिनकी मैं बलि जाम ४
यहु परख सराफी ऊपली, भीतरकी यहु नांहि
अंतरकी जाणै नहीं, तार्थें खोटा खांहि ५
दादू जे नाहीं सो सब कहै, है सो कहै न कोय
खोटा खरा परखिये, तब ज्यूंथा त्यूंहीं होय ६

साधु पारष लक्षण० ।

घटकी भांनि अनीति सब, मनकी मेटि उपाधि
दादू परहरि पंचकी, राम कहै तें साधु ७
अर्थ आया तब जांणीये, जब अनर्थ छूटै
दादू भांडा भ्रमका, गिरि चोडै फूटै ८

पारष अपारष० ।

दादू दूजा कहिबेकूं रह्या, अंतर डार्या धोय
ऊपर की ए सब कहैं, मांहि न देखै कोय ९

दादू जैसे मांहै जीव रहै, तैसी आवै बास
मुख बोलै तब जाणिये, अंतरका प्रकास १०
दादू ऊपरि देखकरि, सबको राखै नाम
अंतर गतिकी जे लखै, तिनकी मैं बलि जाम ११

दया निर्बैरता० ।

तन मन आत्म एकहै, दुजा सब उणहार
दादू मूल पाया नहीं, दुबध्या भ्रम बिकार १२

जग जन बिपरीत० ।

कायाके सब गुण बंधे, चोरासी लख जीव
दादू सेवक सो नहीं, जे रंग राते पाव १३
काया के बसि जीव सब, ह्वैगए अनंत अपार
दादू काया बसिकरै, निरंजन निराकार १४

नर बिढरूप० ।

मति बुधि बिवेक बिचार बिन, माणस पसू समान
समझाया समझै नहीं, दादू परम गियान १५
सब जीव प्राणी भूतहैं, साधु मिलै तब देव
ब्रह्म मिलै तब ब्रह्म है, दादू अलख अभेव १६

कर वृतिकर्म० ।

दादू बंध्या जीवहै, छूटा ब्रह्म समान
दादू दून्यूं देखिये, दूजा नाहीं आन १७
कर्मूंके बसि जीवहै, कर्म रहित सो ब्रह्म
जहां आत्म तहां पर आत्मां, दादू भागा भ्रम १८

पारष अपारष० ।

काचा उछलै ऊफणैं, काया हांडी मांहि

दादू पाका मिल रहै, जीव ब्रह्म द्वै नांहि १९
दादू बांधे सुरतवांधे बाजै, एहा सोधिरु लीज्यो
रामसनेही साधू हाथैं, वेगा मोकलि दीज्यो २०
प्राण पारखु जोंहरी, मन षोटा ले आवै
खोटा मनके माथै मारै, दादू दूरि उडावै २१
श्रवना है नैना नहीं, ताथैं खोटा खांहि
ज्ञान बिचार न ऊपजै, साच झूठ समझांहि २२

साच० ।

दादू साचा लीजीये, झूठा दीजै डारि
साचा सनमुख राखिये, झूठे नेह निवारि २३
साचेकों साचा कहै, झूठकों झूठा
दादू दुबिध्या को नहीं, ज्यूं था त्यूं दीठा २४

पारष अपारष० ।

दादू हीरेकूं कंकर कहै, मूर्ख लोक अजाण
दादू हीरा हाथले, परखै साधु सुजाण २५
हीरा कौडी नां लहै, मूर्ख हाथ गंवार
पाया पारख जोंहरी, दादू मोल अपार २६
अंधे हीरा परखिया, कीया कोडी मोल
दादू साधू जोंहरी, हीरे मोल न तोल २७

सुगुरा नगुरा० ।

सगुरा नगुरा परखिये, साधु कहैं सब कोय
सगुरा साचा नगुरा झूठा, साहिब के दरि होय २८
दादू सगुरा सति संजम रहै, सनमुख सिरजनहार
नगुरा लोभी लालची, भूंचै बिषै विकार २९

कर्ता कसौटी० ।

खोटा खरा परखिये, दादू कसि कसि लेय
साचा हैलो राखिवे, झूठा रहण न देय ३०

पारष अपारुष० ।

दादू खोटा खरा करिदेवै पारष, तो कैसै बनिआवै
षरे खोटेका न्याव नबेरै, तब साहिबके मन भावै ३१
दादू जिन्हैं ज्यूं कही तिन्है त्यूं मानी, ज्ञान बिचार न कीन्हा
खोटा खरा जीव परषि न जांनै, झूठ साच करि लीन्हां ३२

कर्ता कसौटी० ।

जे निधि कहीं न पाईये, सो निधि घर घर आहि
दादू महिंगे मोल विन, कोई न लेवै ताहि ३३
खरी कसौटी कीजिये, ज्ञानी बधती जाय
दादू साचा परखिये, महिंगे मोल बिकाय ३४
दादू रांमकसै सेवक खरा, कदे न मोडै अंग
दादू जबलग रामहै, तबलग सेवक संग ३५
दादू कसि कसि लीजिये, यहुं ताते प्रमाण
खोटा गांठि न बांधिये, साहिब के दीवान ३६
खरी कसौटी पीवकी, काई बिरला पहुचण हार
जे पहुचे ते ऊबरे, ताइ कीये तत्व सार ३७
दादू साहिब कसै सेवक खरा, सेवक कों सुख होय
साहिब करैसु सब भला, बुरा न कहिए कोय ३८

इति पारषको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग २७ ॥ साषी २१९६ ॥

॥ अथ उपजणको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १

विचार० ।

दादू मायाका गुण बलकरै, आपा उपजै आय
राजस तामस सात्वकी, मन चंचल ह्वैजाय २
आपा नाही बलमिटै, त्रिबिधि तिमर नहीं होय
दादू यहु गुण ब्रह्मका, सुणि समाना सोय ३

उपजनि० ।

दादू अनुभव उपजी गुणमई, गुणहीं पैले जाय
गुणहीं सो गहि बंधिया, छूटै कौण उपाय ४
दोय पक्ष उपजी पर हैरै, नृपक्ष अनुभव सार
एक राम दूजा नहीं, दादू लेहु बिचार ५
दादू काया व्यावर गुणमई, मन मुख उपजै ज्ञान
चौरासी लष जीवकों, इस मायाका ध्यान ६
आत्म उपजि अकासकी, सुणि धरती की बाट
दादू मार्ग गैबका, कोई लखै न घाट ७
आत्म बोधी अनभई, साधू नृपक्ष होय
दादू राता राममों, रस पीवैगा सोय ८
प्रेम भक्ति जब उपजै, निहचल सहज समाधि
दादू पीवै रामरस, सतगुरु के प्रसाद ९
प्रेम भक्ति जब ऊपजै, पंगुल ज्ञान बिचार
दादू हरिरस पाइये, छूटै सकल बिकार १०
दादू बंझ बियाईयं आत्मा, उपज्या आनंद भाव

सहज सील संतोष सत, प्रेम मगन मन राव ११

निंदा० ।

दादू जब हम ऊजड चालते, तब कहते मार्ग मांहि
दादू पहुचे पंथचलि, कहैं यहु मार्ग नांहि १२

उपजनि० ।

पहिली हम सब कुछ कीया, भ्रम कर्म संसार
दादू अनुभव ऊपजी, राते सिरजनहार १३
दादू सोई अनुभव सोई उपजी, सोई सब्द तत्व सार
सुणताही साहिब मिलै, मनके जांहि बिकार १४

प्रचय पचाङ्गासु उपदेश० ।

पारब्रह्म कह्या प्राणसौं, प्राण कह्या घट सोय
दादू घट सबसौं कह्या, बिष अमृत गुण दोय १५
दादू मालिक कह्या अरवाहसूं, अरवाह कह्या औजूद
औजूद आलमसूं कह्या, हुकम खबर मौजूद १६

उपजाणि० ।

दादू जैसा ब्रह्म है, तैसी अनभव उपजी होय
जैसा है तैसा कहै, दादू बिरला कोय १७

इति उपजाणिकौ अग संपूर्ण ॥ अग २८। साषी १२१८६ ॥

॥ अथ दयानिर्वैरताको अंग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
आपा मेटै हरिभजै, तनमन तजै बिकार
निर्बैरी सब जीवसौं, दादू यहु मत सार २

दादू निर्वैरी निज आत्मां, साधुनका मत सार
दादू दूजा राम बिन, बैरी मंझि बिकार ३
निर्वैरी सब जीवसौं, संत जन सोई
दादू एकै आत्मां, वैरी नहीं कोई ४
दादू सब हम देख्या सोधिकरि, दूजा नांही आन
सबघट एकै आत्मा, क्या हिंदू मुसलमान ५
दादू नारि पुरुषका नांमधरि, इहि संसै भ्रम भुलान
सब घट एकै आत्मां, क्या हिंदू मुसलमान ६
दोन्यूं भाई हाथ पग, दोन्यूं भाई कान
दुन्यूं भाई नैनहै, हिंदू मुसलमान ७
दादू सैसा आरसी, देखत दूजा होय
भ्रम गया दुविध्या मिटी, तब दूसर नांहीं कोय ८
किस सो वैरी हैरह्या, दूजा कोई नांहि
जिसके अंग थैं ऊपजे, सोई है सब मांहि ९
दादू सबघट एकै आत्मां, जाणैं सो नीका
आपा परमैं चीह्नि ले, दर्सन है पीवका १०
काहे कों दुख दीजिये, घट घट आतम राम
दादू सब संतोषिये, यहु साधू का काम ११
काहकूं दुख दीजिय, सांई है सब मांहि
दादू एकै आत्मा, दूजा कोई नांहि १२
साहिब जीकी आत्मां, दीजै सुख संतोष
दादू दूजा को नहीं, चौदह तीन्यूं लोक १३
दादू जब प्राण पिछाणैं आपकूं, आतम सब भाई
सिरजनहारा सबनका, तासों ल्यो लाई १४

आत्म राम बिचार करि, घट घट देव दयाल
दादू सब संतोषिये, सब जीऊं प्रतपाल १५
दादू पूर्णब्रह्म बिचारले, दुती भाव करि दुरि
सबघट साहिब देखिये, रामरह्या भरपूरि १६
दादू मंदिर काचका, मर्कट सुनहां जाय
दादू एक अनेकहै, आप आपकों खाय १७
आत्म भाई जीव सब, यक पेट परवार
दादू मूढ बिचारये, तो दूजा कोण गंवार १८

अदया हिंसा ।

दादू सूका सहजै कीजिये, नीला भानै नांहि
काहेकूं दुख दीजिये, साहिब है सब मांहि १९

दयानिर्वैरता ।

घट घटके उणहार सब, प्राण परस ह्वै जाय
दादू एक अनेक ह्वै, बरतै नांनां भाय २०
आए एकंकार सब, सांई दीए पठाय
दादू न्यारे नामधरि, भिन्न भिन्न ह्वै जाय २१
आए एकंकार सब, सांई दीए पठाय
आदि अंत्य सब एकहै, दादू सहजि समाय २२
आत्म देव अराधिये, बिरोधिय न कोय
आराधे सुख पाइए, बिरोधे दुख होय २३
दादू सम करि देखिये, कुंजर कीट समान
दादू दुबिध्या दुरिकरि, तजि आपा अभिमान २४

अदया हिंसा ।

दादू अरस खुदायका, अजरावर का थान

दादू मो क्यूं ढाहिये, साहिबका नीसान २५
दादू आप चिणावे देहुरा, तिसका करहि जतंन
प्रत्यक्ष परमेस्वर कीया, सो भानैं जीव रतंन २६
दादू मसीति संवारी माणसूं, तिसकूं करै सलाम
अैन आप पैदाकीया, सो ढाहै मुसलमान २७
दादू जंगल मांहे जीवजे, जगथैं रहै उदास
भय भीत भयानक राति दिन, निहचल नांहीं बास
बाचा बंधी जीव सब, भोजन पाणी घास
आत्म ज्ञान न ऊपजै, दादू करहि बिनास २८
दादू काला मुहकरि करदका, दिलथैं दूरि निवारि
सब सुर्ति सुबहांनकी, मुंला मुगध न मारि २९
दादू गला गुसेका काटिये, मीयां मनीकूं मारि
पंचू बिसमिल कीजिये, ए सब जीव उबारि ३०
बैर बिरोधै आतमां, दया नहीं दिल मांहि
दादू मूर्ति रामकी, ताकूं मारण जांहि ३१

दयानिर्वैरता० ।

कुल आलम यके दीदम, अरवाहे इख लास
बद अमल बद कारदुई, पाक यारां पास ३२
काल झाल थैं काटिकरि, आत्म अंग लगाय
जीव दया यहु पालिये, दादू अमृत षाय ३३
दादू बुरा न बांछै जीवका, सदा सजीवन सोय
प्रलय विषै बिकार सब, भाव भक्ति रत होय ३४

मछरईर्षा० ।

नां को वैरी नां को मीत, दादू राम मिलनकी चीत ३५

इति दयानिर्वैरताको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग २९ ॥ साषी ॥

॥ अथ सुंदरिको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं; नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १

सुंदरि बिलाप० ।

आरतिवंती सुंदरी, पल पल चाहै पीव
दादू कारण कंतके, ताला बेली जीव २
काहे न आवहु कंतघर, क्यूं तुम्ह रहे रिसाय
दादू सुंदरि सेजपरि, जन्म अमोलिक जाय ३
आत्म अंतर आवतूं, याहै तेरी ठौर
दादू सुंदरि पीवतूं, दूजा नांहीं और ४
दादू पीव न देख्या नैन भरि; कंठ न लागी धाय
सूती नहीं गल बांहदे, बिचही गई बिलाय ५
सुर्ति पुकारै सुंदरी, अगम अगोचर जाय
दादू बिरहणि आतमा, उठि उठि आतुर धाय ६
सांई कारण सेज संवारी, सबथैं सुंदर ठौर
दादू नारी नाह बिन, आणि बिठाए और ७
कोईक औगुण मन बस्या, चितथैं धरी उतारि
दादू पति बिन सुंदरी, हांडैं घर घर बारि ८

आन लगानि बिभचार० ।

प्रेम प्रिति सनेह विन, सब झूठे सिंगार
दादू आतम रत नहीं, क्यूं मानैं भर्तार ९

सुंदरि बिलाप० ।

दादू हूं सुख सूती नींदभरि, जागै मेरा पीव

क्यूं करि मेला होइगा, जागै नांहीं जीव १०
सखी न खेलै सुंदरी, अपणैं पिव नौं जागि
स्वाद न पाया प्रेमका, रही नहीं उर लागि ११
पंच दिहाडे पीवसौं, मिलि काहे न खेलै
दादू गहली सुंदरी, क्यूं रहै अकेलै १२
सखी सुहागनि सबकहै, हूं र दुहागनि आहि
पीवका महल न पाइए, कहां पुकारौं जाय १३
सखी सुहागनि सब कहैं, कंत न पूछै बात
मनसा बाचा क्रमनां, मुरछि मुरछि जीव जात १४
सखी सुहागनि सब कहैं, पीवसूं मिलन होय
निस बासुरि दुख पाइए, यहु बिथा न जाणै कोय १५
सखी सुहागनि सब कहैं, प्रगट न खेलै पीव
सेज सुहागनि पाइए, दुखिया मेरा जीव १६

आन लगनी बिभचार० ।

दादू पुरुष पुरातन छाडि करि, चली आनकै साथ
लोभी संगथैं बीछुड्या, खडी मरोडै हाथ १७

सुंदरि बिलाप० ।

सुंदरी कबहूं कंतका, मुखसूं नाम न लेय
अपने पीवके कारणैं, दादू तन मन देय १८
नैन बैन करि वारणैं, तन मन पिंड प्राण
दादू सुंदरी बलिगई, तुमपरि कंत सुजाण १९
तनभी तेरा मनभी तेरा, तेरा पिंड प्राण
सब कुछ तेरा तूं है मेरा, यहु दादू का ज्ञांन २०
सुंदरि मोहै पीवकूं, बहुत भांति भर्तार

ज्यूं दादू रिझावै रामकूं, अनंत कला करतार २१
नदियां नीर उलंघि करि, दरिया पैली पार
दादू सुंदरि सो भली, जाइ मिलै भरतार २२

। सुंदरि सुहाग० ।

प्रेम लहरि गहि लेगई, अपनें प्रीतम पास
आत्म सुंदरि पीवकूं, मिलै दादू दास २३
सुंदरिकों सांई मिल्या, पाया सेज सुहाग
पीवसों खेलै प्रेमरस, दादू मोटे भाग २४
दादू सुंदरि देहमैं, सांई कों सेवै
राती अपणे पीवसों, प्रेम रस लेवै २५
दादू निर्मल सुंदरी, निर्मल मेरा नांह
दून्यूं निर्मल मिलि रहे, निर्मल प्रेम प्रवाह २६
सांई सुंदरि सेजपरि, सदा एक रस होय
दादू खेलै पीवसूं, ता सम और न कोय २७

इति सुंदरिको अङ्ग संपूरण ॥ अङ्ग ३० ॥ साषी १२४८ ॥

॥ अथ कस्तूरिया मृगको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू घट कस्तूरी मृगके, भ्रमत फिरै उदास
अंतर गति जाणै नहीं, तार्थें सूंघै घास २
दादू सब घटमै गोविंद है, संगि रहै हरि पास
कस्तूरी मृगमै बसै, सूंघत डोलै घास ३

दादू जीव न जाणै रामकों, राम जीवके पास
गुरुके सबदौं बाहिरा, तातैं फिरै उदास ४
दादू जा कारण जग ढूंढिया, सो तौ घटही मांहि
मै तैं पड़दा भ्रमका, तातैं जानत नांहि ५
दादू दूरि कहैतें दूरिहै, राम रह्या भरपूर
नैनहु बिन सूझै नहीं, तातैं रविकन दूरि ६
औडो हूवो पाणमैं, नल धाऊं संझ
न जाता ऊंपाणम, तांई कयां उपंव ७
सदा समीप रहै संग सनमुख, दादू लखै न गुझ
स्वप्नेहा समझै नहीं, क्यूं करि लहै अबूझ ९
दादू सब घट मांहें रमिरह्या, बिरला बूझै कोय
सोही बूझै रामकूं, जे राम सनेही होय १०
दादू जडमत जीव जाणै नहीं, परम स्वाद सुख जाय
चेतन समझै स्वाद सुख, पीवै प्रेम अघाय ११
दादू जागत जे आनंद करै, सो पावै सुख स्वाद
सूतैं सुख न पाईये, जन्म गवाया बाद १२
दादू जिसका साहिब जागणां, सेवक सदा सुचेत १३
सावधान सनमुख रहै, गिरि गिरि पडै अचेत १३
दादू सांई सावधान, हमहीं भये अचेत
प्राणी राखि न जांणहीं, तातैं निरफल खेत १४

सगुना निगुना कृतघ्नी० ।

दादू गोविंद के गुण बहुतहैं, कोई न जाणै जीव
अपणी बूझै आप गति, जे कुछ कीया पीव १५

इति कस्तूरिया मृगको अंग संपूर्ण ॥ अंग ३१ ॥ साषी २२७३ ॥

॥ अथ निंदाको अंग ॥

—*—

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १

मछर ईर्षा० ।

दादू निरमल मल नहीं, राम रमैं समभाय
दादू अवगुण काढि करि, जीव रसातल जाय २
दादू जबहीं साधु संताइये, तबहीं ऊंध पलट
आकास धसै धरणी खिसै, तीन्यूं लोक गरक ३

निंदा० ।

दादू जिहिघर निंदा साधुकी, सो घर गए समूल
तिनकी नींव न पाईए, नांम न ठांम न धूल ४
दादू निंदा नाम न लीजिये, स्वप्नै ही जिन होय
नां हम कहै न तुम सुणों, हमजिन भाखै कोय ५
दादू निंदा कीयें नरक है, कीट पड़ै मुख मांहि
राम विमुख जांमै मरै, भग मुख आवै जांहि ६
दादू निंदक बपुरा जिन मरै, पर उपकारी सोय
हमकों करता ऊजला, आपण मैला होय ७
दादू जिहिं विध आतम उधरै, परसैं प्रीतम प्राण
साध सबदकों नीदणा, समझै चतुर सुजाण ८

[illegible] पा० ।

दादू अणंदेख्या अनर्थ करै, कलि पृथमी का पाप
धरती अंबर जब लगैं, तब लग करै कलाप ९
दादू अणदेख्या अनर्थ कहैं, अपराधी संसार

जदि तदि लेखा लेइगा, समर्थ सिरजनहार १०

दादू डरिये लोकथैं, कैसी धरे उठाय
अणदेखी अजगैबकी, ऐसी कहै बणाय ११

अमिट पाप प्रचण्ड० ।

दादू अमृतकों बिष बिषकों अमृत, फेरि धरैं सब नाम
निर्मल मैला मैला निर्मल, जांहिंगे किस ठाम १२

मछरईरपा० ।

दादू साचेकों झूठा कहैं, झूठकों साचा
राम दुहाई काढये, कंठ थैं बाचा १३
झूठ न कहिये साचकों, साच न कहिये झूठ
दादू साहिब मानै नहीं, लागै पाप अखूट १४
दादू झूठ दिखावै साचकों, भयानक भय भीत
साचा राता साचसों, झूठ न आणै चीत १५

निंदा० ।

दादू ज्यूं ज्यूं निंदे लोक बिचारा, त्यूं त्यूं छीजै रोग हमारा १६

मछरईरपा० ।

साचेकों झूठा कहै, झूठा साच समान
दादू अचिरज देखिया, यहु लोगों का ज्ञान १७

इति निंदाको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग ३२ ॥ साषी २२६० ॥

॥ अथ नगुणाको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगत १

सगुना नगुना कृतघनी० ।

दादू चंदन बामनां, बसे बटाऊ आय
सुखदाई सीतल कीये, तीनूं ताप नसाय
काल कुहाडा हाथले, काटण लागा ढाय
ऐसा यहु संसारहै, डाल मूल ले जाय २

अगिसुभाव अपरदा० ।

सतगुरु चंदन बामनां, लागे रहैं भवंग
दादू विष छाडै नहीं, कहा करै सतसंग ३
दादू कीडा नरक का, राख्या चंदन मांहि
उलटि अपूठा नरकमें, चंदन भावै नांहि ४
सतगुरु साधु सुजाणहै, शिषका गुण नहीं जांय
दादू अमृत छाडि करि, विषै हलाहल खाय ५
कोटि बरष लौं राषिये, बंसा चंदन पास
दादू गुण लीयें रहै, कदे न लागै बास ६
काटि बरषलौं राखिये, पथर पाणी मांहि
दादू आडा अंगहै, भीतरि भेदै नांहि ७
काटि बरषलौं राखिये, लोहा पारस संग
दादू रोमका अंतरा, पलटै नाही अंग ८
कोटि बरषलौं राखिये, जीव ब्रह्म संग दोय
दादू मांहै बासनां, कदे न मेला होय ९

सगुना नगुना कृतघनी० ।

मूसा जलता देखि करि, दादू हंस दयाल
मांनसरोवर ले चल्या, पक्षां काटै काल १०
सब जीव भवंगम कूपमै, साधु काटैं आय
दादू विषहर विषभरे, फिरि ताही कों खाय ११
दादू दूध पिलाइए, विषहर विष करि लेय
गुणका औगुण करिलीया, ताहीकों दुख देय १२

अगिसुभाव अपकट० ।

विनहीं पावक जलि मूवा, जवासा जल मांहि
दादू सूकै सीचतां, तौ जलकों दूषण नांहि १३

सगुना नगुना कृतघ्नी० ।

सुफल वृछ परमार्थी, सुख देवै फल फुल
दादू ऊपरि बैसिकरि, नगुना काटै मूल १४
दादू सगुना गुन करै, नगुना मानै नांहि
नगुना मरि निर्फल गया, सगुना साहिब मांहि १५
नगुना गुण मानै नहीं, कोटि करै जे कोय
दादू सब कुछ सोंपियें, सो फिरि बैरी होय १६
दादू सगुना लीजीये, निगुना दीजे डारि
सगुणा सनमुख राखिये, नगुणा नेह निवारि १७
सगुणा गुण केते करै, नगुणा न मानैं एक
दादू साधू सब कहैं, नगुणा नरक अनेक १८
सगुणा गुण केते करै, नगुणा नाखै ढाहि
दादू साधु सब कहैं, नगुणा निर्फल जाय १९
सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मांनैं कोय

दादू साधू सब कहैं, भला कहां थैं होय २०
सगुणा गुण केते करै, निगुणा न मानै नीच
दादू साधू सब कहै, नगुणा के सिर मीच २१
साहिबजी सब गुण करै, सतगुरु के घट होय
दादू काढै काल मुख, नगुणा न मानैं कोय २२
साहिबजी सब गुण करै, सतगुरु माहै आय
दादू राखै जीवदं, नगुणा मेटै जाय २३
साहिबजी सब गुण करै, सतगुरुका दे संग
दादू परलय राखिले, निगुणा पलटै अंग २४
साहिबजी सब गुण करै, सतगुरु आडा देय
दादू तारै देखतां, नगुणा गुण नहीं लेय २५
सतगुरु दीया राम धन, रहै सुबुधि बताय
मनसा बाचा कर्मनां, बिलसै बितडे खाय २६
कीया कृत मेटै नहीं, गुणहीं मांहि समाय
दादू बधे अनंत धन, कबहूं कदे न जाय २७

इति नगुणाको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग १३ ॥ साषी २३१६ ॥

॥ अथ बीनतीको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १

करुणा० ।

दादू बहुत बुरा किया, तुम्हे न करणां रोस
साहिब समाईका धणी, बंदेको सब दोस २

दादू बुरा बुरा सब हम किया, सो मुख कह्या न जाय
निर्मल मेरा सांईयां, ताकूं दोष न लाय ३
सांई सेवा चार मैं, अपराधी बंदा
दादू दूजा का नहीं, मुझ सरीषा गंदा ४
दादू तिल तिलका अपराधी तेरा, रती रतीका चोर
पल पलका मै गुनहीं तेरा, बकसहु औगुन मोर ५
महा अपराधी एक मैं, सारे इहिं संसार
औगुन मेरे अतिघणें, अंत न आवै पार
बेमरजादा मति नहीं, ऐसे कीये अपार
मै अपराधी बापजी, मेरे तुमहीं एक अधार ६
दोस अनेक कलंक सब, बहुत बुरा मुझ मांहि
मैं कीये अपराध सब, तुमथैं छांना नांहि
गुनहगार अपराधी तेरा, भाजि कहां हम जाहिं
दादू देख्या सोधि सब, तुम्हबिन कहीं न समांहि ७
आदि अंत्यलौं आइकरि, सुकृत कछू न कीन्ह
माया मोह मद मछरा, स्वाद सबै चित दीन्ह
काम क्रोध संसय सदा, कबहूं नाम न लीन
पाखंड परपंच पापमै, दादू ऐसैं खीन ८

बीनती० ।

दादू बहु बंधनसौं बंधिया, एक विचारा जीव
अपनै बल छूटे नहीं, छोडन हारा पीव ९
दादू बंदीवानहै, तूं बंदी छोड दीवान
अब जिन राखो बंदमै, मीरा महरवान १०
दादू अंतर कालिमां, हिरदै बहुत विकार

प्रगट पूरा दूरि करि, दादू करै पुकार ११
सबकुछ व्यापै रामजी, कुछ छूटा नांहीं
तुम्ह थैं कहा छिपाइए, सब देखौ मांहीं १२
सबलसाल मनमैं रहै, राम विसरि क्यूं जाय
यहु दुख दादू क्यूं सहै, सांई करो सहाय १३
राखण हारा राखि तूं, यहु मन मेरा राखि
तुम्ह बिन दूजा को नहीं, साधू बोलै साखि १४
माया बिषै बिकार थैं, मेरा मन भागै
सोई कीजै सांईयां, तूं मीठा लागै १५
सांई दीजै सो रती, तूं मीठा लागै
दूजा खारा होय सब, सूता जीव जागै १६
ज्यूं आपै देखै आपकूं, सो नैनां दे मुझ
मीरा मेरा महर करि, दादू देखै तुझ १७

करुणा०।

दादू पछितावा रह्या, सकै न ठाहर लाय
अर्थ न आया रामके, यहु तन यौंहीं जाय १८

बीनती०।

दादू कहै दिन दिन नवत्तम भक्तिदे, दिन दिन नवत्तम नाम
दिन दिन नवत्तम नेहदे, मैं बलिहारी जाम १९
सांई संसै दूरि करि, करि संक्या का नास
भांनि भ्रम दुबिध्या दुख दारणं, समता सहज प्रकास २०

दया बीनती०।

नाहीं प्रगट ह्वैरह्या, है सो रह्या लुकाय
संइयां पडदा दूरि करि, तूं है प्रगट आय २१

दादू माया प्रगट ह्वैरहीं, यौं जे होता राम
अरस परस मिल षेलिते, सब जीव सबहीं ठाम २२
दया करै तब अंग लगावै, भक्ति अखंडित देवै
दादू दर्सन आप अकेला, दूजा हरि सब लेवै २३
दादू साध सिखावै आत्मा, सेवा दिढ करि लेउ
पारब्रह्मसूं बीनती, दया करि दर्सन देऊ २४
साहिब साधु दयाल है, हमहीं अपराधी
दादू जीव अभागिया, अविद्या साधी २५
सब जीव तौरै रामसौं, पै राम न तौरै
दादू काचे ताग ज्यूं, टूटे त्यूं जोरै २६

सजीवन० ।

फूटा फेरि सवार करि, ले पहुचावै वोर
ऐसा कोई ना मिलै, दादू गई बहोड़ि २७
ऐसा कोई ना मिलै, तन फेरि संवारै
बूडे थैं बाला करै, खै काल निवारै २८

प्रचयकरुनां बीनती० ।

गलै विलै करि बीनती, एक मेक अरु दास
अरस परस करुणां करै, तब दरवै दादू दास २९
सांई तेरे डर डरौं, सदा रहौं भय भीत
अजा सिंघ ज्यों भय घणां, दादू लीया जीति ३०

पोषमतपाल रक्षक० ।

दादू पलक मांहि प्रगट सहीं, जे जन करै पुकार
दीन दुषी तब देखिकरि, अति आतुर तिंहिं वार
आगैं पीछैं संग रहै, आ उठाए भार

साधु दुखी तब हरि दुखी, ऐसा सिरजनहार ३१
सेवक की रक्षा करै, सेवक प्रति पाल॰
सेवक की बाहर चढै, दादू दीन दयाल ३२

बीनती॰ ।

काया नाव समंदमैं, औघट बूडै आय
इंहि औसर एक अगाध बिन, दादू कौंण सहाय ३३
यहु तन भेरा भौ जला, क्यूं करि लंघै तीर
षेवट बिन कैसैं तिरै, दादू गहर गंभीर ३४
पिंड परोहन सिंधु जल, भवसागर संसार
राम बिनां सूझै नहीं, दादू खेवण हार ३५
यहु घट बोहिथ धारमैं, दरिया वार न पार
भय भीत भयानक देखि करि, दादू करी पुकार ३६
कलिजुग घोर अंधारहै, तिसका वार न पार
दादू तुम्ह बिन क्यूं तिरै, समर्थ सिरजनहार ३७
कायाके बसि जीवहै, कसि कसि बंध्या मांहि
दादू आतम राम बिन, क्यूं ही छूटै नांहि ३८
दादू प्राणी बंध्या पंचसौं, क्यूं ही छूटै नांहि
नीधण आया मारिये, यहु जीव काया मांहि ३९
दादू कहै तुम्ह बिन धणीन धोरी जीवका, यूंही आवै जाय
जे तूं सांई सत्यहै, तो बेगा प्रगट आय ४०
नीधण आया मारिये, धणी न धोरी कोय
दादू सो क्यूं मारिये, साहिब सिरपर होय ४१

दया बीनती॰ ।

राम बिमुख युग युग दुखी, लख चोरासी जीव

जामै मरै जग आतटै, राखण हारा पीव ४२

पोष प्रतिपाल रक्षक०।

समर्थ सिरजनहार है, जे कुछ करैसु होय
दादू सेवक राखिले, काल न लागै कोय ४३

बीनती०।

साँई साचा नामदे, काल झाल मिटि जाय
दादू निर्भय ह्वैरहै, कबहूं काल न खाय ४४
कोई नहीं कर्तार बिन, प्राण उधारण हार
जीयरा दुखिया राम बिन, दादू ईहि संसार ४५
जिनकी रक्षा तूं करै, ते उबरे करतार
जे तैं छाडे हाथ थैं, ते डुबे संसार ४६
राखण हारा एक तूं, मारण हार अनेक
दादू कै दूजा नहीं, तूं आपेही देख ४७
दादू जग ज्वाला जम रूपहै, साहिब राखण हार
तुम्ह बिच अंतर जिन पडै, तायैं करों पुकार ४८
दादू जहां तहां बिषै बिकार थैं, तुमहीं राखण हार
तन मन तुम्हकों सोंपिया, साचा सिरजन हार ४९

दया बीनती०।

दादू कहै गरक रसातल जातहै, तुम्ह बिन सब संसार
करगहि कर्ता काढिले, दे अवलंबन आधार ५०
दादू दौं लागी जग प्रजलै, घट घट सब संसार
हमथैं कछू न होतहै, तूं बरसि बुझांवन हार ५१
दादू आतम जीव अनाथ सब, कर्तार उबारै

राम निहोरा कीजिये, जिन काहू मारै ५२
अरस जमीं औजूदमैं, तहां तपै अफताब
सब जग जलता देखिकरि, दादू पुकारे साध ५३
सकल भवन सब आत्मा, निर्विष करि हरि लेय
पडदा है सो दूरि करि, कुसमल रहण न देय ५४
तन मन निर्मल आत्मा, सब काहूकी होय
दादू बिषै बिकारकी, बात न बूझै कोय ५५

बीनती० ।

समरथ धोरी कंध धरि, रथले ओर निवाहि
मार्ग माहि न मेलिये, पीछै बिडद लजाय ५६
दादू गगन गिरै तबको धरै, धरती धर छंडै
जे तुह्म छाडहु रामरथ, कंधको मंडै ५७
अंतरजामी एक तूं, आतमके आधार
जे तुह्म छाडहु हाथ थैं, तौ कोण संबाहण हार
तेरा सेवक तुम्हलगै, तुम्हहीं माथै भार
दादू डूबत रामजी, बेग उतारो पार ५८
सत छूटा सूरा तन गया, बल पोरुष भागा जाय
कोई धीरज नां धरै, काल पहूता आय
संगी थाके संगके, मेरा कछू न बसाय
भाव भक्ति धन लूटिये, दादू दुखी खुदाय ५९

पचयकरुणा बीनती० ।

दादू जीयरे जक नहीं, विश्राम न पावै
आत्म पाणी लूणज्यूं, ऐसैं होइ न आवै ६०

दया बीनती० ।

दादू कहै तेरी खूबी खूबहै, सब नीका लागै
सुंदर सोभा काढिले, सब कोई भागै ६१

बीनती० ।

तुम्हहो तैसी कीजियो, तो छूटैंगे जीव
हमहै ऐसी जिनकरो, मैं सदिकै जांऊं पीव ६२

अनाथों का आसिरा, निरधारों आधार
निर्धन का धन रामहै, दादू सिरजनहार ६३

साहिब दर दादू खडा, निसदिन करै पुकार
मीरां मेरा महर करि, साहिब दे दीदार ६४

दादू प्यासा प्रेमका, साहिब राम पिलाय
प्रगट प्याला देहु भरि, मृतक लेहु जिलाय ६५

अल्हा आले नूरका, भरि भरि प्याला देहु
हमकों प्रेम पिलाय करि, मतिवाला कर लेहु ६६

तुम्हकों हमसे बहुतहैं, हमकों तुम्हसे नांहि
दादू कों जिन परहरै, तूं रहु नैनहु मांहि ६७

तुम्ह थैं तबहीं होइ सब, दरस परस दर हाल
हम थैं कबहूं न होइगा, जे बीतहि युग काल ६८

तुम्हही तैं तुम्हकों मिलै, एक पलकमैं आय
हम थैं कबहूं न होइगा, कोटि कलप जे जाय ६९

छिनबिछोह० ।

साहिब सौं मिल खेलते, होता प्रेम सनेह
दादू प्रेम सनेह बिन, खरी दुहेली देह ७०

साहिब सौं मिल खेलते, होता प्रेम सनेह
प्रगट दर्सन देखते, दादू सुखिया देह ७१

करुना० ।

तुम्हकौं भावै और कुछ, हम कुछ कीया और
महर करो तौ छूटिए, नहीं तौ नाहीं ठौर ७२
मुझ भावै सो मैं कीया, तुझ भावै सो नांहि
दादू गुनह गारहै, मै देख्या मन मांहि ७३
खुसी तुम्हारी त्यूं करो, हमतौ मानी हारि
भावै बंदा बकसिए, भावै गहि कर मारि ७४
दादू जे साहिब लेखा लीया, तौ सीस काटि सूली दीया
महर मया करि फिल किया, तौ जीये जीये करी जीया ७५

इति बीनतीको अंग संपूर्ण ॥ अंग ३४ ॥ साखी १३६१ ॥

॥ अथ साक्षीभूतको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः

भ्रमविधुन० ।

सब देखण हारा जगतका, अंतर पूरै साखि
दादू स्यावति सो सही, दूजा और न राखि २
साही थैं मुझकौं कहै, अंतरजामी आप
दादू दूजा धंधहै, साचा मेरा जाप ३

कर्ता साक्षी भूत० ।

कर्ताहै सो करैगा, दादू साक्षी भूत
कौतिक हारा ह्वैरह्या, अणकर्ता अवधूत ४
दादू राजस करि उतपति करै, सात्विक करि प्रतिपाल
तामस करि प्रलय करै, निरगुण कौतिग हार ५
दादू ब्रह्म जीव हरि आत्मा, खेलै गोपी कान्ह
सकल निरंतर भरि रह्या, साक्षी भूत सुजाण ६

स्वकी मित्र सद्भता० ।

दादू जामण मरणां सानि करि, यहु पिंड उपाया
साईं दीया जीवकों, ले जगमैं आया
विष अमृत सब पावक पाणी, सतगुरु समझाया
मनसा वाचा कर्मना, सोइ फल पाया ७
दादू जाणै बूझै जीव सब, गुण औगुण कीजै
जाणि बूझि पावक पड़ै, दई दोस न दीजै ८
बुरा भला सिर जीवकै, होवै इसहीं मांहि
दादू कर्ता करि रह्या, सो सिर दीजै नांहि ९

साधु साक्षीभूत० ।

करर्ता ह्वैकरि कुछ करै, उस मांहि बंधावै
दादू उसकूं पूछिये, उत्तर नहीं आवै १०
दादू केई उतारै आरती, केई सेवा करि जाय
केई आय पूजा करै, केई खूलावै खाय
केई सेवक ह्वैरहे, केई साधू संगति मांहि
केई आइ दर्सन करै, हमथैं होता नांहि ११-

नां हम करै करावै आरती, नां हम पीवै पिलांवै नीर
करैं करावैं सांईया, दादू सकल सरीर १२
करै करावै सांईयां, जिन दिया अवजूद
दादू बंदा बीचिहै, सोभा कों मवजूद १३
देवै लेवै सबकौ, जिन सिरजे सब लोय
दादू बंदा महल मैं, सोभा करै सब कोय १४
करता साखी भूत १५

इति साक्षीभूतको अंग सपूर्ण ॥ अङ्ग ३५ ॥ साखी २४०६ ॥

॥ अथ बेलीको अङ्ग ॥

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
बंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू अमृत रूपी नामले, आत्म तत्व पोषै
सहजैं सहज समाधिमे' धरणी जल सोषै
पसरै तीन्यूं लोकमैं, लिपत नहीं धोखै
सो फल लागै सहजमै, सुंदर सब लोकै २
दादू बेली आत्मां, सहज फूल फल होय
सहज सहज सतगुरु कहै, बूझै बिरला कोय ३
जे साहिब सींचै नहीं, तो बेली कुमलाय
दादू सींचै सांईयां, तौ बेली बधती जाय ४
हरि तरवर तत्व आत्मां, बेली करि बिसतार
दादू लागै अमर फल, कोई साधू सींचणहार ५

दादू सूका रूखडा, काहे न हरिया होय
आपै सींचै अमीरस, सूफल फलिया सोय ६
कदे न सूकै रूखडा, जे अमृत सींच्या आप
दादू हरिया सो फलै, कछू न व्यापै ताप ७
जे घट रोपे रामजी, सींचे अमी अघाय
दादू लागै अमर फल, कबहूं सूकि न जाय ८
अमर बेलि है आत्मां, खार समंदां मांहि
सूकै खारे नीरसूं, अमर फल लागै नांहि ९
दादू बहुत गुणवंती बेलिहै, ऊगी कालर मांहि
सींचै खारै नीरसों, तातैं निपजै नांहि १०
बहु गुणवंती बेलिहै, मीठी धरती बाहि
मीठा पाणी सींचिये, दादू अमर फल खाय ११
अमृत बेली बाहिये, अमृतका फल होय
अमृतका फल खाइ करि, मुवा न सुणीये कोय १२
दादू बिषकी बेली बाहिये, बिषही का फल होय
बिषही का फल खाइ करि, अमर नहीं कलि कोय १३
सतगुरु संगति नीपजै, साहिब सींचण हार
प्राण वृक्ष पीवै सदा, दादू फलै अपार १४
दया धर्मका रूखडा, सतसों बधता जाय
संतोष सों फूलै फलै, दादू अमर फल खाय १५

इति बेलीको अङ्ग संपूर्ण ॥ अङ्ग ३६ ॥ साषी २४२१ ॥

॥ अथ अविहडको अङ्ग ॥

—— * ——

दादू नमो नमो निरंजनं, नमस्कार गुरुदेवतः
वंदनं सर्वसाधवा, प्रणामं पारंगतः १
दादू संगी सोई कीजिये, जे कलि अजरामर होय
नां वहु मरै न बीछूटै, नां दुख व्यापे कोय २
दादू संगी सोई कीजिये, जे अस्थिर इंहि संसार
नां वहु खिरै न हम खपै, ऐसी लेहु बिचारि ३
दादू संगी सोई कीजिये, सुख दुखका साथी
दादू जीवण मरणका, सो सदा संगाती ४
दादू संगी सोई कीजिये, जे कबहुं पलटि न जाय
आदि अंत्य विहडै नहीं, ता सनि यहु मन लाय ५
दादू अविहड आपहै, अमर उपावण हार
अविनासी आपै रहै, बिनसै सब संसार ६
दादू अविहड आपहै, साचा सिरजनहार
आदि अंत्य बिहडै नही, बिनसैव आकार ७
दादू अविहड आपहै, अविचल रह्या समाय
निहचल रमिता रामहै, जे दीसै सो जाय ८
दादू अविहड आपहै, कबहूं विहडै नांहि
घटै बधै नही एकरस, सब उपजि खपै उस मांहि ९
अविहड अंग विहडै नहीं, अपलट पलटि न जाय
दादू अघट एकरस, सबमै रह्या समाय १०

इति अविहड़को अङ्ग संपूर्ण ॥ अंग ३७ ॥ साषी २४४२ ॥

॥ अथ दूसरा भाग ॥

❀ श्रीरामाय नमः । श्रीदादू दयालवे नमः ❀

अथ स्वामी दादू दयालजी का पद लिख्यते

प्रथम राग गोडी । नाम निश्चय सूरातन ।

राम नाम नहीं छाडौं भाई, प्राण तजौं निकट जीव जाई । टेक
रती रती करि डारै मोहि, सांई संग न छाडौं तोहि १
भावै ले सिर करवत दे, जीवन मूर न छाडौं ते २
पावकमैं ले डारै मोहि, जरै सरीर न छाडौं तोहि ३
अब दादू ऐसी बनिआई, मिलौं गोपाल निसान बजाई ४

१ अन्य उपदेश० ।

रामनाम जिन छाडै कोई, राम कहत जिन निर्मल होई । टेक
राम कहत सुख संपति सार, रामनाम तिर लंघे पार १
राम कहत सुधिबुधि मति पाई, रामनाम जिन छाडो भाई २
राम कहत जिन निर्मल होई, राम नाम कहि कुसमल धोई ३
रामकहत को को नहीं तारे, यहु तत्व दादू प्राण हमारे ४

२ उपदेश० ।

मेरे मन भइया राम कहो रे,
रामनाम मोहि सहज सुनावै, उनहीं चरणमन लीन रहो रे । टेक
राम नाम ले संत सुहावै, कोई कहै सब सीस सहो रे
ताहीसूं मन जोरे राखौ, नीकै रासि लीये निबहो रे १
कहत सुनत तेरो कछू न जावै, पाप न छेद न सोई लहो रे
दादू रे जन हरिगुन गावो, कालही जालहीं फेरि दहो रे २

३ विरह० ।

कौंण विधि पाइएरे, मींत हमरा सोइ । टेक

पास पीव प्रदेस हैरे, जबलग प्रगटै नांहि
विन देखे दुख पाइए, यहु साले मन मांहिं १

जबलग नैन न देखिए, प्रगट मिलै न आइ
एक सेज संगही रहै, यहु दुख सह्या न जाइ २

तबलग नेडै दूरि हैरे, जबलग मिले न मोहि
नैन निकट नहीं देखिए, संग रहे क्या होइ ३

कहा करो कैसैं मिलैरे, तलफै मेरा जीव
दादू आतुर विरहणी, कारण अपणे पीव ४

४ विरह वीनती० ।

जीयरा क्यूं रहै रे, तुम्हरे दर्सण विन बेहाल । टेक

परदा अंतर करिरहे, हम जीवैं किहिं आधार
सदा संगाती प्रीतमा, अबकै लेहु उबार १

गोपि गुसांई ह्वैरहे, अबकाहे न प्रगट होइ
राम सनेही संगया, दूजा नाहीं कोइ २

अंतरजामी छिपि रहै, हमक्यू जीवैं दूरि
तुम्ह विन व्याकुल केसवा, नैन रहे जलपूरि ३

आप अप्रछन ह्वैरहे, हमको रैणि विहाइ
दादू दर्सण कारणै, तलफि तलफि जीव जाय ४

५ विरह उलाहण० ।

अजहूं न निकसत प्राण कठोर,

दर्सण विनां बहुत दिन बीते, सुंदर प्रीतम मोर । टेक

च्यारि पहर च्यारयूं जुग बीते, रैनि गमाई भोर

अवधि गई अजहूं नहीं आये, कतहूं रहे चितचोर १
कबहूं नैन तृषि नहीं देखे, मार्ग चितवत तोर
दादू अैसें आतुर विरहणिं, जैसें चंद चकोर २

६ सुदरि सिंगार बीनती० ।

सोधनपीवजीसाजिसंमारीअबवेगिमिलोतनजाइबनवारी ।
साजि सिंगार कीया मन मांही, अजहूं पीव पतीजे नांही १
पीव मिलनकों अह निस जागी, अजहूं मेरी पलक न लागी २
जतन जतन करि पंथ निहारों, पीव भावै त्यूं आप संमारों ३
अब सुख दीजै जांउ बलिहारी, कहै दादू सुणि विपति हमारी ४

७ विरह चितामणी० ।

सो दिन कबहूं आवैगा, दादूडा पीव पावैगा । टेक
क्यूं अपनै अंग लगावैगा, तब सब दुख मेरा जावैगा १
पीव आपनै बैन सुनावैगा, तब आनंद अंग न मावैगा २
पीव मेरी प्यास मिटावैगा, तब आपही प्रेम पिलावैगा ३
दे अपना दर्श दिपावैगा, तब दादू मंगल गावैगा ४

८ स्मरण बीनती० ।

तै मन मोह्यो मोर रे, रहन सकों हो रामजी । टेक
तोरै नाम चित लाइयारे, अवर न भया उदास
सांईए समझाईया, हों संग न छाडों पासरे १
जाणों तिल हिन बीछूटों रे, जिन पछितावा होइ
गुण तेरे रसनां जपों, सुनिसी सांई सोइरे २
भोरैं जनम गमाइयारे, चीना नहीं सो सार
अजहूं यह अचेत है, अवर नहीं आधाररे ३
पीवकी प्रीति तौ पाइएरे, जो सिर हावै भाग

बौंतो अनत न जाइसी, रहिसी चरणहु लागरे ४
अनतैं मन निवारियारे, मोहि एकहिसेती काज
अनंत गए दुख ऊपजै, मोहि एकहिसेती राजरे ५
सांई सौं सहजैं रमूरे, और नहीं आन देव
तहां मन विलंबिया, जहां अलख अभेवरे ६
चरण कमल चित लाइयारे, भौरैं ही ले भाव
दादू जन अचेत है, सहजैहीं तूं आवरे ७

९ बिरह वैराग कथनी० ।

बिरहनिकौं सिंगार न भावै, है कोई ऐसा रामसिलावै । टेक
विसरे अंजन मंजन चीरा, विरह विथा यहु व्यापै पीरा १
नवस्त थाके सकल सिंगारा, है कोई पीर मिटावणहारा २
देहगृह नहीं सुधि सरीरा, निसदिन चितवत चातृग नीरा ३
दादू ताहि न भावै आन, राम विना भई मृतक समान ४

१० ।

अवतौं मोहि लागी बाई, उन निहचल चितलीयो चुराइ । टेक
आनन रूचे और नहीं भावै, अगम अगोचर तहां मन जाइ
रूप न रेष वर्ण कहूं कैसा, तिन चरणौं चित रह्या समाइ १
तिन चरणौं चित सहज समानां, सौरस भीनां तहां मनधाइ
अवतो ऐसी बनिआइ, विष तजै अरू अमृत षाई २
कहाकरौं मेरा बस नांही, और न मेरे अंग सुहाई
पल इक दादू देषण पावै, तो जनम जनम की तृखा बुझाई ३

११ करुणा बीनती ।

तू जिन छाडै केसवा, मेरे और निवाहन हारहो । टेक
औगुण मेरे देखिकरि, तूं नां करि मैला मनहो

दीनानाथ दयालहै, अपराधी सेवक जनहो १
हम अपराधी जनमके, नख सिख भरे बिकार
मेटि हमारे औगुनां, तूं गरवा सिरजन हारहो २
मैं जन बहुत बिगारिया, अब तुम्हहीं लेहु सम्हारि
समर्थ मेरा सांइयां, तूं आपै आप उधारहो ३
तूं न बिसारी केसवा, मैं जन भूला तोहि
दादू और निबाहिले, अबजिन छाडै मोहि हो ४

१२ विर० बीनती० ।

राम संभालिएरे, बिखम दुहेली बार । टेक
मांझि समंदां नावरी, बूडै खेवट बाज
काढण हारा को नहीं, एक राम बिन आज १
पार न पहूंचै राम बिन, भेरा भो जल मांहि
तारण हारा एकतूं, दूजा कोई नांहि २
पार परोहन तो चलै, तुम्ह खेवहु सिरजनहार
भव सागर मैं डूबिहै, तुम बिन प्राण अधार ३
औघट दरिया क्यूं तिरै, बोहिथ बैसण हार
दादू खेवट राम बिन, कोण उतारै पार ४ । १३

। १३ ।

पार नहीं पाईएरे, राम बिना को निर्बाहनहार । टेक
तुम्ह बिन तारण को नहीं, दूभर यहु संसार
पैरत थाके केसवा, सूझै वार न पार १
बिखम भयानक भो जला, तुम्ह बिन भारी होय
तूं हरि तारण केसवा, दूजा नांही कोय २
तुम्ह बिन खेवट को नही, अतिर तिर्‌यो नहीं जाय

औघट भेरा डूबिहै, नांहीं आन उपाय ३
यहु घट औघट विखमहै, डूबत मांहि सरीर
दादू कायर राम बिन, मन नहीं बांधे धीर ४

१४ बीनती समर्थाई ।

क्यूं हम जीवैं दासगुसांई, जे तुम्ह छाडहु समर्थ सांई । टेक
जे तुम्ह जनकों मनहि बिसारा, तो दूसर कोण संभालनहारा १
जे तुम्ह परहरि रहो नियारे, तौ सेवक जाय कोनके द्वारे २
जे जन सेवक बहुत बिगारे, तो साहिब गरवा दोस निवारे ३
समर्थ सांई साहिब मेरा, दादू दास दीन है तेरा ४

१५ चिंतावनी० ।

क्यूं करि मिलै मोकों रामगुसांई, यहु विषया मेरे बसि नांही । टेक
यहु मन मेरा दहदिस धावै, नियरे राम न देख न पावै १
जिह्वा स्वाद सबै रस लागै, इन्द्रिय भोग विषैकों जागै २
श्रवणहुं साच कदे नहीं भावै, नैन रूप तहां देखिलुभावै ३
काम क्रोध कदे नहीं छीजै, लालचि लागि विषै रसपीजै ४
दादू देखु मिलै क्यूं सांई, विषै विकार बसै मन मांई

१६ ।

जोरे भाई राम दया नहीं करते,
नवका नाम खेवट हरि आपै, यों बिन क्यूं निस्तिरते । टेक
करणीं कठिन होत नहीं मोपै, क्यूं करिए दिन भरते
लालचि लागि परत पावकमैं, आपहीं आपै जरते १
स्वादहि संग विषै नहीं छूटै, मन निहचल नहीं धरते
खाइ हलाहल सुखके तांई, आपैंही पचि मरते २
ये कामी कपटी क्रोध कायामैं, कूप परत नहीं डरते

करवत काम सीसधरि अपनैं, आपहिं आप विहरते ३
हरि अपनां अंग आप नहीं छाडै, अपनीं आप विचरते
पिता क्यूं पूतकौं मारै, दादू यों जन तिरते ४

१७ बीनती।

तौलग तूं जिन मारै मोहि, जौलग मै देख्यौं नहीं तोहि। टेक
अब के बिछूरे मिलन कैसैं होइ, इहिं बिधि बहुरि न चीह्नैं कोइ १
दीनदयाल दया करि जोइ, सब सुष आनंद तुम्हथैं होइ २
जन्म जन्म के बंधन खोइ, देखन दादू अहनिस रोइ ४

१८ प्रीति अषंडित०।

संग न छाडौं मेरा पावन पीव, मै बलि तेरे जीवन जीव। टेक
संग तुम्हारे सब सुख होइ, चरण कमल मुख देखौं तोहि १
अनेक जतन करि पाया सोइ, देखौं नैनहु तो सुख होइ २
सरणि तुम्हारी अंतरवास, चरण कमल तहां देहु निवास ३
अब दादू मन अनंत न जाइ, अंतर बेधि रह्यो ल्योलाइ ४

१९।

नहीं मेल्हौं राम नहीं मेल्हौं, मै सोधी लाधो नहीं मेल्हो
चित तुम्हसौं बांधो नहीं मेल्हों। टेक
मैं तुम्ह काजैं तालावेली, हिवैकि ममूनै जाइ समेल्ही १
सांहिनि तूंनै मनमां गाढौ, चरण समानों केही परि काढो २
राखि हिरदे तूंम्हारो स्वामी, मै दुहलैं प्राम्यों अंतरजामी ३
हिवैन मेल्हौं तूं स्वामी म्हारौं, दादू सनमुख सेवक त्हारो ४

२० विरह बीनती।

रामसुनहुं विपति हमारीहो, तेरी मूर्तिकी बलिहारीहो। टेक

सेजु चरण चित चांहनां, तुम्हे सेवकसा धरणां १
तेरे दिन प्रति चरण दिखामनां, करिदया अंतर आमनां २
जन दादू बिपत सुनामनां, तुम्ह गोबिंद तपति बुझामनां ३

११ पद वीनती ।

कोणभांति भलमानै गुसांई, तुम्ह भावैसो मै जांनतनांही । टेक
कै भल मानैं नाचें गायें, कै भल मानैं लोक रिझाए १
कै भल मांनैं तीर्थ न्हाए, कै भल मांनैं मूंड मुंडाए २
कै भल मांनैं सब घर त्यागी, कै भल मांनैं भय बैरागी ३
कै भल मांनैं जटा बधाए, कै भल मांनैं भसम लगाए ४
कै भल मांनैं बनबन डोलै, कै भल मांनैं मुखहिन बोलै ५
कै भल मांनैं जपतप कीए, कै भल मांनैं करवत लीए ६
कै भल मानैं ब्रह्म छिपानी, कै भल मानैं अधिक धियानी ७
जेतुम्ह भावै सो तुम्हपै आहि, दादू न जाणै कहिसमझाहि ८

१२ उपदेशसाषी ।

दादू सचुबिन सांई नां मिलै, भावै भेष बनाय
भावै करवत उर्ध मुख, भावै तीर्थ जाय, १
दादू जेतूं समझै तो कहौं, साचा एक अलख
डाल पान तजि मूल गहि, क्या दिखलावै भेख २

१३ पद सज्जन गुन बरनन ।

अहो गुन तोर औगुन मोर गुसांई, तुम्हकृत कीहा सो मैं
जानत नहीं । टेक
तुम उपकार कीये हरि केते, सो हम बिसरि गए
आप उपाइ अग्नि मुख राखे, तहां प्रतिपाल भएहो गुसांई १
नखसिख साज कीएहो सजीवन, उदर अधार दीए

अन्न पान जहां जाय भस्मह्वै, तहां तैं राखिलिए हो गुसांई २
दिन दिन जांनि जतन करि पोखे, सदा समीप रहे
अगम अपार किए गुन केते, कवहू नांहि कहे हो गुसांई ३
कवहू नांहि न तुम तन चितवत, माया मोह परे
दादू तुम्ह तजि जाइ गुसांई, विषया मांहि जरे हो गुसांई

२३ बिरह अधीरज० ।

कैसैं जीवीए रे सांई संग न पास,
चंचल मन निहचल नहीं, निसदिन फिरै उदास । टेक
नेह नहीं रे रामका, प्रीति नहीं प्रकास
साहिबका समरण नहीं, करै मिलनकी आस १
जिस देखे तूं फुलियारे, पाणींपिण्ड बंधाणा मांस
सो भी जलिबलि जायगा, झूठा भोग बिलास २
तो जीवे मे जीवनां रे, स्मरै सासैं सास
दादू प्रगट पीव मिलै तो, अन्तर होय उजास ३

२४ हितोपदेस० ।

जियरा मेरे समरि सार, काम क्रोध मद तजि विकार । टेक
तू जिन भूलै मन गमार, सिर भार न लीजै मानि हार
सुणि समझाय बार बार, अजहूं न चेतै हो हुसियार १
करि तैसैं भव तिरए पार, दादू अवथैं यह विचार २

२५ ।

जीयरा चेती रे जिनजारै, हेजैं हरिसौं प्रीति न कीनी
जनम अमोलिक हारै । टेक
वेर वेर समझायो रे जीयरा, अचेत न होइ गवारे
यहु तन है कागदकी गुडिया, कछू एक चेति विचारे १

तिल तिल तुझकों हाणि होत है, जे पल राम विसारै
भौ भारी दादू कैं जीवमै कहो, कैसैं करि डारै २

२६ ।

तासुखकों कहो क्या कीजै, जाथैं पल पल यहु तन छीजै । टेक
आसण कुंजर सिरछत्र धारिजै, ताथैं फिरि फिरि दुख सहीजै १
सेज समारि सुंदरि संग रमीजै, याइ हलाहल भ्रमि मरीजै २
बहुविधिभोजनमांनि रुचिलीजै, स्वाद संकुटभ्रमि पासि परिजै ३
ए तजि दादू प्राण पतीजै, सब सुख रसना राम रमीजै ४

२७ बिचार० ।

मन निर्मल तन निर्मल भाई, आन उपाय विकार न जाई । टेक
जो मन कोई लातो तनुकारा, कोटि करै नहीं जाहिं विकारा १
जो मन विष हरतो तनु भवंगा, करै उपाय विषै पुन संगा २
मन मैला तन उज्जल नांहीं, बहुत पचिहारे विकार न जांही ३
मन निर्मल तन निर्मल होई, दादू साच विचारै कोई ४

२८ उपदेस चिंतामनी० ।

मैं मैं करत सबै जग जावै, अजहूं अंध न चेतै रे
यहु दुनियां सब देखि दिवानी, भूलिगए हैं केते रे । टेक
मैं मेरे मै भूलि रहे रे, साजन सोई विसारा
आया हीरा हाथ अमोलिक, जन्म जुवा ज्यूं हारा १
लालच लोभैं लागि रहे रे, जानत मेरी मेरा
आपहि आप विचारत नांहीं, तूं काको को तेरा २
आवत है सब जाता दीसै, इनमै तेरा नांहीं
इनसों लागि जनम जिन खोवै, सोधि देखि सचु मांहीं ३
निहचल सों मन मांनै मेरा, सांई सों बनिआई

दादू एक तुम्हारा साजन, निज यहु भुरकी लाई ४

२९ बिचार० ।

का जीवनां का मरनां रे भाई, जो तैं राम न रमसि अघाई । टेक
का सुख संपति छत्रपति राजा, बनखंड जाय बसे किंहिं काजा १
का विद्यागुन पाठ पुरानां, का मूर्ख जो तैं राम न जानां २
का आसन करि अहनिस जागे, का फिर सोवत राम न लागे ३
का मुक्ताका बंधे होई, दादू राम न जाना सोई ४

३० उपदेस चिंतामनी ।

मनरे राम विना तन छीजै, जब यहु जाय मिलै माटीमैं
तब कहो कैसैं कीजै, । टेक
पासर परसि कंचन करि लीजै, सहज सुर्ति सुखदाई
माया बेलि विषै फल लागे, ता परि भूलि न भाई १
जबलग प्राण पिंडहै नीका, तबलग ताहि जिन भूलै
यहु संसार सैंवलके सुखज्यूं, ता परी तूं जिन फूलै २
औसर यह जानि जग जीवन, समझि देखि सुचुपावै
अंग अनेक आन मति भूलै, दादू जिन डहकावै ३

३१ काल चिंतामनी० ।

मोह्यो मृग देखि वन अंधा, सूझत नहीं कालके फंधा । टेक
फूल्यो फिरत सकल वन मांही, सर सांधे सिर सूझत नांही १
उदम दमातो वनके ठाट, छाडिचल्यो सब बारह वाट २
फंध्यो न जानै वनके चाय, दादू स्वादि बधानों आइ ३

३२ स्मरणनाम चिंतामनी० ।

काहे रे मन राम विसारै, मनषा जनम जाय जीय हारै । टेक
मात पिताको बंधन भाई, सबही स्वप्नां कहा सगाई १

तन धन जोवन झूठा जाणी, राम हृदै धरि सारंग प्राणी २
चंचल चितवत झूठी माया, काहे न चेतै सो दिन आया ३
दादू तन मन झूठा कहिए, राम चरण गहि काहे न रहिए ४

१३ मनखदेह माहिमां० ।

ऐसा जन्म अमोलिक भाई, जामैं आइ मिलै रामराई । टेक
जामै प्राण प्रेम रस पीवै, सदा सुहाग सेज सुख जीवै १
आत्म आय रामसों राती, अखिल अमर धन पावै थाती २
प्रगट दर्सन प्रसन पावै, परम पुरुष मिलि मांहि समावै ३
ऐसा जनम नहीं नर आवै, सो क्यूं दादू रतन गमावै ४

१४ उपदेश चिंतामनीं० ।

कौण जन्म कहां जाता, अरे भाई रामछाडि कहां राताहै । टेक
मैं मैं मेरी इनसों लागि, स्वाद पतंग न सूझै आगि १
विषया सो रत गर्ब गुमान, कुंजर काम बंध अभिमान २
लोभ मोह मद माया फंध, ज्यूं जल मीन न चेतै अंध ३
दादू यहु तन योंहीं जाइ, राम विमुख मरिगए विलाइ ४

१५ ।

मन मूर्खी तैं क्या कीया, कुछ पीव कारन वैराग न लीया
रे तैं जप तप साधी क्या दीया । टेक
रे तैं करवत कासी दकसह्या, रे तूं गंगामांहैं नां वह्या
रे तूं विरहणि ज्यूं दुख नां शह्या १
रे तूं पाळै पर्वत नां गल्या, रे तैं आपहि आपा नां दह्या
रे तैं पीव पुकारि कदि कह्या, होइ प्यासे हरिजल नां पीया २
रे तूं वज्र न फाटोरे हिया, धूक जीवन दादू ए जीया ३

१६ ।

क्या कीजै मनषा जनमकौं, राम न जपहि गंवारा

मायाकें मद मातो वहै, भूलि रहे संसारा । टेक
हृदै राम न आवही, आवै विषै विकारा रे
हरि मार्ग सूझै नहीं, कूप परत नहीं बारा रे १
आपा अग्निजु आपमैं, ताथैं अहनिस जरे सरीरा रे
भाव भक्ति भावै नही, पीवै न हरिजल नीरारे २
मैं मेरी सब सूझई, सूझै माया जालो रे
राम नाम सूझै नही’ अंध न सूझै कालो रे ३
अैसैं ही जनम गमाइया, जित आया तित जाइ रे
राम रसायन नां पीया, जिन दादू हेत लगाए रे ४

३७ विवेक चिन्ता० ।

इनमैं क्या लीजै क्या दीजै, जन्म अमोलिक छीजे । टेक
सोवत स्वप्ना होई, जागे थैं नहीं कोई १
मृगतृष्णा जल जैसा, चेति देखि जग अैसा २
बाजी भ्रम दिखावा, बाजीगर डहकावा ३
दादू संगी तेरा, कोई नही किसकेरा ४

३८ ।

खालिक जागे जियरा सोवै, क्यूं करि मेला होवै । टेक
सेज एक नहीं मेला, ताथैं प्रेम न खेला १
सांई संग न पावा, सोवत जनम गमावा २
गाफिल नींद न लीजै, आयु घटै तन छीजै ३
दादू जीव अयानां, झूठ भ्रम भुलानां ४

३९ पहरा रागजंगली गौडो ।

पहलै पहरै रैनिदै बणिजारिया, तूं आया इहिं संसार वे
माया दा रस पीवण लागा, विसर्या सिरजनहार वे

सिरजनहार विसारा किया पसारा, मात पिता कुलनारि वे
झूठी माया आप बंधाया, चेतै नहीं गंमार वें
गंवार न चेते ओगुन केते, बंध्या सब परिवार वे
दादू दास कहै बणिजारा, तूं आया इहिं संसार वे १
दूजै पहरै रैणिदै बणिजारिया, तूं'ता तरुणी नालि वे
माया मोहै फिरै मतिवाला, राम न सक्या संभालि वे
राम न संभाले रताना ले, अंध न सूझै काल वे
हरि नही ध्याया जनम गमाया, दह दिस फुटा ताल वे
दह दिस फुटा नीर न खूटा, ले खाडे वण लालु वे
दादू दास कहै बणिजारा, सूंरता तरुणी नालु वे २
तीजे पहरै रैणिदै बणिजारिया, तैं बहूत उठाया भार वे
जो मन भाया सो करि आया, नां कुछ किया विचार वे
बिचार न कीया नाम न लीया, क्यूं करि लंघै पार वे
पार न पावै फिर पछितावै, डुवण लगा धार वे
डुवण लगा भेरा भगा, हाथ न आया सार वे
दादू दास कहे बणिजारा, तैं बहूत उटाया भार वे ३
चौथे पहरै रैणिदै बणिजारिया, तूं पका हूवा पीर वे
जोवन गया जरा वियापी, नाहीं सुध सरीर वे
सुध न पाई रैनि गमाई, नैनहु आया नीर वे
भो जल भेरा डुवण लागा, कोई न बंधै धीर वे
कोई धीर न बंधे जमके फंधे, क्यूं करि लंघै तीर वे
दादू दास कहै बणिजारा, तूं पका हुवा पीर वे ४

४० उपदेस चिन्तामनी० ।

कोहरे नर करहु डफाण, अंत्य काल घर घोर समाण । टेक

पहिके बलिवन्त गए विलाइ, ब्रह्मा आदि महेश्वर जाइ १
आगैं होते मोटे मीर, गए छाडि पैकम्बर पीर २
काचा देह कहा गर्वानां, जे उपज्या सो सबै बिलानां ३
दादू अमर उपावण हार, आपही आप रहै कर्तार ४

४१ हितोउपदेस० ।

इतघर चोर न मूसै कोई, अन्त रहै जो जानैं सोई । टेक
जागुहु रे जन तत न जाइ, जागत है सो रह्या समाइ १
जतन जतन करि राखहु सार, तसकर उपजै कोंण विचार २
इव करि दादू जांणैं जे, तो साहिब सरणागति ले ३

४२ उपदेसचिन्ता ० ।

मेरी मेरी करत जग खीनां, देखतही जलि जावै
काम क्रोध तृष्णां तन जालै, ताथैं पार न पावै । टेक
मूर्ख ममता जन्म गमावै, भूलि रहे इहिं वाजी
बाजी गरकों जानत नांहीं, जन्म लमावै वादी १
परपंच पंच करै बहुतेरा, काल कुटम्बके तांई
विषके स्वाद सबै ए लागे, ताथैं चीन्हत नांहीं २
एता जियमें जानत नांहीं, आय कहां चलिजावै
आगे पीछै समझत नांहीं, मूर्ख यूं डहकावै ६
ए सब भ्रम भानि भल पावै, सोधि लेहु सो सांई
सोई एक तुम्हारा साजन, दादू दूसर नांही ४

४३ गर्वप्रहार० ।

गर्व न कीजिए रे, गर्वैं होइ विनास
गर्वैं गोविन्द नां मिले, गर्वैं नरक निवास । टेक
गर्वैं रसातल जाइए, गर्वैं घोर अंधार

गर्वै भो जल डुविए, गर्वै वार न पार १
गर्वै पार न पाइए, गर्वै जमपुरि जाइ
गर्वै को छूटै नहीं, गर्वै बंधै आइ २
गर्वै भाव न ऊपजै, गर्वै भक्त न होय
गर्वै पीव क्यूं पाइए, गर्व करै जिन कोय ३
गर्वै बहुत बिनास है, गर्वै बहुत विकार
दादू गर्व न कीजिये, सनमुख सिरजनहार ४

४४ मन० ।

हुसियार रहि मन मारैगा, सांई सतगुरु तारैगा । टेक
मायाका सुख भावै रे, मूर्ख मन बोरावै रे १
झूठ साच करि जांना रे, इन्द्रिय स्वाद भुलानां रे २
दुखकों सुख करि मानैं, काल झाल नहीं जानैं रे ३
दादू कहै समझावै, यहु औसर बहुरि न पावै रे ४

४५ विचार० ।

तूंहै तूंहै तूहै तेरा, मैं नहीं मैं नहीं मैं नहीं मेरा । टेक
तूंहै तेरा जगत उपाया, मैं मैं मेरा धंधै लाया १
तूंहै तेरा खेल पसारा, मैं मैं मेरा कहै गंमारा २
तूंहै तेरा सब संसारा, मैं मैं मेरा तन सिर भारा ३
तूंहै तेरा काल न खाइ, मैं मैं मेरा मरि मरि जाइ ४
तूंहै तेरा रह्या समाइ, मैं मैं मेरा गया विलाय ५
तूंहै तेरा तुम्हही मांहि, मैं मैं मेरा मैं कुछ नांहिं ६
तूंहै तेरा तूंहीं होइ, मैं मैं मेरा मिल्या न कोइ ७
तूंहै तेरा लंघै पार, दादू पाया ज्ञान विचार ८

४६ वेममा० ।

साहिबजी सत्य मेरारें, लोग झखैं बहु तेरा रे । टेक

जीव जनम जब पाया रे, मस्तक लेख लखाया रे १
घटै बधै कुछ नांहीं रे, कर्म लिख्या उस मांहीं रे २
विधाता विधि कीह्नां रे, सिरजि सबनकों दीह्नां रे ३
समर्थ सिरजनहारा रे, सो तेरे निकट गंवारा रे ४
सकल लोक फिर आवै रे, तौ दादू दीया पावै रे ५

४७।

पूरिरह्या परमेश्वर मेरा, अण मांग्या देवै बहु तेरा। टेक
सिरजनहार सहज मै देइ, तौ काहे धाइ मागि जन लेइ १
विस्वभर सब जगकों पूरै, उदरकाज नर काहे झूरै २
पूर्क पूरहे गोपाल, सबकी चींत करै दरहाल ३
समर्थ सोई है जगन्नाथ, दादू देखु रही संगसाथ ४

४८।

रामधनखातनखूटैरे,अपरंपार पारनहींआवै आथिन टूटैरे। टेक
तसकर लेइ न पावक जारै, प्रेम न छूटै रे
चंहु दिस पसस्यौ विन रखवाले, चोर न लूटै रे १
हरि हीरा है राम रसायन, सरस न सूकै रे
दादू और आथि बहु तेरी, तून नर कूटै रे २

४६ विमुष सनमुष कालस जीवन०।

राम विमुख जग मरि मरि जाय, जीवै संत रहैं ल्योलाय। टेक
लीन भये जे आतम रामां, सदा सजीवन कीये नामां १
अमृत राम रसांयन पीया, ताथैं अमर कवीरा कीया २
राम राम कहि राम समानां, जनरै दास मिले भगवानां ३
आदि अंत्य केते कलि जागे, अमर भए अविनासी लागे ४
राम रसायण दादू माते, अविचल भये राम रंग राते ५

५० मोक्षनिर्नय० ।

निकट निरंजन लागि रहे, तव हम जीवत मुक्ति भये । टेक
मरि करि मुक्ति जहां जग जाइ, तहां न मेरा मन पतयाइ १
आगैं जन्म लहै अवतारा, तहां न मानै मन हमारा २
तन छूटें गति जो पद होई, मृतक जीव मिले सब कोई ३
जीवत जनम सुफल करि जानां, दादू राम मिले मन मानां ४

५१ अचिरज हैरान प्रश्न० ।

कादर कुदरति लखी न जाइ, कहां थैं उपजै कहां समाइ । टेक
कहां थैं कीन्ह पवन अरु पाणी, धरनि गगन गति जाइन जाणी १
कहां थैं काया प्राण प्रकासा, कहां पंच मिलि एक निवासा २
कहां थैं एक अनेक दिखावा, कहां थैं सकल एक ह्वै आवा ३
दादू कुदरति बहु हैरानां, कहां थैं राखि रहे रहिमाना ४

५२ उत्तरकी साषी० ।

रहै निराला सब करै, काहू लिपत न होइ
आदि अंत्य भानै घडै, ऐसा समर्थ सोइ १
सुरसनहीं सब कुछ करै, यों कल धरी बनाइ
कौतिग हारा ह्वै रह्या, सब कुछ होता जाइ २

५३ प्रचा० पद० ।

ऐसा राम हमारै आवै, वारपार कोई अंत न पावै । टेक
हलका भारी कह्या न जाइ, मोल माप नहीं रह्या समाइ १
कीमति लेखा नहीं प्रमाण, सब पचिहारे साधु सुजाण २
आगो पीछो परमति नांहीं, केते पारष आवहि जांहीं ३
आदि अंत्य मध्य कहै न कोई, दादू देख अचिरज होई ४

५४ प्रश्नोतर० ।

कौंण सब्द कौंण प्रखणहार, कौंण सुर्ति कहु कौंण विचार । टेक

कौंण सनाता कौंण गियान, कौंण उनमनी कौंण धियान १
कौंण सहज को कौंण समाध, कौंण भक्ति कहु कौंण अराध २
कौंण जाप कहु कौंण अभ्यास, कौंण प्रेम कहु कौंण पियास ३
सेवा कौंण कहु गुरुदेव, दादू पूछै अलख अभेव ४

५५ उतरकी साषी० ।

आपा मेटै हरि भजै, तनमन तजै विकार
निर्वैरी सब जीवसौं, दादू यहु मत सार १
आपा गर्व गुमान तजि, मद मंछर अंहकार
गहै गरीबी बंदगी, सेवा सिरजनहार २

५६ प्रश्नो ।

मैं नहीं जानों सिरजनहार, ज्यूं है त्यूंही कहो करतार । टेक
मसतक कहां कहां करपाइ, अविगत नाथ कहो समझाइ १
कहां मुख नैनां श्रवनां सांई, जानराय सब कहो गुसांई २
पेट पीठ कहां है काया, पड़दा खोलि कहो गुरुराया ३
ज्यूं है त्यूं कहि अंतरजामी, दादू पूछै सतगुरु स्वामी ४

५७ उतरकी साषी० ।

दादू सवै दिसा सो सारिखा, सवै दिसा मुख वैन
सवै दिसा श्रवणहु सुणै, सवै दिसा कर नैन,
सवै दिसा पग सीस है, सवै दिसा मन चैन
सवै दिसा सनमुख रहै, सवै दिसा अंग अैन

५८ स्थानप्रश्न० ।

अलख देव गुरु देहु बताइ, कहां रहो तृभवन पतिराइ । टेक
धरती गगन वसहु कविलास, तृहूलोक मैं कहा निवास १
जल थल पावक पवनां पूरि, चंदा सूर निकट कै दूरि २

मंदिर कौंण कौंण घरवार, आसण कौंण कहाँ कर्तार ३
अलख देवगति लखी न जाइ, दादू पूछै कहि समझाइ ४

५६ उत्तरकी साषी० ।

दादू मुझहीं मांहे मै रहूं, मैं मेरा घरवार
मुझही मांहे मैं बसौं, आप कहै कर्तार १
दादू मैंहीं मेरा अरस मै, मैही मेरा थान
मैंहीं मेरी ठौरमै, आप कहै रहिमांन २
दादू मैही मेरे आसिरे, मैं मेरे आधार
मेरे ताकि एमै रहूं, कहै सिरजनहार ३
दादू मैंहीं मेरी जातिमै, मैहीं मेरा अंग
मैहीं मेरा जीवमै, आप कहै प्रसंग ४

६० रसकौ० ।

राम रस मीठा रे, कोई पीवै साधु सुजाण
सदा रस पीवै प्रेमसौं, सो अविनासी प्राण । टेक
इंहि रस मुनि लागे सबै, ब्रह्मा विष्णु महेस
सुरनर साधु संतजन, सो रस पीवै सेस १
सिध साधिक जोगीजती, सती सबै सुखदेव
पीवत अंत न आवई, ऐसा अलख अभेव २
इंहिं रस राते नामदेव, पीपा अरु रैदास
पीवत कबीरा नांथ क्या, अजहूं प्रेम पियास ३
यहु रस मीठा जिन पीया, सो रस मांहिं समाय
मीठे मीठा मिलिरह्या, दादू अनत न जाय ४

६१ ।

मन मतिवाला मद पीवै, पीवै वारं वारो रे

हरिरस रातो रामके, सदा रहै इक तारो रे । टेक
भाव भक्ति भाठी भई, काया कसणी सारो रे
पोता मेरे प्रेमका, सदा अखंडित धारो रे १
ब्रह्म अग्नि जोबन जरे, चेतन चितहि उजासो रे
सुमति कलाली सारवै, कोई पीवै विरला दासो रे २
आपा धन सब सौंपिया, तत्वरस पाया सारो रे
प्रीति पिया लै पीवहीं, छिनि छिन वारंवारो रे ३
आपा पर नहीं जांणियां, भूलो माया जालो रे
दादू हरिरस जे पीवै, ताको कदे न लागै कालो रे ४

६२ ।

रस के रसे या लीन भए, सकल सिरोमणि तहां गए । टेक
राम रसांयण अमृतमाते, अविचल भए नरक नहीं जाते १
राम रसांयण भरि भरि पीवै, सदा सजीवन जुग जुग जीवै २
राम रसांयण तृभवन सार, राम रसिक सब उतरे पार ३
दादू अमली बहुर न आए, सुख सागर ता मांहि समाए ४

६३ भेष ।

भेष न रीझै मेरा निज भर्तार, तार्थें कीजे प्रीति विचार । टेक
दुराचारणी रुचि भेष बनांवै, सील साच नहीं पीवकों भावै १
कंत न भावै करै सिंगार, डिंभपणै रीझै संसार २
जौ ये पतिव्रता है है नारी, सो धन भावै पियहि पियारी ३
पीव पहिचानै आंन नहीं कोई, दादू सोई सुहागनि होई ४

६४ साचानिरनै० ।

सब हम नारि एक भर्तार, सब कोई तन करै सिंगार । टेक
घर घर अपने सेज संवारै, कंत पियारे पंथ निहारै १

आरति अपनीं पीवकों धावै, मिलै ना है तब अंग लगावै २
अति आतुर ए खोजत डोलै, बानि परी विरोगनि बोलै ३
सब हम नारी दादू दीन, देय सुहाग काहू संग लीन ४

६६ ।

सोई सुहागनि साच सिंगार, तनमन लाय भजै भर्तार । टेक
भाव भक्ति प्रेम ल्योलावै, नारी सोई सार सुखपावै १
सहज सतोष सीलसब आया,तव नारीनेह अमोलिक पाया २
तनमनजोवनसोंपिसबदीह्ना,तव कंत रिझाय आपवसि कीह्ना ३
दादू बहुर विरोगनि होई, पीव सूं प्रीति सुहागनि सोई ४

६७ मचा० ।

तव हम एक भए रे भाई, मोहन मिलि साची मन आई । टेक
पारस परसि भए सुखदाई, तव दुतिया दुर मति दूर गंमाइ १
मलियागरपरमडिलिपाया, तव बंसवरण कुलभ्रम गमाया २
हरिजलनीरनिकटजवआया,तव बूंदबूंद मिलिसहजसमाया ३
नाना भेद भ्रम सब भागा, तव दादू एक रंगै रंग लागा ४

६८ विवेक समता० ।

अलह राम छूटिगया भ्रम मोरा,
हिंदू तुरक भेद कुछ नाही, देखौं दर्सण तोरा । टेक
सोई प्राण पिंड पुन सोई, सोई लोहीं मांसा
सोई नैन नासिका सोई, सहजैं कीह्न तमासा १
श्रवणों सब्द बाजता सुणिए, जिह्वा मीठा लागै
सोई भूख सबनकों व्यापै, येक जुगति सोई जागै २
सोई संधि बंध पुन सोई, सोई सुख सोई पीरा
सोई हसत्त पाव पुन सोई, सोई एक सरीरा ३

यहु सब खेल खालिक हरि तेरा, तुमहीं एक करि लीन्हां
दादू जुगति जांनिकरि ऐसी, तब यहु प्राण पतीनां ४

६८ पंथ मध्या० ।

भांई ऐसा पंथ हमारा,
द्वै पक्ष रहित पंथ गहि पूरा, अवर्ण एक अधारा । टेक
बाद विवाद काहू सौं नांहीं, मांहीं जगत थैं न्यारा
समदृष्टीसु भाय सहज मैं, आपहि आप विचारा १
मैं तै मेरी यहु मति नांहीं, निर्बैरी निरकारा
पूर्ण सबै देखि आपापर, निरालंभ निर्धारा २
काहू के संग मोह न ममिता, संगी सिरजनहारा
मनहीं मनसूं समझि सयानां, आनंद एक अपारा ३
काम कल्पनां कदे न कीजै, पूर्णब्रह्म पियारा
इंहि पंथ पहुंचि पारगहि दादू, सो तत सहज संभारा ४

६९ मचपरैगान० ।

ऐसो खेल बन्यों मेरी माई, कैसैं कहू कछू जान्यूं न जाई । टेक
सुरनर मुनिजन अचिरज आई, राम चरण कोऊ भेद न पाई १
मंदिर मांहे सुर्ति समाई, कोहु है सो देहु दिखाई २
मनहिविचार करहु ल्योलाई, दीवासमानां जोति कहां छिपाई ३
देह निरंतर सुन ल्योलाई, तहां कौंण रमै कौंण सूता रे भाई ४
दादू न जांनै ए चतुराई, सोई गुरु मेरा जिन सुधि पाई ५

७० मचा ।

भाई रे घरहीं मैं घर पाया,
सहज समाय रह्यो ता मांहीं, सतगुरु खोज बताया । टेक
या घर काज सबै फिरि आया, आपैं आप लखाया

खोलि कपाट महल के दीन्हे, थिर अस्थान दिखाया १
भयो भेद भ्रम सब भागा, साचा सोई मलाया
पिंड पर जहां जीव जावै, तामै सहज समाया २
निहचल सदा चलै नहीं कबहूं, देख्या सब मैं सोई
ताहीं सों मेरा मन लागा, और न दूजा कोई ३
आदि अंत्य सोई घर पाया, अब मन अनत न जाई
दादू एक रंगै रंग लागा, तामे रह्या समाई ४

७१ विचार० ।

इत है नीर नहांवन जोग, अनतही भ्रम भुला रे लोग । टेक
तिंहिं तट न्हाए निर्मल होइ, वस्तु अगोचर लखै रे सोई १
सुघट घाट अरु तिरवो तीर, बसे तहां जगत गुरु पीर २
दादू न जांनै तिनका भेव, आप लखावै अंतर देव ४

७२ उपदेसवप० ।

ऐसा ज्ञान कथो नर ज्ञानी, इंहिघर होय सहज सुखजानी । टेक
गंग यमुन तहां नीर नहाइ, सुख मन नारी रंग लगाइ
आप तेज तन रह्यो समाइ, मैं वलि ताकी देखों अघाइ १
बास निरंतर सो समझाइ, विन नैनहुं देखै तहां जाइ
दादू रे यहु अगम अपार, सो घन मेरे अधर अधार २

७३ सत संगति० ।

संत संगति मगन पाइए, गुरु प्रसादै राम गाइए । टेक
आकासधरणी धरीजे धरणी आकास कीजै, सुनि मांहै न्हृषलीजे १
न्हृषमुक्ताहलमांहैंमायरआयो, अपणैपियाहूंधावतखोजतपायो २
सोच सायर अगोचल हिए, देव देहु रे मांहै कौण कहिए ३
[illegible] हितार्थ ऐमोलखै न कोई, दादूजे पीव पावे अमरहोई ४

७४ थकत० ।

अवतो ऐसी बनि आई, रामचरन विन रह्यो न जाई । टेक
सांईकों मिलिवे के कारण, तृकुटी संगम नीर नहाई
चरणकमलकी तहां ल्योलागै, जतन जतनकरि प्रीति बनाई १
जें रस भीनां छाव रिजावे, सुंदरि सहजैं संग समाई
अनहद बाजे बाजण लागे, जिह्वा हीणे कीरति गाई २
कहा कहों कछू वरनी न जाई, अवगति अंतर जोति जगाई
दादू उनको मरम न जांनैं, आप सुरंगे बैन बजाई ३

७५ मा ।

नीकैं राम कहत है बपुरा,
घरमाहै घर निर्मल राखै, पंचो धोवै काया कपरा । टेक
सहज समरपण सुमरण सेवा, तृवेणी तट संजम सपरा
सुंदरि सनमुख जागण लागी, तहां मोहन मेरा मन पकरा १
विन रसना मोहन गुनगावै, नाना बाणी अनुभव अपरा
दादू अनहद ऐसें कहिए, भक्ति तत यहु मार्ग सकरा २

७६ मनरागायत्री ।

अवधू कामधेनु गहिराखी,
बसि कीन्ही तव अमृत श्रवै, आगै चारन नाखी । टेक
पोखंतां पहली उठि गरजै, पीछैं हाथ न आवै
भूखी भलैं दूध नित दूणां, यौं या धेनु दुहावै १
ज्यूं ज्यूं खीण पडै त्यूं दूझै, मुक्ती मेल्या मारै
घाटा रोकि घेरि घर आणौ, बांधी कारज सारै २
सहजैं बांधी कदे न छूटै, कर्म बंधन छूटि जाई
काटै कर्म सहज सों बांधे, सहजैं रहै समाई ३

छिन छिन मांहिं मनोर्थ पूरे, दिन दिन होय आनंदा
दादू सोई देखतां पावै, कलि अजरावर कंदा ४

७७ वचा।

जवघट प्रगट राम मिलै,
आत्म मंगल चार चहूंदिस जनम, सुफल करि जीति चलै। टेक
भगति मुक्ति अभय करि राखे, सकल सिरोमणि आप कीए
निर्गुण राम निरंजन आपै, अजरावर उर लाय लीए १
अपनै अंग संग करि राखे, निर्भय नाम निसान बजावा
अविगति नाथ अमर अविनासी, परम पुरुष निज सो पावा २
सोई बड भागी सदा सुहागी, प्रगट प्रीतम संग भए
दादू भाग बडे बर बरिकैं, सो अजरावर जीति गए ३

७८ छिन विछोहा०।

रमईया यहु दुख सालै मोहि,
सहज सुहागन प्रीति प्रेमरस, दर्सण नांहीं तोहि। टेक
अंग प्रसंग एकरस नांहीं, सदा समीप न पावे
ज्यूं रसमै रस बहुरि न निकसै, ऐसैं होन आवै १
आत्म लीन नहीं निसवासुर, भक्ति अखंडित सेवा
सनमुख सदा परस पर नांही, तार्थे दुख मोहि देवा २
मगन गलित महारस माता, तूहै तवलग पीजै
दादू जवलग अंत न आवै, तवलग देखण दीजै ३

७९ गुरुविचार लांवि०।

गुरु मुख पाइए रे, ऐसा ज्ञान विचार
समझि समझि समझ्या नहीं, लागा रंग अपार। टेक
जाण जाण जाण्या नहीं, ऐसी उपजै आइ

बूझि बूझि बूझ्या नहीं, टोरी लागा जाइ १
लेले ले लीया नहीं, होस रही मन मांहिं
राखि राखि राख्या नहीं, मैं रस पीया नांहिं २
पाय पाय पाया नहीं, तेजैं तेज समाइ,
करि करि कुछ कीया नहीं, आतम अंग लगाई ३
खेलि खेलि खेल्या नहीं, सनमुख सिरजनहार
देखि देखि देख्या नहीं, दादू सेवक सार ४

८६।

बाबा गुरुमुख ज्ञाना रे, गुरुमुख ध्यानां रे, । टेक
गुरुमुख दाता गुरुमुख राता, गुरुमुख गवनां रे
गुरुमुख भवनां गुरुमुख छवनां, गुरुमुख रवनां रे १
गुरुमुख पूरा गुरुमुख सूरा, गुरुमुख बाणी रे
गुरुमुख देणा गुरुमुख लेणां, गुरुमुख जाणी रे २
गुरुमुख गहिवा गुरुमुख रहिवा, गुरुमुख न्यारा रे
गुरुमुख सारा गुरुमुख तारा, गुरुमुख पारा रे ३
गुरुमुख राया गुरुमुख पाया, गुरुमुख मेला रे
गुरुमुख तेजं गुरुमुख सेजं, दादू खेला रे ४

८७ विचार०।

मैं मेरा मै हेरा, मध्य मांहिं पीव नेरा । टेक
जहां अगम अनूप अवासा, तहां महा पुरुष का वासा
तहां जांणै गाजन कोई, हरि मांहिं समानां सोई १
अखंड जोति जहां जागै, तहां रामनाम ल्यो लागै
तहां राम रहे भरपूरा, हरि संग रहै नहीं दूरा २
तृवेणी तटतीरा, तहां अमर अमोलिक हीरा

उस हीरे सूं मन लागा, तव भ्रम गया भय भागा ३
दादू देखु हरि पावा, हरि सहजैं संग लखावा
पूर्ण परम निधानां, निज नृपतहू भगवांनां ४

८८ उपदेश प्रचा० ।

मेरे मन लागा सकल करा, हम निसदिन हिरदै सो धरा । टेक
हम हिरदै मांहै हेरा, पीव प्रगट पाया नेरा
सो नेरेहीं निज लीजै, तव सहजैं अमृत पीजै १
जव मनहीं सों मन लागा, तव जोति सरूपी जागा
जव जोति सरूपी पाया, तव अंतर मांहि समाया २
जव चितहि चित समानां, हम हरिविन और न जांनां
जानां जीव न सोई, अव हरिविन और न कोई ३
जव आत्म एकै वासा, पर आत्म मांहिं प्रकासा
प्रकासा पीव पियारा, सो दादू मींत हमारा ४

इति राग गोडी संपूर्ण ॥ राग १ ॥

॥ अथ राग माली गोडी ॥

स्मरण नाम माहिमां ॥

गोविंदे नाम तेरा जीवन मेरा, तारणा भवपारा
आगैं इंहि नाम लागै, संतन आधारा । टेक
करि विचार सत्यसार, पूणधन पाया
अखिल नाम अगम ठाम, भाग हमारे आया १
भक्ति मूल मुक्ति मूल, भवजल निस तिरनां
भ्रम कर्म भंजनां भय, कालि विष सव हरनां २
सकल सिधि नवनिधि, पूर्ण सव कामां
राम रूप तत्व अनूप, दादू निज नामां ३

१ विहर वीनती० ।

गोविंदे कैसैं तिरिए,नावनाहीं खेवनाहीं,रामविमुख मरिए । टेक
ज्ञान नाहीं ध्यान नाहीं, लै समाधि नांहीं
विरहा वैराग नांहीं, पंचौं गुण नाहीं १
प्रेम नाहीं प्रीति नाहीं, नाम नाहीं तेरा
भाव नाहीं भक्ति नाहीं, कायर जीव मेरा २
घाट नाहीं बाट नाहीं, कैसैं पग धरिए
वार नाहीं पार नाहीं, दादू बहु डरिए ३

२ वीनती० ।

पीव आव हमारे रे,
मिल प्राण पियारे रे, वलिजांउ तुम्हारे रे । टेक
सुनि सखी सयानी रे, मै सेवन जानी रे, हूं भई दिवानी रे १
सुनि सखी सहेली रे, क्यूं रहूं अकेली रे हूं खरी दुहेली रे २
हूं करों पुकारा रे, सुनि सिरजनहारा रे, दादू दास तुम्हारा रे ३

३ ।

वाल्हा सेज हमारी रे, तूं आवै हूं वारी रे, हूं दासी तुमारी रे । टेक
तेरापंथ निहारों रे,सुंदरसेज संवारों रे,जीयरा तुम्ह परिवारों रे १
तेरा अंगडा पेखू रे, तेरा मुखडा देखू रे, तव जीवन लेखू रे २
मिल सुखडा दीजै रे, यहु लाहड लीजै रे, तुम्ह देखैं जीजै रे ३
तेरे प्रेमकी माती रे, तेरे रंगडै राती रे, दादू वारणे जाती रे ४

४ विरह चिंतामनी० ।

दरवार तुम्हारे दरदवंद, पीव पीव पुकारै
दीदार दरुनै दीजिए, सुनि खसम हमारे । टेक
तनहां केतन पीरहै, सुनि तुही निवारे

करम करीमां कीजिए, मिळ पीव पियारे १
सूल सूलांकों सो सहूं, तेग तन मारे
मिळ साई सुख दिजिए, तूहीं तूह संभारे २
मैं सुहदादू तन सोखदा, विरहा दुख जारे
जीव तरसै दीदारकों, दादू न विसारे ३

५ ।

सईयां तूहै साहिब मेरा, मैहूं बंदा तेरा । टेक
बंदा बरदा चेरा तेरा, हुकमी मै विचारा
मीरा महरवान गुसांई, तूं सिरताज हमारा १
गुलाम तुम्हारा मुलाजादा, लोंडा घरका जाया
राजिक रिजक जीव तैं दीया, हुकम तुम्हारे आया २
सो दीलसे हाजिर बंदा, हुकम तुम्हारे मांहीं
जवहीं बुलाया तबहीं आया, मै मै बासी नांहीं ३
खसम हमारा सिरजनहारा, साहिब समर्थ सांई
मीरा मेरा महरमया करि, दादू तुम्हही तांई ४

६ करण० ।

मुझथी कछू न भया रे,
यहु योंही गया रे, पछिताश्रा रह्या रे । टेक
मैं सीस न दीया रे, भरि प्रेम न पीया रे, मैं क्या कीया रे १
हूं रंग न राता रे, रस प्रेम न माता रे, नही गलत गाता रे २
मैं पीव न पायारे, कीया मनका भाया रे, कुछ होई न आया रे ३
हूं रहों उदासा रे, मुझे तेरी आसा रे, कहै दादू दासा रे ४

७ उपदेश चित० ।

मेरा मेरा छोडि गवारा, सिरुपर तेरे सिरजनहारा

अपणे जीव विचारत नांहीं, क्या ले गईला बंस तुम्हारा । टेक
तब मेरा कत कर्ता नाहीं, आवत है हंकारा
काल चक्रमों खरी परी रे, विसरिगया घरवारा १
जाइ तहांका संजम कीजे, विकट पंथ गिरधारा
दादू रे तन अपना नांहीं, तो कैसैं भया संसारा २

८ ।

दादू दास पुकारे रे,
सिरकाल तुम्हारे रे, सर सांधे मारे रे । टेक
जमकाल निवारी रे, मन मनसा मारी रे, यहु जनम न हारी रे १
सुख निद न सोई रे, अपणां दुख रोई रे, मन मूल न खोई रे २
सिरभारनलीजी रे, जिसका तिसकोंदीजीरे, अवढीलनकीजीरे ३
यहु औसर तेरा रे, पंथी जागि संवेरा रे, सब बाट बसेरा रे ४
सब तरवर छाया रे, धन जोवन माया रे, यहु काची काया रे ५
इस भ्रम न भूली रे, बाडी देखि न फूली रे, सुख सागर झूली रे ६
रस अमृत पीजी रे, विषका नाम न लीजी रे, कह्यासुं कीजी रे ७
सबे आतम जाणी रे, अपणां पीव पिछाणीं रे, यहु दादू बाणी रे ८

९ पातिव्रत० ।

पूजा पहली गणपतिराइ, पडिहूं पांऊं चरणों धाइ
आगैं ह्वै करि तीर लगावै, सहजैं अपणे बैन सुनाइ । टेक
कहूं कथा कछू कहीं न जाइ, इक तिलमैं ले सबै समाइ
गुणहुं गहीर धीरतन देही, ऐसो समर्थ सबै सुहाइ १
जिस दिस देखौं वोही हैरे, आप रह्या गिर तरवर छाइ
दादू रे आगैं क्या होवै, प्रीति पिया करि जोडि लगाइ २

१० स्मरण महिमा० ।

नीकोधन हरिकरि मै जांन्यूं, मेरे अखई वोही

आगैं पीछै सोई हैरे, और न दुजा कोई । टेक-
कबहूं न छाडौं संग पियाको, हरिके दर्शण मोहीं
भाग हमारे जो हूं पाऊं, सरणै आया तोहीं १
आनंद भयो सखी जीय मेरे, चरण कमल को जोई
दादू हरिको बावगे, बहुरि बियोगन होई २

११ स्मरण सुगातन० ।

बाबा मरद मरदां गोइ, ए दिल पाक करि दम धोइ । टेक
तरक दुनियां दूरिकरि दिल, फरज फारिक होइ
पैवसत परदिगारसों, आकिलां सिर सोइ १
मनी मुरदां हिरस फानी, नफस रापै माल
वदीरां बरतरफ करदां, नाम नेकी ख्याल २
जिंदगांनी मुरद बासद, कुंजका दिरकार
तालिबां राहक हासिल, पासवानीयार ३
मरद मरदां मालिकां सिर, आसिकां सुलतान
हजूरी हुसियार दादू, इहै गोमैदान ४

१२ समर्थाई० ।

ए सब चिरत तुम्हारे मोहनां, मोहे सब ब्रह्मड खंडा
मोहे पवन पानी परमेश्वर, सब मुनि मोहे रविचंदा । टेक
सायर सपत मोहे धरणी धरा, अष्ट कुली पर्वत मेर मोहें
तीनलोक मोहे जग जीवन, सकल भवन तेरी सेव सोहे १
शिव विरंच नारद मुनि मोहे, मोहे सुर सब सकल देवा
मोहे इंद्र फुन्यग फनि मोहे, मुनि मोहे तेरी करत सेवा २
अगम अगोचर अपार अपरंपरा, कोयहु तेरे चिरत न जानैं
ए सोभा तुम्हकों सोहै सुंदर, बलि बलि जांऊं दादू न जानैं ३

१३ चित २० ।

ऐसा रे गुर ज्ञान लखाया, आवैजाइ सु दृष्टि न आया । टेक
मन थिर करोंगा नाद भरोंगा, राम रमोंगा रस माता १
अधर रहूंगा कर्म दहूंगा, एक भजोंगा भगवंता २
अलख लखोंगा अकथ कथोंगा, महीं मथोंगा गोविंदा ३
अगह गहूंगा अकह कहूंगा, अलह लहूंगा खोजंता ४
अचर चरोंगा अजर जरोंगा, अतिर तिरोंगा आनंदा ५
यहु तन तारों विषै निवारों, आप इबारों साधंता ६
आऊं न जाऊं उनमन लाऊं, सहज समाऊं गुणवंता ७
नूर पिछाणों तजहि जाणों, दादू जोतिहि देखंता ८

१४ विश्वास० ।

बंदे हाजरां हजूर वे, अलह आले नूर वे
आसिकां रहि सिदक स्याबति, तालिबां भरपूर वे । टेक
औजूद मैं मौजूद है, पाक परवर दिगार वे
देखिलै दीदारकों, गैब गोता मारिवे १
मौजूद मालिक तखत खालिक, आसिकांरा ऐन वे
गुजर करि दिल मगज भीतर, अजबहै यहु सैन वे २
अरस ऊपर आप बैठा, दोस्त दानां यार वे
खोजि करि दिल कबज करिले, दरूनैं दीदार वे ३
हुसियार हाजिर चुस्त करिदम, मीरा महरवान वे
देखिलै दरहाल दादू, आप है दीवान वे ४

१५ परचय उपदेश० ।

निर्मल तत्व निर्मल तत्व, निर्मल तत्व ऐसा
निर्गुण निज निधि निरंजन, जैसा है तैसा । टेक

उतपत्त आकार नाहीं, जीव नाहीं काया
काल नाहीं कर्म नाहीं, रहिता राम राया १
सीत नाहीं घाम नाहीं, धूप नाहीं छाया
बान नाहीं वर्न नाहीं, मोह नाहीं माया २
धरती आकास अगम, चंद सूर नाहीं
रजनी निस दिवस नाहीं, पवना नाहीं जाहीं ३
कृतम घट कला नाहीं, सकल रहीत सोई
दादू निज अगम निगम, दूजा नहीं कोई ४

इति राग मारूीगाडा सपूर्ण ॥ राग २ ॥ पद ६४ ॥

॥ अथ राग कल्याण ॥

१ मन उपदेस।

मन मेरे कछू भी चेति गंवार,
पीछैं फिरि पछितावैगा रे, आवै न दूजी बार । टेक
काहे रे मन भूलि फिरत है, काया सोचि विचार
जिन पथों चलनां है तुझकों, सोई पंथ संवार १
आगे बाट विषम है मन रे, जैसी खांडकी धार
दादू दास सांईसुं सूत करि, कूडे काम निवार २

२ सचा०।

जगसूं कहा हमारा, जब देख्या नूर तुम्हारा । टेक
परम तेज घर मेरा, सुख सागार मांहि बसेरा १
झिलमिल अति आनंदा, पाया प्रमानंदा २
जोति अपार अनंता, खेलै फाग बसंता ३

आदि अंत्य अस्थानां, दादू सो पहिचानां ४

इति राम कल्याण संपूर्ण ॥ राग ३ ॥

॥ अथ राग कनडौ ॥

१ विरह वीनती०।

वे दर्शण देखन तेरा, तौ जीय जक पावै मेरा । टेक

पीय तूं मेरी वेदन जानैं, हूं कहा दुरांऊ छानैं मेरा तुम्ह देखे मन मानैं १

पीव करक कलेजे मांहीं, सो क्यूं ही निकसै नांहीं, पीव पकरि हमारी बांहीं २

पीव रोम रोम दुख सालै, इन पीरें पिंजर जालै, जीव जाता क्यूं ही वालै ३

पीव सेज अकेली मेरी, मुझ आरति मिलनै तेरी, धन दादू वारी फेरी ४

१।

आव सलोंनै देखण देरे, बलि बलि जांउं बलिहारी तेरे । टेक

आव पीया तूं सेज हमारी, निसदिन देखौं बाट तुम्हारी १

सब गुन तेरे औगुन मेरे, पीव हमारी आहि न लेरे २

सब गुण वंता साहिब मेरा, लाड गहेला दादू केरा ३

२।

आव पियारे मींत हमारे, निसदिन देखौं पाव तुम्हारे । टेक

सेज हमारी पीव संवारी, दासी तुम्हारी सो धनवारी

जे तुझ पांऊं अंग लगांऊं, क्यूं समझांऊं वारणे जांऊं २

पंथ निहारौं बाट संवारौं, दादू तारौं तनमन वारौं ३

३।

आव वे सज्जन आव, सिरपरि धरि पाव

जानी मैडा जंद असाडे, तूं रावंदा राव वे सज्जन आव । टेक

इथां उथां जिथां किथां, हौंजीवों तुज ना लवे
मीयां मैंडा आव असाडे, तूं लालूं सिरलाल वे सज्जन आव १
तन भीडेवां मन भीडेवां, डेवां पिंडे प्राणवे
सचा साईं मिल इथांईं, जिंद करा कुरवाण वे सज्जन आव २
तूं याकूं सिरपाक वे सज्जन, तूं खूबों सिर खूब
दादू भावे सज्जन आव, तूं मीठा महबूब वे सज्जन आव ३

४।

दयाल अपनैं चरण मेरा चित लगावहु, नीकैं हीं करी । टेक
नखसिख सुर्ति सरीर, तूं नाव रहौं भरी १
मैं अजाण मतिहीण, जमकी पासि थैं रहतूं डरी २
सबै दोष दादू के दूरि करि, तुम्हहीं रहो हरी ३

५ मन० ।

मन मति हीन धरै,
मूर्ख मन कछू समझत नाहीं, ऐसे जाइ जरै । टेक
नाम बिसारि अवर चित राखै, कूंड काज करै
सेवा हरीकी मनहू न आनैं, मूर्ख बहुर मरै १
नाम संगम करि लीजै प्राणी, जमथैं कहा डरै
दादू रे जे राम संभारै, सागर तीर तिरै २

६ संत सह.प० ।

पीव तैं अपनै काज संवारे,
कोई दुष्ट दीनकौं मारण, सोई गहिलैं मारे । टेक
मेरु समान ताप तन व्यापै, सहजैंही सो टारे
संतनको सुखदाई माधो, विन पावक फंद जारे १
तुम्हथैं होई सबै विधि संमर्थ, आगम सबै विचारे

संत उवारि दुष्ट दुख दीह्वा, अंध कूपमै डारे २
ऐसा है सिर खसम हमारे, तुम्ह जीते खल हारे
दादू सो ऐसै निर्वहिए, प्रेम प्रीति पीय प्यारे ३

७ माया।

काहूं तेग मरम न जानां रे, सब भए दिवानां रे। टेक
माया के रस राते माते, जगत भुलानां रे
को काहूंका कह्या न मानैं, भए अयांना रे १
माया मोहे मुदित मगन, खान खाना रे
विषया रस अरस परस, साच ठानां रे २
आदि अंत्य जीव जंत, कीया पयानां रे
दादू सब भ्रम भूले, देखि दानां रे ३

८ पति व्रत बेमास०।

तूंहीं तूं गुरुदेव हमारा, सब कुछ मेरे नाम तुम्हारा। टेक
तुम्हहीं पूजा तुम्हहीं सेवा, तुम्हहीं पाती तुम्हहीं देवा १
जोग जग्य तूं साधन जापं, तुम्हहीं मेरे आपैं आपं २
तप तीर्थ तूं व्रत सनानां, तुम्हहीं ज्ञानां तुम्हहीं ध्यानां ३
वेद भेद तूं पाठ पुराना, दादू के तुम्ह पिंड प्राना ४

९।

तूंही तूं आधार हमारे, सेवक सुत हम राम तुम्हारे। टेक
माय बाप तूं साहिब मेरा, भक्ति हीन मै सेवक तेरा १
मातपिता तूं बंधव भाई, तुम्हहीं मेरे सज्जन सहाई २
तुम्हहीं तातं तुम्हहीं मातं, तुम्हहीं जातं तुम्हहीं नातं ३
कुल कुटंब तूं सब परवारा, दादू का तूं तारण हारा ४

१० प्रचय बीनती० ।

नूर नैन भरि देखण दीजै, अमी महारस भरि भरि पीजै । टेक
अमृत धारा वार न पारा, निर्मल सारा तेज तुम्हारा १
अजर जरंता अमी झरंता, तार अनंता बहु गुणवंता २
झिलमिल सांई जोति गुसांई, दादू माहीं नूर रहांई ३

११ प्रचा० ।

अैन एकसो मीठा लागै, जोति सरूपी ठाढ़ा आगै । टेक
झिलमिल करणां, अजरा जरणां
नीझर झरणां, तहां मन धरणां १
निज निरधारं निर्मल सारं, तेज अपारं प्राण अधारं २
अगहा गहणां, अकहा कहणां
अलहा लहणां, तहां मिलि रहणां ३
निरंध नूरं सकल भरपूरं, सदा हजूरं दादू सूरं ४

१२ भजन प्रताप० ।

तौ काहेकी प्रवाह हमारे, राते माते नाम तुम्हारे । टेक
झिलमिल झिलमिल तेज तुम्हारा, प्रगट खेलै प्राण हमारा १
नूर तुम्हारा नैनहु मांहीं, तनमन लागा छूटै नांहीं २
सुखका सागर वार न पारा, अमी महारस पीवण हारा ३
प्रेम मगन मतिवाला माता, रंग तुम्हारै दादू राता ४

इति राग कनडो सपूर्ण ॥ राग ४ ॥ पद १०६ ॥

॥ अथ श्री राग अडाणों ॥

१ गुरुदेव० ।

भाई रे ऐसा सतगुरु कहिए, भक्ति मुक्ति फल लहिए । टेक
अविचल अमर अविनाशी, अष्टसिधि नवनिधि दासी १
ऐसा सतगुरु राया, चारि पदार्थ पाया २
अमी महारस माता, अमर अभयपद दाता ३
सतगुरु त्रिभवन तारै, दादू पार उतारै ४

२ गुरुमुख कसौटी० ।

भाई रे भानघडै गुरु मेरा, मैं सेवक उस केरा । टेक
कंचन करिले काया, घडि घडि घाट न पाया १
मुख दर्पन मांहिं दिखावै, पीव प्रगट आण मिलावै २
सतगुरु साचा धोवै, तो बहुर न मैला होवै ३
तनमन फेरि संवारै, दादू करगहि तारै ४

३ गुरुउपदेश० ।

भाई रे तेह्नो रूडो थाए, जे गुरुमुख मार्ग जाए । टेक
कुसंगति परहरिए, सतसंगति अणि सरिए १
काम क्रोध नहीं आणे, बाणी ब्रह्म बखाणे २
विषया थीं मनवारे, ते आपण पो तारे ३
विष मूकी अमृत लीधो, दादू रूडो कीधो ४

४ बीनती० ।

बाबा मन अपराधी मेरा, कह्या न मानै तेरा । टेक
माया मोह मद माता, कनक कामनी राता १
काम क्रोध अहंकारा, भावे विषै विकारा २

काल मीच नहीं सूझै, आत्म राम न बूझै ३
समर्थ सिरजनहारा, दादू करै पुकारा ४

५ तर्क चितामणी० ।

भाई रे यों विनसै संसारा, काम क्रोध अहंकारा । टेक
लोभ मोह मैं मेरा, मद मछर बहु तेरा १
आपा पर अभिमानां, केता गर्व गुमानां २
तीन तिमिर नही जाहीं, पचों के गुण माहीं ३
आत्म राम न जानां, दादू जगत दिवानां ४

६ ज्ञान० ।

भाई रे सबका कथमि गियानां, जब दूसर नाहीं आनां । टेक
जब तत्वही तत्व समानां, जहां का तहां ले सानां १
जहां का तहां मिलावा, ज्यूंथा त्यूंहि आवा २
संधें संधि मिलाई, जहां तहां थिति पाई ३
सब अंग सबही ठांई, तब दादू दूसर नांहीं ४

इति श्री राग अडाणों सपूर्ण ॥ राग ५ ॥ पद ११७ ॥

॥ अथ राग केदारो ॥

---

१ वीनती० ।

म्हारा नाथजी तिहांगे नाम लिवाड रे, रामरतन रिधियामैं राखे
म्हारा बाह्लाजी विषया थीं वारि । टेक
बाह्ला बाणीनै मन मांहें मारो, चितवन तांगे चित राखे.
स्रवण नेत्र यां इंद्रियं ना गुण. म्हारा मांहिला मलते नाखे १
बाह्ला जीवाडे तो राम रमाडे, मूनैं जीयानूं फलए आवै.

तहांरा नाम विनाहूं, जहां जहां बांधो, जन दादू ना बंधन कापे २

२ बिरह-वीनती० ।

अरे मेरे सदा संगाती रे राम, कारण तेरें । टेक

कंथा पैरौं भसम लगाऊं, बैरागनि ह्वै ढुंढुं रे राम १

गिरवर बाला रहूं उदासा, चढि सिरमेर पुकारों रे राम २

यहु तन जालों यहु मन गालौं, करवत सीस चढाऊं रे राम ३

सीस उतारूं तुम्हपर वारूं, दादू बलि बलि जाय रे राम ४

३ ।

अरे मेरा अमर उपावण हार रे खालिक, आसिक तेरा । टेक

तुम्हसों राता तुम्हसूं माता, तुम्हसों लागा रंगरे खालिक १

तुम्हसों खेला तुम्हसों मेला, तुम्हसूं प्रेम सनेह रे खालिक २

तुम्हसूं लेणा तुम्हसूं देणा, तुम्हहीं सों रत होयरे खालिक ३

खालिक मेरा आसिक तेरा, दादू अनत न जायरे खालिक ४

४ सतूती० ।

अरे मेरा समर्थ साहिब रे अल्हा, नूर तुम्हारा । टेक

सबदिस देवै सबदिस लेवै, सबदिस वारन पार रे अल्हा १

सबदिस कर्ता सबदिस हरता, सबदिस तारण हार रे अल्हा २

सबदिस वक्ता सबदिस सुरता, सबदिस देखण हार रे अल्हा ३

तुंहै तैसा कहिए ऐसा, दादू आनंद होरे अल्हा ४

५ विरह वीनती० ।

हाल असां जो लालडे, तोकूं सब मालूमडे । टेक

मंझे खांमा मांझि बिराहां, संझें लगी भाहिड़े

मंझे मेडी मुचैथला, कैंदरि कारिया धाहड़े १

बिरह कसाई मुंगरेला, मंझेबढे मांहड़े

सीकों करै कबाब जीलायं, दादू जे झाहड़े २

६।

पीवजी सेती नेह नवेला, अति मीठा मोहि भावै रे
निस दिन देखौं बाट तुम्हारी, कब मेरे घर आवै रे। टेक
आय बणीहै साहिब सेती, तिलबिन तिल क्यूं जावै रे
दासीकों दर्सन हरि दीजै, अब क्या आप छिपावै रे १
तिल तिल देखौ साहिब मैरा, त्यूं त्यूं आनंद अंग न मावै रे
दादू ऊपर दया करिन, कब नैनहु नैन मिलावै रे २

७।

पीव घर आवै रे, बेद न म्हारी जाणी रे
बिरह संताप कवन पर कीजै, कहूंछूं दुखनी कहाणी रे। टेक
अंतरजामी नाथ हमारौ, तुझबिन हूं सीदांणी रे
मंदिर म्हारे कांयन आवै, रजनी जाइ बिहाणी रे १
तहांरी बाट हूं जोय जोय थाको, नैन न खंडै पाणी रे
दादू तुझबिन दीन दुखी रे, तूं साथें रह्योछैतांणी रे २

८।

कब मिलसी पीव ग्रह छाती, हों औरां संग मिलाती। टेक
तिसजु लागी तिसही केरी, जनम जनम सों साथी
मीत हमरा आव पियारा, तहांरा रंगन राती १
पीव बिना मूझै नींद न आवै, गुण तहांरा लै गाती
दादू ऊपरि दया मया करि, तहांरै बारणै जाती २

९ विरहको।

म्हरा रे वाल्हा नै काजे, रिदै जोबानै हूं ध्यान धरूं
आकुल थाए प्राण अम्हारो, कहुनै केही परिकरो। टेक

सम्भाव्यो आवै रे, वाल्हा वेळां येहुं जो
इठरूं साथी जी साथैं थईनै, पैली तीर हुं पार तिरो १
पीव पाखैं दिन दुहेला जावै, घडी बरसां सौं किम भरों
दादू रे जन हरिगुण गातां, पूर्ण स्वामी तेह वरूं २

१० विरह बिनतीको० ।

मरिए मीत बिछोहे, जीयरा जाइ अंदोहे । टेक
ज्यूंजलबिछुरेमीनांतलफितलफिजीवदीन्हां,योंहरिहमसूंकीन्हा १
चातृग मरै पीयासा निसदीन रहै उदासा, जीवै किहि बेसासा २
जलविनकमलकुमलावै प्यासा नीरन पावै,क्यूंकरितृषाबुझावै ३
मिलजिनविछुरे कोई बिछुरे बहुदुख होई, क्यूं जन जीवै सोई ४
मरणामीत सुहेला बिछुर न खरा दुहेला, दादू पीव सों मेला ५

११ ।

पीव हूं कहा करूं रे,
पाइपरौं के प्राण हरौं रे, अबहूं मरणे नांहि डरूं रे । टेक
गालि मरूं कै जालि मरौं रे, कैहूं करवत सीस धरौं रे १
घाइ मरौं कै खाइ मरौं रे, कैहूं कतहूं जाइ मरौं रे २
तलफि मरूं कै झूरि मरौं रे, कैहूं विरहीं रोइ मरूं रे ३
टेरि कह्यामैं मरण गह्या रे, दादू दुखीया दीन भया रे ४

१२ ।

वाह्लाहूं जाणों जे रंग भरि रमिए, म्हारोनाथ निमख नहीं मेलौं रे
अंतरजामी नांहि न आवै, ते दिन आवै छेलो रे । टेक
वाह्ला सेज हमारी एकलडी, तहां तुझने कांई प्राम्यो रे
अदित हमारो पूर्बलो रे, ते तो आयो साम्हो रे १
वाह्लाम्हारारिदियाभीतरिकांईनआवै, मूनै चरन बिलंबन दीजे रे

दादू तौ अपराधी तांहौ, नाथ उधारी लीजै रे २

१३ वीनती० ।

तूछै म्हारो राम गुसाईं, पालव तोरे बांधी रे
तुझ विनां हूं अनंत रडवडीयों, कीधी कमाई लाधी रे, । टेक
जीवों जे तिल हरिबिनां रे, देहडी दुखैं दाधी रे
यणैं औतारै काई न जाण्यौं, साथैं टाकरि खाधी रे १
छूटिक म्हांरो केई प्रथासी, साक्यो न राम अराधी रे
दादू ऊपरि दया मया करि, हूं तहांरो अपराधी रे २

१४ ।

तूंही तूं तन म्हारो गुसांई, तूं विनां तूं किहैं कहूं रे
तूं तां तूंहीं थई रह्यो रे, सरण तुम्हारी जाइ रहूं रे । टेक
तनरान मांहे जोइए तूं तां, तुझ दीठाहूं सुखलहूं
तूं तां जे तिल तजि रहूं, तिम तिम तोहूं दुख सहूं १
तुम्ह विना म्हारो कोई नहीं रे, हूंतों तहांरा बिनां बहूं
दादू रे जन हरिगुण गाता, मै, मल्हों म्हारो मैहूं २

१५ केवल वीनती० ।

हमारे तुम्हही हो रछपाल,
तुम्ह बिन और नहीं को मेरे, भव दुख मेटण हार । टेक
वैरी पंच निमख नहीं न्यारे, रोकि रहे जम काल
हा जगदीस दास दुख पावै, स्वामी करो संभाल १
तुम बिन राम दहैं ए दुंदर, दसों दिसा सब साल
देखत दीन दुखी क्यूं कीजै, तुम हो दीन दयाल २
निर्भय नाम हेत हरि दीजै, दर्सन परसन लाल
दादू दीन लीन करि लीजै, मेटो सबै जंजाल ३

१६ बीनती० ।

ए मन माधो बरजि बरजि,
अति गति विषया सूं रत, उठतजु गाजि गाजि । टेक
त्रिषै बिलास अधिक अति आतुर, बिलसत संक न मांनै
खाय हलाहल मगन मायामैं, विष अमृत करि जानै १
पंचन के संग बहत चहुं दिस, उलटि न कबहूं आवै
जहां जहां काल जाइ तहां तहां, मृग जल ज्यूं मन धावै २
साधु कहै गुरुज्ञान न मानै, भाव भजन तुम्हारा
दादू के तुम सज्जनसहाई, कछू न बसाइ हमारा ३

१७ मन उपदेस ।

हां हमारे जीयरे राम गुण गाइ, एही बचन विचारे मान । टेक
केती कहुं मन कारणै, तूं छोडिरे अभिमान
कहि समझाऊं बेरबेर, तुझ अजहूं न आवै ज्ञान १
ऐसा संग कहां पाईए, गुण गावत आवै तान
चरनूं से चित राखिए, निस दिन हरिको ध्यान २
वैभी लेखा देहिगे' आप कहावै खान
जन दादू रे गुण गाईए, पूर्ण है निर्बाण ३

१८ काल चितामणी ।

बटाऊ चलनां आजकि काल्हि,
समझि न देखै कहा सुखसोवै, रे मन राम सभाल्हि । टेक
जैसैं तरवर वृछ बसेरा, पक्षी बैठे आइ
ऐसैं यहु सब हाट पसारा, आप आप कों जाइ १
कोई नहीं तेरा सज्जन संगाती, जिन खोवै मन मूल
यहु संसार देखि जिन भूलै, सबही सेमल फूल २

तन नहीं तेरा धन नहीं तेरा, कहा रह्यो ईहिलागि
दादू हरिविन क्यूं सुख सोवै, काहे न देखै जागि ३

१९ तर्क चितामणी० ।

जात कत मदको मातो रे,
तन धन जोबन देखि गर्बानों माया रातो रे । टेक
अपनोंही रूप नैन भरि देखै, कामनि को संग भावै रे
बारंबार बिषै रुचि मांनैं, मरिबो चित न आवै रे १
मैं बडि आगै और न आवै, करत केत अभिमानां रे
मेरी मेरी करि फूल्यौ, माया मोह भुलांनां रे २
मैं मैं करत जन्म सब खोयो, काल सिराणैं आयो रे
दादू देखु मूढ नर प्राणी, हरिविन जनम गमायो रे ३

२० हित उपदेस० ।

जागे ताकों कदे न मूसै कोई,
जागत जानि जतन करि राखै, चोर न लागू होइ । टेक
सोवत साइ बस्तु नहीं पावै, चोर मूसै घर घेरा
आगि पासि पहरै को नाहीं, बसतैं कौन नबेरा १
पीछैं कहुं क्या जागे होई, बसतु हाथ थैं जाई
बीती रैणि बहुरि नहीं आवै, तब क्या करिहै भाई २
पहलै ही पहरै जे जागै, बस्तु कछू नही छीजै
दादू जुगति जांनि करि ऐसी, करुणा है सो कीजै ३

२१ उपदेस० ।

सजनी रजनी घटती जाइ,
पल पल छीजै अवधि दिन आवै, अपनों लाल मनांइ । टेक
अति गति नींद कहां सुख सोवै, यहु औसर चलिजाइ

यहु तन बिछुरें बहुर कहां पावै, पीछैही पछिताइ १
प्राणपति जागैं सुंदरि क्यूं सोवै, उठि आतुर गहिपाइ
कोमल बचन करुनां करि आगैं, नखसिख रहो लपटाइ २
सखी सुहाग सेज सुख पावै, प्रीतम प्रेम बढाइ
दादू भाग बडे पीव पावै, सकल सिरोमणी राइ ३

२२ प्रश्न उत्तर० ।

कोइ जांणैरे मरम सधाइ एकेरो,
कैसैं रहैं करै का सजनी प्राण मेरो । टेक
कौंण विनोद करतरी सज्जनी, कवन न संग बसेरो
संत साधुगम आए उनकै, करतजु प्रेम घनेरो १
कहां निवास वास कहां सजनी, गवन तेरो
घट घट मांहि रहै निरंतर, ए दादू नेरो २

२३ विरह वीनती० ।

मन वैरागी रामको, संगरहै सुख होइ हो । टेक
हरि कारण मन जोगिया, क्यूंहीं मिलै मुझ सोइ
निरखण का मोहि चाव है, क्योंही आप दिखावै मोहि हो १
हिरदे में हरि आवतूं, मुख देषों मन धोइ
तनमन मै तूंही बसै, दया न आवै तोहि हो १
निरखण का मोहि चाव है, ए दुख मेरा खोइ
दादू तुम्हारा दास है, नैन देखन कौं रोइ हो ३

२४ अधीरज उराहन० ।

धरणी धर वाह्याधू तारै, अंग प्रस नही आपे रे
कह्यो हमारो काइ न मानै, मन भावै ते थापे रे । टेक
वाही वाही नै सर्बस लीधो, अबला कोइ न जाणे रे

अलगो रहै एणीं प्रतंडे, आपनडै घर आणै रे १
रमी रमी नै राम रझावी, केहै अनत न दीधो रे
गोपि गुझते कोइ न जाणै, एह्वा अचिरज कीधो रे २
माता बालक रुदन करंता, वाही वाहीं नैं राखै रे
जेह्वौ छै तेहो आपणयो, दादू ते नही दाखै रे ३

२५ समर्थाई० ।

सिरजनहार थैं सब होइ,
उतपति प्रलय करै आपै, दूसर नांही कोइ । टेक
आप होइ कुलाल करता, बूंद थैं सब लोइ
आप करि अगोच बैठा, दुनी मनको मोहि १
आप थैं उपाइ बाजी, निरखि देखै सोइ
बाजीगरको यहु भेद पावै, सहज सौं जस मोहि २
जे कुछ कीया सो करिहै आवै, यह उपजै मोहि
दादू रे हरि नाम सेती, मैल कुसमल धोइ ३

२६ गच० ।

देहुरे मंझि देव पायो, बसतु अगोच लखायो । टेक
अति अनूप जोति पति सोई, अंतर आयो
पिंड ब्रह्मंड समतुलि दिखायो १
सदा प्रकास निवास निरंतर, सब घट मांहि समायो
नैन नृखि नेरो हिरदै हेत लायो २
पूर्व भाग सुहाग सेज सुख, सो हरि लैन पठायो
देवको दादू पार न पावै, अहोपै उनही चितायो ३

इति श्रीराग केदारो सपूर्ण ॥ पद १४३ ॥ राग ८ ॥

॥ अथ राग मारू ॥

—*—

१ उपदेस चितामणी ।

मनां भजि रामनाम लीजै,
साधु संगत स्मरे स्मरि, रसनां रस पीजै ।
साधु जन स्मरण करि, केते जपि जागे
अगम निगम अमर कीए, काल कोई न लागे १
नीच ऊंचि चिंत न करि, सरनां गति लीए
भक्ति मुक्ति अपती गति, ऐसैं जन कीए २
केते तिर तीर लागे, बधनं बहु छूटे
कलमल विष जुगि जुगि के, रामनाम खूटे ३
भ्रम कर्म सब निवारि जीवन जपि सोई
दादू दुख दूरि करण, दूजा नहीं कोई ४

२ ।

मनां जपि राम नाम कहिए, राम नाम मन बिश्राम
संगी सो ग्रहिए । टेक
जागि जागि सोवे कहा, काल कंध तेरे
बारम्बार करि पुकार, आवत दिन नेरे १
सोवत सोवत जनम वीते, अजहूं न जीव जागै
राम संभारि नींद निवारि, जनम जरा लागै २
आस पासि भ्रम बंध्यो नारी ग्रह मेरा, अंत्य काल छाडि-
चल्यो कोई नहीं तेरा ३
तजि काम क्रोध मोह माया, राम नाम करणां
ज़बलग जीव प्राण पिंड, दादू गहि सरणां ४

३ बिरह० ।

क्यूं बिसरै मेरा पीव पियारा, जीव की जीवन प्राण हमारा । टेक
क्योंकरि जीवे मीन जल बिछुरें, तुम्ह बिन प्राण सनेही
चिंतामणि जब करथैं छूटे, तब दुख पावे देही १
माता बालक दूध न देवै, सो कैसैं करि पीवै
निर्धन का धन अनंत भुलानां, सो कैसैं करि जीवै २
बरषो राम सदा सुख अमृत, नीझर निर्मल धारा
प्रेम पियाला भरि भरि दीजै, दादू दास तुम्हारा ३

४ अत्यंत विरह० ।

कोई कहो रे म्हारा नाथनैं, नारी नैन निहारै बाट । टेक
दीन दुखिया सुंदरी, करुणां बचन कहे रे
तुम्ह बिन नाह बिरहणी व्याकुल, किम करि नाथ रहे रे १
भूधर बिन भावे नहीं कोई, हरिबिन और न आणैं रे
देह ग्रह ते हनै आपों, जे कोई गोविंद आणैं रे २
जगपतिनैं जोइ बानैं काजै, आतुर थई रही रे
दादू नै दिखाड़ो स्वामी, व्याकुल होय गही रे ३

५ ।

अम्हे बिरहणियां राम तुम्हारड़ियां, तुम्ह बिन नाथ अनाथ
कांई बिसारड़ियां । टेक
अम्हनैं अंग अनल प्रजालै, नाथ निकट नहीं आवै रे
दर्शण कारण बिरहणि व्याकुल, और न कोई भावै रे १
आप अपरछ अम्ह नै देखै, आप न पोन दिखाडै रे
प्राणी पिंजर ले रह्यो, आडा अंतर पाड़ै रे २
देव देव करि दर्शण मांगै, अंतरजामी आपै रे

दादू विरहणि बन बन ढूंढै, ए दुख काइ न कापै रे ३

५ विरह विलाप० ।

कबहूं ऐसा बिरह उपावै रे, पीव देखे बिन जीव जावै रे । टेक
विपत हमारी सुनौं सहेली, पीव विन चैंन न आवै रे
ज्यूं जल मीन मीन तन तलफै, पीव विन बज्र बिहावै रे १
ऐसी प्रीति प्रेमकी लागै, ज्यूं पंखी पीव सुनावै रे
तो मन मेरा रहै निसबासुर, कोई पीवकों आनि मिलावै रे २
तो मन मेरा धीरज धरई, कोई आगम आंनि जनांवै रे
तो सुख जीव दादू का पावै, पल पीवजी आप दिखावै रे ३

६ प्रश्न विरह० ।

पंथीड़ा बूझै विरहणी, कहै न पीवकी बात
कब घर आवै कब मिलै, जोऊं दिन अरु राति पंथीड़ा । टेक
कहां मेरा प्रीतम कहा वसै, कहां रहै करि बास
कहां ढूंढूं पीव पाईए, कहां रहे किस पास पंथीड़ा १
कवन देस कहां जाइए, कीजै कोंण उपाइ
कोण अंग कैसैं रहै, कहां करै समझाइ पंथीड़ा २
परम सनेही प्राणका, सो कत देहु दिखाइ
जीवन मेरे जीवकी, सो मुझ आंणि मिलाइ पंथीड़ा ३
नैन न आवै नींदड़ी, निसदिन तलफत जाइ
दादू आतुर बिरहणी, क्यूं करि रैणि बिहाइ पंथीड़ा ४

७ समुचे उत्तर० ।

पंथीड़ा पंथ पिछाणी रे पीवका, गहि बिरह की बाट
जीवत मृतक ह्वै चलै, लंघै ओघट घाट । टेक
सतगुर सिरपर राखिए, निर्मल ज्ञान बिचार

प्रेम भक्ति करि प्रीति सौं, सनमुख सिरजनहार पंथीड़ा १
परआत्म सो आत्मा, ज्यूं जल जलहि समाइ
मनही सूं मन लाईए, लैकै मार्ग जाइ पंथीड़ा २
ताला वेली ऊपजै, आतुर पींड पुकार
समर सनेही आपणा, निस दिन बारम्बार पंथीड़ा ३
देखि दोखि पग राखिए, मार्ग खंडा धार
मनसा बाचा कर्मनां, दादू लंघै पार पंथीड़ा ४

८ अनुक्रम उत्तर० ।

साधु कहै उपदेस विरहणी,
तन भुलै तब पाईए, निकट भया परदेस विरहणी । टेक
तुमही मांहि ते बसै, तहां रहे करिश्रा
तहां ढूंढै पीव पाइए, जीव न जीव के पासि विरहनी १
परम देस तहां जाइए, आत्म लीन उपाइ
एक अंग ऐसै रहैं, जूं जल जलहि समाइ विरहनी २
सदा संगाती आपणां, कबहूं दूर न जाइ
प्राण सनेही पाइए, तनमन लेहु लगाइ विरहनी ३
जागें जगपति देखिए, प्रगट मिलि है आइ
दादू सनमुख ह्वै रहै, आंनद अंग न माइ विरहनी ४

९ विरह बीनती० ।

गोविंदा गाइबा देरे,
आडडि आण निवारि, गोबिंदा गायबा देरे
अनदिन अंतर आनंद कीजै, भक्ति प्रेम रस सार रे । टेक
अनुभव आत्म अभय एकरस, निर्भय काई न कीजै रे
अमी महारस अमृत आपै, अम्हे रसिक रस पीजै रे १

अविचल अमर अखै अविनासी, ते रस काईन दीजै रे
आतम राम अधार अम्हारो, जनम सुफल करि लीजै रे २
देव दयाल कृपाल दमोदर, प्रेम बिना क्यूं रहिए रे
दादू रंगभरि राम रमाडो, भक्ति बछल तूं कहिए रे ३

१० ।

गोविंदा जोइवा देरे जे बरजे ते बाररे, गोविंदा जोइवा देरे
आदि पुरुष तूं अछै अम्हारो, कंत तुम्हारी नारि रे । टेक
अंगै संगै रंगै रमिए, देवा दूरि न कीजे रे
रस मांहि रस इमथइ रहिए, ए सुख अम्हने दीजै रे १
सजडिये सुख रंग भरि रमिए, प्रेम भक्ति रस पीजै रे
एकमेक रस केलि करंता, अम्हे अबला इम जीजै रे २
समर्थ स्वामी अंतरजामी, बार बार कोइ बाहे रे
आदैं अतैं तेज तुम्हारो, दादू देखै गावै रे ३

११ ।

तुम्हे सरसी रंग रमाड़ि,
आपे अप्रछन थई करी, मूनैं मम भ्रमाड़ि । टेक
मूनै भोलविकांई थई बेगलो, आपण पो दिखाड़ि
किम जीवों हूं एकली, बिरहाणियां नारि १
मूनै बाहिसिमां अलगोथई, आत्मा उधारि
दादू सूं रमिए सदा, एणी परैं तारि २

१२ कालाचिंतामणी । ।

जागिरे किस नीदड़ी सूता, रैणि बिहाई सबगई
दिन आई पंहुता । टेक
सो क्यूं सोवै नीदड़ी, जिस मरणां होवै रे

औरा बैरी जागणां, जीव क्यूं तूं सोवै रे १
जाकै सिरपर जमखड़ा, सर सांधे मारै रे
सो क्यूं सोवै नींदड़ी, कहि क्यूं न पुकारै रे २
दिन प्रति निस काल झंपै, जीव न जागै रे
दादू सूता नींदड़ी, उस अंग न लागै रे ३

११।

जागिरे सबरैणि बिहाणी, जाइ जनम अंजुली को पाणी। टेक
घड़ी घड़ी घड़ियाल बजावै, जेदिन जाइ सो बहुर न आवै १
सूरज चंद कहैं समझाइ, दिन दिन आव घटंती जाइ २
सरवर पाणी तरवर छाया, निसदिन काल गिरासै काया ३
हंस बटाऊ प्राण पयानां, दादू आत्म राम न जानां ४

१४।

आदि काल अंत्य काल, मध्य काल भाई
जनम काल जरा काल, काल संग सदाई। टेक
जागत काल सोवत काल, काल झंपै आई
चलत काल फिरत काल, कबहूं ले जाई १
आवत काल जात काल, काल कठिन खाई
लेत काल देत काल, काल ग्रसै धाई २
कहत काल सुनत काल, करत काल सगाई
काम काल क्रोध काल, काल जाल छाई ३
काल आगे काल पिछैं, काल संग समाई
काल रहित राम गहित, दादू ल्योलाई ४

१५ हित उपदेस० ।

तोकूं केता कह्या मन मेरे,
खिणइक मांहैं जाइ अनेरै, प्राण उधारी लेरे । टेक
आगेहै मनखरी बिमासेण, लेखा मांगे दे रे
काहे सोवै नींदभरी रे, कृत बिचारीते, ते परि कीजै मनविचा रे १
राखो चरणां नेरे, रती इकजीवन मोहि सूझे, दादू चेति सवे रे २

१६ ।

मन वाल्हा रे कछू विचारी खेल, पडिसी रे गढ भेल । टेक
बहु भांते दुख दइगारे वाल्हा, ज्यूं तिल महां लीजै तेल
करणी तहांरी सोधिसी रे, होसी रे सिरहेल १
अबही थैं करि लीज रे वाल्हा, सांई सेती मेल
दादू संग न छाडी पीवका, पाई है गुणकी बेल २

१७ ।

मन बावरे हो अनंत जिन जाइ,
तौ तूं जीवै अमीरस पीवै, अमर फल काहे न खाइ । टेक
रहु चरण सरण सुख पावै, देखहु नैन अघाइ
भाग तेरे पीव नेर, थीर थान बताइ १
संग तेरे रहै घेरै, सहज संग समाइ
सरीर मांहै सोधि सांई, अनहद ध्यान लगाइ २
पीव पासि आवै सुख पावै, तनकी तपति बुझाइ
दादू रे जहां नाद उपजै, पीव पासि दिखाइ ३

१८ भ्रम विधूमन० ।

निरंजन अंजन कीन्हां रे, सब आत्म लीन्हा रे । टेक
अंजन माया अंजन काया, अंजन छाया रे

अंजन राते अंजन माते, अंजन पाया रे १
अंजन मेरा अंजन तेरा, अंजन मेला रे
अंजन लीया अंजन दीया अंजन खेला रे २
अंजन देवा अंजन सेवा, अंजन पूजा रे
अंजन ज्ञानां अंजन ध्यानां अंजन दूजा रे ३
अंजन बक्ता अंजन सुर्ता, अंजन भावै रे
अंजन राम निरंजन कीह्ना, दादू गावै रे ४

१६ निज बचन महिमा० ।

अैन बैन चैन होय, सुणतां सुख लागै
तीन्यूं गुण त्रिविधि तिमर, भ्रम कर्म भागै रे । टेक
होय प्रकास अति उजास, परम तत सूझै
परम सार निर्विकार, बिरला कोई बूझै रे १
परम थान सुख निधान, परम शुनि खेलै
सहज नाय सुख समाइ, जीव ब्रह्म मेलै रे २
अगम निगम होइ सुगम, दूस्तर तिर आवै
परम पुरुष दर्स पर्स, दादू सो पावै रे ३

२० साई माघ हेरा० ।

कोई रामका राता रे, कोई प्रेमका माता रे । टेक
कोई मनको मारै रे, कोई तनकूं तारै रे, कोई आप उवारै रे १
कोई जोग जुगंतारे, कोई मोक्ष सुखंतारे, कोई है भगवंता रे २
कोई सदगति सारारे, कोई तारण हारारे, कोई पीवका प्यारा रे ३
कोई पारकापायारे, कोई मिलकरि आयारे, कोई मनका भायारे ४
कोई है बडभागी रे, कोई सेज सुहागी रे, कोई है अनुरागी रे ५
कोई सब सुख दातारे, कोई रुप विधाता रे, कोई अमृत खाता रे ६

कोई नूर पिछाणैं रे, कोई तेज कों जांणै रे, कोई ज्योति बखांणै रे ७
कोई साहिब जैसा रे, कोई सांई तैसा रे, कोई दादू ऐसा रे ८

२१. धू लक्षण वर्नन० ।

सदगति साधवा रे, सनमुख सिरजनहार
भवजल आप तिरै तै तारे, प्राण उधारण हार । टेक
पूर्णब्रह्म राम रंग राते, निर्मल नाम अधार
सुख संतोष सदा सत संजम, मति गति वार न पार १
जुगि जुगि राते जुगि जुगि माते, जुगि जुगि संगति सार
जुगि जुगि मेला जुगि जुगि जीवनि, जुगि जुगि ज्ञान विचार २
सकल सिरोमणि सब सुख दाता, दुर्लभ इंहि संसार
दादू हंस रहै सुख सागर, आय पर उपकार ३

२२ प्रचय उछाह मगल ।

अम्ह घर पांहुणांवे, आव्या आतमराम । टेक
चहुंदिस मंगलचार, आनंद अति घणांए
वर्त्यां जय जय कार, बरद बधावणांए १
कनक कलस रस मांहि, सखी भरिल्यावज्योए
आनंद अंग न माइ, अम्हारे आवज्योए २
भाव भक्ति अपार, सेवा कीजिए
सनमुख सिरजनहार, सदा सुख लीजिए ३
धन्य अम्हारा भाग, आव्या अम्ह भणीए
दादु सेज सुहाग, तूं त्रिभवन धणीए ४

२३ ।

गावहु मंगल चार, आजि बधावणाए
स्वप्नैं देख्योसा, पीव घर आवणांए । टेक

भाव कलस जल प्रेमका, सब सखीयन के सीस
गावत चली बधांवणां, जय जय जय जगदीस १
पदम कोटि रवि झिलमिलै, अंग अंग तेज अनंत
विगसि बदन बिरहन मिली, घर आए हरि कंत २
सुंदरि सुति सिंगार करि, सनमुख प्रश्न पीव
मो मंदिर मोहन आवीया, वारुं तनमन जीव ३
कवल निरंतर नरहरी, प्रगट भए भगवंत
जहां बिरहनि गुण बीनवै, खेलै फाग वसन्त ४
वरआयो विरहनि मिली, अरस परस सब अंग
दादू सुंदरि सुख भया, जुगि जुगि यहु रस रंग ५

इति श्री मारू राग संपूरण ॥ राग ८ ॥ पद १६७ ॥

॥ अथ राग रामकली ॥

१ सब्द महिमां० ।

शब्द समानां जे रहै, गुरु बायक बीधा
उनहीं लागा एकसूं, सोई जन सीधा । टेक
ऐसी लागी मरम की, तनमन सब भूला
जीवत मृतक ह्वैरहे, गहि आत्म मूला १
चेतन चितहिन बीसरै, महा रस मीठा
शब्द निरंजन गहिरहा, उन साहिब दिठा २
एकशब्द जन ऊधरे, सुनि सहजै जागे
अंतर राते एकसूं, सरसन सुख लागे ३
शब्द समानां सनमुखं रहै, परआत्म आगे
दादू सीझै देतां, अविनासी आगे ४

२ नाम महिमा ।

अहो नीका है हरिनाम,
दुजा नहीं नाम बिन नीका, कहिले केवल राम । टेक
निर्मल सदा एक अबिनासी, अजर अकल रस ऐसा
दिढगहि राखि मुलमनमांहि, नृखि देखि निज कैसा १
येहु रस मीठा महाअमीरस, अमर अनूपम पीवै
राता रहे प्रेमसूं माता, ऐसैं जुगि जुगि जीवै २
दूजा नहीं और को ऐसा, गुरु अंजन करिसूझै
दादू मोटे भाग हमारे, दास बिवेकी बूझै ३

३ अत्यंत बिरह० ।

कब आवैगा कब आवैगा,
पीव प्रगटआप दिखावैगा, मीठडा मुझकों भावैगा । टेक
कवडे लागी रहूं रे,नैनहुंमै बाहिधरो रे, पीवतुझबिन झूरिमरू रे १
पांऊंमस्तक मेरारे, तनमन पीवजी तेरारे,हुंराखो नैनहुंनेरारे २
हिवडे हेत लगांऊं रे,अबकैजे पीवपांऊं रे,तो बेरबेर बलिजाऊंरे ३
सेजडिये पीव आवै रे, तब आनंद अंगन मावै रे
जब दादू दर्स दिखावै रे ४

४ ।

फिरि तूं पाण पमायडे, मूतन लगी भाहिडे । टेक
पांधीवी दात करीला, असांसाण गलायडे
सांई सिकां मडकेला, गुझी गाल्हि सुणां पडे १
मसां पाक दीदार केला, सिक असां जीलाहिडे
दादू मांझि कलूब मैला, तोडे बीयांन काडे २

५ ।

को मेडी दो सज्जना, सुहारी सुत केला लेंगडीह घणा । टेक

पिरीयां संदी गाल्हि डीलां, पांधीडा पूछां
कंडोई दो मुंग रेला, कीदो बांह असां १
आहे सिक दीदार जीला, पिरी पूर यसां
यं दादू जे जिंदएला. सज्जण साण रहां २

६ वीनती केवल० ।

हरिहां दिखावो नैनां, सुंदर मूर्ति मोहनां,बोलि सुनांवो बैनां। टेक
प्रगट पुरातन खंडणां, महीमान सुख मंडणां १
अविनासी अपरंपरा, दीनदयाल गगनधरा २
पारब्रह्म प्रपूर्णा, दर्स देऊ दुख दूरणां ३
करिकृपा करूणामई, तब दादू देख तुम्हदई ४

७ निस पर हरता० ।

रामसुख सेवक जानै रे, दूजा दुख करि मानै रे । टेक
और अग्नि की झाला, फंन्ध रोप है जमजाला
समकाल कठिन सिर पेखै, ए सिंह रूप सब देखै १
बिष सागर लहरि तरंगा, यहु ऐसा कूप भवंगा
भयभित भयांनक भारी, रीप क्रवत मीच बिचारी २
यहु ऐसा रूप छलावा,ठगपासी हारा आवा
सब ऐसा देखि विचारे, ए प्राण घात वटपारे ३
ऐसा जन सेवक सोई, मन और न भाव कोई
हरिप्रेम मगन रंगराता, दादूराम रमै रसमाता ४

८ आमुख साधुमहिमां० ।

आप निरंजन यो कहै, कीर्ति कर्तार
मैं जन सेवक दो नहीं, एकै अंग सार । टेक
मम कारण सब परहर, आपा अभिमान

सदा अखंडित उरधरै, बोलै भगवान १
अंतरपट जीवै नही, तबही मरिजाइ
बिछुरे तलफै मीन ज्यूं, जीवै जल आइ २
खीर नीर ज्यूं मिलिरहै, जल जलहि समान
आतमपाणी लूण ज्यूं, दूजा नाही आन ३
मैंजन सेवक ह्वैनहीं, मेरा विश्राम
मेरा जन मुझ सारिखा, दादू कहैरे राम ४

८ प्रचयक्रो० ।

सरन तुम्हारी केसवा, मैं अनत सुखपाया
भागबडे तूं भेटिया, हूं चरनूं आया । टेक
मेरी तप्ति मिटी तुम्ह देखतां, सीतल भयो भारी
भव बंधन मुक्ता भये, जब मिले मुरारी १
भ्रम भेद सब भूलिया, चेतन चित लाया
पारस सूं प्रचा भया, उन सहज लखाया २
मेरा चंचल चित निहचलभया, अब अन्त न जाई
मगनभयो सरवाधियां, रसपीया अघाई ३
सनमुखह्वै तैं सुखदीया, यहु दया तुम्हारी
दादू दर्सन पावई, पीव प्राण अधारी ४

९ परसपर गोष्टप्रचय बीनती० ।

गोबिंन्द राखो अपनी वोट, काम क्रोध भए बटपारैं
तकिमारै उर चोट । टेक
बैरी पंच सबल संग मेरे, मार्ग रोकि रहे
काल अहेड़ी बधिक ह्वै लागै, ज्यूं जीव बाज गहे १
ज्ञानध्यान हिरदै हरिलीनां, संगही घेरिरहे

समझ न परई वापर मईया, तुम्ह बिन सूलसहे २
सरण तुम्हारी राखहु गोबिंद, इनकै संग न दीजै
इनके संग बहुत दुखपायो, दादू कूं गहिलीजै ३

१० भय मान वीनती० ।

रामकृपा करि हो दयाला, दर्सन देहु करहु प्रतिपाला । टेक
बालक दूध न देई माता, तौबै क्यूं करि जीवै बिधाता १
गुण औगुण हरि कछू न बिचारै, अंतरहेत प्रीति करि पालै २
अपनों जानि करैहु प्रतिपाला, नैन निकट उर धरै गोपाला ३
दादू कहै नही बस मेरा, तूंमाता मैं बालक तेरा ४

११ वीनती० ।

भक्ति मांगों बाप भक्ति मागों, मूनै तहांरा नामनों प्रेम लागों
सिवपुरब्रह्मपुरसर्वस्यूंकीजिए,अमरथावानहीलोकमांगों । टेक
आपअवलंबिन तहांरा अंगनों, भक्तिसजीवनी रंगराचों
देहनै गृहनैं बास बैकुण्ठ तणों,इंद्रआसण नही मुक्ति जाचों १
भक्तिवाह्ली खरी आप अबिचल हरी,निर्मलो नाम रसपानभावे
सिद्धिनै रिद्धिनै राजरूड़ो नहीं, देवपद म्हारे काजि न आवे २
आत्मा अन्तर सदा निरंतर, तहांरीबापजी भक्ति दीजै
कहै दादू हिवै कोड़िदत्त आपै,तुम्हविनां ते अम्हे नही लीजै ३

१२ ।

एहूं एकतूं रामजीनामरूड़ो,तहांरानामबिनांबिजोसबकूड़ो । टेक
तुम्हबिनां और कोई कलिमांनहीं,समरता संतनै साद आपै
कर्म कीधा कोटि छोडिबै बांधो, नामलेतां खिणतही कापै १
संतनै सांकडो दुष्ट पीडा करैं, बाहरैं वहैलो बेगिआवे
पापनां पुंज पहरा करिलीधौ, भाजिया भय भ्रम जोनिन आवे २
धुनैं दुहेलों ताहांतूं आकुलों, म्हारो म्हारो करी न धाए

दुष्टनै मारबा संतनैं तारवा, प्रगटथा वातहो आपजाए ३
नाम लेतां खिणनाथ तैं एकलै, कोटीनां कर्मनां छेदकीधा
कहै दादू हिव तुम्हबिनां को नही, साखि बोलैजे सरणि लीधा ४

१३ प्रचय बीनती गोष्टि०।

हरिनाम देहु निरंजन तेरा, हरिहरि खिजपै जीव मेरा। टेक
भावभक्ति हेत हरिदीजै, प्रेम उमंग मन आवै
कोमल बचन दिनता दीजै, राम रसांइण भावै १
बिरह बैराग प्रीती मोहि दीजै, हिरदै साच सत्य भाखौं
चित चरणों चितामणि दीजै, अंतर दिढ करि राखों २
सहज सील संतोष सब दीजै, मन नीहचल तुम्ह लागै
चेतन चिंतन सदा निवासी, संग तुम्हारै जागै ३
ज्ञानध्यान मोहन मोहि दीजै, सुर्ति सदा संग तेरे
दीनदयालु दादू को दीजै, परम जोति घट मेरे ४

१४ आसर्विाद मंगल०।

जय जय जय जगदीस तूं, तूं समर्थ सांई
सकल भवन भानैघडै, दूजाको नाहीं। टेक
कालमीच करूणां करै, जम किंकर माया
महाजोध बलवंत बली, भय कंपै राया १
जरामरण तुम्हथैं डरै, मनकौं भय भारी
काम दलन करूणांमई, तूं देव मुरारी २
सब कंपय कर्तार थैं, भवबंधन पासा
अरि रिपु भंजन भक्ता, सब बिघ्न बिनासा ३
सिरऊपर सांईखडा, सोई हम मांही
दादू सेवक रामका, निर्भय न डरांही ४

१५ हित उपदेश० ।

हरिके चरन पकरमन मेरा, यहु अबिनासी घरतेरा । टेक
जब चरन कमल रज पावै, तब काल ब्याल बोरावै
तब त्रिविधि तापतन नासै, तब सुखकी एसि बिलासै १
जब चरन कमल चितलागै, तब मांथै मीच न जागै
जब जनम जरा सब खीनां, तब पद पांवन उरलीनां २
जब चरन कमल रस पीवै, तब माया न ब्यापै जीवै
जब भ्रम कर्म भयभाजै, तब तीन्यूंलोक बिराजै ३
जब चरन कमल रूचितेरी, तब चारीपदार्थ चेरी
तब दादू और न बांछैं, जब मन लागौ साचै ४

१६ सत उपदेश० ।

संतो और कहो क्या कहिए, हम तुम्ह सीख यह सतगुरुकी
निकट रामके रहिए, । टेक
हम तुम्ह मांहि बसै सो स्वामी, साचे सौं सचुलहिए
दर्सन प्रसन जुग जुग कीजै, काहेकों दुख सहिए १
हम तुम्ह संग निकटि रहै नेरे, हरि केवल करिगहिए
चरण कमल छाडिकरि ऐसे, अंनत काहेको बहिए २
हम तुम्ह तारण तेज घन सुंदर, नीकेसूं निर्बहिए
दादू देखु और दुख सबही, तामै तन क्यूं दहिए ३

१७ मनप्रति उपदेस चिंतामणी० ।

मनारे बहुर न ऐसै होई, पीछैं फिरि पछितावैगारे
नींदभरे जिनसोई । टेक
आगम सारे सचुकरिले, तोमुख होवै तोही
प्रीतिकरी पीव आइए, चरनौं राखैमोही १

संसार सागर विषम अतिभारी, जिनराखै मन मोही
दादू रे जन रामनाम सौं, कुतमल देही धोही २

१८ काल चितामणी॰ ।

साथी सावधान ह्वै रहिए,
पलक मांहि परमेसुर जानै, काह होव काह कहीए । टेक
बाबा बाट घाट कुछ समझ न आवै, दूरगमन हमजानां
परदेसी पंथचलै अकेला, औघट घाट पयाना १
बाबा संग न साथी कोई नही तेरा, यहु सब हाट पसारा
तरवर पक्षी सबै सिधांए, तेरा कोण गंवाना २
बाबा सबै बढाऊ पंथ सिराणै, अस्थिर नाहीं कोई
अंतकाल कौ आगे पीछैं, बिछुरत बार न होई ३
बाबा काची काया कोण भरोसा, रैनिगई का सोवै
दादू संबल सुकृत लीजै, सावधान किन होवै ४

१९ तर्क चितामणी॰ ।

मेरा मेरा काहेको कीजै, जे कुछ संगत आवै
अनंत करीले धन धरीला, तऊ तोरीता जावै । टेक
माया-बंधन अंधन चेतैरे, मेर मांहि लपटाया
तेजाणों हूं यहै बिलासों, अनंत विराधे खाया १
आप सुवार्थ यहै बिलूधारे, आगम-मरम न जाणैं
जमकरी मांथैं वाण धरीला, तत्तो मन नहीं आणैं २
मन बिचारि सारी ते लीजै, तिल मांहै तन पाडिबा
दादू रे तहां तन ताडीजै, जेणैं मार्ग चाढिबा । ३

२० बीनती पुनः हित उपदेश० ।

सनमुख भईलारे, तब दुख गईलारे
ते मेरे प्राण अधारी, निराकार निरंजनदेव
सेवाते विचारी । टेक
अपरंपार परम निज सोई, अलख तोरा बिसतार
अंकूर बीज सहज समानां, ऐसा समर्थ सारं १
जेतैं कीह्नां किन यक चीह्नां, भईला ते प्रमाणं
अविगति तोरी विगती न जाणों, मै मूर्ख अजाणं २
सहजैं तोरा राम न मोरा, साधन सों रंग आई
दादू तोरी बिगति न जाणै, निर्वा होकर लाई ३

२१ मनमति सूरातन० ।

हरिमार्ग मस्तक दीजिय, तब निकट परमपद लीजिए । टेक
इस मार्ग माहैं मरणां, तिल पीछैं पाव न धरणां
अब आगैं होयसु होई, पीछैं सोच न करणां कोई १
ज्यूं सूरा रणझूझै, तब आपा परनही बूझै
सिर साहिब काज सवारै, घण घांवां आपडारै २
सती सती गहि साचा बोलै, मन निहचल कदे न डोलै
वाकै सोच पोच जीव न आवै, जग देखत आप जरावै ३
इस सिरसूं साटा कीजै, तब अविनासी पदलीजै
ताका तबसिर स्याबत होवै, तब दादू आपा खोवै ४

२२ कलिजुग० ।

झुठा कलिजुग कह्या न जाइ, अमृतकूं बिष कहे बनाइ । टेक
धनकों निर्धन निर्धन कों धन, नीति अनीति पुकारै
निर्मल मैला मैला निर्मल, साधु चोर करि मारै १

कंचन काच काचकों कंचन, हीरा कंकर भाखै
माणिक मणिया मणियां माणिक, साच झुट करि नाखे २
पारस पथर पथर पारस, कांधेनु पसु गावै
चंदन काठ काटकों चंदन, ऐसी बहुत बनावै ३
रसकों अनरस अनरस कों रस, मीठा खारा होई
दादू कलिजुग ऐसा बरतै, साचा बिरला कोई ४

१३ भक्ति भरोस० ।

दादू मोहि भरोसा मोटा,
तारण तिरण सोई संग मेरे, कहा करै करै कलिखोटा । टेक
दोंलागी दरिया थैं न्यारी, दरीया मंझि न जाई
मछ कछ रहै जलजेते, तिनकों काल न खाई १
जब सुवै पिंजरघर पाया, बाज रह्या बन मांहीं
जिनका समर्थ राखणहारा, तिनकों को डर नांहीं २
साचै झूठ न पूजै कबहूं, सत्य न लागै काई
दादू साचा सहज समानां, फिरवै झूठ बिलाई ३

२४ साच झूठ निर्ने० ।

सांईकों साच पियारा,
सौच साच सुहावै देखो, साचा सिरजनहारा । टेक
ज्यूं घण घावां सार घडीजै, झूठा सबै झडिजाई
घणके घांवा सार रहैगा, झूठ न मांहि समाई १
कनक कसोटी अग्निमुख दीजै, कंपसबै जलजाई
योंतो कसणी साच सहैगा, झूठ सहै न भाई २
ज्यूं घृतकों ले ताता कीजै, ताय ताय तत्व कीन्हां
ततैं तत्व रहैगा भाई, झूठ सबै जल खीन्हां ३

यौंतो कसणी साच सहैगा, साचा कसि कसि लेवै
दादू दर्सन साचा पावै, झूटे दर्सन देवै ४

२५ करणी बिनां कथणी० ।

बातै बादि जांहगी भईए, तुम्ह जिन जानौं बात न पईए । टेक
जबलग अपणां आप न जांणै, तबलग कथणी काची
आपा जांणि सांईकों जाणैं, तब कथनी सब साची १
करणी बिनां कंत नही पावै, कहै सुनैका होई
जैसी कहै करैजे तैसी, पावैगा जन सोई २
बात नही जे निर्मल होवै, तौ काहेकों कसिलीजै
सोनां अग्नि दहै दसबारा, तब यहु प्राण पतीजै ३
यौंहम जानां मन पतियानां, करणी कठिन अपारा
दादू तनका आपा जारै, तो तिरतन लागैबारा ४

२६ उपदेस० ।

पंडित राम मिलैसो कीजै,
पढि पढि बेद पुरान बखांनै, सोई तत्व कहि दीजै । टेक
आतम रोगी बिखम बियाधी, सोई करि औषध सारा
परसत प्राणी होइ परमसुख, छूटै सब संसारा १
ए गुण इंद्रिये अग्नि अपारा, तासन जलै सरीरा
तन मन सीतल होइ सदासुख, सो जलह बो नीरा २
सोई मार्ग हमहि बतावहु, जिहिं पंथ पहुचै पारा
भूल न पडै उलटि नही आवै, सो कुछ करो बिचारा ३
गुरु उपदेस देहु करि दीपक, तिमिर मिटै सब सूझै
दादू सोई पंडित ज्ञाता, राम मिलनकी बूझै ४

२७ साचतारण० ।

हरिराम बिना सब भ्रम गए, कोई जन तेरा साचगहै । टेक
पीवे नीर तृखा तन भाजै, ज्ञान गुरू बिन कोई न लहै
प्रगट पूरा समाझि न आवे, ताथै सो जल दूरि रहै १
हर्ष सोक दोऊ समकरि राखै, एक एक के संग न बहै
अनंत जाइ तहां दुख पावै, आपहि आपा आप दहै २
आपा पर भ्रम सब छाडै, तीन लोक पर ताहि धरै
सोई जन सही साच कों परसै, अमर मिलै नही कबहूं मरै ३
पारब्रह्म सौं प्रीति निरंतर, राम रसायण भरि पीवै
सदा अनंद सुखी साचेसू, कहै दादू सो जन जीवै ४

२८ भ्रम विधूनण: ।

जग अंधा नैन न सूझै, जिन सिरजे ताहि न बूझै । टेक
पाहनकी पूजा करै, करि आतमा घाता
निर्मल नैन न आवई, दो जग दिस जाता १
पूजै देव दिहाड़िया, माहा माई मांनै
प्रगट देव निरंजनां, ताकी सेव न जानै २
भैरव भूत सब भ्रम के, पसु प्राणी ध्यावै
सिरजनहारा सबन का, ताकों नहीं पावै ३
आप सुवार्थ मेदनी, का का नहीं करई
दादू साचे राम बिन, मरि मरि दुख भरई ४

२९ आन उपास विपर्यय वादी भ्रम० ।

साचा राम न जानै रे, सबझूठ बखानैरे सबझूठ बखानै रे । टेक
झूठे देवा झूटी सेवा, झूठी करै पसारा
झूठी पूजा झूठी पाती, झूठा पूजण हारा १

झूठा पाक करै रे प्राणी, झूठा भोग लगावै
झूठा आडा पड़दा देवै, झूठा थाल बजावै २
झूठ बक्ता झूठे सुरता, झूठी कथा सुनावै
झूठा कलिजुग सबको मानैं, झूठ भ्रम दिढावै ३
थावर जंगम जलथल महियल, घट घट तेज समानां
दादू आत्म राम हमारा, आदिपुरुष पहिचाना ४

३० निज मार्ग नि०णै० ।

मैं पंथ एक अपारके, मन और न भावै
सोई पंथ पावै पीवका, जिस आप लखावै । टेक
को पंथ हिंदू तुरक का, को काहू राता
को पंथ सोफी सेवड़, को संन्यासी माता १
को पंथ जोगी जंगमां, को सक्ति पंथ धावै
को पंथ कमडेका पडे, को बहुत मनावै २
को पंथ काहूकै चलै, मैं और न जानू
दादू जिन जग सिरजिया, ताही कों मानूं ३

३१ साधु मिलाप मंगल उछाह० ।

आजि हमारे रामजी, साधु घर आए
मंगळ चार चहुंदिस भए, आनंद बधाए । टेक
चौक पुराऊं मोतियां, घसि चंदन लाऊं
पंच पदार्थ पोइकरि, यहु माल चढाऊं १
तन मन धन करि वारणैं, प्रदक्षिणा दीजै
सीस हमारा जीवले, नोछावर कीजै २
भाव भक्ति करूं प्रीतिसूं, प्रेमरस पीजै
सेवा बंधन आरती, यहु लाहा लीजै ३

भाग हमारा हे सखी , सुख सागर पाया
दादू का दर्शन किया, मिले त्रिभवनराया ४

३२ संत समागम प्रार्थनां० ।

निरंजन नावके रसमाते, केई पूरे प्राणी राते । टेक
सदा सनेही रामके, सोई जन साचे
तुह्मबिन और न जाणही, रंग तेरे ही राचे १
आनन भावै एक तूं, सत्य साधू सोई
प्रेम पियाले पीवके, ऐसा जन कोई २
तुह्मही जीवन उर रहे, आनंद अनुरागी
प्रेम मगन पीवै प्रीतड़ी, लै तुह्मसों लागी ३
जे जन तेरे रंग रंगे, दूजा रंग नांही
जन्म सुफल करि लीजिए, दादू उनमांही ४

३३ अत्यंत निर्मल मल मनउपदेस० ।

चलरे मन जहां अमृत बनां, निर्मल नीके संतजनां । टेक
निर्गुण नाम फल अगम अपार, संतन जीवन प्राण अधार १
सीतल छाया सुखी सरीर, चरण सरोवर निर्मल नीर २
सुफल सदा फल बारह मास, नाना बाणी धुनि प्रकास
तहां वास बसै अमर अनेक, तहां चलि दादू यहे विवेक ४

३४ ।

चलो मन म्हांराज हां मित्र हमारा,
जहां जामण मरण न जांणिए नहीं जाणिए । टेक
मोहन माया मेरा न तेरा, आवागमन नहीं जम फेरा १
पिंड पडै नहीं प्राण न छूटै, काल न लागै आव न खूटै
अमर लोक तहां अखिल सरीरा, व्याधि विकार न व्यापे पीरा२

राम राज कोई भिडै न भाजै, अस्थिर रहणा बैठा छाजै ३
अलख निरंजन और न कोई, मित्र हमारा दादू सोई ५

३५ बेली० ।

बेली आनंद प्रेम समाइ,
सहजैं मगन रामरस पीवै, दिन दिन बधती जाइ । टेक
सतगुरु सहजैं बाहि बेली, सहज गगन घर छाया
सहजैं सहजैं कूंपल मेलै, जाणै अवधुराया १
आतम बेली सहजैं फूलै, सदा फूल फल होई
काया बाडी सहजैं निपजै, जांणै बिरला कोई २
मनहठ बेली सूकन लागी, सहजैं जुग जुग जीवै
दादू बेली अमरफल लागे, सहज सदा रस पीवै ३

३६ शब्दबाण० ।

संतो राम बाण मोहि लागे,
मारत मृग मरम जब पायौ, सब संगी मिल जागे । टेक
चित चेतन चिंतामणि चीन्हैं, उलटि अपूठा आया
मंदिर पैसि बहुर नहीं निकसै, प्रेम तत घर छाया १
आवे न जाई जाइ नहीं आवै, तिहिं रस मनवा माता
पान करत परमानंद पाया, थकित भया चालि जाता २
भयो अपंग पंक नहीं लागै, निर्मल संग सहाई
पूर्णब्रह्म अखिल अविनासी, तिहि तजि अनत न जाई ३
सारस लागि प्रेम प्रकासा, प्रगटी प्रीतम बाणी
दादू दीन दयालुहि जाणै, सुखमैं सुर्ति समाणी

३७ निज सथान निरनै० ।

मध्य नैन निरखूं सदा, सो सहज सरूप

देखत ही मन मोहिया' सो तत्व अनूप टेक
तृबणी तटि पाईया, मूर्ति अविनासी
जुग जुग मेरा भांवता, सोई सुख रासी १
तारूणी तट देखिहूं, तहां अस्थानां
सेवक स्वामी संगहै, बैटे भगवानां २
निर्भय थान सुहात सो, तहां सेवक स्वामी
अनेक जतन करि पाइक, मैं अंतरजामी ३
तेज तार पर मत नहीं, ऐसा उजियारा
दादू पार न पावहीं, सो सरूप संभारा ४

३८।

निकट निरंजन देखिहूं, छिन दूर न जाइ
बाहरि भीतरि एकसा, सब रह्या समाई। टेक
सतगुरु भेद बताइया, तब पूरा पाया
नैननि ही निरखूं सदा, घर सहजैं आया १
पूरे संग प्रचा भया, पूरी मति जागी
जीव जानि जीवन मिले, ऐसे बडभागी २
रोम रोम मैं रमिरह्या, सो जीवन मेरा
जीव पीव न्यारा नहीं, सब संग बसेरा ३
सुंदर सो सहजैं रहै, घट अंतरजामी
दादू सोई देखिहूं, सारों संग स्वामी ४

३९ प्रचय उपदेस०।

सहज सहेलड़ी हैं, तूं निर्मल नैंन निहारि
रूप अरूप निर्गुण आगुणअैं, त्रिभवन दाता देव मुरारि। टेक
वारंवार निरखि जग जीवनि, इहि घर हरि अविनासी

सुंदरि जाय सेज सुख बिलसै, पूर्ण प्रेम निवासी १
सहजैं संग परस जगजीवन, आसण अमर अकेला
सुंदरि जाय सेज सुख सोवै, ब्रह्म जीवका मेला २
मिल आनंद प्रीति करि पावन, अगम निगम जहां राजा
जाय तहां परसि पावनको, सुंदरि सारै काजा ३
मंगल चार चहूं दिस रोपै, जब सुंदरी पीव पावै
परम जोति पूरसूं मिलकरि, दादू रंग लगावै ४

४० ब्रह्मनिर्दे॰प॰ ।

जहां आपै आप निरंजनां, तहां निशवासुर नहीं संजमां। टेक
तहां धरती अंबर नाहीं, तहां धूप न दीसै छांहीं
तहां पवन न चालै पाणी, तहां आपै एक बिनाणी १
तहां चंद न उगै सूरा, मुख काल न बाजै तूरा
तहां सुख दुख का गम नाहीं, ओतो अगम अगोचर माहीं २
तहां काल काया नहि लागै, तहां को सोवै को जागै
तहां पाप पुन्य नही कोई, तहां अलख निरंजन सोई ३
तहां सहज रहै सो स्वामी, सब घट अंतरजामी
सकल निरंतर बाशा, रटि दादू संगम पासा ४

४१ ।

अवधू बोलि निरंजन बाणी, तहां एकै अनहद जाणी । टेक
तहां बसुधा का बलि नाही, तहां गगन घाम नही छाहीं
तहां चंद-सूर नही जाई, तहां काल काया नही भाई १
तहां रैनि दिवस नही छाया, तहां बाव बरन नही माया
तहां उदय अस्त नही होई, तहां मरै न जीवै कोई २
तहां नांहीं पाठ पुरानां, तहा अगम निगम नही जानां

तहां विद्या वा नहीं ज्ञानां, नहीं तहां जोगरू ध्यानां ३
तहां निराकार निज ऐसा, तहां जाण्या जाय न जैसा
तहां सब गुण रहिता गहिए, तहां दादू अनहद कहिए ४

४२ सिद्ध साधुके० ।

बाबा को ऐसा जन जोगी,
अंजन छाडै रहै निरंजन, सहज सदा रस भोगी । टेक
छाया माया रहै विवरजित, पिंड ब्रह्मांड नियारे
चंद सूरतें अगम अगोचर, सो गह तत्व विचारे १
पाप पुन्य मिलै नहीं कबहूं, द्वै पक्ष रहता सोई
धरणि आकास ताहीतैं ऊपर, तहां जाय रति होई २
जीवण मरण न बांछै कबहूं, आवागमन न फेरा
पाणी पवन परस नहीं लागै, तिहिं संग करै बसेरा ३
गुण आकार जहां गम नाहीं, आपै आप अकेला
दादू जाय तहां जन जोगी, परम पुरुष सूं मेला ४

४३ परचपराभक्तिको० ।

जोगी जानि जानि जन जीवै,
बिनहीं मनसा मनहि बिचारै, बिन रसनां रस पीवै । टेक
बिनहीं लोचन नरखि नैन बिन, श्रवण रहित सुनि सोई
ऐसैं आतम रहै एकरस, तो दूसर नावन होई १
बिनहीं मार्ग चलै चरन बिन, निहचल बैठा जाई
बिनहीं काया मिलै परमपद, जूं जल जलहि समाई २
बिनहीं ठाहर आसण पूरै, बिन कर बेन बजावै
बिनहीं पावों नाचै निस दिन, बिन जिह्वा गुण गावै ३
सबगुण रहिता सकल बियापी, बिन इन्द्रिय रसभोगी

दादू ऐसा गुरु हमारा' आपनिरंजन जोगी ४

४४ ।

यह परम गुरु जोगं, अमी महारस भोगं । टेक
मन पवनां थिर साधं, अविगति नाथ अराधं
तहां सब्द अनहद नादं १
पंच सखी प्रमोधं, अगम ज्ञान गुरु बोधं
तहां नाथ निरंजन बोधं २
सतगुरु मांहि लखावां, निराधार घर छावा
तहां जोति सरूपी पावा ३
सहजैं सदा प्रकासं, पूर्णब्रह्म बिलासं
तहां सेवक दादू दासं ४

४५ अनभई० ।

मूनै यह अचंभो थाए, कीड़ी एह हस्ती विडाय्योतेहैबैठी खाए । टेक
जांणहुतो ते बेठो हारे, अजाण तेन्हैं तां बाहे
पागुलड जावा लागो, तेन्हैं कर को साहे १
न्हान्हों हुतो ते मोटो थाए, गगन मंडल नहीं माए
मोटेरो बिसतार भणीजै, तेतो कीए जाए २
ते जांणै जे नूखि जोय, खोजी नै बिलमाए
दादू तेन्हो मरम न जाणै, जे जिह्वा बिहुणो गाए ३

इति राग रामकली संपूर्ण ॥ ८ ॥ पद ॥ २१३ ॥

॥ अथ राग आसावरी ॥

१ वत्तमाउतम स्मरण० ।

तूंहीमेरेरसनां तूंही मेरेबैनां,तुम्हहीमेरेश्रवनां तूंहीमेरेनैनां। टेक
तूंहीं मेरे आतम कवल मंझारी, तूंही मेरे मनसा तुह्म परवारी
तूंही मेरे मनही तूंही मेरे स्वाशा,तूंही मेरे सुरतैं प्राण निवाशा १
तूंहीमेरे नखसिख सकल सरीरा,तूंहीमेरे जीवरे ज्यूंजल नीरा २
तुह्मबिन मेरे अवरको नाहीं, तूंही मेरी जीवन दादू माहीं ३

२ अनन्त सराणि० ।

तुह्मारे नाम लागि हरि जीवन मेरा,
मेरे साधन सकल नाम निज तेरा । टेक
दान पुन्य तप तीर्थ मेरे, केवल नाम तुह्मारा
एसब मेरे सेवा पूजा, ऐसा बरत हमारा १
एसब मेरे वेद पुरानां, सुचि संजम है सोई
ज्ञान ध्यान एहीं सब मेरे, और न दूजा कोई २
काम क्रोध काया बसि करणां, एसब मेरे नामां
मुक्ता गुपता प्रगट कहिए, मेरे केवल रामां ३
तारण तिरण नाम निज तेरा, तुह्महीं एक अधारा
दादू अंग एक रसलागा, नांवगहै भोपारा ३

३ ।

हरि केवल एक अधारा, सोई तारण तिरण हमारा । टेक
नां मैं पंडित पढिगुणजाणौं, नां कुछ ज्ञान बिचारा
नां मैं अगमी जोतिस जानौं, नां मुझ रूप सिंगारा १
नां तप मेरे इंद्रिय निग्रह, नां कुछ तीर्थ फिरनां

देवल पूजा मेरे नांही, ध्यान कछू न घरणां २
जोग जुगति नहीं कुछ मेरे, ना मैं साधन जानूं
औषद मूली मेरे नांही, ना मैं देस बखांनूं ३
मैं तो और कछू नहीं जानूं, कहो और क्या कीजै
दादू एक गलित गोविन्दसूं, इंहिविधि प्राण पतीजै ४

४ ।

पीव घर आवतूए, अहो मोहि भानूं ते । टेक
मोहन नीकोरी हरी, देखोंगी अखियां भरी
राखो हूं उरधरी, परीति खरी १
मोहन मेरोरी माई, रहु हूं चरणो धाई
आनंद बधाई, हरिके गुण गाई २
दादू रे चरण गहिए,जायनै तहां तो रहिए,तनमन सुख लहिए ३

५ ।

अहो माई मेरो राम बैरागी, निज जिनजाई । टेक
राम बिनोद करत उर अंतर, मिलहु बैरागनि धाय १
जोगनि ह्वै करि फिरूंगी बदेसा, रामनाम ल्यौलाय २
दादू को स्वामी हैरे उदासी, रहि हो नैंन दोयलाइ ३

६ उपदेस चितामणी० ।

रे मन गोविंद गायरे गाय, जनम अबिरथा जाइरे जाइ । टेक
ऐसा जन्म न बारंबारा, ताथैं जपिले राम पियारा १
यहु तन ऐसा बहुर न पावै, ताथैं गोविंद काहे न गावै २
बहुर न पावै मिनषा देही, ताथैं करिले रामसनहीं ३
अब के दादू किया निहाला, गाय निरंजन दीनदयाला ४

७ काल चितावणी० ।

मनरे सोवत रैनि बिहांनी, तैं अजहूं जात न जानी । टेक
बीती रैनि बहुर नहीं आवै, जीव जागि जिन सोवै
चारूदिसा चौर घर लागे, जागि देखि क्या होवै १
भोर भए पछितावन लागा, माहि महल कुछ नाही
जब जाय काल काया कर लागै, तब सोधै घर मांहि २
जागि जतन करि राखै सोई, तब तन तत्व न जाई
चेतन पहरै चेत नाहीं, कह दादू समझाई ३

८ ।

देखतही दिनआयगए, पलटि केस सब स्वेतभए । टेक
आई जरामीच आगे मरणां, आया काल अबै क्या करणां
श्रवण सुर्ति गई नैन न सूझै, सुधि बुधि नांठी कह्यान बूझै २
मुख तैं सब्द विकल भई बाणी, जन्म गया सब रैणि बिहाणी
प्राण पुरुष पछितावन लागा, दादू औसर काहे न जागा ४

९ उपदे० ।

हरि विन हांहों कहुंसुख नाहीं, देखत जाय बिषफल खाहीं । टेक
रस रसना के मीन मन भीरा, जल थैं जाय यौं दहै सरीरा १
गजके ज्ञान मगन मदमाता, अंकुस डोरि गहै फंधघाता
मर्कट मूठी मांहि मन लागा, दुखकी रासि भ्रम भ्रम भागा २
दादू देखु हरीसुखदाता, ताकौं छाडि कहां मन राता ३

१० ।

सांई विनां संतोष न पावै, भावै घर तजि बन बन धावै । टेक
भावै पढिगुण बेद उचारै, अगम निगम सबै विचारै १
भावैं नवखंड सब फिरि आवै, अजहुं आगै काहे न जावै २

भावै सब तजि रहै अकेला, भाई बंधन काहू मेला ३
दादू देखै सांई सोई, साच बिनां संतोष न होई ४

११ मन उपदेस चितामणी० ।

मन माया रातो भूले मेरी मेरी करि करि बोरे,
कहा मुगध नर फूले । टेक
माया कारण मूल गंवावै, समझि देखि मन मेरा
अंत्यकाल जब आय पहूंचा, कोई नहीं तब तेरा १
मेरी मेरी करि करि जांनैं, मन मेरी करि रहिया
तब यहु मेरी कांमिन आवै, प्राण पुरुष जब गहिया २
राव रंक सब राजा राणां, सब हिनको बोरावै
छत्रपति भूपति के संग, चलती बेर न आवै ३
चेत विचार जानि जीव अपने, माया संग न जाई
दादू हरिभजि समझि सयानां, रहो राम ल्योलाई ४

१२ काल चिन्तामणी० ।

रहसी एक उपावन हारा, और चलसी सब संसारा । टेक
चलसी गगन धरणि सब चलसी, चलसी पवनरुपाणी
चलसी चंद सूर पुन चलसी, चलसी सबैउपानी १
चलसी दिवस रैनिभी चलसी, चलसी जुग जमवारा
चलसी काल व्याल पुन चलसी, चलसी सबै पसारा २
चलसी स्वर्ग नरक भी चलसी, चलसी भूवणहारा
चलसी सुख दुख भी चलसी, चलसी कर्म बिचारा ३
चलसी चंचल निहचल रहसी, चलसी जे कुछ कीन्हां
दादू देखु रहै अविनासी, और सबै घट खीनां ४

१३।

इहिं कालि हम मरणें कों आए, मरण मीत उन संग पठाए। टेक
जबथैं यहु हम मरण बिचारा, तबथैं आगम पंथ संवारा १
मरणां देखि हम गर्ब न कीन्हां, मरण पठाए सो हम लीन्हां २
मरणां मीठा लागै मोहि, इहिं मरणे मीठा सुखहोइ ३
मरणे पहली मरेजे कोई, दादू सो अजरांबर होई ४

१४।

रे मन मरणे कहा डराई, आगै पीछै मरणां रे भाई। टेक
जे कुछ आवै थिर न रहाई, देखत सबै चल्या जगजाई १
पीर पैकंबर कीया पयानां, सेप मलाइक सबै सयांनां २
ब्रह्मा विष्णु महेस महाबलि, मोटे मुनिजन गए सबचालि ३
निहचल सदा सोइ मनलाइ, दादू हरषि राम गुणगाइ ४

१५ वस्तु निर्देस निर्नै०।

अैसा तत्व अनूपम भाई, मरै न जीवै काल न खाई। टेक
पावक जरै न मार्‍यो मरई, काट्या कटै न टार्‍यो टरई १
अखिर खिरैन लागै काई, सीत घाम जल डुबन जाई २
माटी मिलै न गगन बिलाई, अघट एकरस रह्या समाई ३
अैसा तत्व अनूपम कहिए, सो गहि दादू काहे न रहिए ४

१६ मन उपदे०।

मन रे सेव निरंजन राई, ताकों सेवो रे चितलाई। टेक
आदि अंत्य सोई उपावै, प्रलय लेय छिपाई
बिन थंभा जिन गगन रहाया, सो रह्या सबन में समाई १
पाताल मांहे जे आराधे, बासगें गुनगाई
सहस मुख जिह्वा द्वै ताके, सो भी पार न पाई २

सुर नर जाको पार न पावै, कोटि मुनिजन धाई
दादू रे तन ताको हैरे, जाकों सकल लोक आराही ३

१७।

निरंजन जोगी जांनिलें चैला, सकल बियापी रहै अकेला। टेक
खप्पन झोली डंड अधारी, मिटी न माया लेहु विचारी १
सींगी मुद्रा बिभूतन कंथा, जटा जाय आसण नहि पंथा २
तीरथ व्रत न बनखंड बासा, मांग न खाय नहीं जगआसा ३
अमर गुरु अबिनासी जोगी, दादू चैला महारस भोगी ४

१८ उपदेश०।

जोगीया बैरागी बाबा, रहै अकेला उनमन लागा। टेक
आतम जोगी धीरज कंथा, निहचल आसण आगम पंथा १
सहजैं मुद्रा अलख अधारी, अनहद सींगी रहणी हमारी २
काया बनखंड पाचौ चैला, ज्ञान गुफा में रहे अकेला ३
दादू दर्सन कारण जागै, निरंजन नग्री भिक्षा मागै ४

१९ समता ज्ञान०।

बाबा कहु दूजा क्यूं कहिए, ताथैं इहि संसै दुख सहिए। टेक
यहु मति अैसी पसुवा जैसी, काहे चेतत नाहीं
अपनां अंग आप नही जानै, देखै दरपन मांही १
इहिं मति मींच मरण कै तांई, कूप सिंह तहां आया
डूब मुवा मन मरम न जाना, देखि आपणी छाया २
मद के मातो समझत नाहीं, मैंगल की मति आंई
आपहि आप आप दुख दीहां, देख आपणी झांई ३
मन समझै तो दूजा नाहीं, विन समझें दुख पावै
दादू ज्ञान गुरूका नाहीं, समझि कहांथैं आवै ४

२० नाम समता० ।

बाबा नाहीं दूजा कोई,
एक अनेक नाम तुम्हारा, मोपैं और न होई । टेक
अलख अल्लाह एक तूं, तूंही राम रहीम
तूंही मालिक मोहिनां, केसा नाम करीम १
सांई सिरजन हार तैं, तूं पांवन तैं पाक
तूं कायम कर्तार तूं, तूं हरि हाजर आप २
रमिता राजिक एक तूं, तू सारंग सुबहान
दादू कर्ता एक तूं, तूं साहिब सुलतान ३
अविगत अहै एक तूं, गनी गुसांई एक
अजब अनूपम आपहै, जन दादू नाम अनेक ४

२१ समर्थाई० ।

जीवत मारे मुए जिलाए, बोलत गूंगे गूंग बुलाए । टेक
जागत निसभरि सेई सुलाए, सोवत रैनी सेई जगाए १
सूझत नैनहु लोयन लीए, अंध बिचारे तहां सुखदीए २
चलते भारी ते बिठलाए, अपंग बिचारे सेई चलाए ३
ऐसा अद्भुत हम कुछ पावा, दादू सतगुरु कहि समझावा ४

२२ प्रश्न० ।

क्यूंकरियहुजगरच्यो गुसांई, तेरेकोणबिनोदबन्यो मनमांहीं । टेक
कै तुम्ह आपा प्रगट करणां, कै यहु रचिले जीव उधरणां १
कै यहु तुम्हकों सेवक जानै, कै यहु रचिले मनके मानै २
कै यहु तुम्हकूं सेवक भावै, कै यहु रचिले खेल दिखावै ३
कै यहु तुम्हको खेल पियारा, कै यहु भावै कीन्ह पसारा

यहु सब दादू अकथ कहाणी, कहि समझावौ सारंगपाणीं

२३ उत्तर की साखी ०।

खालिक खेलै खेलिकरि, बुझै बिरला कोय
लेकरि सुखिया नां भया, देकर सुखिया होय १
देबेकी सब भुखहै, लेबेकी कुछ नांहि
सांई मेरे सबकीया, समझि देखि मनमांहि २

२४ पदा समर्थाई० ।

हरे हरे सकल भवन भरे, जुग जुग सबकरे
जुग जुग सबधरे, अकल सकल जरे हरे हरे । टेक
सकल भवन छाजै, सकल भवन राजै
सकल कहै धरती अंबरनहै, चंद सूर सुधिलहै, पवन प्रगट वहै १
घट घट आप देवै, घट घट आप लेवै
खंडित माया, जहां तहां आप छाया, अगम निगम पाया २
रसमांहैं रसराता, रसमांहैं रसमाता, अमृत पीया
नूरमांहैं नूरलीया, तेज मांहै तेज कीया, दादू दरस दीया ३

२५ पचा० ।

पीव २ आदि अंत्य पीव, परसि २ अंग संग पीव तहां जीव । टेक
मन पवन भवन गवन, प्राण कवल मांहि
निध निवास बिधि बिलास, राति दिवस नांहि १
सास बास आस पास, आत्म अंग लगाई
अैन बैन नृखि नैन, गाय गाय रिझाई २
आदि तेज अंत्य तेज, सहज सहज आय
आदि नूर अंत्य नूर, दादू बलि बलि जाय ३

२६ ।

नूर नूर अवलि आखिर नूर,
दायम कायम कायम दायम, हाजर है भरपूर । टेक
असमान नूर जमी नूर, पाक परवरदिगार
आव नूर बादनूर, खूब खूबां यार १
जाहिर बातन हाजर नाजर, दानातु दिवान
अजब अजायब नूर दीदम, दादू है हैरान २

२७ रस० ।

मैं अमली मतवाला माता, प्रेम मगन मेरा मनराता । टेक
अमी महारस भरि भरि पीवै, मनमतिवाला जोगी जीवै १
रहै निरंतर गगन मझारी, प्रेम पीयाला सहैज खुमारी २
आसण अवधू अमृतधारा, जुग जुग जीवै रस पीवनहारा ३
दादू अमली इंहिरस माते, राम रसांयन पीवत छाके ४

२८ निज उपदेस० ।

सुख दुख संसा दुरकीया, तब हम केवल रामलीया । टेक
सुख दुख दोऊ भूम बिचारा, इनसूं बंध्याहै जगसारा १
मेरी मेरा सुखके तांई, जाय जनम नर चेतै नांहि २
सुख के तांई झूठा बोलै, बाधै बंधन कबहूं खोलै ३
दादू सुख दुख संग न जाई, प्रेम प्रीति पीवसूं ल्योलाई

२९ हैरान० ।

कासूं कहुं हो अगम हरिबाता, गगन धरनि दिवस नहीराता । टेक
संग न साथी गुरू न चेला, आसन पास यों रहै अकेला १
बेद न भेद न करत बिचारा, अबर्ण बर्ण सबन थैं न्यारा २
प्राण न पिंड रूपनही रेखा, सो तत्व सार नैंन बिन देखा ३

जोग न भोग न मोह न माया, दादू देखु काल नहीं काया ४

३० गुरुज्ञान० ।

मेरा गुरु ऐसा ज्ञान बतावै,
काल न लागै संशा भागै, ज्यूं है त्यूं समझावै । टेक
अमर गुरुके आसन रहिए, परमज्योति तहां लहिए
परमतेज सो दिढ करि गहिए, गहिए लहिए रहिए १
मन पवनां गहि आत्म खेला, सहज सुन्य घर मेला
अगम अगोचर आप अकेला, अकेला मेला खेला २
धरती अंबर चंदन सूरा, सकल निरंतर पूरा
सब्द अनाहद बाजे तूरा, तूरा पूरा सूरा ३
अबिचल अमर अभयपद दाता, तहां निरंजन राता
ज्ञान गुरु ले दादू माता, माता राता दाता ४

३१ ।

मेरा गुरु आप अकेला खेलै,
आपै देवै आपै लेवै, आपै द्वैकर मेलै । टेक
आपै आप उपावै माया, पंच तत्व करि काया
जीव जनम ले जगमें आया, आया काया माया १
धरती अंबर महल उपाया, सब जग धंधै लाया
आपै अलख निरंजन राया, राया लाया उपाया २
चंद सूर दोय दीपक कीन्हां, राति दिवस करि लीन्हां
राजीक रिजक सबन कूं दीन्हां, दीन्हां लीन्हां कीन्हां ३
परम गुरू सो प्राण हमारा, सबसुख देवै शारा
दादू खेलै अंनत आपारा, आपारा सारा हमारा

३२ हैरान ० ।

थकित भयो मन कह्यौनजाई, सहज समाय रह्यो ल्योलाई । टेक

जे कुछ कहिए सोचि बिचारा, ज्ञानअगोचर अगम अपारा १
सायर बूंद कैसैं करि तौलै, आप अबोल कहा कहि बोलै २
अनल पक्ष परै परदूर, ऐसै राम रह्या भरपूर ३
अबमन सेरा असे रे भाई, दादू कहिबा कहण न जाई ४

। ३३ ।

अविगति की गति कोई न लहै, सब अपनां उनमान कहै। टेक
केते ब्रह्मा बेद विचारैं, केते पंडित पाठ पढै
केते अनुभव आत्म खोजैं, केते सुर नर नांम रटै १
केते ईश्वर आसण बैठे, केते जोगी ध्यांन धरै
केते मुनियर मनको मारैं, केते ज्ञानी ज्ञान करैं २
केते पीर केते पैकंबर, केते पढै कुरानां
केते काजी केते मुल्ला, केते सेख सयानां ३
केते पारिष अंनत न पावै, वारपार कुछ नाहीं
दादू की मति कोई न जाणैं, केतै आवहि जाहीं ४

३४।

ए हुं बूझि रही पीव, जैसा है तैसा कोन कहै
अगम अगाध अपार अगोचर, सुधि बुधि कोइ न लहै रे। टेक
वारपार कोइ अन्त न पावै, आदि अंत्य मधि नांही रे
खरे सयानें भए दिवानें, कैसा कहां रहै रे १
ब्रह्मा विष्णु महेसुर बूझे, केता कोई बतावै रे
सेष मसाइक पीरपैकंबर, है कोई अगहै गहै रे २
अंबर धरती सूर ससि बूझे, बाव बरण सब सोधै रे
दादू चकृत है हैरानां, कोहै कर्म धहै रे ३

इति श्रीराम आशावरी संपूरण ॥ राग ६ ॥ पद २४६ ॥

॥ अथ राग सींधूडो ॥

——*——

१ प्रचय उपदे१०-।

हंस सरोवर तहां रमैं, सूभर हरिजल नीर
प्राणी आप पखालिए, निर्मल सदा होए सरीर । टेक
मुक्ता हल मन मानियां, चुगै हंस सुजाण
मधि निरंतर झूलिए, मधुर बिमल रस पान १
भवर कवल रस बासना, रातो राम पीवंत
अरस परस आनंद करै, तहां मन सदा होए जीवंत २
मीन मगन मांहे रहै, मुदित सरोवर मांहि
सुख सागर क्रिड़ा करै, पूर्णपरमति नांहि ३
निर्भय तहां भयको नहीं, बिलसत बारंवार
दादू दर्सण कीजिए, सनमुख सिरजनहार ४

२।

सुख सागर में झूलिबो, कुसमल झडै हो अपार
निर्मल प्राणी होयबो, मिलबो सिरजनहार । टेक
तिंहीं संजम पांवन सदा, पंक न लागे प्राण
कवल बिगासै तिंहीं तणों, उपजै ब्रह्म गियान १
अगम निगम तहां गमिकरै, तातैं तत्व मिलान
आसण गुरु के आइबो, मुक्तै महल समान २
प्राणी पर पूजा करै, पूरे प्रेम विलास
सहजै सुंदर सेविए, लागीलैकविलास ३
रैणि दिवस दीसे नहीं, सहजैं पुंज प्रकास
दादू दर्सन देखिले, इंहिरस रातो हो दास ४

३ ।

अविनासि संग आत्मां, रमै हो रैणि दिन राम
एक निरंतर ते भजै, हरि हरि प्राणी नाम । टेक
सदा अखंडित पुरसबै, सो मन जाणी ले
सकल निरंतर पूरि सब, आत्म रातो ते १
निराधार निज बैसणों, तिंहिं तत आसन पूरि
गुरु शिष्य आनंद उपजै, सनमुख सदा हजूरि २
निहचल ते चालै नहीं, प्राणी ते प्रमांण
साधी सांथैं ते रहै, जाणै जाण सुजाण ३
ते निगुण आगुण धरी, माहैं कोतिकहार
देह अछत अलगो रहै, दादू सेवि अपार ४

४ ।

पारब्रह्म भजि प्राणीयां, अविगति एक अपार
अविनासी गुरु सेविए, सहजै प्राण अधार । टेक
ते पुर प्राणी ते हनों, अविचल सदा रहंत
आदि पुरुष ते आपणों, पूर्ण परम अनंत १
अविगति आसण कीजिए, आपै आप निधान
निरालंभ भजि ते हनों, आनंद आत्म राम २
निर्गुण निहचल थिर रहै, निराकार निज सोइ
ते सत प्राणी सेविए, लै समाधि रत होइ ३
अमर आप रमिता रहै, घट घट सिरजनहार
गुणा अतीत भजि प्राणीयां, दादू एह विचार ४

५ सूगतन० ।

क्यूं भाजै सेवक तेरा, ऐसाहि साहिब मेरा । टेक
जाके धर्ती गगन अकासा, जाकै चंद सूर कबिला साजा
जाकै तेज पवन जल साजा, जाकै पंचतत्व कै बाजा १
जाकै अठार भार बन माला, गिर पर्वत दीन दयाला
जाकै सार अनंत तरंगा, जाकै चोरासी लख संगा २
जाकै ऐसे लोक अनंता, रचि राखे बहु बिधि भगवंता
जाकै ऐसे खेल पसारा, सब देखै कोतिग हारा ३
जाकै काल मीच डर नांही, सो वरत रह्या सब मांही
मन भावै खेलै खेला, ऐसा है आप अकेला ४
जाकै ब्रह्मा ईश्वर बंदा, सब मुनिजन लागे अंगा
जाकै साध सिद्ध सब मांहीं, पर पूर्ण प्रमत नांहीं ५
सो भानै घडै संवारै, जुग केतै कबहु न हारै
ऐसा हरि साहिब पूरा, सब जीवन आतम मूरा ६
सो सबहिन की सुधि जानै, जो जैसा तैसी बांनै
श्रबंगी राम सयानां, हरि करै सु होय निदानां ७
जे हरिजन सेवक भाजै, तो ऐसा साहिब लाजै
अब मरण मांडि हरि आगै, तो दादू बाण न लागै ८

६ ।

हरि भजतां किंम भाजिए, भाजे भल नांही
भाजे भल क्यूं पाईए, पछितावै मांही । टेक
सूरा सो सहजै भिडै, सायर उर झेलै
रण रोके भाजै नहीं, तै भाण न मेलै १
सती सत साचा गहै, मरणे न डरांई

प्राण तजै जग देखता, पीवड़ो उर लाई २
प्राण पतंगा यों तजै, वो अंग न मोड़ै
जोबन जारे जोतिसूं, नैना भलि जोड़ै ३
सेवक सो स्वामी भजै, तन मन तजि आसा
दादू दर्सण ते लहै, सुख संगम पासा ४

७ चिंतामणी० ।

सुणि तूम नारे, मूर्ख मूढ विचार । टेक
आवै लहरि विहांवणी, दवैं देह अपार
करिवों है लिमकी जिए, सम्मारे सो आधार १
चरण विहुणो चालिबो रे, संभारी ले सार
दादू ते हज्ज लीजिए, साचो सिरजनहार २

८।

रे मन साथी म्हांरा, तूनं समझायो कैवारो रे
रातो रंग कसूंभके, तैं विसार्‍यो अधारो रे । टेक
स्वप्ना सुखके कारणैं, फिर पीछैं दुख होई रे
दीपक दृष्टि पतंग ज्यूं, यों भ्रम जलै जिन कोई रे १
जिह्वा स्वार्थ आपणै, ज्यूं मीन मरै तजि नीरो रे
माहैं जाल न जाणियों, ताथैं उपनों दुख सरीरो रे २
स्वादैं ही संकुट पर्‍यो, देखतही नर अंधो रे
मर्कट मूठी छाडिदे, होई रह्यो नर बंधो रे ३
मांनि सिखांवाणि मांहि, तूं हरि भजि मूल न हारी रें
सुख सागर सोई सेविए, जन दादू राम संभारी रे ४

इति राग सींधूडो संपूर्ण ॥ राग १० ॥ पद २५४ ॥

॥ अथ राग देवगंधार ॥

——*——

१ अनन्य सरणि० ।

सरणि तुम्हारी आइपरें,
जहां तहां हम सब फिरि आए, राखि २ हम दुखत खरे । टेक
कलि कलि काया तप ब्रत करि करि, भ्रमत भ्रमत हम भूलि परे
कहुं सीतल कहुं तपत दहे तन, कहुं हम करवत सील धरे १
कहुं बन तीर्थ फिरि फिरि थाके, कहुं गिरपर्वत जाई चढे
कहुं सिखर चढि परे धरनि परि, कहुं हति आपा प्राणहरे २
अंघ भए हम निकट न सूझै, ताथैं तुम्ह तजि जाई जरे
हा हा हरि अब दीन लीन करि, दादू बहु अपराध भरे ३

२ पातिव्रत उपदेस० ।

बोरी तूं बार बार बोरानी,
सखी सुहागनि पावै अैसैं, कैसैं भ्रम भुलानी । टेक
चूरनूं चेरी चित नही राख्यौ, पातिव्रत नांहि न जान्यौं
सुंदरि सेज संग नही जान्यों, पीवसूं मन नही मान्यों १
तन मन सबै सरीर न सूंप्यो, सीस नवाई न ठाढी ।
ईक रस प्रीति रही नहि कबहुं, प्रेम उमंग नहीं बाढी २
प्रीतम अपनों परम सनेही, नैन निरख न अघानी
निस बासुर आंनि उर अंतर, परम पुंजि नही जानी ३
पतिव्रत आगैं जिन जिन पाल्यौ, सुंदरि तिन सब छाजै
दादू पीव बिन और न जानैं, ताहि सुहाग बिराजै ४

३ उपदेस चिंतामणी० ।

मन मुर्खा त-योहि जनम गमायो,
सांई केरी सेव न कीह्नी, तू इंहि कलि काहेकों आयो । टेक
जिनि बातन तेरो छूटिक नाहिं, सो मन तेरे भायो
कामीह्वै बिषया संग लागो, रोम रोम लपटायो १
कछू इक चेत विचारी देखो, कहा पाप जीय लायो
दादू दास भजन करिलीजैं, स्वप्नै जग डहकायो २

इति राग देवगधार संपूर्ण ॥ राग ११ ॥ पद २५७ ॥

॥ अथ राग काह्लेरो ॥

१ बीतती० ।

बाह्लाहूं तहांरी तूं म्हारो नाथ,
तुम्हसों पहली प्रीतड़ी, पूर्वली साथ । टेक
बाह्ला मैं तूंम्हारो बोल पियोरे, राखिस तूनै रिदा मंझारि
हूं प्राम्यो पीव आपणों रे, तृभवन दाता देव मुरारि १
बाह्ला मन ह्मांरो मन माहै राखिसि, आत्म एक निरंजन देव
चितमांहे चित सदा निरंतर, एणी परै तुह्मारी सेव २
बाह्ला भाव भक्ति हरिभजन तुह्मारो, प्रेम पुरुष कवल बिगास
अभि अंतर आनंद अबिनासी, दादू नीहिवै पूरिव आस ३

२ चिंतामणी० ।

वारहि बार कहूं रे गहिला, राम नाम कांई बिसास्यो रे
जनम अमोलिक प्रामियो, एहो रतन कांई हास्यो रे । टेक
बिषया बाह्यो नै तहां धायौ, कीधौ नहीं म्हारो बास्यो रे

माया धन जोई नै भूल्यो, परथई एणै हार्यो रे १
गर्भ वास देह दमतो प्राणी, आश्रम नेह संभार्यो रे
दादू रे जन राम भणीजै, नहि तौ जथा बिध हार्यो रे २

इति राग काह्लरो सपूरण ॥ राग १२ ॥ पद २५६ ॥

॥ अथ राग प्रजिया ॥

१ प्रच० ।

नूर रह्यो भरपूर अमीरस पीजिए,
रस मांहे रस होय लाहा लीजीए । टेक
प्रगटतेजअनंतपारनहींपाईए, झिलमिल २ होयतहांमनलाईए १
सहजैसदाप्रकासजोतिजलपूरिया, तहांरहैनिजदाससेवकसूरिया २
सुख सागर वार न पार हमारा वासहै, हंसरहैता मांहि दादूदासहै ३

इति राग प्रजीयो सपूर्ण ॥ राग १३ ॥ पद २६० ॥

॥ अथ राग भाशामली ॥

१ बीनती० ।

ह्लारा बाह्लारे तहांरे सरणि रहेरा,
बीनतीड़ी बाह्लानैं कहतां, अंनत सुख लहेस । टेक
स्वामी तणैंहूं संग न मेह्लौं, बीनतड़ी कहेस
हूं अबला तूं बंलवत राजा, तहारा बनां बहेस १
संग रहो तहां सब सुख प्राम्यों, अंतरथों दहेस
दादू ऊपर दया करीनैं, आवे एणी वेस २

२।

चरण दिखाड़ि तो प्रमाण,
स्वामी ह्मारो नैणै नृखैं, मागू एह जमाण। टेक
जोऊं तूझनै आसा मुझनै, लागो एह जु ध्यान
वाह्लो ह्मारो मेल्हो रे साहिए, आवै केवल ज्ञान १
जणी परहूं देखौ तुझनै, मुझनै आलो जाण
पीव तणीहूं पर नही जाणों, दादू रे अज्ञांण २

३।

ते हरि मेह्लो ह्मांरो नाथ,
जोवानै ह्मांरो तन तपै, केही पर प्राम्यो साथ। टेक
ते कारण आकुल व्याकुली रें, उभी करों बिलाप
स्वामी ह्मांरो नैणै नृखों, तेह तणी मूनैं ताति १
एक बार घर आवे रे बाल्हा, नवि मेल्हों करि हाथ
ए बीनती साभलि स्वामी, दादू तहांरो दास २

४।

ते किंम प्रांमिए रे, दुर्लभ जे आधार
ते बिन तारण को नहीं, किम उतारिए पार। टेक
केही पर कीजे आपणू रें, ततवै तेछै सार
मन मनोर्थ पूरै ह्मारां, तन चो ताप निवारि १
संभास्यो आवेरे बाह्ला, वेह्लां एह अवार
विरहणी बिलाप करै, तिम दादू मन बिचार २

इति राग भाणमली संपूर्ण ॥ राग १४ ॥ पद २६४ ॥

॥ अथ राग सारंग ॥

—*—

१ गुरु आधीन ज्ञान० ।

हो ऐसा ज्ञान ध्यान गुरुबिनां क्यूं पावै,
वार पार पार वार दुतर तिरि आवै । टेक
भवन गवन गवन भवन, मनहीं मन लावै
रवन छवन छवन रवन, सतगुरु समझावै हो १
खीर नीर नीर खीर, प्रेम भक्ति भावै
प्राण कमल बिगसि बिगसि, गोबिंद गुनगावै हो २
जोति जुगति बाट घाट, लै समाधि धावै
परम नूर परम तेज, दादू सो पावै हो ३

१ केवल वीनती० ।

तो निबहै जन सेवक तेरा, ऐसैं दयाकरि साहिब मेरा । टेक
जो हम तोरै तो तू जोरै, हम तोरैपै तूं नहीं तोरै १
हम विसरैपै तूं न बिसारै, हम बिगारैपै तूं न बिगारै
हम भूलै तूं न बिगारै, हम भूलै तूं आनि मिलावै
हम बिछुरै तूं अंग लगावै ३
तुह्म भावैसो हमपै नाहीं, दादू दर्सन देहु गुसांई ४

२ काल चिंतामणी० ।

माया संसार की सब झूठी,
मात पिता सब ऊभे भाई, तिनही देख तहां लूटी । टेक
जब लग जीव काया मैं थारे, खिण बैठी खिणउटी
हंस जुधा सो खेलिगया रे, तब थै संगति छूटी १
ए दिन पूगे आव घटानी, तब निचंत है सूती

दादू दास कहै ऐसी काया, जैसी गगरिया फूटी ३

४ माया माधि मुक्त० ।

ऐसैं गृहमें क्यूं न रहै, मनसा बाचा राम कहै । टेक
संपि विपति नही मैं मेरा, हर्ष सोक दोउ नांही
राग द्वेष रहित सुख दुखथैं, बैठा हरिपद मांही १
तन धन माया मोह न बंधै, बैरी मीत न कोई
आपा पर सम रहै निरंतर, जिन जन सेवक सोई २
सर वर कवल रहै जल जैसैं, दधि मथि घृत करि लीहा
जैसैं बनमैं रहै बटाऊ, काहू हित्त न कीह्ना ३
भाव भक्ति रहै रसमाता, प्रेम मगन गुनगावै
जीवत मुक्ति होय जन दादू, अमर अभय पद पावै ४

५ प्रचय मन उपदेम० ।

चलु चलु रे मन तहा जाईए, चरन विन चालिबो
श्रवण विन सुनिबो, बिनकर बेन बजाई । टेक
तन नाहीं जहां मन नाहीं जहां, प्राण नहीं तहां आईए
शब्द नही जहां जीव नही तहां, विन रसना मुख गाईए १
पवन पावक नहीं धरणि अंबर नहीं, उभय नहीं तहां लाईए
चंद नहीं जहां सूर नहीं तहां, परम जोति सुख पाईए २
तेज पुंजसो सुखका सागर, झिलमिल नूर नहाईए
तहां चलि दादू अगम अगोचर, तामैं सहज समाईए ३

इति राग सारंग संपूर्ण ॥ राग १५ ॥ पद २९६ ॥

॥ अथ राग टोड़ी ॥

---*---

१ समरण उपदेश० ।

सोतत्वसहजैंसुखमनकहणां,साचपकड़िमनजुग२ रहणां । टेक
प्रेम प्रीतिकरि नीकां राखै, बारंबार सहज नर भाखै १
मुख हिरदै सो सहज संभारै, तिहि तत्व रहणां कदे न बिसारै २
अंतर सोई नीका जाणैं, निमख न बिसरै ब्रह्म बखाणै ३
सोई सुजाण सुधारस पीवै, दादू देखु जुग जुग जीवै ४

२ नाम महिमा० ।

नामरे २ सकल सिरोमणि नामरे, मैं बलिहारी जामरे । टेक
दूतर तारै पारउतारै, नरक निवारै नाम रे १
तारण हारा भवजल पारा, निर्मल सारा नाम रे २
नूर दिखावै तेज मिलावै, जोति जगावै नाम रे ३
सब सुख दाता अमृत राता, दादू माता नाम रे ४

३ नाम बीनती० ।

रायरे रायरे सकल भवन पतिरायरे, अमृत देहु अघारे राय । टेक
प्रगट राता प्रगट माता, प्रगट नूर दिखायरे राय १
अस्थिर ज्ञानां अस्थिर ध्यानां, अस्थिर तेज मिलायरे राय २
अबिचल मेला अबिचल खेला, अबिचल जोति जगायरे राय ३
निहचल नैनां निहचल बैनां, दादू बलि बलि जायरे राय ४

४ रसिक अवस्था०

हरिरस माते मगन भए,
समरि समरि भए मतवाले, जामण मरण सब भूलिगए । टेक
निर्मल भक्ति प्रेम रसपीवै, आन न दूजा भावधरै

सहमैं सदा राम रंगराते, मुक्ति बैकुंट कहा करै १
गाय गाय रस लीन भएहैं, कछू न मांगै संतजनां
और अनेक देहु दतआगै, आन न भावै रामबिनां २
इकटग ध्यान रहे ल्योलागे, छाकि पेर हरिरस पीवै
दादू मगन रहै रसमाते, अैसैं हरिके जन जीवै ३

५ केवल वीनती० ।

ते मैं कीधला रामजी, जेतैं वारयाते
मार्ग मेल्हि अमार्ग अणसरियैं, अकर्म करम हरे । टेक
साधूनों सग छाडीनै, असंगति अण सरियों
सुक्रित मुकि अबिद्या साधी, बिषया विसतरियों १
आन कह्यो आन सांभलियों, नैण आन दीठो
अमृत कड़वो बिषइमलागो, खातां अति मीठो २
राम रिदाथों विसारी न, माया मन दीधो
पांचे प्राणी गुरुमुख बरज्या, ते दादू कीधो ३

६ विरह वीनती० ।

कहो क्यूं जनजीवै सांईया, दे चरण कमल आधारहो
डूबत है भवसागरा, कारी करो कर्तारहो । टेक
मीन मरै बिन पाणीयां, तुह्माबिन एह बिचारहो
जल बिन कैसैं जीवहि, अबतो कित इक बारिहो १
ज्यूं परै पतंगा जोतिमैं, देखि देखि निज सारहो
प्यासा बूंद न पावहीं, तब बन बन करै पुकार हो २
निस दिन पीड पुकारही, तनकी ताप निवारिहो
दादू बिपत सुनावही, करि लोचन सनमुख चारिहो ३

७ केवल वीनती० ।

तूं साचा साहिब मेरा,
कर्म करीम कृपाल निहारो, मैं जन बंदा तेरा । टेक
तुह्म दीवान सब हिनकी जानूं, दीनांनाथ दयाला
दिखाय दीदार मोज बंदेकों, कायम करो निहाला १
मालिक सबै मुलकके सांई, समर्थ सिरजनहारा
खैर खुदाय खलकमैं खेलत, दे दीदार तुह्मारा २
मैं सिकसत दरगहै तेरी, हरि हजूरि तूं कहीए
दादू द्वारै दीन पुकारै, काहे न दर्सन लहिए ३

८ उपदेस चिंतामणी० ।

कुछ चेतिरे कहि क्या आया,
इनमैं बैठा फूलिकरि, तैं देखी माया । टेक
तूं जिन जानैं तन धन मेरा, मूर्ख देखि भुलाया
आजि कालिह चलिजावै देही, ऐसी सुंदर काया १
राम नाम जपि लीजिए, मैं कहि समझाया
दादू हरिकी सेवा कीजै, सुंदर साज मिलाया २

९ उपदेस: ।

नेठिरे माटीमें मिलनां, मोरि मोरि देही काहेकों चलनां । टेक
काहेकों अपना मन डुलावै, यहु तन अपनां नीका धरणां
कोटि बरस तूं काहे न जीवै, बिचार देखि आगै है मरणां १
काहे न अपनी बाट संवारे, संजम रहणां स्मरण करणां
गहिला दादू गर्व न कीजै, यहु संसार पंचदिन भरणां २

१० ।

जायरे तन जायरे जनम;
सुफल करिलेहु राम रमि, स्मरि स्मरि गुण गायरे । टेक
नर नारायण सकल सिरोमणि, जनम अमोलिक आई रे
मोत न जाय जगत नही जानैं, सकहित ठाहर लाय रे १
जराकाल दिन जायग्रासै, तासौं कछू न बसाय रे
छिन २ छिजत जाय मुगधनर, अंत्यकाल दिन आय रे २
प्रेम भक्ति साधुकी संगति, नाम निरंतर गाय रे
जे सिर भागतो सौंज सुफल करि, दादू विलंब न लाय रे ३

११ ।

काहे रे बकि मूल गमावै, रामके नाम भलैं सचु पावै । टेक
बाद बिवाद न कीजै लोई, बाद बिवाद न हरिरस होई १
मैं तै मेरी माने नांही, मैं तै मेटि मिलै हरिमांही २
हारि जीतिसूं हरिरस जाई, समझि देखि मेरे मन भाई ३
मूल न छाडी दादू बोरे, जिन भूलै तूं बकबे औरे ४

१२ ।

हुसियार हाकिम न्याव है, सांई के दिवांन
कुलिका हे सेब होगा, समझि मुसलमान । टेक
नीत नेकी सालिहां, रासतां ईमान
इखलास अंदर आपणै, रखण सुबहांन १
हुक्म हाजर होय बाबा, मुसलम महरवांन
अकल सेती आपमैं, सोधिलेहु सुजाण २
हकसूं हजूर हूणां, देखणां करि ज्ञान
दोसत दानां दीनका, मनणां फुरमान ३

गुसा हवानी दूरिकरि, छाड़ि देहु अभिमान
हुई दरोगा नाहि खुसियां, दादू लेहु पिछाणि ४

१३ साधु प्रति उपदेस० ।

निर्पक्ष रहणा राम राम कहिणां, कामक्रोधमें देहन दहणां । टेक
जेणै मार्ग संसार जायला, तणै प्राणी आय बहाईला १
जे जे करणी जगत करीला, सो करणी संत दूर धरीला २
जेणै पंथ लोक राता, तणै पंथ साधु न जाता ३
दादू राम राम ऐसें कहिए, राम रमत रांमहि मिलरहिए ४

१४ भेष बिडंबन० ।

हमपाया हमपायारे भाई, भेष बनाये ऐसी मन आई । टेक
भीतर का यहु भेद न जानै, कहै सुहागनि क्यूं मनमानै
अंतर पीवसों प्रचा नाहीं, भई सुहागनि लोकन माहीं १
सांई स्वप्नैं कबहूं न आवै, कहिबा ऐसें महल बुलावै २
इन बातन मोंहि अचिरज आवै, पटम कीयें पीव क्यूं पावै ३
दादू सुहागनि ऐसेंई, आया मेटि रामरत होई ४

१५ आत्म समता० ।

ऐसें बाबा राम रमीजे, आत्मसों अंतर नहीं कीजे । टेक
जैसें आत्म आपा लेखै, जीवजतन ऐसें करि लेखै १
एक राम ऐसें करिजानैं, आपा पर अंतर नहीं आनैं २
सब घट आत्म एक बिचारै, राम सनेही प्राण हमारै
दादू साची राम सगाई, ऐसा भाव हमारै भाई ३

१६ नाम समता० ।

माधईयो २ मीठोरी माई, माहुवो २ भेटियो आई । टेक
काह्नईयो काह्नईयो करता जाई, केसवो केसवो केसवो धाई १

भूधरो भूधरो भूधरो भाई, रामईयो रामईयो रह्यो समाई २
नरहरि नरहरि नरहरि राय, गोबिंदो गोबिंदो दादू गाय ३

१७ समता० ।

एकही एकै भया अनंद, एकही एकै भागे द्वंद । टेक
एकही एकै एक समान, एकही एकै पद निर्वान १
एकही एकै तृभवनसार, एकही एकै अगम अपार २
एकही एकै निर्भय होय, एकही एकै काल न कोई ३
एकही एकै घट प्रकास, एकही एकै निरंजन बास ४
एकही एकै आपहि आप, एकही एकै माय न बाप ५
एकही एकै सहज सरूप, एकही एकै भए अनूप ६
एकही एकै अनत न जाय, एकही एकै रह्या समाई ७
एकही एकै भए लैलीन, एकही एकै दादू दीन ८

१८ प्रचय वीनती० ।

आदिहै आदि अनाद मेरा, संसार सागर भाक्ति भेरा
आदिहै अंत्यहै अंत्यहै आदिहै, बिडद तेरा । टेक
कालहै झालहै झालहै कालहै, राखिले राखिले प्राण घेरा
जीवका जनमका २ जीवका, आपही आपले भांनिझेरा १
भ्रमका कर्मका कर्मका भ्रमका, आयवाजाय बा मेटफेरा
तारले पारले पारले तारले, जीवसूं सीवहै निकट नेरा २
आत्म रामहै रामहै आत्मा, जोतिहै जुगतिसूं करो मेला
तेजहै सेजहै सेजहै तेजहै, एकरस दादू खेल खेला ३

१९ प्रचयको० ।

सुंदर राम राया,
परमज्ञान परमध्यान, परम प्राण आया । टेक

अकल सकल अति अनूप, छाया नही माया
निराकार निराधार, वार पार न पाया १
गंभीर धीर निधि सरीर, निर्गुण निरकारा
अखिल अमर परम पुरुष, निर्मल निजगारा २
परम नूर परम तेज, परम जोति प्रकाशा
परम पुंज प्रापरम, दादू निज दासा ३

१९ प्रचय भाम क्ति० ।

अखिल भाव अखिल भक्ति, अखिल नाम देवा
अखिल प्रेम अखिल प्रीति, अखिल सुर्ति सेवा । टेक
अखिल अंग अखिल संग, अखिला रत अखिला मत,
अखिला निज नामा १
अखिल ज्ञान अखिल ध्यान, अखिल आनंद कीजै
अखिला लै अखिला मैं, अखिला रस पीजै २
अखिल मगन अखिल मुदित, अखिल गलि साँई
अखिल दर्स अखिल परस, दादू तुम्ह माँहीं ३

इति राग टोड़ी संपूर्ण ॥ राग १६ ॥ पद २८९ ॥

॥ अथ राग हुसिनी बंगालो ॥

१ अनन्यसरणि वीनती० ।

हे दाना हे दाना, दिलदार मेरे कान्हा
तूंही मेरे ज्यानि जिगर, यार मेरे खानां । टेक
तूंही मेरे मादर पदर, आलम बेगानां
साहिब सिरताज मेरे, तूंही सुलतानां १

दोसत दिल तूंही मेरे, किसका खिलखानां
नुर चसम ज्यंद मेरे, तूंही रहिमानां २
एक असनाव मेरे, तूंही हम जानां
जांनवा अजीज मेरे, खूब खजानां ३
नेक निजरि महर मीरां, बंदा मैं तेरा
दादू दरवार तेरे, खूब साहिब मेरा ४

२ ।

तूं घर आव सुलछन पीव,
हिक तिल मुख दिखलाव तेरा, क्या तरसावै जीव । टेक
निस दिन तेरा पंथ निहारों, तूं घर मेरे आव
हिरदा भीतर हेतसों रे वाहा, तेरा मुख दिखलाव १
वारी फेरी बलिगई, सोभित सोई कपोल
दादू उपरि दया करीनै, सुनाय सुहावै बोल २

इति राग हुसिनी बंगालो संपूर्ण ॥ राग १७ ॥ पद २६१ ॥

॥ अथ राग नट नारायण ॥

१ हित उपदेस० ।

ताकों काहेन प्राण संभाले,
कोटि अपराध कलप के लागे, मांहि महूरत टाले । टेक
अनेक जनम के बंध बाटे, विन पावक फंध जाले
असा है मन नाम हराको, कबहूं दुख न साले १
चिंतामणी जुगतिसूं राखै, ज्यूं जननी सुत पाले
दादू देखु दया करि असी, जनकों जाल निराले २

२ बिरह० ।

गोविंद कबहूं मिलै पीव मेरा,
चरण कमल क्यूंहि करि देखों, राखो नैनो नेरा । टेक
निरखण का मोहि चाव घणेरा, कब मुख देखों तेरा
प्राण मिलनकों भई उदासी, मिल तूं मीत सबेरा १
व्याकुल ताथै भई तन देही, सिरपर जमका हेरा
दादू रे जन राम मिलणकों, तपही तन बहु तेरा २

३ ।

कब देखो नैनहु रे सुरती, प्राण मिलणको भई मती
हरिसूं खेलूं हरीगती, कब मिलहै मोहि प्राणपती । टेक
वलि केती क्यूं देखोंगीरी, मुझमांहै अति वात अनेरी
सुनि साहिब इक बीनती मेरी, जन्म जन्म हूं दासी तेरी १
कह दादू सो सुनिसी सांई, हूं अवला बल मुझमै नांही
कर्म करी घर मेरे आई, तो सोभा पीव मेरे तांई २

४ ।

नीके मोहन सो प्रीति लाई,
तन मन प्राण देत बजाई, रंग रसके बनाई । टेक
एही जीयेरे वेही पीवरे, छोड्यो न जाइ माई
वाण भेद के देत लगाई, देखतही मुरझाई १
निर्मल नेह पीयासूं लागो, रती न राखी काई
दादू रे तिलमै तन जावै, संग न छाडो माई २

५ परमेश्वर माहिमा० ।

तुम्हबिन अैसी कोण करै,
गरीबन वाज गुसांई मेरो, मांथै मुकट धरै । टेक

नीच उच ले करै गुसांई, टाऱ्योहूं न टरैं
हस्त कमलकी छाया राखै, काहूथै न डरैं १
जाकी छोति जगतकों लागै, तापर तूही टरै
अमर आपले करै गुसांई, माऱ्योहूं न मरै २
नामदेव कबीर जुलाहो, जनरै दास तिरै
दादू बेग बार नही लागै, हरिसूं सबै सरै ३

६ नमस्कारात्मक मंगलाचरण० ।

नमो नमो हरि नमो नमो,
ताहि गुसांई नमो नमो, अकल निरंजन नमो नमो
सकल वियापी जिंहि जगकीन्हा, नारायण निज नमो नमो । टेक
जिन सिरज जल सीस चरणकरि, अविगति जीव दीयो
श्रवण संसार नैन रसना मुख, ऐसो चितर कीयो १
आप उपाय कीए जग जीवन, सुर नर संकर साजे
पीर पैकंबर सिध अरु साधिक, अपनै नाम निवाजे २
धर्ती अंबर चंद सूर जिन, पाणी पवन कीए
भानण घड़ण पलकमै कैते, सकल संसार लीए ३
आप अखंडत खंडित नांही, सब सम पूर रहे
दादू दीन ताहिनै बंदत, अगम अगाध कहे ४

७ हैरान० ।

हमथै दूर रही गतितेरी,
तुम्हहो तैसी तुम्हही जानों, कहा बपुरी मति मेरी । टेक
मनथै आगम दृष्टि अगोचर, मनसा का गम नांही
सुर्ति समाय बुद्धि बल थाके, बचन न पहुंचै तांही १
जोग न ध्यान ज्ञान गम नाहीं, समझि समझि सबहारे

उनमनी रहत प्राण घट साधे, पार न गहत तुम्हारे २
खोजि परे गति जाय न जाणी, अगह गहन कैसैं आवै
दादू अबिगति देव दयाकरि, भाग बडे सो पावै ३

इति राग नटनारायण संपूर्ण ॥ राग १८ ॥ पद २६४ ॥

॥ अथ राग सोरठ ॥

१ स्मरण० ।

कोली साल न छडे रे, सूत घाबरि काढै रे । टेक
प्रेम पाण लगाई धागै, तत्व तेल निज दीया
एक मनाइस आरंभ, लागा ज्ञानराछ भरि लीया १
नाम नली भरि बुणिकर लागा, अंतर गति रंग राता
ताणै बाणैं जीव जुलाहा, परम तत्वसौं माता २
सकल सिरोमणि बुणै बिचारा, साहा सूतन तोड़ै
सदा सुचेत रहै ल्योलागा, ज्यूं तुटै त्यूं जोड़ै ३
ऐसैं तानि बुनि गहरगजीना, सांई के मन भावै
दादू कोली कर्ता के संग, बहुर न ईहि जग आवै ४

१ बिरह० ।

बिरहनी बपु न संभारै,
निस दिन तलफै रामके कारण; अंतर एक बिचारै । टेक
आतुर भई मिलण के कारण, कहि कहि राम पुकारै
सास उसासं निमख नही बिसरै, जित तित पंथ निहारै १
फिरै उदास चहुंदिस चितवत, नैन नीर भरि आवै
राम बियोग बिरहकी जारी, और न कोई भावै २

व्याकुल भई सरीर न समझै, विषम बाण हरि मारे
दादू दर्सण विन क्यूं जीवै, राम सनेही हमारे ३

३ उपदेस चिंतामणी० ।

मनरे तेरा कोण गंवारा, जपि जीवन प्राण अधारा । टेक
रे माता पिता कुल जाती, धन जोवन सज्जन संगाती
रे गृह दारा सुत भाई, हरिबिन सब झूठा है जाई १
रे तूं अंत्य अकेला जावै, काहूं के संग न आवै
रे तूं ना करि मेरी मेरा, हरि राम बिनां को तेरा २
रे तूं चेति न देखै अंधा, यहु माया मोह सब धंधा
रे काल मीच सिर जागे, हरि स्मरण काहे न लागे ३
यहु औसर बहुर न आवै, फिर मनषा जनम न पावै
अब दादू ढील न कीजै, हरि राम भजन करि लीजै ४

४ ।

मनरे राम रटत क्यूं रहिए, यहु तत्व बार बार क्यूं न कहिए । टेक
जबलग जिह्वा बाणी, तोलौं जपिलैं सारंगप्राणी
जब पवनां चलि जावै, तव प्राणी पछितावै १
जबलग श्रवण सुणीजै, तोलौं साधु सब्द सुणि लीजै
श्रवण सुर्ति जब जाई, ए तबका सुणिहै भाई २
जबलग नैनहुं पेखै, तोलौं चरण कमल किन देखै
जब नैनहूं कछू न सूझै, ए तब मूर्ख कहा बूझै ३
जबलग तन मन नीका, तोलौं जपिले जीवन जीका
जब दादू जीय आवै, तब हरिके मन भावै ४

५ मन प्रमोध० ।

मनरे देखत जन्म गयो, ताथै काज न कोई आयो । टेक

मन इंद्रिय ज्ञान बिचारा, ताथै जन्म जुवा ज्यू हारा
मन झूठ साच करि जानैं, हरि साधु कहै नहीं मानै १
मनरे बाद गहि चतुराई, ताथैं मनमुख बात बनाई
मन आप आप को थापै, कर्ता है बैठा आपै २
मन स्वादी-बहुत बनावै, मैं ज्यान्यो विषै बतावै
मन मांगै सोई दीजै, हमहीं राम दुखी क्यू कीजै ३
मन सबही छाडि विकारा, प्राणीहो पर गुणन थैं न्यारा
निर्गुण निज गहि रहिए, दादू सो साधु कहैते कहिए ४

६।

मनरें अंत्यकाल दिन आया, ताथैं यहु सब भया पराया। टेक
श्रवणहुं सुनै न नैनहुं सूझै, रसना कह्या न जाई
सीस चरण कर कंपन लागे, सो दिन पंहुच्या आई १
काले धोले बर्न पलटया, तन मन का बल भागा
जोवन गया जरा चलि आई, तब पछितावन लागा २
आव घटै घट छीजै काया, यहु तन भया पुरानां
पाचों थाके कह्या न मानैं, ताका मरम न जानां ३
हंस बटाऊ प्राण पयानां, समझि देखी मन मांही
दिन दिन काल ग्रासै जीयरा, दादू चेतै नांही ४

७।

मनरे तूं देखै सो नाहीं, हैसों अगम अगोचर मांही। टेक
निसी अंधियारी कछू न सूझै, संसै सर्प दिखावा
अैसैं अंध जगत नहीं जानै, जीव जेवडी खावा १
मृग जल देखि तहां मन धावै, दिन दिन झूठी आसा
जहां जहां जाय तहां जल नाहीं, निश्चै मरै पियासा २

भ्रम विलास बहुत बिधि कीह्नां, ज्यूं स्वप्ने सुख पावै
जागत झूठ तहां कुछ नांही, फिरि पिछै पछितावै ३
जबलग सूता तब लगै देखै, जाग्रत भ्रम विलानां
दादू अंत्य यहां कुछ नांहीं, हैमो सोधि सयानां ४

८।

भाई रे बाजीगर नट खेला, ऐसैं आपै रहै अकेला। टेक
यहु बाजी खेल पसारा, सब मोहे कौतिग हारा
यहु बाजी खेल दिखावा, बाजीगर किनहुं न पावा १
इंहि बाजी जगत भुलानां, बाजीगर किनहु न जानां
कुछ नांही सो पेखा, हैसो किनहुं न देखा २
कुछ ऐसा चेटक कीह्नां, तन मन सब हरि लीह्नां
बाजीगर भुरकी बाही, काहूपै लखी न जाई ३
बाजीगर प्रकासा, यहु बाजी झूठ तमासा
दादू पावा सोई, जो इंहि बाजी लिप्त न होई ४

९ ज्ञान उपदेश०।

भाई रे ऐसा एक विचारा, यो हरि गुरु कहै हमारा। टेक
जागत सूते सोवत सूते, जबलग राम न जानां
जागत जागे सोवत जागे, जब राम नाम मन मानां १
देखत अंधे अंधभी अंधे, जबलग सत् न सूझै
देखत देखै अंधभी देखै, जब राम सनेही बूझै २
बोलत गोंगे गूंगभी गोंगे, जबलग तत न चीह्नां
बोलत बोले गूंगभी बोले, जब राम नाम कहि दीह्नां ३
जीवत मुए मुएभी मुए, जबलग नहीं प्रकासा
जीवत जीए मुएभी जीए, दादू राम निवासा ४

१० नाम महिमा० ।

रामजी नाम बीनां दुख भारी, तेरे साधन कही विचारी । टेक
केइ जोग ध्यान गहि रहिया, केइ कुलके मार्ग बहिया
केइ सकल देवकौं धावै, केइ रिधि सिधि चाहै पावै १
केइ बेद पुरानों माते, केइ मायाके संग राते
केइ देस दिसंतर डोलै, केइ ज्ञानी ह्वै बहु बोलै २
केइ काया कसै अपारा, केइ मरै खड़गकी धारा
केइ अनंत जीवनकी आसा, केइ करै गुफामैं बासा ३
आदि अंत्य जें जागे, सो तो राम नाम ल्यो लागे
अब दादू एह बिचारा, हरि लागा प्राण हमारा ४

११ भ्रम विधूपन० ।

साधो हरिसूं हेत हमारा, जिन यहु कीन्ह पसारा । टेक
जा कारण व्रत कीजै, तिल तिल यहु तन छीजै
सहजैंही सो जानां, हरि जानतही मन मानां १
जा कारण तपजइए, सीत घाम सिर सहीए
सहजैंही सो आवा, हरि आवतही सचु पावा २
जा कारण बहु फिरिए, करि तीर्थ भ्रमि भ्रमि मरिए
सहजैंही सो चीन्हां, हरि चीन्ह सब सुख लीन्हां ३
प्रेम भक्ति जिन जानी, सो काहे भ्रमैं प्राणी
हरि सहजैंही भल मानैं, तातैं दादू और न जानै ४

१२ ।

रामजी जिन भ्रमावौ हमकौं, तातैं करौं बीनती तुम्हकौं । टेक
चरण तुम्हारे सबही देखौं, तप तिर्थ व्रत दानां
गंग जमुन पासि पाइनके, तहां देहु असनानां १

संग तुम्हारे सबही लागे, जोग जपिजे कीजै
साधन सकल एही सब मेरे, संग आपनौं दीजे २
पूजा पाती देवी देवल, सब देखो तुम्ह माहीं
मोकौं वोट आपणी दीजे, चरण कमलकी छांही ३
ए अरदास दासकी सुणिए, दूरि करो भ्रम मेरा
दादू तुम्ह विन और न जानैं, राखो चरनौं चेरा ४

१३ ।

सोईदेवपूजौंजेटाकीनहींघड़ीया, गरभवासनाहींअवतारिया । टेक
विन जल संजम सदासो देवा, भाव भक्ति करौं हरि सेवा १
पाती प्राण हरि देव चढ़ाउं, सहज समाधि प्रेम ल्योलाउं २
इंहि विधि सेवा सदा तहां होई, अलख निरंजन लखै न कोई ३
ए पूजा मेरे मन मानै, जिंही बिधि होयसु दादू न जांनै ४

१४ मचै हैरानको० ।

रामराय मोकौं अचिरज आवै, तेरा पार न कोई पावै । टेक
ब्रह्मादिक सनकादिक नारद, नेति नेति जे गावै
श्रणि तुम्हारी रहै निसबासुर, तिनकौं तू न लखावै १
शंकर सेश सबै सुर मुनिजन, तिनकौं तून जनावै
तीनलोक रटै रसनां भर, तिनकौं तून दिखावै २
दीन लीन राम रंग राते, तिनकौं तौं संग लावै
आपनैं अंगकी जुगति न जानैं, सो मन तेरे भावै ३
सेवा संजम करैं जप पूजा, शब्दन तिनकौं सुनावै
मैं अछो य हीन मत मेरी, दादू कौं दिखलावै ४

इति श्रीराग सोरठी संपूर्ण ॥ राग १६ ॥ पद ३१२ ॥

॥ अथ राग गुड़ ॥

—*—

१ भक्ति निहकाम० ।

दर्सण दे दर्सण दे हूं, तोरे गी मुक्ति न मांगौं । टेक
सिद्धि न मांगौं रिद्धि न मांगौं, तुम्हही मागौं गोविंदा १
जोग न मांगौं भोग न मागौं, तुम्हही मागौं रामजी २
घर नहीं मांगौं बन नहीं मांगौं, तुम्ही मांगौं देवजी ३
दादू तुम्हबिन और न मांगौं' दर्सण मांगौं देहुजी ४

२ बिरह वीनती० ।

तूं आपेही विचार, तूम्ह बिन क्यूं रहौं
मेरे और न दूजा कोई, दुख किसको कहौं । टेक
मीत हमारा सोय, आदैं जे पीया
मुझै मिलावे कोय, बै जीव न जीया १
तेरे नैन दिखाई, जीवों जिस आसरे
सोधन जीवै क्यों नहीं, जिस पासरे २
पिंजर माहै प्राण, तुझ बिन जाइसी
जन दादू मांगै मान, कब घर आइसी ३

३ ।

हूं जोयरही रे बाट, तुं घर आवनैं
तहारा दर्सण तैं सुखहोय, ते तूं ल्यावनैं । टेक
चरण जो बानी खांत, त तूं दिखाड़ि नैं
तुझ विनां जीवदेय, दुहेली कामनी १
नैन निहारौं बाट, ऊभी चांवनी
तूं अंतर थैं ऊठ्रो आव, दही जांवनी २

तूं दयाकरी घर आव, दासी गावनी
जन दादू राम संभालि, बैन सुनांवनी ३

४।

पीव देखैं बिन क्यूं रहूं, जीय तलफैमेरा
सबसुख आनंद पाइए, मुख देखों तेरा। टेक
पीव बिन कैसा जीवना, मोहि चैन न आवै
निर्धन ज्यूं धन पाईए, जब दर्स दिखावै १
तुम्हबिन क्यूं धीरज धरौं, जोलौं तोहि न पावौं
सनमुख ह्वै सुख दीजिए, बलिहारी जाऊं २
विरह बिवोगनि सहिसकौं, कायर घट काचा
पाव न ब्रह्म पाईए, सुनि साहिब साचा ३
सुनियो मेरी बीनती, अब दर्सण दीजै
दादू देखन पावई, तैसैं कुछ कीजै ४

५ प्रीति अपंतिः।

इहि बिधि बेध्यो मोर मनां, ज्यूं लै भृगी कीट तनां। ठेक
चातृग रटत रैनि बिहाई, पिंड परै पै वान न जाई १
मरै मीन बिछुरै नहीं पाणी, प्राण तजै उन और न जानी २
जलै सरीर न मोड़ै अंगा, जोति न छाडै पड़ै पतंगा ३
दादू अबथैं अैसैं होय, पिंड पडै न छाडौं तोय ४

६ विरहकों०।

आवो राम दयाकरि मेरे, बार बार बलिहारी तेरे। टेक
बिरहनि आतुर पंथ निहारै, राम राम कहि पीव पुकारै १
पंथी बूझै मार्ग जोवै, नैन नीर जल भरि भरि रोवै २
निसदिन तलफै रहै उदास, आत्म राम तुम्हारै पास ३

बपु बिसरै तनकी सुधि नाहीं, दादू बिरहनि मृतक मांहीं ४

७ केवल विनती० ।

निरंजन क्यूं रहै,
मोन गहै बैराग, केते जुग गये । टेक
जागै जगपति राय, हंसि बोलै नहीं
प्रगट घूंघट मांहि, पट खोलै नहीं १
सदिकै करूं संसार, सब जग वारणैं
छाडौं सब परवार, तेरे कारणैं २
वारूं पिंड प्राण, पाऊं सिर धरूं
ज्यूं ज्यूं भावै राम, सो सेवा करौं ३
दीनानाथ दयाल, बिलंब न कीजिये
दादू बलि बलि जाइ, सेज सुख दीजिये ४

८ बीनती० ।

निरंजन यों रहै, काहू लिपति न होइ
जल थल थावर जंगमा, गुण नहीं लागै कोइ । टेक
धर अंबर लागै नहीं, नही लागै सिसहरि सूर
पाणी पवन लागै नहीं, जहां तहां भरपूर १
निस वासुर लागै नही, नही लागै सीत न घाम
खुध्या तृषा लागै नहीं, घट घट आतम राम २
माया मोह लागै नहीं, नही लागै काया जीव
काल कर्म लागै नहीं, प्रगट मेरा पीव ३
इकलस एकै नूरहै, इकलस एकै तेज
इकलस एकै जोतिहै, दादू खेलै सेज ४

९।

जग जीवन प्राण अधार, बाचा पालनां
हूं कहां पुकारूं जाई, मेरे लालनां। टेक
मेरे बेदन अंग अपार, सो दुख टालनां
सागर यह निसतार, गहिरा अति घणां १
अंतर है सो टाल, कीजै आपणां
मेरे तुम्हबिन और न कोय, एहै बिचारणां २
ताथैं करौं पुकार, यहु तन चालनां
दादू कौं दर्सण देहु, जाई दुख सालनां ३

१० मनकानीकी बीनती०।

मेरे तुम्हहीं राखण हार, दूजा को नहीं
ए चंचल चहुंदिस जाई, काल तहीं तहीं। टेक
मैं केते कीए उपाय, निहचल ना रहै
जहां बरजौं तहां जाय, मदि मातौ बहै १
जहां जाणै तहां जाय, तुम्ह थैं नां डरै
तासूं कहा बसाई, भावै त्यूं करै २
सकल पुकारै साध, मैं केता कह्या
गुरु अंकुस माने नांहि निर्भय ह्वैरह्या ३
तुम्हबिन और न कोय, इस मनकौं गहै
तू राखै राखण हार, दादू तौ रहै ४

११ संसार कानीकी बीनती०।

निरंजन कायर कंपै प्राणियां, देखि यहु दरीया
बार पार सूझै नही, मन मेरा डरिया। टेक
अति अथाह यह भोजला, आसंघ नही आवै

देखि देखि डरपै जणां, प्राणी दुख पावै १
त्रिप जल भारिया सागरा, सब थके सयानां
तुम्ह बिन कहु कैसैं तिरौं, मैं मूढ अयानां २
आगैंही डरपे घणे, मेरी का कहिए
करगहि काटो केसवा, पार तो लहिय ३
एक भरोसा तौर है, जे तुम्ह हो दयाला
दादू कहु कैसैं तिरैं, तूं तारि गोपाला ४

१२ उपदेस समर्थका० ।

समरथ मेरा सांईयां, सकल अघ जारै
सुख दाता मेरे प्राणका, संकोच निवारै । टेक
तृबिधि ताप तन की हरै, चोथै जन राखै
आप समागम सेवका, साधू यों भाखै १
आप करै प्रतिपालनां, दारुन दुख टारै
इच्छा जनकी पूर है, सब कार्ज सारै २
कर्म कोटि भय भंजनां, सुख मंडण सोई
मन मनोर्थ पूरणां, असा और न कोई ३
असा और न देखिहूं, सब पूर्ण कामां
दादू साधु संगी किये, तुम आत्म रामां ४

१३ मनकी वीनती० ।

तुम्ह बिन राम्र कवन कलिमाहीं, विषया थों कोई बारै रे
मुनियर मोटा मन वै बाह्या, एहां कोण मनार्थ मारै रे । टेक
छिन यक मनवों मर्कट म्हारो, पर घर बारि नचावै रे
छिन यक मनवों चंचल म्हारो, छिन यक घरमै आवै रे १
छिन यक मनवों मीन अम्हारो, सचराचर मैं धावै रे

छिन एक मनवों उदमद्रिमातो, स्वादैं लागो खाए रे २
छिन एक मनवों जोति पतंगा, भ्रम्य भ्रम्य स्वादैं दाझै रे
छिन एक मनवों लेभै लागो, आपा परभै बाझै रे ३
छिन एक मनवों कुंजर म्हारो, बन बन मांहि भ्रमाडै रे
छिन एक मनवों कामी म्हारो, बिषेया रंग रमाडै रे ४
छिन एक मनवों मृग अम्हारो, नादै मोह्यो जाई रे
छिन एक मनवों माया रातो, छिन एक अम्हनै बाहै रे ५
छिन एक मनवों भवर अम्हारो, बासे कमल बंधाणों रे
छिन एक मनवों चहुंदिस जाई, मनवांनूं कोई आणो रे ६
तु बिन राखै कोण बिधाता, मुनियर साखी आणो रे
दादू मृतक छिनमैं जीवै, मनबानां चिरत न जांनौं रे ७

१४ बेष रच बिमनी० ।

करणी पोच सोच सुख करई,
लोहकी नाव कैसैं भोजल तिरई । टेक
दखिणजात पछिम कैसैं आवै, नैनबिन भुलि बाट किस पावै १
बिषबिन बेलि अमृत फल चाहै, खाय हलाहल अरउमाहै २
अग्निग्रहपैसिकरि सुखक्यूंसोवै, जलणि जागी घणीसीतलक्यूंहोवै
पाप पाखंड कीयपुनि क्यूंपाईए, कूपखणपड़िबा गगनक्यूंजाईय
कहै दादू मोहि अचिर्जभारी, हिरदै कपट क्यूं मिलै मुरारी ५

१५ मचय माप्ति० ।

मेरा मन के मनसूं मन लागा, सब्दके सब्दसूं नादबागा । टेक
श्रवण के श्रवणसूं सुनि सुखपाया, नैनके नैनसों निरखिराया १
प्राणके प्राणसूं खेलि प्राणी, मुखके मुखसों बोलिबाणी २
जीवके जीवसो रंगराता, चितके चितसों प्रेम माता ३

सीसके सीससों सीस मेरा, देखिरे दादूवा भागतेरा ४

१६ मनको उपदेस० ।

मेर सिखर चढि बोलि मनमेरा,
रांमजल बरषै सब्दसुनि तोरा । टेक
आरति आतुर पीव पुकारै, सोवत जागत पंथ निहारै १
निसबासुर कहि अमृतबाणी, रामनाम ल्योलाइ लै प्राणी २
टेरि मन भाई जबलग जीवै, प्रीति करि गाढी प्रेमरस पीवै ३
दादू ओसर जे मन लागै, रामघटा दिल बरषण लागै ४

१७ बैराग उपदेस० ।

नारी नेह न कीजिए, जे तुझ राम पीयारा
माया मोह न बंधिए, तजिए संसारा । टेक
बिषया रंग राचै नहीं, नही करै पसारा
देह ग्रेहे परवार मै, सब थैं रहै न्यारा १
आपा पर उरझै नहीं, नाही मै मेरा
मनसा बाचा कर्मनां, सांई सब तेरा २
मन इंद्रिय अस्थिर करै, कतहूं नही डोलै
जग बिकार सब परहरै, मिथ्या नहीं बोलै ३
रहै निरंतर रामसों, अंतर गति राता
गावै गुण गोविंद के, दादू रस माता ४

१८ आज्ञाकारी० ।

ज्यूं राखै त्यूंही रहै, तेई जन तेरा
तुम्ह बिन और न जांनही, सो सेवक तेरा । टेक
अंबर आपेही धर्‍या, अजहूं उपकारी
धरती धारी आप थैं, सबही सुख कारी १

पवन पालि सबके चलै, जैसैं तुम्ह कीन्हां
पानी प्रगट देखिहूं, सबसौं रहै भीनां २
चंद चिराकी चहूंदिसा, सब सीतल जानैं
सूर्ज भी सेवा करै, जैसैं भालि मानैं ३
ए जन सेवक ते रहे, सब आज्ञा कारी
मोकौं अैसैं कीजिए, दादू बलिहारी ४

१६ अन्य निंदा० ।

निंदक बाबा बीर हमारा, बिनहीं कोड़े बहै बिचारा । टेक
कर्म कोटि केकु समल काटै, काज संवारै बिनहीं साटै १
आपण डूबे और कौं तारै, अैसा प्रीतम पार उतारै २
जुग जुग जीवो निंदक मोरा, राम देव तुम्हकरो निहोरा ३
निंदक बपुरा पर उपकारी, दादू निंदा करै हमारी ४

२० बिरह बिनती० ।

देहुजी देहुजी प्रेम पियाला देहुजी, देकरि बहुर न लेहुजी । टेक
ज्यूं ज्यूं नुर न देखौं तेरा, त्यूं त्यूं जीयरा तलफै मेरा १
अमी महारस नाम न आवै, त्यूं त्यूं प्राण बहुत दुखपावै २
प्रेमभक्ति रस पावै नांहीं, त्यूं त्यूं सालै मनमाहीं ३
सेज सुहाग सदासुख दीजै, दादू दुखिया बिलंब न कीजै ४

२१ बीनती० ।

बरषहु राम अमृत धारा, झिलमिल २ सींचणहारा । टेक
प्राणबेलि निज नीर न पावै, जलहरि बिनां कमल कुमलावै १
सूकै बेलि सकल बनराय, रामदेव जल बरषहु आय २
आतम बेलि मरै पियासा, नीर न पावै दादू दासा ३

इति श्री राग गुड संपूरण ॥ राग १० ॥ पद ३२८ ॥

॥ अथ राग बिलावल ॥

———*———

१ मचगप० ।

दया तुम्हारी दर्सण पईए, जाणतहो तुम्ह अंतरजामी
जाणराय तुम्ह सों कहा कहिए । टेक
तुम्हसों कहा चतुराई कीजे, कोंण कर्मकरि तुम्ह पाए
कोई नही मिलै प्राणबलि अपनैं, दया तुम्हारी तुम्ह आए १
कहा हमारो आन तुम्ह आगैं, कोंन कलाकरि बासिकीए
जीतैं कोण बुद्धि बलपौर्ष, रुच अपनी थैं सराणि लीए २
तुम्ह ही आदिअंत्य पुनि तुम्हही, तुम्ह कर्ता त्रिहुंलोक मंझारि
कुछ नांहीं थैं कहा होतहै, दादू बलिपावै दीदार ३

२ बीनती० ।

मालिक महरवान करीम,
गुनह गार हररोज हरदम, पनह राखि रहीम । टेक
अवलि आखिर बंदा गुनही, अमल बद बासियार
गरक दुनियां सतार साहिब, दरद बंद पुकार १
फरामोस नेकी बदी, करदम बुराई बदफैल
बकसिंद तुं अजवल आखर, हुकम हाजर सैल २
नामनेक रहीम राजिक, पाक प्रवर दिगार
गुनह फिल करि देहु दादू, तलब दरदीदार ३

३ ।

कोंण आदमी कमीन बिचारा, किसकों पूजै गरीब बीजारा । टेक
मैं जन एक अनेक पसारा, भोजल भरिया अधिक अपारा १
एक होयतो कहि समझांऊं, अनेक उरझे क्यूं सुरकाऊं २

मैंहुं निबल सबल एकसारे, क्यूं करि पूजों बहुत पसारे ३
पीव पुकारों समझत नांहीं, दादू देख दसोंदिस जांहीं ४

४ उपदेस चितामणी० ।

जागहु जीयरा काहे सोवै, सेवकरी मातो सुख होवै । टेक
जाथैं जीव न सोतैं बिसारा, पछिम जानां पंथ संवारा
मैं मेरी करि बहुत भुलांना, अजहुं न चेतै दुरि पयानां १
सांई केरी सेवा नांही, फिर फिर डुबे दरिया मांहीं
और न आवा पार न पावा, झूठा जीवनां बहु भुलावा २
मूल न राख्या लाहा न लीया, कोड़ी बदलै हीरा दीया
फिर पाछिनांनां संबल नाहीं, हारिचल्या क्यों पावै सांई ३
अबसुख कारण फिर दुख पावै, अजहूं न चेतै क्यूं डहकावै
दादू कहै सखि सुनि मेरी, कहु करीम सभालि संवेरी ४

५ ।

बार बार तन नही बावरे, काहे क्यूं बादि गमावै रे
बिन सतबार कछू नही लागै, बहुर कहां को पावै रे । टेक
तेरे भाग बड़े भाव धरि कीन्हां, क्यूं करि चिंत्र बनावै रे
सो तुं लेइ बिषमैं डारै, कंचन छार मिलावै रे १
तूं मत जांनै बहुर पाइए, अबकै जिन डहकावै रे
तीनलोक की पूंजी तेरे, बन जिवेगि सो आवै रे २
जबलग घटमैं सास बास है, तबलग काहे न धावै रे
दादू तनधरि नाम न लीहां, सो प्राणी पछितावै रे ३

६ ।

राम बिसार्यो रे जगनाथ,
हीरा हार्यो देखत हीरे' कोड़ी कीहा हाथ । टेक

काच हुता कंचन करि जांन्यों, भूलो रे भ्रमपास
साचे सूं पल प्रचा नांहीं, करि काचकी आस १
विषताकों अमृत करि जांनैं, सो संग न आवै साथ
संमल के फूलन पर फूल्यो, चूको अबकी घात २
हरिभजिरे मन सहज पिछाणी, एसुणि साची साची बात
दादू रे अब थे करिलीजै, आवघटै दीन जात ३

७ मन० ।

मन चंचल मेरो कह्यो न मांनैं, दसों दिसा दोरावै रे
आवत जात बार नही लागै, बहुत भांति बहुरावै रे । टेक
बेर बेर बरजत या मनकों, किंचित सीख न मानै रे
अैसैं निकस जाई या तनथै, जैसैं जीवन जाणैं रे १
कोटिक जतन करत या मनको, निहचल निमख न होई रे
चंचल चपल चहुंदिस भ्रमैं, कहा करै जन कोई रे २
सदा सोच रहै घट भीतर, मनथिर कैसैं कीजै रे
सहजै सहज साधुकी संगति, दादू हरिभजि लीजै रे ३

८ माया० ।

इन कामनि घर घाले रे,
प्रीति लगाय प्राणसब सोपे' बिन पावक जीव जाले रे । टेक
अंग लगाय सार सब लेवै, इनथैं कोई न बांछे रे
यहु संसार जीति सब लीया, मिलण न देई साचे रे १
हेत लगाय सबै धन लेवै, बाकी कछु न राखै रे
माखण मांहि सोधि सब लेवै, छाछि छीयाकरि नांखै रे २
जे जन जाणि जुगति सों त्यागै, तिनकों निजपद परसै रे
काल न खाइ मरै नहीं कबहूं, दादू तिनकों दरसै रे ३

९ विस्वास० ।

जिन सत छाडै बाव रे, पूरक है पूरा
सिरजे की सब चिंतहै; देबे कौं सूरा । टेक
गर्भवास में राखिया, पावक थै न्यारा
जुगति जतन करि सींचीया, दे प्राण अधारा १
कुंज कहां घर संचरै, तहां को रखवारा
हेम हरत जिन राखिया, सो खसम हमारा २
जल थल जीव जिते रहै, सो सब कौं पूरै
संपट सिलाम देतहै, काहे नर झूरै ३
जिन यहु भार उठाइया, निर्बाहै सोई
दादू छिन न बिसारिए, ताथैं जीवन होई ४

१०।

सों राम संभालि जीयरा, प्राण पिंड जिन दीह्नां रे
अमर आप उपावण हारा, मांहि चित्र जिन कीह्नां रे । टेक
चंद सूर जिन कीए चिराका, चरणों बिनां चलावै रे
इक सीतल इक ताता डोलै, अनंत कला दिखलावै रे १
धरती धरनि वरन बहु बांणी, रचिले सप्त समंदा रे
जल थल जीव संभालणहारा, पूरि रह्या सब संगा रे २
प्रगट पवन पाणी जिन कीह्नां, बरषावै बहु धारा रे
अठार भार बरष बहु बिधिके, सबका सींचणहारा रे ३
पंचतत्व जिन कीये पसारा, सबकरि देखण लागा रे
निचल राम जपी मेरे जीयरा, दादू ताथैं जागा रे ४

११ प्रचय० ।

जब सैं रहते कीरह जाणी,
काल कायाके निकटि न आवै, पावतहै सुख प्राणी । टेक
सोग संताप नैन नही देखौं, राग दोष नही आवै
जागत है जासौं रुचि मेरी, स्वप्नै सोई दिखावै १
भ्रम कर्म मोहन ममता, बाद बिबाद न जानैं
मोहनसूं मेरी बनि आई, रसनां सोई बखांनूं २
निसबासुर मोहन तन मेरे, चरण कमल मन मांनैं
सोई निरख देखिसचु पांऊं, दादू और न जानैं ३

१२ ।

जब मैं साचेकी सुधि पाई,
तब थैं अंग और नहीं आवै, देखत हूं सुखदाई । टेक
ता दिनथैं तन ताप न व्यापै, सुख दुख संग न जांऊं
पांव न पीव परसि पद लिह्यां, आनंद भरि गुणगाऊं १
सब सूं संग नहीं पुनि मेरे, अरस परस कुछ नांहीं
एक अनंत सोई संग मेरें, निरखतहुं निज मांहीं २
तन मन मांहि सोधि सो लिह्यां, निरखतहुं निजसारा
सोई संग सबै सुखदाई, दादू भाग हमारा ३

१३ साच निदांन निरनै० ।

हरि बिन निहचल कहीं न देखौं, तीन लोक फिर सोधा रे
जे दीसै सो बिनस जाइगा, ऐसा गुरु प्रमोधा रे । टेक
धरती गगन पवन अरु पांणी, चंद सूर थिर नांही रे

रैणि दिवस रहत नहीं दीसै, एक रहै कालि मांही रे १
पीरपैकंबर सेप मसाइक्क, सिव बिरंच सब देवा रे
कलि आया सो कोई न रहसी, रहसी अलख अभेवा रे २
सवालाख मेर गिर पर्वत, समद नैं रहसी थीरा रे
नदी निवांण कछु नही दीसै, रहसी अकल सरीरा रे ३
अविनासी वो एक रहैगा, जिनयहु सब कुछ कीन्हां रे
दादू जाता सबजग देखौं, एक रहत सो चीन्हां रे ४

१४ पाति व्रत० ।

मूल सींचि बधै ज्यूं बेला, सो तत्व तरवर रहै अकेला । टेक
देवी देखत फिरै ज्यूं भूले, खाइ हलाहल बिषको फूले
सुखको चाहे पड़ै गलपासी, देखत हीरा हाथ थैं जासी १
केइ पूजा रचि ध्यान लगावै, देवल देखै खबरि न पावै
तोरै पाती जुगत न जानी, इंहि भ्रम भूलि रहे अभिमानी २
तीर्थ वरत न पूजै आसा, बनखंड जाइ रहे उदासा
यौं तप करि करि देह जलावै, भ्रमत डोलै जनम गमावै ३
सत गुरु मिलै न संसा जाई, ए बंधन सब देहु छुड़ाई
तब दादू परम गति पावै, सो निज मूर्ति माहि लखावै ४

१५ साधु महा० ।

सोई साध सिरोंमणी, गोविंद गुणगावै
राम भजै विषिया तजै, आपान जणावै । टेक
मिथ्या मुख बोलै नहीं, परनिंदा नाहीं
औगुण छाड़ै गुणगहै, मन हरि पद मांही १
निर्वैरी सब आत्मां, पर आत्म जानै
सुख दाई समता गहै, आपा नही आनै २

आपा पर अंतर नही, निर्मल निज सारा
सत बादी साचा कहै, लैलीन बिचारा ३
निर्भये भजि न्यारा रहै, काहू लियत न होई
दादू सब संसार मैं, ऐसा जन कोई ४

१६ प्रचय प्रछा० ।

राम मिलायों जानिए, जो काल न व्यापै
जरामरण ताकों नहीं, अरु मिटै आपै । टेक
सुख दुख कबहूं न उपजै, अरु सब जग सूझै
कर्म को बांधै नही, सब आगम बूझै १
जाग्रत रहै सो जन रहै, अरु जुग जुग जागै
अंतरजामी सों रहै, कुछ काई न लागै २
काम दहै सहजैं रहै, अरु सुनि बिचारै
दादू सो सबकी लहै, अरु कबहू नही हारै ३

१७ समता ज्ञान० ।

इन बासन मैं राम न मानैं,
दुतिया दोष नहीं उरअंतर, एक एक करि पीवको जानैं । टेक
पूर्णब्रह्म देखि सबहिन मैं, भ्रम न जीव काहूं थैं आंनै
होय दयाल दीनता सबसूं, अरि पंचनकों करै किसानैं १
आपा पर सम सब तत्व न चीह्नां, हरि भजि केवल जस गांनैं
दादू सोई सहज घर आनैं, संकट सबै जीवके भानैं २

१८ प्रचय० ।

ए मन मेरा पीवसों, औरन सूं नाहीं
पीव बिन पलहि न जीवसों, ए उपजै मांहीं । टेक
देखि देखि सुख जीवसो, तहां धूप न छाहीं

अजरावर मन बंधिया, ताथैं अनत न जाई १
तेज पुंज फल पाईया, तहां रस खांई
अमर बेलि अमृत झरै, पीव पीव अघांही २
प्राणपती तहां पाईए, जहां उलटि समाही
दादू पीव प्रचाभये, हियरें हित लांही ३

१६।

आजि प्रभात मिले हरिलाल,
दिलकी बिथा पीड सब भागी, मिट्यो है जीवको साल। टेक
देखत नैन संतोष भयो है, यह तुम्हारो ख्याल
दादू जिन सों हलमिल रहिबो, तुम्ह हो दिन दयाल १

२० निज सथान निरनै उपदेस०।

अरस अल्हाही रबदा, इथांई रहमांन वे
मका वीचि मुसाफरीला, मदीनां मुलतांन वे। टेक
नबीनालि पैकंबरे, पीरूं हंदा थांन वे
जनतहु ले हिकसालां, इथां भिसत मुकांम वे १
इथां आब जम जमां, इथांई सुब हांन वे
तखत रवानी कंगुरेला, इथांई सुलतान वे २
सब इथां अंदर आववे, इथांई ईमांन वे
दादू आप वजाइएला, इथांई आसान वे ३

२१।

आसण रमिता रांमदा, हरि इथा अबिगति आप वे
काया कासी बंजणां, हरि इथां पूजा जाय वे। टेक
महादेव मुनि देव थे, सिधैंदा विश्रामवे
स्वर्ग सुखासण हुलणें, हरि इथां आतमराम वे, १

अमी सरोवर आत्मां, इथांई आधार वे
अमर थान अविगति रहै, हरि इथैं सिरजनहार वे २
सब कुछ इथैं आववे, इथा परमानंद वे
दादू आप दूरि करि, हरि इथांई आंनद वे ३

इति राग बिलावल संपूर्ण ॥ राग २१ ॥ पद ३५३ ॥

॥ अथ राग सूहो ॥

१ मचय अतराइ रहित वीनती० ।

तुम्ह बिचि अंतर जिन परै माधवै, भावै तन धन लेहु
भावै स्वर्ग नरक रसातल, भावै करवत देहु । टेक
भावै बिपित देहु दुख संकट, भावै संपति सुख सरीर
भावै घर बन राव रंककरि, भावै सागर तीर माधवे १
भावै बंध मुक्ति करि माधवे, भावै त्रिभवन सार
भावै सकल दोष धरि माधवे, भावै सकल निवारि २
भावै धरणि गगन धरि माधवैं, भावै सीतल सूर
दादू निकटि सदा संग माधवे, तूं जिन होवै दूरि ३

१ मच० ।

अबहम राम सनेही पाया, आगम अनहद सूं चित लाया । टेक
तनमन आत्म ताकौं दीन्हां, तब हरि हम अपनां करि लीन्हां १
बाणी बिमल हरि पंचप्राणा, पहली सीस मिले भगवानां २
जीवत जन्म सुफल करि लीन्हां, पहली चेते तिन भल कीन्हां ३
औसर आपा ठौर लगावा, दादू जीवत ले पहुंचावा ४

इति राग सूहो संपूर्ण ॥ राग २२ ॥ पद ३५५ ॥

॥ अथ ग्रंथ काया बेली राग सूहो ॥

——*——

१ चोपाई ।

साचा सतगुरु राम मिलावै, सब कूछ काया मांहि दिखावै
कायामांहै सिरजनहार, कायामांहै ओंकार १
कायामांहै है आकास, कायामांहै धरती पास
कायामांहै पवन प्रकास, कायामांहै नीर निवास २
कायामांहै ससि हरि सूर, कायामांहै बाजै तूर
कायामांहै तीनूं देव, कायामांहै अलख अभेव ३
कायामांहै च्यारूं बेद, कायामांहै पाया भेद
कायामांहै चारे खांणी, कायामांहै चारे बाणी ४
कायामांहै उपजै आंई, कायामांहै मरि मरि जांई
कायामांहै जामै मरै, कायामांहै चोरासी फिरै ५
कायामांहै ले अवतार, कायामांहै बारंबार
दोहा—कायामांहै राति दिन, उदै अस्त इकतार
दादू पाया परम गुरु, कीय एकंकार ।

२ दूजा चरण चौपाई ।

कायामांहै खेल पसारा, कायामांहै प्राण अधारा
कायामांहै अठारह भार, कायामांहै उपावण हार १
कायामांहै सब बन राइ, कायामांहै रहे घर छाइ
कायामांहै कंदल बास, कायामांहै है कविलास २
कायामांहै तरवर छाया, कायामांहै पक्षी माया
कायामांहै आदि अनंत, कायामांहै है भगवंत ३
कायामांहै त्रिभवन राय, कायामांहै रहे समाय

कायामांहि चवदह भवन, कायामांहि आवा गमन ४
कायामांहि सब ब्रह्मंड, कायामांहि है नवखंड
कायामांहि स्वर्ग पयाल, कायामांहि आप दयाल ५
दोहा—कायामांहि लोक सब, दादू दीया दीखाइ
मनसा बाचा क्रमनां, गुरुबिन लख्या न जाइ ।

३ तीजा चरण चौपाई ।

कायामांहि सागर सात, कायामांहि अबिगति नाथ
कायामांहि नदीया नीर, कायामांहि गहर गंभीरे १
कायामांहि सरवर पाणी, कायामांहि बसै विनाणी
कायामांहि नीर नीवाण, कायामांहि हंस सुजाण २
कायामांहि गंग तरंग, कायामांहि जमुना संग
कायामांहि है सरस्वती, कायामांहि द्वारामती ३
कायामांहि करै सनांन, कायामांहि कासी थान
कायामांहि पूजा पाती, कायामांहि तीर्थ जाती ४
कायामांहि मुनियर मेला, कायामांहि आप-अकेला
कायामांहि जपिए जाप, कायामांहि आपै आप ५
दोहा—काया नग्र निधांन हैं, माहैं कोतग होइ
दादू सतगुरु संगिले, भूलि पडै जिनि कोइ ।

४ चोथो चरण चौपाई ।

कायामांहि बिषमी बाट, कायामांहि औघट घाट
कायामांहि पटण गाम, कायामांहि उत्तम ठाम १
कायामांहि मंडप छाजे, कायामांहि आप बिराजे
कायामांहि महल अवास, कायामांहि निहचल वास २
कायामांहि राज द्वार, कायामांहि बोलणहार

कायामांहे भरे भंडार, कायामांहे बस्त अपार ३
कायामांहे नवनिधि होय, कायामांहे अठसिधि सोय
कायामांहे हीरा साल, कायामांहे निपजै लाल ४
कायामांहे माणिक भरे, कायामांहे लेले धरे
कायामांहे रतन अमोल, कायामांहे मोल न तोल ५
दोहा—कायामांहे कर्तार हैं, सो निधि जांणैं नांहि
दादू गुरु मुख पाइए, सब कुछ काया मांहि ।

५ पचमां चरण चौपाई ।

कायामांहे सब कुछ जाणि, कायामांहे लेहु पिछाणि
कायामांहे बहु बिसतार, कायामांहे अनंत अपार १
कायामांहे आगम अगाध, कायामांहे निपजै साध
कायामांहे कह्या न जाइ, कायामांहे रहे ल्योलाइ २
कायामांहे साधन सार, कायामांहे करै बिचार
कायामांहे अमृत बाणी, कायामांहे सारंगपाणी ३
कायामांहे खेलै प्राण, कायामांहै पद निर्बाण
कायामांहे मूल गहरहे, कायामांहे सब कुछ लहे ४
कायामांहे निज निरधार, कायामांहै अपरंपार
कायामांहै सेवा करै, कायामांहे नीझर झरै ५
दोहा—कायामांहे बास करि, रहे निरंतर छाई
दादू पाया आदि घर, सतगुरु दिया दिखाई ।

६ षष्टमा चरण चौपाई ।

कायामांहे अनुभव सार, कायामांहै करै विचार
कायामांहे उपजै ज्ञान, कायामांहै लागै ध्यान १
कायामांहे अमर अस्थांन, कायामांहे आतमाराम

कायामांहे कला अनेक, कायामांहे कर्ता एक २
कायामांहे लागै रंग, कायामांहे सांई संग
कायामांहे सरवर तीर, कायामांहे कोकिल कीर ३
कायामांहे कछिब नैन, कायामांहे कुंजी बैंन
कायामांहे कमल प्रकास, कायामांहे मधुकरि बास ४
कायामांहे नाद कुरंग, कायामांहे जोति पतंग
कायामांहे चातृग मोर, कायामांहे चंद चकोर ५
दोहा—कायामांहे प्रीति करि, कायामांहि सनेह
कायामांहे प्रेम रस, दादू गुरु मुख एह।

७ सप्तमां चरण चौपाई।

कायामांहे तारण हारा, कायामांहे उतरे पारा
कायामांहे दूतर तारे, कायामांहे आप उबारे १
कायामांहे दूतर तिरे, कायामांहे हो उद्धरे
कायामांहे निपजे आई, कायामांहे रहे समाई २
कायामांहे खुले कपाट, कायामांहे निरंजन हाट
कायामांहे है दीदार, कायामांहे देखणहार ३
कायामांहे रांम रंग राते, कायामांहे प्रेम रस माते
कायामांहे अबिचल भए, कायामांहे निहचल रहे ४
कायामांहे जीवे जीव, कायामांहे पाया पीव
कायामांहे सदा आनंद, कायामांहे परमानंद ५
दोहा—कायामांहे कुसल है, सो हम देख्या आई
दादू गुरु मुख पाईए, साधु कहै समझाई।

८ अष्टमा चरण चौपाई।

कायामांहे देख्या नूर, कायामांहे रह्या भरपूर

कायामांहे पाया तेज, कायामांहे सुंदर सेज १
कायामांहे पुंज प्रकास, कायामांहे सदा उजास
कायामांहे झिलमिल सारा, कायामांहे सब थै न्यारा २
कायामांहे जोति अनंत, कायामांहे सदा बसंत
कायामांहे खेलै फाग, कायामांहे सब बन बाग ३
कायामांहे खेलै रास, कायामांहे बिबधि बिलास
कायामांहे बाजहि बाजे, कायामांहे नादधुनि साजे ४
कायामांहे सेज्ज सुहाग, कायामांहे मोटे भाग
कायामांहैं मंगल चार, कायामांहे जय जय कार ५
दोहा—काया अगम अगाध है, माहैं तूर बजाई
दादू प्रगट पीव मिल्या, गुरुमुख रहे समाई ।
इति काया बेली ग्रंथ संपूर्ण ॥ राग २१ ॥ पद ३६३ ॥

॥ अथ राग बसंत ॥

१ भजन भेद० ।

निर्मल नाम न लीयो जाई, जाके भाग बडे सोई फलखाई । टेक
मन माया मोह मदमाते, कर्म कठिनता मांहि परे
बिषै बिकार मांनि मन मांहीं, सकल मनोर्थ स्वादखरे १
काम क्रोध ए काल कलपनां, मैं मैं मेरी अति अहंकार
तृष्णा त्रिपति न मानैं कबहूं, सदा कुसंगी पंच बिकार २
अनेक जोध रहैं रखवाले, दुर्लभ दूरिफल अगम अपार
जाके भाग बडे सोई फल पावे, दादू दाता सिरजनहार ३

२ बिरह बीनती० ।

तूं घर आवनैं म्हारे रे, हौंजांऊ बारणैं तह्मारे रे । टेक
रैंणि दिवस मूनैं निरखतां जाई,
वहलो थई घर आवैरे वाह्ला, आकुळ थाए १
तिळ तिळ हूंतो तह्मारी बाटड़ी जोऊं,
राणी रे आंसूडे वाह्ला मुखड़ो धोऊं २
तह्मारी दया करि घरि आवे रे वाह्ला,
दादू तो तह्मारो छैरे मकरी टाळा ३

३ करुणा बीनती० ।

मोहन दुख दीरघ तूं निवारि, मोहि संतावै बार बार । टेक
काम कठिन घट रहै मांहि, तार्थैं ज्ञान ध्यान दोऊ उदै नांहि
गति मति मोह न बिकल मोर, तार्थैं चीत न आवै नाम तोर १
पांचों इंदर देहपूरि, तार्थैं सहज सीळसत रहै दूरि
सुधि बुधि मेरी गई भाजि, तार्थैं तुम्ह बिसरेहो महाराजि २
क्रोध न कबहूं तजै संग, तार्थैं भाव भजन का होई भंग
समझि न काई मन मंझारि, तार्थैं चरणि बिमुख भए श्रीमुरारि३
अंतर्जामी करि सहाई, तेरो दीन दुखत भयो जनम जाई
त्राहि त्राहि प्रभु तूं दयाळ, कहै दादू हरि करि संभाळ ५

४ मनकांनीकी बीनती० ।

मेरे मोहन मूर्ति राखि मोहि, निसबासुर गुन रमों तोहि
मन मीन होई ज्यूं स्वाद खाई, लाळच लागो जळथैं जाई १
मन हसती मातो अपार, काम अंध गज लहर सार २
मन पतंग पावक परै, अग्नि न देखै ज्यूं जरै ३
मन मृघा ज्यूं सुनैं नाद, प्राण तजै यौं जाइ बाद ४

मन मधु करि जैसैं लुब्धि बास, कमल बंधातू होइ नाम ५
मनसा वाचा सरन तोर, दादू कों राखो गोविंद मोर ६

५ मन उपदेसको० ।

वहुर न कीजै कपट काम, हिरदै जपिए राम नाम । टेक
हरि पाके नही कहुं वाम, पीव बिन खड भड गांऊं गाम
तुम्ह राखो जीयरा अपणी माम, अनत जिन जाइरहै बिश्राम १
कपट काम नही कीजै हाम, रहो चरण कमल कहु राम राम
जब अंतर्जामी रहे जाम, तब अखै पद जन दादू प्राम २

६ पचैप्राप्ति० ।

तहां खेलों पीवसों नितही फाग, देखि सखीरी मेरो भाग । टेक
तहां दिन दिन अति आनंद होइ, प्रेम पिलावै आप सोइ
संगय न सेती रमै रास, तहां पूजा अरचा चरण पास १
तहां बचन अमोलिक सबही सार, वरतैं लीला अति अपार
उमंग देहु तब मेरे भाग, तिंहि तरवर फल अमर लागि २
अलख देव कोइ जाणै भेव, अलख देवकी कीजै सेव
दादू बलि बलि बार बार, तहां आप निरंजन निराधार ३

७ पचय सुख वर्ननको० ।

मोहन माली सहज समानां, कोई जाणै साध सुजाणा । टेक
काया बाडी मांहैं माली, तहां रास बनाया
सेवक सूं स्वामी खेलन कों, आप दया करिआया १
बाहरि भीतरि सकल निरंतर, सब मैं रह्या समाई
प्रगट गुप्त गुप्त पुनि प्रगट, अविगति लख्या न जाई २
ता मालीकी अकथ कहांनी, कहत कही नही आवै
अगम अगोचर करै अनंदा, दादू ए जगावै ३

८ प्रचयको० ।

मन मोहन मेरे मनही माहि, कीजै सेवा अति तहां । टेक
तहां पायो देव निरंजना, प्रगट भये हरि ए तना
नैन नहिं निरखौं अघाइ, प्रगट्यो है हरि मेरे माइ १
मोहि करि नैनन की सैनदे, प्राण मूसि हरि मोरले
तब उपजै मोकौं इह बानि, निज निरखत हौं सारंगपाणि २
अंकुर आदै प्रगट्यो सोइ, बैन बान तार्थैं लागे मोहि
सरणै दादू रह्यो जाइ, हरि चरण दिखावै आप आइ ३

९ थकित निहचल० ।

मति वाले पाचौं प्रेम पूरि, निमख न इत उत जाइ दूरि । टेक
हरिरस माते दया दीन, राम रमत है रहे लीन
उलटि अपूठे भए थीर, अमृत धारा पीवै नीर १
सहज सुमाधी तजि विकार, अविनासी रस पीवहि सार
थकित भए मिलि महल मांहि, मनसा वाचा आन नांहि २
मन मति वाला राम रंग, मिल आसण बैठे एक संग
अस्थिर दादू एक अंग, प्राणनाथ तहां परमानंद ३

इति राग वसंत संपूण ॥ राग २१ ॥ पद ३७० ॥

॥ अथ राग भरों ॥

१ गुरु नाम महिमां महात्म० ।

सतगुरु चरणो मस्तक धरणां, राम२ कहि दूतर तिरणां । टेक
अष्टसिधि नव निधि सहजैं पावै, अमर अभय पद सुखमें आवै१
भगति मुक्ति बैकुंठां जाइ, अमर लोक फल लेवै आइ २

परम पदार्थ मंगल चार, साहिब के सब भरे भंडार ३
नूर तेज है जोति अपार, दादू दाता सिरजनहार ४

२ अति उत्तम नाम स्मरण० ।

तनही राम मनही राम, राम रिदैरामि राखिले
मनसा राम सकल प्रपूरण, सहज सदा रस चाखिलै । टेक
नैना राम बैना राम, रसना राम संभारीले
श्रवनां राम सनमुख राम, रमिता राम बिचारीले १
सासैं राम सुरतैं राम, शब्दैं राम समाईले
अंतर राम निरंतर राम, आत्म रामा धाईले २
सवैं राम संगै राम, राम नाम ल्योलाईले
बाहरि राम भीतरि रांम, दादू गोबिन्द गाईले ३

३ उत्तम स्मरण० ।

ऐसी सुर्ति राम ल्योलाई, हरि हिरदै जिन बीसर जाई । टेक
छिन छिन मात संभालै पूत, बिंद राखै जोगी अबधूत
तृयाक रूप रूपकों रटै, नटणी नृखि बंस व्रत चढै १
कछिव दृष्टी धरै धियांन, चात्रग नीर प्रेमकी बान
कुंजी कुरल संभालै सोइ, मृगी ध्यांन कीट कूं होइ २
श्रवण सब्द ज्यूं सुनै कुरंग, ज्योति पतंग न मोडै अंग
जल विन मीन तलफि ज्यूं मरै, दादू सेवक ऐसैं करै ३

४ ।

निर्गुण राम रहे ल्योलाइ, सहजैं सहज मिले हरिजाइ । टेक
भोजल व्याधि लियै नही कबहुं, कर्म न कोई लागै आइ
तीनूं ताप जरै नहीं जीयरा, सो पद परसै सहज सुभाइ १
जन्म जरा जोनि नही आवै, माया मोह न लागै ताइ

पाचों पीड प्राण नहीं व्यापै, सकल सोधि सब एह उपाइ २
संकुट संसा नरक न नैंनहुं, ताकों कबहुं काल न खाइ
कंप न काई भय भूम भागै, सब बिधि ऐसी एक लगाई ३
सहज समाधि गहो जे दिढकरि, जासौं लागै सोई आइ
भृगी होय कीटकी नाईं, हरिजन दादू एक दिखाई ४

५ आसीर्वाद० ।

धन्य धन्य तूं धन्य धणी, तुम्ह सो मेरी आइ बणी । टेक
धन्य धन्य तूं तारै जगदीस, सुर नर मुनिजन सेवै ईस १
धन्य धन्य तूं केवल राम, सेस सहंस मुख ले हरिनाम २
धन्य धन्य तूं सिरजनहार, तेरा कोई न पावै पार ३
धन्य धन्य तूं निरंजन देव, दादू तेरा लखै न भेव ४

६ भय भीत भयांनक० ।

काजाणोंमोहिकालेकरिसी, तनहितापमोहिछिननबिसरसी । टे.
आगम मोपैं जान्यू न जाइ, इहै बिमासण जीयरे माहि १
मैं नहीं जाणों क्या सिर होइ, ताथैं जीयरा डरपै रोइ २
काहू थैं ले कछू करै, ताथैं मईया जीव डरै ३
दादू न जानै कैसें कहै, तुम्ह सरनांगति आइ रहै ४

७ ।

का जाणों रामको गति मेरी, मैं बिषई मनसा नहीं फेरी । टेक
जे मन मांगै सोई दीहां, जाता देखि फेरि नहीं लीन्हां १
देवा इंदर अधिक पसारे, पंचों पकरि पटक नहीं मारे २
इन बातन घटि भरे बिकारा, तृष्णां तेज मोह नहीं हारा ३
इनहीं लागि मैं सेव न जाणी, कहि दादू सुनि क्रम कहानी ४

८।

डरिए रे डरिए, ताथै राम नाम चित धरिए। टेक
जिन ए पंच पसारे रे, मारे रेतें मारे रे १
जिन यह पंच समेटे रे, भेटे रेते भेटे रे २
कछिब ज्यूं करि लीए रे, जीए रे जीए रे ३
भृंगी कीट समाना रे, ध्याना रे यहु ध्यांना रे ४
अजा सिंघ ज्यूं रहिए रे, दादू दर्सण लहिए रे ५

९ हरि प्रापति दुर्लभता०।

तहां मुझ कमीन की कोण चलावै,
जाकों अजहु मुनिजन महल न पावै। टेक
सिव बिरंच नारद जस गावै, कोण भांति करि निकटि बुलावै १
देवा सकल तेतीसों कोटी, रहे दरबार खड़े करि जोड़ि २
सिध साधिक रहे ल्योलाइ, अजहूं मोटे महल न पाई ३
सबथैं नीच मैं मीत न जानां, कहि दादू क्यूं मिलै सयनां ४

१० बीनाति करुणां०।

तुम्ह बिन कहि क्यू जीवन मेरा, अजहूं न देख्या दर्सणतेरा। टेक
होह दयाल दीनके दाता, तुम्ह परिपूर्ण सबबिधि साचा १
जो तुम्ह करो सोई तुम्ह छाजै, अपणे जनकों काहे न निमाजै २
अकर्ण करण ऐसैं अब कीजै, अपणा जाणि मोहि दर्सण दीजै ३
दादू कहै सुनो हरि सांई, दर्सण दीजै मिलो गुसांई ४

११ उपदेस चिंतामणी०।

कागा रे करंक परि बोलै, खाइ मांस अरु लगही डोलै। टेक
जा तनकों रचि अधिक संवारा, सो तनले माटी में डारा १
जा तन देखि अधिक नर फूले, सो तन छाडि चल्यौ रे भूले २

जा तन देखि मनमें गर्बानां, मिलि गया माटी तज अभीमानां ३
दादू तनकी कहा बडाई, निमख मांहि माटी मिलि जाई ४

१२ उपदेस० ।

जपि गोबिंद बिसरि जिनजाइ, जन्म सुफलकरिएलैलाइ । टेक
हरि समरण सों हेत लगाइ, भजन प्रेम जस गोबिंदगाइ
मनषा देह मुक्ति का द्वारा, राम समर जग सिरजनहारा १
जबलग बिषम ब्याधि नही आई, तबलग कोल काया नहीं खाई
जबलग सब्द पलटी नही जाय, तबलग सेवा करि रामराई २
औसर राम कहि नही लोई, जन्म गया तब कहै न कोई
जबलग जीवै तबलग सोई, पीछैं फिर पाछितावा होइ ३
सांई सेवा सेवक लागे, सोई पावै जे कोई जागै
गुरुमुख भ्रम तिमर सब भागे, बहुर न उलटे मार्ग लागे ४
ऐसा औसर बहुर न तेरा, देखि बिच्यार समझि जीय मेरा
दादू हारि जीति जग आया, बहुत भांति कहि २ समझाया ५

१३ ।

राम नाम तत्व काहे न बोलै, रे मन मूढ अनंत जिन डोलै । टेक
भूला भ्रमत जन्म गमावै, यहु रस रसनां काहे न गावै १
क्या झखि औरे परत जंजालै, बाणी बिमल हरि काहे न संभालै
राम बिसारि जन्म जिन खोवै, जपिले जीवन साफिल होवै ३
सार सुधा सदा रस पीजै, दादू तनधरि लाहा लीजै ४

१४ तत्व उपदेसको० ।

आप आपण मैं खोजो रे भाई, बस्त अगोचर गुरु लिखाई । टे.
ज्यूं मही बिलोयें माखण आवै, त्यूंमन मथियां तैं तत्व पावै १
काष्ट हुतासन रह्या समाई, त्यूं मन मांहि निरंजनराई २

ज्यूं अवनी मैं नीर समांनां, त्यूं मन मांहैं साच सयनां ३
ज्यूं दर्पन के नहीं लागै काई, त्यूं मूर्ति मांहैं निरखि लखाई ४
सहजै मन मथियां तैं तत्व पाया, दादू उनतो आप लखाया ५

१५ उपदेस० ।

मनमैला मनहीं सो धोई, उनमन लागै निरमल होइ । टेक
मनहीं उपजै बिषै बिकार, मनहीं निर्मल त्रिभवन सार १
मनहीं दुबध्या नाना भेद, मनहीं समझै द्वैपख छेद २
मनहीं चंचल चहुदिस जाय, मनहीं निहचल रह्या समाय ३
मनहीं उपजै अग्नि सरीर, मनहीं सीतल निर्मल नीर ४
मन उपदेस मनहीं समझाय, दादू यहु मन उनमन लाय ५

१६ मनपारि सूरातन० ।

रहु रे रहु मन मारोंगा, रती रती करि डारोगा । टेक
खंड खंड करि नाखौंगा, जहां राम तहां राखौंगा १
कह्या न मानै मेरा, सिर भानोंगा तेरा २
घरमैं कदे न आवै, बाहरि कों उठि धावै ३
आतम राम न जानै, मेरा कह्या न मानै ४
दादू गुरुमुख पूरा, मन सूंझै सूरा ५

१७ नाम सूरातन० ।

निर्भय नाम निरंजन लीजै, इन लोगन का भयनहीं कीजै । टेक
सेवक सूसंक नहीं मानैं, राणां राव रंक करि जानैं १
नाम निसंक मगन मतवाला, राम रसांयण पीवै पीयाला २
सहजै सदा राम रंग राता, पूर्णब्रह्म प्रेमरस माता ३
हरि बलवंत सकल सिर गाजै, दादू सेवक कैसैं भाजै ४

१८ संमर्थाई७ ।

औसो अलख अनंत अपारा, तीनलोक जाको बिस्तारा । टेक
निर्मल सदा सहज घर रहै, ताको पार न कोई लहै
निर्गुण निकटि सब रह्या समाय, निहचल सदा न आवैजाय १
अबिनासी है अपरंपार, आदि अंत्य रहै निधार
पावन सदा निरंतर आप, कला अतीत लिय नहीं आप २
संमर्थ सोई सकल भरपूर, बाहरि भीतर नेडा न दूर
अकल आप कलै नहीं कोई, सब घट रह्या निरंजन होई ३
अबर्ण आपै अजर अलेख, अगम अगाध रूप नहीं रेख
अबिगति की गति लिखी न जाय, दादू दीन ताहि चितलाय ४

१९ संमर्थ लीला० ।

अैसो राजा सेऊं ताहि, और अनेक सब लागे जाहि । टेक
तीन लोक गृह धरे रचाइ, चंद सूर दोउ दीपक लाइ
पवन बुहारै गृह अंगणां, छपन कोटि जल जाके घरां १
राते सेवा संकर देव' ब्रह्म कुलाल न जांणे भेव
कीरति करुणां च्यारूं बेद, नेति नेति नव जांणै भेद २
सकल देव पति सेवा करैं, मुनि अनेक एक चितधरै
चित्र बिचत्र लिखै दरबार, धरमराइ ठढे गुणसार ३
रिधि सिधि दासी आगै रहै, च्यार पदार्थ जी जी कहै
सकल सिद्ध रहै ल्योलाइ, सब परीपूर्ण अैसो राइ ४
खलक खजीनां भरे भंडार, ता घर बरतै सब संसार
पूर दिवान सहज सब देइ, सदा निरंजन अैसा है ५
नारद गांयन गुण गोबिंद, सारदा करै सब छंद
नटवर नाचै कला अनेक, आपण देखै चित्र अलेख ६

सकल साध बाजै नीसान, जय जय कारण मेटै आंन
मालनि पहुप अठारह भार, आपण दाता सिरजनहार ७
अैसो राजा सोई आय, चवदह भवन में रह्यो समाय
दादू ताकी सेवा करै, जिन यहु रचिले अधर धरै ८

२० जीवत मृतक० ।

जबयहु मैं मैं मेरी जाय, तब देखत बेगी मिलै रामराय। टेक
मैं मैं मेरी तबलग दूर, मैं मैं मेटि मिलै भरपूर १
मैं मैं मेरी तबलग नांहि, मैं मैं मेटि मिलै मनमाहि २
मैं मैं मेरी न पावै कोय, मैं मैं मेटि मिलै जन सोय ३
दादू मैं मैं मेरी मेटि, तबतूं जानि रामसों भेटि ४

२१ ज्ञान प्रलय० ।

नांही रे हम नांही रे, सत्य राम सब मांही रे । टेक
नांही धरणि अकासा रे, नांही पवन प्रकासा रे
नांही रवि ससि तारा रे, नांही पावक प्रजारा रे १
नांही पंच पसारा रे, नांही सब संसारा रे
नांही काया जीव हमारा रे, नांही बाजी कोतिगहारा रे २
नांही तरवर छाया रे, नही पक्षी माया रे
नांही गिरवर वासा रे, नांही समद निवासा रे ३
नांही जल थल खंडा रे, नांही सब ब्रह्मंडा रे
नांही आदि अनंता रे, दादू राम रहंता रे ४

२२ मधिमार्ग निरपष० ।

अलह कहो भावै राम कहो, डाल तजो सब मूल गहो । टेक
अलह राम कहि कर्म दहो, झूठे मार्ग कहा बहो १
साधू संगति तो निवहो, आइपरै सो सीस सहो २

काया कमल दिल लाय रहो, अलख अला दीदार लहौं ३
सतगुरु की सुनि सीष अहो, दादू पंहुचे पारपहो ४

२३।

हिंदू तुरक न जानों दोइ,
सांई सबन का सोई हरे, और न दूजा देखों कोइ। टेक
कीट पतंग सबै जोनिन मैं, जल थल संग समानां सोई
पीर पैकंबर देवा दानव, मीर मालिक मुनि जनकों मोहि १
कर्ता हैरे सोई चीन्हों, जिनि वै क्रोध करै रे कोइ
जैसें आरसी मंजन कीजै, राम रहीम देही तन धोय २
सांई केरी सेवा कीजै, पायो धन काहे को खोइ
दादू रे जन हरि जपि लीजै, जन्म २ जे सुरजन होइ ३

२४।

को स्वामी को सेष कहै, इस धूनियें का मरम न कोइ लहै। टेक
कोइ राम कोइ अलह सुनावै, पुनि अलहौ रामको भेद न पावै १
को हिंदू को तुरक करि मानें, पुनि हिंदू तुरकी क खबर न जानै २
यहु सब करणी दून्यूं बेद, समझि परी तब पाया भेद ३
दादू देखे आत्म एक, कहिबा सुनिबा अनन अंनेक ४

२५ निंदा०।

निंदत है सब लोक बिचारा, हमकों भावै राम पियारा
निर्संसे निर्दोष लगावे, तायै मोकों अचिरज आवे १
दुबध्या द्वैष पख रहिता जे, ता सनै कहत गयरेए २
निर्बैरी निहकामी साध, ता सन देत बहुत अपराध ३
लोहा कंचन एक समान, तासन कहत करत अभिमान ४
निंदास्तुति एकै तोलै, ता सन कहै अपबादहि बोलै ५

दादू निंद्रा ताकों भावै, जाकै हिरदै राम न आवै ६

२६ अनन्य सरणि० ।

म्हारो स्यूं जे हूं आयौं । टेक

तहाराछे तूनै थापौं सर्वाजीवनैं तूं दातार, तैं सिरज्यानै तूंप्रतिपाळ

तनधन तहागे तैं दीधों, हू तहारो नै तैं कीधौं २

सहुवौ तहागे सांचोरे, मैनै म्हांरो झूठोते ३

दादू नै मन और न आवै, तूं कर्ता नै तूंहीजु भावै ४

२७ निहकाम साध० ।

अैसा अवधू राम पियारा, प्रांणि पिंड थैं रहै नियारा । टेक

जबलग काया तबलग माया, रहै निरंतर अवधूराया १

अठसिधि भाई नवनिधि आई, निकटि न जाई रामदुहाई २

अमर अभय पद बैकुंठ बास, छाया माया रहै उदास ३

सांई सेवक सब दिखलावै, दादू जो दृष्टि न आवै ४

२८ पतिव्रतक मोटी सूरातन० ।

तूं साहिब मैं सेवक तेरा, भावै सिरदे सूळी मेरा । टेक

भावै करवत सिरपरी सारि, भावै लेकरि गरदन मारि १

भावै चहुंदिस अग्नि लगाइ, भावै काळ दसों दिसाइ २

भावै गिरवर गगन गिराइ, भावै दरिया मांहि बहाइ ३

भावै कनक कसोटी देहु, दादू सेवक कसि कसि लेहु ४

२९ माध० ।

काम क्रोध नही आवै मेरे, ताथैं गोबिंद पायानेरे । टेक

भ्रम कर्म जाळि सब दीहां, रमता राम सबन में चीहां १

दुबध्या दुरमति दूरि गमाई, राम रमत साची मनआई २

नीच ऊंच मध्यम को नाहीं, देखों राम सबन कै माहीं ३

दादू साच सबन मैं सोई, पेड पकडि जन निरभय होई ४

१० हित उपदेस० ।

हाजरा हजूर सांई, है हरि नेड़ा दूरि नाहीं । टेक
मनी मेट महल मैं पावै, क्या हे खोजन दूरि जावै १
हिरसन होइ गुसासब खाय, ताथैं सैंयां दूरि न जाइ २
दुई दूरि दरोगन होई, मालिक मन मैं देखै सोय ३
अरिए पंच सोधि सब मारै, तब दादू देखै निकटि बिचारै ४

११ ।

राम रमत है देखै न कोई, जो देखै सो पाव न होई । टेक
बाहरि भीतरि नेडा न दूरि, स्वामी सकल रह्या भरपूरि १
जहां जा देखों तहां दूसर नांहि, सबघट राम समानां माहि २
जहां जांऊं तहां सोई साथ, पूरि रह्या हरि त्रिभवन नाथ ३
दादू हरि देखे सुख होय, निस दिन निरखण दीजै मोहि ४

१२ अध्यात्म० ।

मन पवन ले उनमन रहै, अगम निगम मूलसों लहै । टेक
पंथ बाइजे सहज समावै, ससिहर कै घर आंणै सूर
सीतल सदा मिलै सुखदाय, अनहद सब्द बजावै तूर १
वंक नालि सदा रस पीवै, तब यहु मनवां कहीं न जाय
बिगसै कमल प्रेम जब उपजै, ब्रह्म जीवकी करै सहाइ २
बैसि गुफामैं जोति बिचारै, तब ताहि सूझै त्रिभवनराइ
अंतर आप मिलै आविनासी, पद आनंद काल नहीं खाय ३
जांमण मरण जाइ भय भाजै, अवर्ण कै घर बर्ण समाइ
दादू जाइ मिलै जगजीवन, तब यहु आवागमन मिटाइ ४

३३ ।

जीवन मूरी मेरे आतमराम, भाग बडे पायो निज ठाम । टेक
सब्द अनाहद उपजै जहां, सुखमन रंग लगावै तहां
तहां रंग लागे निर्मल होइ, एतत उपजै जांनै सोई १
सरवर जहां हंसा रहै, करि सनान सब सुख लहै
सुखदाई कों नैनहुं जोय, त्यूं त्यूं मन अति आनंद होइ २
सो हंसा सरनां गति जाइ, सुदरि तहां पखाले पाइ
पीवै अमृत नीझर नीर, बैठे तहां जगत गुरु पीर ३
तहां भाव प्रेमकी पुजा होइ, जा परि कृपा जाणैं सोइ
कृपा करी हरि देव उमंग, ताजपायो निर्भय संग ४
तब हंसा मन आनंद होइ, बस्तु अगोचर लखै रे सोइ
जाकों हरी लखावै आप, ताहि न लिपै पुन्य नही पाप ५
तहां अनहद बाजै अद्भुत खेल, दीपक जरै बात बिन तेल
अखंड जोति जहां भयो प्रकास, फाग बसंत जु बारह मास ६
त्रीस्थान निरत निर्धार, तहां प्रभु बैठे संमर्थसार
नैनहुं निरषुंतो सुख होइ, ताहि पुरुषा को लखैन कोय ७
ऐसा है हरि दीनदयाल, सेवक की जाणैं प्रतिपाल
चलु हंसा तहां चरण सलान, तहां दादू पहुंचे प्रमान ८

३४ आत्म प्रमात्म रास० ।

घट घट गोपी घट घट कान्ह, घट घट राम अमर अस्थान । टेक
गंगा जमुना अंतर बेद, सरस्वती नीर वहै प्रसेद १
कुंजकेलि तहां परम विलास, सब संगी मिलि खेलै रास २
तहां बिन बेना बाजै तूर, बिगसै कमल चंद अरु सूर ४
पूर्णब्रह्म परम प्रकास, तहां निज देखै दादूदास ४

इति राम भक्त सपूर्ण ॥ राग २४ । पद ४० ॥

॥ अथ राग ललित ॥

—*—
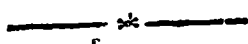
१ प्रातःकि० ।

राम तूं मोरा हूं तोरा, पाइन परत निहोरा । टेक
एकै संगै बासा, तुम्ह ठाकुर हम दासा १
तन मन तुम्हकों देइबा, तेज पुंज हम लइबा २
रस मांहै रस होइबा, जोति सरूपी जोइबा ३
दादू नूर अकेला ४

२ अनन्य सरणि० ।

मेरे गृह आवो गुरु मेरा, मैं बालिक सेवक तेरा । टेक
मात पिता तूं अम्हचा स्वामी, देव हमारे अंतरजामी १
अम्हंचा सज्जन अम्हंचा बंधू, प्रांण हमारे अम्हंचा ज्यदू २
अम्हंचा प्रीतम अम्हंचा मेला, अम्हंची जीवन आप अकेला ३
अम्हंचा साथी संग सनेही, राम बिना दुख दादू देही ३

३ हित उपदेस० ।

वाहाम्हरा प्रेमभक्तिरस पीजिए, रमिए रमिता रामम्हारा बाह्लारे
रिदा कमल मै राखिए, उतम यह जपाम म्हारा बाह्लारे । टेक
वाहाम्हांरासतगुरुसरणैं अणसरै, साधसमागमथाइ ह्यारावाह्लारे
वाणी ब्रह्म बखांणिए, आंनद मै दिन जाइ म्हारा बाह्लारे
वाह्ला म्हारा आतम अनुभवउपजै, उपजैब्रह्मगियान म्हारावाह्लारे
सुखसागर में झूलिए, साचो एह स्नान म्हारा बाह्लारे २
वाह्ला म्हारा भवबंधन सबछुटिए, कर्मन लागैं कोइ म्हारा बाह्लारे

जीवन मुक्तिफल पामिए, अभय अमर पद होइ म्हारा बाल्हारे ३
बाल्हाम्हाराअष्टसिधि नवनिधिआंगणै,पुरमपदार्थचारम्हाराबाल्हारे
दादू जन देखै नहीं, रातो सिरजनहार म्हारा बाल्हारे ४

४ प्रीति अखंड० ।

हमारो मन माइ रामनाम रंग रातो,
पीव २ करि पीवकों जाणैं,मगन रहै रस मातौ । टेक
सदासिल संतोष सुहावत, चरण कमल बांधो
हिरदा मांहि जतनकरि राखों, मानो रंकधन लाधो १
प्रेम भक्ति प्रीति हरिजांनै, हरिसेवा सुखदाई
ज्ञानध्यान मोहन को मेरे, कंपन लागै काई २
संगसदा हेत हरिलागो, अंग और नहीं आवै
दादू दीनदयाल दमोदर, सार सुधारस भावै ४

५ साहिब सिफति० ।

महरवान महरेवांन,आबबादपाक आतस आदमनीसांन । टेक
सीस पाव हाथ कीए, नैन कीए कान
मुख कीया जीवदीया, राजिक रहिमान १
मादर पिदर पटर पोस, सांई सुवहांन
संगे रहै दस्त गहैं, साहिब सुलतान २
या करीम या रहीम, दानां तूं दिवान
पाक नूर है हजूर, दादू हैं हैरान ३

इति राग ललित संपुरण ॥ राग १५ ॥ पद ४० ॥
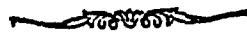
॥ अथ राग जयतश्री ॥

१ नाम विनतीति० ।

तेरे नाम की बलिजांऊ, जहां रहूं जिस ठांऊं । टेक
तेरे बेनू की बलिहारी, तेरे नैनहू ऊपर वारी
तेरी मूर्त्ति बालि किनी, वारि वारिहूं दीनी १
सोभित नूर तुम्हारा, सुंदर जोति उजियारा
मीठा प्राण पीयारा, तूंहै पीव हमारा २
तेज तुम्हारा कहिए, निर्मल काहे न रहिए
दादू बलि बलि तेरे, आब पीया तूं मेरे ३

२ बिरह बीनती० ।

मेरे जीयकी जाणै २ जानराइ, तुम्ह थै सेवक कहा दुगइ । टेक
जलबिन जैसैं जाइ जीय तलफत, तुम्ह बिन अैसैं हमही बिहाइ
तनमन व्याकुल होइ बिरहणीं. दरस पियासी प्राणजाइ १
जैसैं चित चकोर चंदमन, अैसैं मोह नही बिहाइ
बिरह अग्नि दहत दादू को, दर्सन प्रसन तन सिराइ २

इति राग जैतश्री संपूर्ण ॥ राग २६ ॥ पद ४०६ ॥

॥ अथ राग धनांश्री ॥

१ आमिट अविनासी रंग० ।

रंग लागो रे रामको, सो रंग कदे न जाए रे
हरिरंग मेरो मन रंग्यो, और न रंग सुहाए रे । टेक
अविनासी रंग ऊपनों, रचि मचि लागो चोलो रे
सो रंग सदा सुहावनों, अैसो रंग अमोलो रे १
हरिरंग कदै न ऊतरै, दिन दिन होइ सुरंगो रे

नित नवा निर्वाण है, कदे न होयगा भंगो रे २
साचो रंग सहजैं मिल्यो, सुन्दर रंग अपारो रे
भाग बिनां क्यू पाइए, सब रंग माहैं सारो रे ३
अवर्णको का बरणिए, सो रंग सहज सरूपो रे
बलिहारी उस रंगनी, जन दादू देख अनूपो रे ४

२।

लागि रह्या मन रामसौं, अब अनत नहीं जाए रे
अचलासो थिर होइरह्या, सकै न चित डुलाए रे । टेक
ज्यूं फुनंग चंदन रमै, प्रमल रह्यो लुभाए रे
त्यूं मन मेरा रामसूं, अबकी बेर अघाए रे १
भंवर न छाडै बासकों, कमलहि रह्यो बंधाए रे
त्यूं मन मेरा रामसूं, बेधि रह्या चितलाए रे २
जल विन मीन न जीवई, विछुरत ही मरिजाए रे
त्यूं मन मेरा रामसौं, ऐसी प्रीति बनाए रे ३
ज्यूं चातक जलकों रटै, पीव पीव करत विहाए रे
त्यूं मन मेरा रामसौं, जन दादू हेत लगाए रे ४

३ विरह वीनती० ।

मनमोहन हो कठिन विरह की पीर, सुंदर दर्स दिखाईए। टेक
सुनहूं न दीन दयाल, तब मुख बैन सुनाइए १
करुणामै कृपाल, सकल सिरोमणि आइए २
मम जीवनि प्राण अधार, अविनासी उर लाइए ३
अब हरि दर्सन देहु, दादू प्रेम बढाइए ४

४।

कतहूं रहे हो बदेस, हरि नहीं आए हो

जनम सिराणों जाइ, पीव नहीं पाइए हो। टेक
बिपति हमारी जाइ, हरि मोकों कहै हो
तुम्ह बिन नाथ अनाथ, विरहनि क्यूं रहै हो १
पीव के विरह वियोग, तनकी सुधि नहीं हो
तलफि तलफि जीव जाय, मृतक हो रही हो २
दुखत भई हम नारि, कब घर आवै हो
तुम्ह बिन प्राण अधार, जीव दुख पावै हो ३
प्रगटहु दीन दयाल, बिलम्ब न कीजिए हो
दादू दुखित बेहाल, दर्सन दीजिए हो ४

। ५

मोहन माधो कब मिलें, सकल सिरोमणिराइ
तन मन व्याकुल होत है, दर्स दिखावो आइ। टेक
नैन रहे पंथ जोवतां, रोवत रैणि बिहाइ
बाल सनेही कब मिलै, मोपैं रह्या न जाइ १
छिन छिन अंग अनल दहै, हरिजी कब मिलि है आइ
अंतरजामी जाणिकरि, मेरे तनकी तपत बुझाइ २
तुम्ह दाता सुख देतहो, हांहो सुनि दीन दयाल
चाहै नैंन उतावले, हांहो कब देखों लाल ३
चरण कमल कब देखिहूं, सनमुख सिरजनहार
सांई संग सदा रहों, हांहो तब भाग हमार ४
जीवन मेरी जब मिलै, हांहो सब ही सुख होइ
तन मन में तूंहीं बसै, हांहो कब देखों सोइ ५
तन मन की तूंहीं लखै, हांहो सुनि चतुर सुजान
तुम्ह देखें बिन क्यूं रहूं, हांहो मोहि लागै बान ६

बिन देखे दुख पाइए, हांहो अब बिलम्ब न लाइ
दादू दर्सन कारणैं, हांहो सुख दाजै आइ ७

६।

सुरजन मेरा व, कीह तेरा पार लहांउ
जे सुरजन घर आवै वे, हिक कहांण कहांउं । टेक
तो बाझे मेकों चैन न आवै, ए दुख कीह कहांउं
तो बांझे मेकों नींद न आवै, अखियां नीर भराउं १
जेतूं मेकों सुरजन डेवै, सोहूं सील सहांउं
एजन दादू सुरजन आवै, दरगह सेव करांउं २

७। विरह बैराग०।

ए पूहपपे सब भाग बिलासन, तैसहु बाझों छत्र सिंघासन। टेक
जिनत हूंग भिस्त न भावै, लाल पलंग क्या कीजे
भाहि लगो इहि सेज सुखासन, मेकों देखण दीजै १
वैकुंट मुक्ति स्वर्ग क्या कीजे, सकल भवन नहीं भावै
भट पए सब मंडप छाजे, जे घर कंत न आवै २
लोक अनंत अभय क्या कीजै, मैं बिरहीजन तेरा
दादू दर्सन देखन दीजै, ए सुनि साहिब मेरा ३

८ इमान साबूरी०।

अल्हा आलिकां ईमान,
भिसत दोजग दीन दुनियां, चिकारे रहिमान। टेक
मीर मीरी पीर पीरी, फरसतां फुरमान
आब आतस अरस कुरसी, दीदनी दिवान १
हरदु आलम खलक खानां, मोमिनां इखलास
हजा हाजी कजा काजी, खानतूं सुलतान २

इलम आलम मुलक्क मालम, हाजं ले हैरान
अजब यारां खबरदारां, सूरते सुविहांन ३
अवल आखिर एक तूंही' ज्यंदहै कुर्वाण
आसिकां दीदार दादू, नुरका नीसान ४

९ विरह कृत विरह० ।

अल्हा तेरा जिकर फिकर करते है,
आशिक मस्ताक तेरे, तरसि तरसि मरते हैं । टेक
खलक खस दिगर लेस, बैठे दिन भरते हैं
दायम दरबार तेर, गैर महल डरते हैं १
तन सहीद मन सहीद, राति दिवस लरत हैं
ज्ञान तेरा ध्यान तेरा, इसक आगि जरते हैं २
जान तेरा ज्यंद तेरा, पाऊं सिर धरते हैं
दादू दीवान तेरा, जरखरीद घरके हैं ३

१० । विरह वीनती० ।

मुख बोल स्वांमी तूं अंतर्जामी, तेरा सब्द सुहावै रामजी । टेक
धेनु चरावन बेनुबजावन, दर्स देखावन कामनी
विरह उपावन तपतिबुझांवन, अंगलगांवन भामिनी १
संग खिलांवन रासबनांवन, गोपी भावन भूधरा
दादू तारण दुरत निमारण, संत सधारण रामजी २

११ केवल बीनती० ।

हाथ देहो रामा तुम सब पूर्णकामा, हूंतो उरझि रह्योसंसार । टेक
अंध कूप गृह मैं पड्यो, मेरी करो संभाल
तुम्हबिन दूजा को नहीं, मेरें दीनांनाथ दयाल १
मार्ग को सूझै नहीं, दहदिस माया जाल

कालपासि कासि बंधियो, मेरो कोइ न छुडावणहार २
राम बिनां छूटै नहीं, कीजै बहुत उपाइ
कोटि कीया सुलझै नहीं, अधिक अरुझतजाय ३
दीन दुखी तुम्ह देखतां, भवदुख भंजन राम
दादू कहै कर हाथदेह, तुम्ह सब पूर्णकाम ४

१२ करुणा बीनती० ।

जिन छाडै राम जिन छाडै, हमहि बिसारि जिन छाडै
जीव जात न लागै बार, जिन छाडै । टेक
माता क्यूं बालिक तजै, सुत अपराधी होय
कबहूं न छाडै जीवतैं, जिनदुख पावै कोइ १
ठाकुर दीन दयाल है, सेवक सदा अचेत
गुण औगुण हरि नां गिणे, अंतर तासूं हेत २
अपराधी सुत सेवका, तुम्ह हो दीनका दीनदयाल
हमथैं औगुण होत है, तुम्ह पूर्णप्रतिपाल ३
जब मोहन प्राणी चलै, तब देही किहिकांम
तुम्ह जानत दादू काकहै अबजिन छाडहु राम ४

१३ ।

विषम बार हरिअधार, करुणा बहुनामी
भक्तभाई बेग आइ, भीड भंजन स्वामी । टेक
अति आधार संत सधार, सुंदर सुखदाई
कामक्रोध काल ग्रसत, प्रगटहु हरि आई १
पूर्णप्रतिपाल कहिए, समर्थां थैं आवै
भ्रम कर्म मोहलागे, काहे न छुडावै २
दीनदयाल होहि कृपाल, अंतर्जामी कहिए

एक जीव अनेक लागे, कैसैं दुख सहिए ३
पांवन पीव चरन सरन, जुग जुग तैं तारे
अनाथ नाथ दादूके, हरिजी हमारे ४

१४ वीनती० ।

साजनिया नेह न तोरी रे,
जे हम तोरैं महा अपराधी, तो तूं जोरी रे ! टेक
प्रेम बिनां रस फीकालागै, मीठा मधुर न होय
सकल सिरोमणि सबथै नीका, कड़वा लागै सोय १
जबलग प्रीति प्रेमरस नाहीं, तृषा बिनां जल ऐसा
सबथैं सुंदर एक अमीरस, होइ हलाहल जैसा २
सुंदर सांई खरा पियारा, नेह नवानिति होवै
दादू मेरा तबमन मांनैं, सेज सदा सुखसोवै ३

१५ कर्ता कीरति० ।

काइ मां कीरति करोंली रे, तूं मोटो दातार
सबतैं सरजीड़ा साहिबजी, तूं मोटो कर्तार । टेक
चवदह भवन भांनै घडै, घडत न लागैबार
थापै उथपै तू धणी, धन्य धन्य सिरजनहार १
धरती अंबर तैं धख्या, पाणी पवन अपार
चंद सूर दीपक रच्या, रैणि दिवस बिसतार २
ब्रह्मा संकर तै कीया, बिष्णु दीया अवतार
सुरनर साधू सिरजिया, करिलें जीव बिचार ३
आप निरंजन हो रह्या, काइ मो कोतिगहार
दादू निर्गुण गुणगहै, जांऊंली बलिहार ४

१६ उपदेश चिंतामणी को० ।

जीयरा राम भजन करिलीजै,
साहिब लेखा मांगैगा रे, उतर कैसैं दीजै । टेक
आगैं जाइ पछितावन लागो, पल पल यहु तन छीजै
ताथैं जीव समझाइ कहूं रे, सुकृत अबथैं कीजै १
राम जपत जम काल न लागे, संग रहै जन जीजै
दादू रे भजन करिलीजै, हरिजी की रासि रमीजै २

१७ काल चिंतामणी० ।

काल काया गढ भेलिसी, छीजै दसों दुवारो रे
देख तडा तो लुटिसी, हैसी हा हा कारो रे । टेक
नाइकन गुन मलिहसी, एकलडो ते जाए रे
संग न साथी को आइसी, तहां को जाणै किमथाए रे १
सत जत साधू म्हारा माइडा, कांई सुकृत लीजै सारो रे
मार्ग बिषमे चालिवो, कांई लीजै प्राण अधारो रे २
जिम नीर निमांणा ठाहर, तिम साजी बांधो पालो रे
समर्थ सोई सेविए, तो काया न लागै कालो रे ३
दादू मनथिर आंणिए, तो निहचल थिर थाए रे
प्राणी नैं पूरो मिलै, तो काया न मेलीया रे ४

१८ भयभीती भयानक० ।

डरिये रे डरिये परमेस्वर थैं डरिय,
लेखा लेवै भरि भरि देवै, ताथैं बुरान करिय रे डरिय ।
साचा लीजी साचा दीजी, साचा सोदा कीजी रे
साचा राखी झूठा नाखी, बिष न पीयी रे १
निर्मल गहिय निर्मल रहिय, निर्मल कहिय रे

निर्मल लीजी निर्मल दीजी, अनत न बहिय रे १
साहि पठाया बनि जिन आया, जिन डैकावै रे
झूठ न भावै फेरि पठावै, कीया पावै रे ३
पंथ दुहेला जाइ अकेला, भार न लीजीरे
दादू मेला होइ सुहेला, सो कुछ कीजी रे ४

१६ भयाचितामणी० ।

डरिये रे डरिये, देखि देखि पग धरिए
तारे तिरिये मारे मरिये, ताथैं गर्ब न करिये रे डरिए । टेक
देवै लेवै समर्थ दाता, सबकुछ छाजै रे
तारै मारै गर्ब निवारै, बैठा गाजै रे १
राखे रहिये बाहैं बहिये, अनत न लहिये रे
भानै घडै संवारै, आपे ऐसा कहिये रे २
निकटि बुलावै दूरि पठावै, सब बनि आवै रे
पाके काचे काचे पाके, ज्यूंमन भावै रे ३
पावक पाणी पाणी पावक, करि दिखलावै रे
लोहा कंचन कंचन लोहा, कहि समझावै रे ४
ससि हरि सूर सूरथैं ससिहरि, प्रगट खेलै रे
धरती अंबर अंबर धरती, दादू मेलै रे ५

१० हित उपदेस० ।

मनसा मन सब्द सुर्ति, पंचों थिर कीजै
एक अंग सदा संग, सहजैं रस पीजै । टेक
सकल रहित मूल गहित, आपा नहीं आनै
अंतरगति निर्मल रति, एकै मन मानैं १
हिरदै सुधि बिमल बुधि, पूर्ण प्रकासै

रसनां निज नांम निरख, अंतर गति वाले २
आत्म मति पूर्णगति, प्रेमभक्ति राता
मगन गलित अरस परस, दादू रस माता ३

२१ विनेती० ।

गोबिंदजी के चरनूं ही ल्योलाऊं,
जैसे चातुग बनमैं बोलै, पीव पीव करि ध्याऊं । टेक
सुरजन मेरी सुनों बीनती, मैं बलि तेरे जाऊं
विपति हमारी तोहि सुनाऊं, दे दर्सन क्यूंही पावौं १
जात दुख सुख उपजत तनकों, तुम्ह सरनागति आऊं
दादू को दयाकरि दीजै, नाम तुम्हारो गाऊं २

२२।

ए प्रेम भक्ति बिन रह्यो न जाई, प्रगट दर्सन देहु अघाई । टेक
ताला बेली तलफै मांहीं, तुम्ह बिन राम जीयरे जक नाहीं १
निसबासुर मन रहै उदास, मैंजन व्याकुल सास उसास २
एक मेक रस होइ न आवै, ताथैं प्राण बहुत दुखपावै ३
अंगसंग मिलयहु सुखदीजै, दादू राम रसायण पीजै ४

२३ प्रचय उपदेस० ।

तिसघर जानावे, जहां वे अकल सरूप
सोई अब धाइये रे, सब देवन का भूप । टेक
अकल सरूप पीवका, बांन बर्नन पाईए
अंखड मंडल मांहैं रहै, साईं प्रीत लगाइए
गावहु मन विचारावे, मन बिचारा सोई सारा, प्रगट पीवतें पाइ
साईं सेती संग साचा, जीवत तिसघर जाइये १
अकल सरूप पीक का, कैसैं करिआ लेखिए

सुनि मंडल माहि साचा, नैन भरि सो देखिए
देखो लोचन सार वे, देखो लोचन सार
सोई प्रगट होई एह, अचंभा पेखिए
दयावंत दयाल ऐसो, बर्ण अति बिसेखिए २
अकल सरूप पीवका प्राण जीवका, सोई जनजे पावई
दयावंत दयाल ऐसो, सहजैं आप लखावई
लखैसु लखण हारवे, लखै सोई संग होई
आगम बैंन सुनावई, सब दुख भागा रंगलागा
काहेन मंगल गावई, अकल सरूप पीवका
कर कैसैं करि आणिए, निरंतरि निरधार
आपै अंतर सोई जाणिए, जांणहु मन बिचारत्रै
मन बिचारा सोई सारा, समरि सोई बखांनिए
श्रीरंग सेती रंगलागा, दादू तो सुख माणिए

२४ प्रचा० ।

राम तहां प्रगट रह भरपूर,
आत्म कमल जहां परम पुरुष तहां, झिलमिल २ नूर । टेक
चंदसूर मद्धिभाइ, तहां बसै रामराय
गंग जमुनके तीर, तृबेणी संगम जहां
निर्मल बिमल तहां, निरखि निरखि निजना १
आत्मां उलटि जहां, तेज पुंज रहै तहां, सहज समाइ
अगम निगम अति तहां, बैसै प्राणपति, परसि २ निजआइ २
कोमल कुसमल दल, निराकार जोति जल वारन पार
सुनि सरोवर जहां, दादू हंसा रहै तहां
बिलसि बिलसि निजसार ३

२५ ।

गोबिंद पाया मनभाया, अमर कीए संग लीए
अखै अभय दान दीए, छाया नहीं माया । टेक
अगम गिगन अगम तूर, अगम चंद अगम सूर
काल झाल रहे दूरि, जीव नहीं काया
आदि अन्त नहीं कोइ, राति दिवस नहीं होइ
उदै अस्त नहीं होइ, मनहीं मन लाया १
अमर गुरु अमर ज्ञान, अमर पुरुष अमर ध्यान
अमर ब्रह्म अमर थान, सहज सूंनि आया २
अमर नूर अमर बास, अमर तेज सुख निवास
अमर जोति दादूदास, सकल भवन राया ३

२६ ।

रामकी राती भई माती, लोक बेद बिधि निषेद
भागे सब भ्रम भेद, अमृत रस पीवै । टेक
लागे सब काल झाल, छूटे सब जग जंजाल
बिसरे सब हाल चाल, हरिकी सुधिपाई
प्राणपवन तहां जाइ, अगम निगम मिलेआइ
प्रेम मगन रहे समाइ, बिलसै बपु नाहीं १
परम नूर परम तेज, परम पूंज परम सेज
परम जोति परम सेज, सुंदरि सुखपावै
परम पुरुष परम रास, परम लाल सुख बिलास
परम मंगल दादूदास, पीवसो मिलि खेलै २

२७ आरति० ।

इहिं बिधि आरती रामकी कीजै, आत्म अंतर वारणा लीजै । टेक

तनमन चंदन प्रेम की माला, अनहद घंटा दीनदयाला १
ज्ञानका दीपक पवन की बाती, देव निरंजन पांचों पाती २
आनंद मंगल भावकी सेवा, मनसा मंदिर आतमदेवा ३
भक्ति निरंतर मैं बलिहारी, दादू न जांणै सेवा तुम्हारी ४

२८।

आरती जग जीवन तेरी, तेरे चरण कमल परवारी फेरी। टेक
चित चात्रिग हेत हरिडारै, दीपक ज्ञानरू जोति बिचारै १
घंटा सब्द अनाहद बाजै, आनद आरती गगन गाजै २
धुपध्यान हरि सेती कीजे, पहुप प्रीति हरि भावरि लीजे
सेवा सार आत्मां पूजा, देव निरंजन और न दूजा
भावभक्ति सौ आरती कीजै, इहि विधि दादू जुग जुग जीजे

२९।

अविचल आरती तु देव महारी, जुग जुग जीवन रामहमारी
मरण मीच जम काल न लागे, आवागवन सकल भ्रम भागे
जोनी जीव जन्म नही आवै, निरभय नाम अमर पद पावै २
कलिबिष कसमल बंधन कापे, पार पहूंचे थिर करि थापे ३
अनेक उधार तैं जन तारे, दादू आरती नरक निवारे ४

३०

निराकर तेरी आरती, अनंत भवन के राय। टेक
सुर नर सब सेवा करै, ब्रह्मा विष्णु महेस
देव तुम्हारा भेव न जानैं, पार न पावै सेस १
चंद सूर आरती करै, नमो निरंजन देव
धरती पवन आकास अराधै, सबै तुम्हारी सेव २
सकल भवन सेवा करै, मुनियर सिषसमाधि

दीन लीन ह्वै रहे संतजन, अविगति के आराध ३
जय जय जीवन राम हमारी, भक्ति करै ल्योलाइ
निराकार की आरती कीजै, जन दादू बलि बलि जाइ ४

३१ ।

तेरी आरती जुग जुग, जय जय कार । टेक
जुग जुग आतमराम, जुग जुग सेवा कीजिए १
जुग जुग लंघे पार, जुग जुग जगपति को मिले २
जुग जुग तारणहार, जुग जुग दर्शण देखिए ३
जुग जुग मंगलचार, जुग जुग दादू गाइए ४
साखी अंत्य समयकी जेते, गुण व्यापे तेते तैं तजेरे मन ५
साहिब अपणैं कारणै, भलो निवाह्यो पण ६

इति श्री स्वामी दादू दयालजी की वाणी संपूर्ण ॥ अंग ३७ ॥ राग २७ ॥ अंग शर्ब शब्दां का ८०६ ॥ शब्दां का अंग सब ३१३ ॥ साखी २४४२ ॥ पद ४४४ ॥ श्री स्वामी दादू दयालजी की वाणी संपूर्ण समाप्त ॥

दादू दिनकर दुती जिन बिमल बिष्ट बाणी करी
ज्ञान भक्ति बैराग भागभल भेद बतायो
कोटि ग्रंथ को मत्त पंथ संक्षेप लिखायो
बिसुद्धि बुद्धि अबिरुध सुद्धि सर्वग्य उजागर
परमानंद प्रकास नास निगद्रंध महाधर
बरण बृंद शारवी सलिल पद सरिता शागर हरी
दादू जन दिनकर दुती जिन बिमल बिष्ट बांणीं करी
अवनि कल्पतरु प्रगट भई दादू की बांणीं
शाखि शब्द दोउ ग्रंथ सुतो बडसकंध पिछांणीं
शाखि सकंध में डार अंग सैंतीस सुनांऊं
पद सकंध मैं डार सप्त अरु बीस बतांऊं
पचीस सै पैंसटि शाखि सोऊ उपशाखा
ग्यारसै बवालीस पद सोउ उपसाखा
पत्र अखिर लखि एकहै शाठि सहंस पुनि और गनि
भक्ति पहुप बैराग फल मांव बीज जगन्नाथभनि
भये संपूर्ण पद अरु शाखी भक्ति मुक्तिनमैं शो भाखी
मनशा वाचा बांचै कोई ताको आवागन न होई

(दोहा)

तिनमांहैं जो हारड़े, तिनके तिते स्वरूप
कोई संत बिबेकी केलवै, काढै अरथ अनूप १
दादू दीनदयाल की, बांणीं कंचन रूप
कौ इक सोनीं सन्तजन, घाड़ै हैं घाट अनूप २
दादू दीनदयाल की, बांणीं अनभै सार
जो जन या हिरदै धरै, सो जन उतरे पार ३

जे जन पढैजु प्रीत सौं, उपजै आत्म ज्ञान
तिनकों आनन भासही, एक निरंजन ध्यान ४
जिनकै या हिरदै बसी' याही मैं मन दीन
तिनकौं अति मीठी लगै, आठ पहर लोलीन ५
वेद पुरांन सब शास्त्र, और जिते जो ग्रन्थ
तिनको बोध विलोइ करी, यहु काढ्यो निज मन्त ६

इति श्री स्वामीं दादुदयालजी की वाणी सपूरण ॥ सम्वत् १६९५ ॥
मिती वैसाख सुदी ७ ॥ कालाडेराका सुखदेवजी पठनार्थ लिखी ॥

॥ दादूराम सत्यराम ॥ ॥
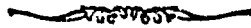
(दोहा)

बाणीं तिमर बिडारणीं, अघ हारणीं अपार
तरणि तारणीं भव सरित, स्वर्ग कारणीं सार ॥ १
वेद मथाणीं सारणीं, बाणीं अगमअगूढ
मुनिगण जाणीं मधुर मधु, मोक्ष लहाणीं मूढ ॥ २
सुधा सरित बाणीं बिमल, सुजन श्रोत्र सरस्वान
करी प्रकाशिक जगत हित, दलजंगसिंघ सुजान ॥ ३
सरजन दलजंगसिंघनैं, लेखग दोष निवार
छपवाई उत्साहकर बाणीं बिमल बिचार ॥ ४
फागुन शुक्ला गवरि बुध, सर बारिध ग्रह इन्द
मुद्रित जयपुर जेलमैं, नवरङ्गराय प्रबन्द ॥ ५

फाल्गुन सुक्ला । ३ बुधवार । सम्वत् १९७५ का मैं छपी

बारहट गुलाबदान कृत